علمی تقاریر و خطابات

عصر حاضر کے ہر دلعزیز مقرر اور مناظر

# خطباتِ ہاشمی میاں

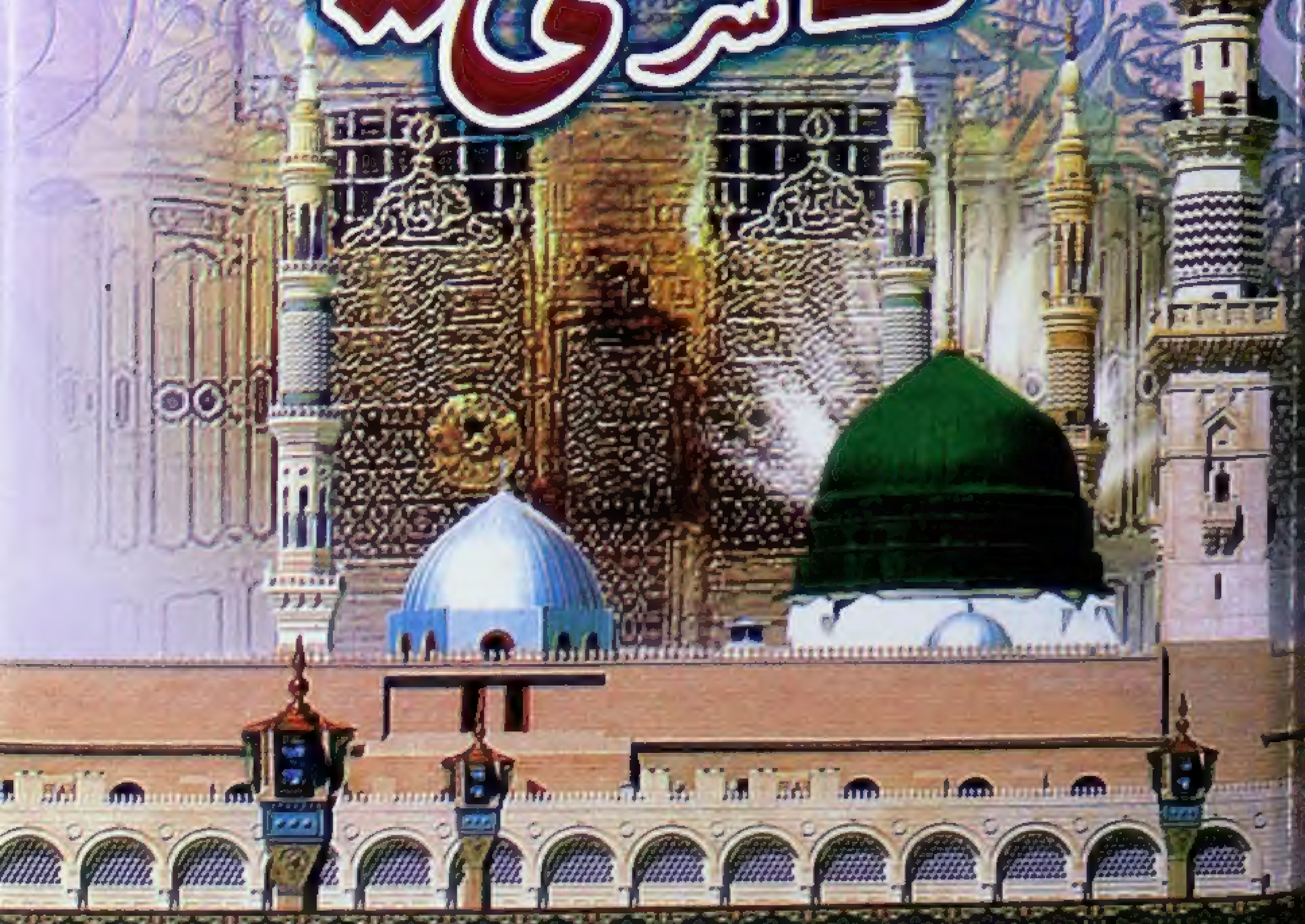

مرتب

قاری محمد نوید شاکر چشتی

مکتبہ زین العابدین

بسم الله الرحمن الرحيم

بسم اللہ الرحمن الرحیم

# خطباتِ ہاشمی میاں

مرتب

قاری محمد نوید شاکر چشتی

---

مکتبہ زین العابدین
باغبانپورہ لاہور 0315-4300213

## ضابطہ:

جملہ حقوق محفوظ ہیں

| | |
|---|---|
| نام کتاب | خطبات ہاشمی میاں |
| مرتب | قاری محمد نوید شاکر چشتی |
| کمپوزنگ/ڈیزائننگ: | ارشاد احمد نقشبندی |
| باراوّل | ربیع الاوّل 1435ھ بمطابق جنوری 2014ء |
| تعداد | 1100 |
| قیمت | =/540روپے |

## رابطہ

شبیر برادرز
زبیدہ سنٹر اُردو بازار لاہور

مکتبہ قادریہ
دربار مارکیٹ لاہور

کرمانوالہ بک شاپ
دربار مارکیٹ لاہور

مکتبہ جلالیہ
فوارہ چوک گجرات

مکتبہ تنظیم الاسلام
ماڈل ٹاؤن گجرات

مکتبہ قادریہ
فوارہ چوک گجرات

نظامیہ کتاب گھر
اُردو بازار لاہور

ہجویری بک شاپ
دربار مارکیٹ لاہور

مکتبۃ المجاہد
بھیرہ شریف (سرگودھا)

حافظ بک ایجنسی
اقبال روڈ سیالکوٹ

نعیمیہ بک سٹال
اُردو بازار لاہور

الرضا کیسٹ ہاؤس
بوہڑ گیٹ ملتان

# انتساب

میں اپنی اِس کاوش کو امام العارفین، سند المحدثین حضرت قبلہ محدثِ کچھوچھوی رحمۃ اللہ علیہ کے نام کرتا ہوں ......کہ جن کے علمی و روحانی فیضان سے آج بھی عشاق کے سینے منور نظر آتے ہیں!

خاکسار!
قاری محمد نوید شاکر چشتی

# فہرست

| نمبر شمار | مضامین | صفحہ نمبر |
|---|---|---|
| 1 | انتساب | |
| 2 | **موضوع ...... مقام نبوت و رسالت** | 15 |
| 3 | آیت مبارکہ کا ترجمہ و مفہوم | 16 |
| 4 | شاہد، مبشر اور نذیر نبی ﷺ | 22 |
| 5 | اللہ اور رسول کا تعلق | 27 |
| 6 | رسول ﷺ سے لینے کا طریقہ و سلیقہ | 29 |
| 7 | اللہ نے جب سرکار کو یاایھا النبی کہا | 35 |
| 8 | **1-نکتہ** | 36 |
| 9 | حکم اس کیلئے ہے جس کا لیا جائے | 39 |
| 10 | منفرد عظمت کے حامل محمد ﷺ | 40 |
| 11 | لفظ ''نبی'' کا معنی و مفہوم | 45 |
| 12 | **2-نکتہ** | 49 |
| 13 | کافر بھی علم غیب کو مانتا ہے | 50 |
| 14 | **3-نکتہ** | 51 |
| 15 | **4-نکتہ** | 51 |
| 16 | **5-نکتہ** | 53 |
| 17 | **6-نکتہ** | 54 |
| 18 | جس طرف نگاہ اٹھی عدم میں دم آ گیا | 55 |
| 19 | **7-نکتہ** | 55 |
| 20 | **8-نکتہ** | 56 |
| 21 | **9-نکتہ** | 57 |
| 22 | ہم ناموس رسالت کی پہرہ داری کریں گے | 59 |
| 23 | **موضوع ...... بسم اللہ کی فضیلتیں** | 64 |
| 24 | بسم اللہ کی برکتیں | 66 |

| | | |
|---|---|---|
| 25 | بسم اللہ شریف کی حکمتیں | 70 |
| 26 | سورہ فاتحہ شریف کی وسعتیں | 72 |
| 27 | **1-نکتہ** | 74 |
| 28 | بسم اللہ کی ''ب'' کا نقطہ | 75 |
| 29 | بسم اللہ سے روحانی برکات | 78 |
| 30 | **2-نکتہ** | 79 |
| 31 | **3-نکتہ** | 82 |
| 32 | بسم اللہ میں ''ب'' استعانت کیلئے ہے | 82 |
| 33 | اللہ کو متعارف کروانے والی ذات | 85 |
| 34 | **موضوع...... ذکر رسول ﷺ کی اہمیت** | 90 |
| 35 | ''آیت'' کسے کہتے ہیں؟ | 91 |
| 36 | ذکر مصطفیٰ ﷺ کی جامعیت | 93 |
| 37 | ذکر مصطفیٰ ﷺ ہمیشہ رہے گا | 96 |
| 38 | کونین میں چرچے رسول اللہ ﷺ کے | 97 |
| 39 | اعلیٰ محبوب کا ذکر بھی اعلیٰ | 100 |
| 40 | وہ جگہ کونسی ہے جہاں ذکر رسول ﷺ نہیں | 103 |
| 41 | لفظ ''رسول'' کا معنیٰ و مفہوم | 106 |
| 42 | **1-نکتہ** | 108 |
| 43 | ذات مصطفیٰ ﷺ وسیلۂ کامل | 108 |
| 44 | رسول کی بارگاہ میں ایمانا جانا | 111 |
| 45 | لبیک یا رسول اللہ ﷺ | 114 |
| 46 | وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ...... کا ہے سایہ تجھ پر | 116 |
| 47 | **موضوع...... نماز پڑھنا اور نماز بچانا** | 121 |
| 48 | اقامت نماز کا حکم | 122 |
| 49 | **1-نکتہ** | 124 |
| 50 | عبادتیں بھی برباد ہو جاتی ہیں | 125 |
| 51 | **2-نکتہ** | 126 |
| 52 | شیطان کے خلاف خوب بولو | 128 |

| | | |
|---|---|---|
| 53 | شیطان کا کیا حال ہوا | 131 |
| 54 | نکتہ-3 | 132 |
| 55 | تعظیم نبوت میں جھکنا اور قیام کرنا | 134 |
| 56 | طریقہ بدلنے سے قانون نہیں بدلتا | 136 |
| 57 | نماز پڑھنی کیسے ہے اور بچانی کیسے ہے؟ | 141 |
| 58 | نماز ہوتی کب ہے؟ | 142 |
| 59 | **موضوع...... آدم زمین پر خلیفة الله** | 145 |
| 60 | اللہ نے جب خلیفہ بنایا | 146 |
| 61 | آدم کی خلافت کا انکار کرنے والا | 149 |
| 62 | خلیفہ کسے کہتے ہیں؟ | 151 |
| 63 | **نکتہ-1** | 152 |
| 64 | سب سے پہلے نور مصطفیٰ بنایا گیا | 154 |
| 65 | حضرت آدم سے پہلے "نبی" | 156 |
| 66 | **نکتہ-2** | 156 |
| 67 | نبی ﷺ کیلئے کائنات بنائی گئی | 158 |
| 68 | **نکتہ-3** | 158 |
| 69 | رسول بندوں اور رب کے درمیان وسیلہ | 159 |
| 70 | ہم بشر اپنی ضرورت کیلئے | 160 |
| 71 | **نکتہ-4** | 161 |
| 72 | سرکار ﷺ غلاموں کو دیکھ رہے ہیں | 165 |
| 73 | **نکتہ-5** | 165 |
| 74 | آدم علیہ السلام خلیفۃ اللہ کیسے؟ | 167 |
| 75 | **نکتہ-6** | 167 |
| 76 | اطلاعت مصطفوی...... اطاعت خداوندی ہے | 168 |
| 77 | خلافت راشدہ | 171 |
| 78 | **موضوع...... نورانیت مصطفی صلی اللہ علیہ وسلم** | 173 |
| 79 | اللہ کی طرف سے آیا تمہارے پاس | 174 |
| 80 | قَدْ جَآءَكُمْ...... تحقیق آیا تمہارے پاس | 177 |

| | | |
|---|---|---|
| 81 | 1-نکتہ | 178 |
| 82 | کیا تحقیق بدل سکتی ہے؟ | 179 |
| 83 | نور تمہارے پاس تشریف لائے | 182 |
| 84 | 2-نکتہ | 183 |
| 85 | نبی ﷺ کے نور کو کب بنایا؟ | 184 |
| 86 | 3-نکتہ | 185 |
| 87 | نور مصطفیٰ ﷺ کو کہاں رکھا | 189 |
| 88 | 4-نکتہ | 189 |
| 89 | نور مصطفیٰ ﷺ قرب خدا میں | 193 |
| 90 | 5-نکتہ | 194 |
| 91 | معراج کی شب قرب خداوندی | 196 |
| 92 | 6-نکتہ | 196 |
| 93 | نور مصطفیٰ ﷺ سے چمک پانے والے | 203 |
| 94 | صبح طیبہ میں ہوئی بٹتا ہے باڑہ نور کا | 205 |
| 95 | **موضوع...... معراج مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم** | 209 |
| 96 | ذکر معراج......لفظ سبحان سے ابتدا | 210 |
| 97 | 1-نکتہ | 213 |
| 98 | مسجد حرام سے مسجد اقصیٰ تک | 214 |
| 99 | نبی ﷺ کو معراج بھی ناز کیساتھ ہوا | 217 |
| 100 | 2-نکتہ | 218 |
| 101 | ''اَسْرٰی'' کس سیر کو کہتے ہیں | 221 |
| 102 | 3-نکتہ | 221 |
| 103 | لِنُرِیَهٗ مِنْ اٰیٰتِنَا کی حکمتیں | 224 |
| 104 | 4-نکتہ | 224 |
| 105 | ساری بھلائی اللہ کے ہاتھ میں ہے | 227 |
| 106 | 5-نکتہ | 228 |
| 107 | یا شاہ امم......کون کرے تیری برابری | 231 |
| 108 | غیب ذات بھی رسول کے سامنے | 232 |

| | | |
|---|---|---|
| 109 | 6-نکتہ | 233 |
| 110 | 7-نکتہ | 235 |
| 111 | 8-نکتہ | 236 |
| 112 | **موضوع...... سرکار کی ذات "سراج منیر"** | 239 |
| 113 | محبوب ﷺ روشن چراغ | 240 |
| 114 | 1-نکتہ | 241 |
| 115 | یارسول اللہ کہنے پر اعتراض کیوں؟ | 243 |
| 116 | نبی ﷺ سراج بھی اور منیر بھی | 246 |
| 117 | 2-نکتہ | 246 |
| 118 | سرجا منیرا کا معنیٰ لغت میں | 249 |
| 119 | 3-نکتہ | 250 |
| 120 | سراج منیر کا فیضان | 252 |
| 121 | بجھائے نہ بجھ سکے وہ ایسے چراغ ہیں | 254 |
| 122 | جب چاہیں جس کو چاہیں روشن فرمائیں | 256 |
| 123 | 4-نکتہ | 257 |
| 124 | مدینہ سے سب کو چمکایا جا رہا ہے | 261 |
| 125 | 5-نکتہ | 262 |
| 126 | **موضوع...... بے مثل رسول کی بے مثل بشریت** | 266 |
| 127 | قرآن پاک کی آیات کی تقسیم | 269 |
| 128 | 1-نکتہ | 271 |
| 129 | قرآن کے پوشیدہ راز | 272 |
| 130 | 2-نکتہ | 273 |
| 131 | اَللّٰہُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ | 275 |
| 132 | 3-نکتہ | 376 |
| 133 | عقیدہ کو کسی آیات سے بنایا جاتا ہے؟ | 279 |
| 134 | 4-نکتہ | 379 |
| 135 | 5-نکتہ | 281 |
| 136 | زبان رسول ﷺ سے بشر مثلکم کیوں کہلوایا | 284 |

| | | |
|---|---|---|
| 137 | **نکتہ-6** | 284 |
| 138 | اللہ اپنے محبوب کو کیسے بلائے گا | 286 |
| 139 | ایکم مثلی...... بھی سرکار ﷺ نے فرمایا | 289 |
| 140 | **نکتہ-7** | 291 |
| 141 | آپ نے انا بشر مثلکم کیوں فرمایا؟ | 293 |
| 142 | آقا ﷺ نے حقوق انسانی کیلئے آواز اٹھائی | 295 |
| 143 | **موضوع...... سرکار ﷺ کی ذات احسان خداوندی** | 300 |
| 144 | بچنے کیلئے تین چیزیں ضروری ہیں | 301 |
| 145 | جو درمیان ہوتا ہے...... منفرد ہوتا ہے | 304 |
| 146 | اللہ کا مومنوں پر احسان | 306 |
| 147 | میلاد النبی ﷺ کی برکات | 307 |
| 148 | **نکتہ-1** | 308 |
| 149 | اللہ نے احسان کیوں جتایا | 310 |
| 150 | **نکتہ-2** | 312 |
| 151 | کائنات سجائی گئی حضور ﷺ کیلئے | 313 |
| 152 | نُوْرَ نَبِیِّکَ مِنْ نُوْرِہٖ کی وضاحت | 315 |
| 153 | **نکتہ-3** | 315 |
| 154 | ایک اعتراض کا جواب | 316 |
| 155 | نور مصطفیٰ سب سے پہلے بنانے میں حکمت | 319 |
| 156 | **نکتہ-4** | 320 |
| 157 | **موضوع...... قرآن اور اہلبیت** | 327 |
| 158 | محنت کرنے والوں کی سوچ | 328 |
| 159 | رسول اللہ ﷺ کو امت کی فکر | 329 |
| 160 | **نکتہ-1** | 331 |
| 161 | امت کی کامیابی کا نسخہ | 332 |
| 162 | **نکتہ-2** | 333 |
| 163 | قرآن اہلبیت کیساتھ کیوں؟ | 335 |
| 164 | تم کبھی گمراہ نہیں ہوگے | 337 |

| | | |
|---|---|---|
| 165 | 3-نکتہ | 337 |
| 166 | قرآن اور جماعت صحابہ کرام رضی اللہ عنہم | 339 |
| 167 | 4-نکتہ | 340 |
| 168 | قرآن اور اہلبیت کی نسبت | 343 |
| 169 | قرآن کی حقانیت اور اہلبیت کی صداقت | 347 |
| 170 | 5-نکتہ | 347 |
| 171 | قرآن بھی پاک اہلبیت بھی پاک | 349 |
| 172 | 6-نکتہ | 350 |
| 173 | آل رسول کو اللہ نے پاک بنایا | 351 |
| 174 | 7-نکتہ | 352 |
| 175 | حالت نماز میں حسین رضی اللہ عنہ پشت نبی پر | 353 |
| 176 | 8-نکتہ | 355 |
| 177 | 9-نکتہ | 357 |
| 178 | سرکار صلی اللہ علیہ وسلم کو نماز میں حسین رضی اللہ عنہ کا خیال | 358 |
| 179 | **موضوع...... قبر کے سوالات اور نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے کمالات** | 362 |
| 180 | دنیا اور آخرت کی بھلائی | 363 |
| 181 | 1-نکتہ | 364 |
| 182 | انسان ایک مسافر ہے | 366 |
| 183 | ہم جس کو مانتے ہیں زندہ سمجھ کر مانتے ہیں | 368 |
| 184 | قبر کی رات فیصلے کی رات | 370 |
| 185 | محشر سے پہلے کا حشر زیر قبر | 372 |
| 186 | کامیابی کا انحصار قبر کے سوالات پر ہے | 374 |
| 187 | 2-نکتہ | 375 |
| 188 | معیاری کامیابی کی نشانی | 380 |
| 189 | 3-نکتہ | 380 |
| 190 | رب، دین اور ہستی پاک کا سوال قبر میں | 383 |
| 191 | 4-نکتہ | 384 |
| 192 | 5-نکتہ | 388 |

| | | |
|---|---|---|
| 193 | سید البشر ﷺ کی بے مثلیت | 389 |
| 194 | نکتہ-6 | 391 |
| 195 | امتی کی قبر میں ذات مصطفیٰ ﷺ | 393 |
| 196 | نکتہ-7 | 393 |
| 197 | **موضوع...... رحمت مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم** | 395 |
| 198 | پرہیزگاری کیا ہے؟ | 397 |
| 199 | محب ومحبوب میں لڑائی نہیں ہوتی | 399 |
| 200 | میدان محشر میں سرکار کی بندہ نوازی | 401 |
| 201 | محشر میں سرکار ﷺ کا دامن رحمت | 406 |
| 202 | قرض لیتی ہے گناہ پرہیزگاری......واہ، واہ | 408 |
| 203 | ان کے کرم سے نعت لکھنا | 413 |
| 204 | نکتہ-1 | 414 |
| 205 | نکتہ-2 | 416 |
| 206 | **موضوع...... عظمت مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم** | 418 |
| 207 | رفعت ذکر مصطفیٰ ﷺ | 420 |
| 208 | حضور ﷺ کی شان...... مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللّٰهِ | 421 |
| 209 | رسول اللہ......لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ | 423 |
| 210 | نکتہ-1 | 423 |
| 211 | قرآن میں......مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللّٰهِ | 425 |
| 212 | نکتہ-2 | 426 |
| 213 | ”رسول“ کا معنیٰ ومفہوم | 428 |
| 214 | نکتہ-3 | 429 |
| 215 | رسول ﷺ کا وسیلہ | 431 |
| 216 | نکتہ-4 | 435 |
| 217 | رسول ﷺ موجود کیسے ہیں؟ | 442 |
| 218 | کائنات بھی صدقہ حضور کا | 444 |
| 219 | دیدہ کور کو کیا نظر آئے......کیا دیکھے؟ | 448 |
| 220 | اسلام اور بانی اسلام ﷺ | 450 |

| | | |
|---|---|---|
| 221 | **موضوع...... تفسیر سورۂ فاتحہ شریف** | 455 |
| 222 | تعارف سورہ فاتحہ | 456 |
| 223 | فاتحہ پڑھنے میں فرق | 462 |
| 224 | **2-نکتہ** | 464 |
| 225 | الحمدللہ رب العالمین میں حکمتیں | 467 |
| 226 | **3-نکتہ** | 467 |
| 227 | ہر کوئی کسی کی تعریف کر رہا ہے؟ | 468 |
| 228 | تعریف کرنے کے انداز | 469 |
| 229 | قرآن میں نبی کی تعریف | 471 |
| 230 | نبی ﷺ کی تعریف اللہ کی تعریف ہے | 475 |
| 231 | **4-نکتہ** | 476 |
| 232 | اللہ نے ہی اپنے نبی کو بنایا ہے | 477 |
| 233 | تعریف کی دو قسمیں | 480 |
| 234 | **5-نکتہ** | 484 |
| 235 | رسول کو سب اللہ نے عطا کیا | 485 |
| 236 | اللہ نے سب رسول کیلئے بنایا | 489 |
| 237 | **موضوع...... موت ایک نعمت ہے** | 493 |
| 238 | ہر چیز اللہ کیلئے ہے | 494 |
| 239 | خدا نے مردہ کسے کہا؟ | 497 |
| 240 | اصل میں مردہ کون ہیں؟ | 498 |
| 241 | **1-نکتہ** | 498 |
| 242 | مردہ شخص قرآن کی نظر میں | 501 |
| 243 | نبی ﷺ کے وفادار زندہ ہیں | 503 |
| 244 | **2-نکتہ** | 504 |
| 245 | زندوں کو دینا...... زندوں سے لینا | 506 |
| 246 | سب کچھ اللہ ہی کیلئے ہے | 512 |
| 247 | شفاعت مصطفی ﷺ محشر میں | 514 |
| 248 | **موضوع...... خدا چاہتا ہے رضائے محمد ﷺ** | 518 |

| | | |
|---|---|---|
| 249 | مقام خلافت کی رفعت | 520 |
| 250 | شیطان سے بچنا ضروری ہے | 523 |
| 251 | شجر ممنوعہ......اور آدم علیہ السلام اور اماں حوا | 525 |
| 252 | رضائے الٰہی کیلئے تکالیف میں پڑنا | 529 |
| 253 | بے مثال کا کلام بھی بے مثال | 533 |
| 254 | انگریز کی سازش......فتنوں کی بوچھاڑ | 538 |
| 255 | خدا چاہتا ہے رضائے محمد ﷺ | 541 |
| 256 | خدا دینے والا......حضور لینے والے | 542 |
| 257 | دینے کی مشہور دو قسمیں | 544 |
| 258 | نماز اور زکوۃ کی جامعیت | 550 |
| 259 | نماز اور زکوۃ کی پہچان | 551 |
| 260 | **نکتہ-1** | 553 |
| 261 | زکوۃ اور تقسیم زر کا نظام | 556 |
| 262 | **نکتہ-2** | 557 |
| 263 | نبی ﷺ کے بے مثال فیصلے | 559 |
| 264 | **نکتہ-3** | 560 |
| 265 | سید زکوۃ دے گا مگر لے گا نہیں | 563 |
| 266 | رسول ﷺ کی بے ملکیت | 565 |
| 267 | **نکتہ-4** | 565 |
| 268 | نماز اور زکوۃ قرآن میں ایک ساتھ | 569 |
| 269 | **نکتہ-5** | 569 |
| 270 | ظاہر و باطن پر حضور ﷺ نگران ہیں | 572 |

## موضوع......مقام نبوت ورسالت

نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمٰلِنَا وَمَنْ يَّهْدِيْهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا مَوْلَانَا وَحَبِيْبَنَا وَسِرَاجَنَا وَاَشْرَفَنَا وَسَيِّدَنَا مُحَمَّدٍ ﷺ

اَمَّا بَعْدُ !

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى فِى الْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ وَالْفُرْقَانِ الْحَمِيْدِ...... اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يٰاَيُّهَا النَّبِيُّ
صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلٰنَا الْعَظِيْمُ

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ط
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا o

بارگاہ رسالت مآب ﷺ میں ہدیہ درود وسلام پیش کیجیے

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدِيْ يَا رَسُوْلَ اللّٰه
وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ يَا سَيِّدِيْ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

علمائے ملت اسلامیہ...... مشائخ کرام...... بزرگو اور دوستو ساتھیو! عزیز بچو

سلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہٗ

آج کی میری یہ تقریر کراچی کے سلسلہ تقاریر اور دورائے تقریر کی آخری تقریر ہے...... پھر کل میں ان شاء اللہ لاہور کیلئے روانہ ہورہا ہوں اور پھر اس کے بعد ''داتا'' کی بارگاہ میں حاضری دینی ہے اس لئے کہ میرا یہ یقین ہے کہ جس دل میں داتا نہیں...... اس کو کچھ بھی آتا نہیں

اور پھر پیر کے دن لاہور کے ''پیر'' کی اجازت سے یہ پیران پیر کی اولاد شام کی فلائٹ سے واپس آجائے گی...... ان شاء اللہ

اور اس کے بعد منگل کو وہ آخری تقریر ''دارالعلوم مجددیہ نعیمیہ'' میں ہوگی...... ہاں تو منگل کے دن وہ تقریر ہوگی...... یعنی اس تقریر کے حوالے سے یوں کہہ لو...... کہ جب جنگل میں منگل ہوتا ہے تو پھر منگل کو جنگل میں دنگل کیسا ہوگا؟ یقیناً وہ دیکھنے کے لائق ہوگا...... آپ سب شرکت کیجئے گا

آپ مجھے تو بھول جائیں گے...... لیکن وہ تقریر نہیں بھول پائیں گے ...... ان شاء اللہ

## آیت مبارکہ کا ترجمہ ومفہوم:

خیر دوستو!

میں نے ابھی ایک آیت مقدسہ کا صرف تھوڑا سا حصہ تلاوت کیا ہے...... اس لئے کہ مجھے پتہ ہے کہ اگر پوری آیت تلاوت کرتا اور پھر پوری آیت مبارکہ

کے حوالے سے گفتگو کرتا تو پھر آج کی رات گزر جاتی

اس لئے کہ میرا تجربہ میرے سامنے ہے کہ اس پوری آیت مقدسہ پر میں نے بمبئی میں تقریر کی تو اس کا دورانیہ 12 گھنٹے کا تھا

لیکن آج صرف اس کے پہلے حصے پر ہی بات کرنے کا ارادہ رکھتا ہوں...... ویسے ایک مرتبہ میں پوری آیت مقدسہ پڑھ دیتا ہوں تا کہ آپ کو پتہ چل جائے کہ وہ کونسی آیت ہے...... کہ جس کے پہلے حصے پر آج ہم بات کریں گے...... تو آیت مبارکہ ہے

یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِیْرًا وَّ دَاعِیًا اِلَی اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَ سِرَاجًا مُّنِیْرًا

اے نبی ہم نے آپ کو شاہد بنا کر بھیجا ہے بشیر بنا کے بھیجا ہے اور نذیر بنا کے بھیجا ہے...... داعی الیٰ اللہ بنا کر بھیجا ہے اور سراج منیر بنا کے بھیجا ہے اس کے علاوہ ترجمہ یوں بھی ہو سکتا ہے...... کہ:

"اے غیب کی خبریں دینے والے ہم نے آپ کو چشم دید گواہ بنا کر بھیجا ہے خوشخبری سنانے والا بنا کے بھیجا ہے، ڈر سنانے والا بنا کے بھیجا ہے اور اللہ کے حکم سے اللہ کی طرف بلانے والا بنا کے بھیجا ہے اور روشن چراغ بنا کے بھیجا ہے"

اور سوچنے کی بات تو یہاں پر یہ ہے...... کہ اپنے محبوب کو جو کچھ بھی بنا کر بھیجا ہے اس کا اعلان خود رحمٰن بذریعہ قرآن کر رہا ہے کہ ہم نے اپنے حبیب ﷺ کو کیا کیا بنا کر بھیجا ہے

یعنی اللہ تعالیٰ نے نبی ﷺ کو مخاطب کر کے ان تمام صفات کا ذکر فرمایا جن سے اللہ تعالیٰ نے اپنے محبوب ﷺ کو موصوف کیا ہے...... لیکن سب سے پہلے کیا

فرمایا؟

یٰٓاَیُّھَا النَّبِیُّ ...... اے نبی

کیا خیال ہے...... کہ نبی ﷺ کو پہلے پتہ نہیں تھا کہ میں نبی ہوں؟

ہاں معلوم تھا...... اسی لئے تو صحن کعبہ میں کھڑے ہو کر اپنی نبوت کی خبر دے رہے تھے...... کیا خیال ہے کہ نبی ﷺ کو پہلے پتہ نہیں تھا کہ میں ''شَاھِدٌ'' ہوں؟

یقیناً پتہ تھا اسی لئے تو امتیوں کے اعمال پر گواہی کا اعلان فرما رہے ہیں کیا خیال ہے کہ نبی ﷺ کو معلوم نہیں تھا کہ ''مُبَشِّرًا'' ہوں؟

یقیناً پتہ تھا اسی لئے تو اپنے غلاموں میں خوشیاں بانٹ رہے ہیں...... شہادتیں دے رہے ہیں...... اور دنیا اور آخرت دونوں کی شہادتیں دے رہے ہیں

کیا خیال ہے...... کہ نبی ﷺ کو معلوم نہیں تھا کہ میں ''نَذِیْرًا'' ہوں؟

یقیناً پتہ تھا اسی لئے تو لوگوں کو اللہ تعالیٰ کا ڈر سنا رہے ہیں...... جہنم کی خوفناکی اور قبر کی ہولناکی کی خبر آپ ہی تو دے رہے ہیں۔

تو پھر تعجب کی بات تو یہ ہے...... کہ کہا بھی اسی ذات کو جا رہا ہے...... کہ جن کو پہلے سے ہی علم ہے...... کہ:

میں نبی ہوں
میں شاہد ہوں
میں مبشر ہوں
میں نذیر ہوں

میں داعی ہوں

میں سراج منیر ہوں

جیسا کہ اگر کوئی اس اسٹیج پر آ کر مجھ سے کہے کہ تم ‘‘ہاشمی میاں’’ ہو...... تم خاندان محدث کچھوچھوی کے چشم و چراغ ہو...... تم نے ‘‘مبارک پور’’ میں اتنی دیر پڑھا...... تمہیں یہ یہ زبانیں آتی ہیں...... تو میں اس کو کیا کہوں گا؟

یہی کہ جناب مجھے پتہ ہے کہ میں ‘‘ہاشمی میاں’’ ہوں...... میں ‘‘مبارک پور’’ میں پڑھتا رہا ہوں...... میں نے دنیا پھری ہے...... اور اے میرا تعارف مجھے پیش کرنے والے تم میرا تعارف مجھے نا کرواؤ...... بلکہ میرا تعارف اس سے کرواؤ...... کہ جو یہ نہ جانتا ہو...... کہ میں کون ہوں؟ ارے میں تو یہ جانتا ہوں کہ میں کیا ہوں...... میری خوبیاں کیا ہیں...... تعارف تو اس سے کرواتے ہیں جو جانتا نہ ہو

یعنی اگر کسی کو کچھ بتایا جاتا ہے تو اس کی معلومات میں اضافے کیلئے...... تو قربان جاؤں! میرا رب...... اپنے محبوب ﷺ سے فرما رہا ہے

تم ...... نبی ہو
تم ...... شاہد ہو
تم ...... مبشر ہو
تم ...... نذیر ہو
تم ...... داعی ہو
تم ...... سراج منیر ہو

تو آخر اس میں حکمت کیا تھی؟...... نبی کو تو پہلے سے ہی معلوم تھا کہ میں کیا

ہوں...... دوستو بڑی توجہ...... کہ:

اگر تعارف کروانا تھا ...... تو ابوجہل سے کہا ہوتا
اگر تعارف کروانا تھا ...... تو ابولہب سے کہا ہوتا
اگر تعارف کروانا تھا ...... تو کافروں سے کہا ہوتا
اگر تعارف کروانا تھا ...... تو مشرکوں سے کہا ہوتا

تو اگر ایسا کرنا ہوتا تو پھر آیت کے شروع میں...... یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ ...... کہا ہوتا

یا پھر...... یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ...... کہا ہوتا

سوال یہ ہے کہ اے میرے اللہ...... جو بات نبی کے تعارف کے بارے بندوں سے کہنے کی تھی ...... وہ تو نے نبی ﷺ سے کیوں کہی؟ یعنی اگر...... یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ کہہ کر آیت کو شروع نہ بھی کیا جاتا تو پھر بھی میرے نبی ﷺ کو پتہ تھا...... کہ:

وہ ...... نبی ہیں
وہ ...... شاہد ہیں
وہ ...... مبشر ہیں
وہ ...... نذیر ہیں
وہ ...... داعی الی اللہ ہیں
وہ ...... سراج منیر ہیں

یعنی نتیجہ یہ نکلا کہ اس آیت مقدسہ میں اللہ تعالیٰ نے

خبر اس کو دی ...... جو باخبر ہے
تعارف اس کو کروایا ...... جو خود جانتا ہے

اطلاع اسے دی ...... جو مطلع ہے
صفت اس کو بتائی ...... جو خود موصوف ہے
علم اس کو دیا ...... جو عالم ہے

یعنی بات ہمیشہ اس کو کسی کے متعلق بتائی جاتی ہے کہ جس کو پتہ نہ ہو...... تو اگر کوئی خود ہی جانتا ہو...... پہلے ہی جانتا ہو...... تو پھر اس کو اس صفت کا تعارف نہیں کروایا جاتا یعنی اگر نبی ﷺ کی ان صفتوں کے بارے میں دوسرے انسانوں کو بتایا جاتا تو پھر ان کے علم میں اضافہ ہوتا...... ان کی معلومات میں اضافہ ہوتا...... جو نہیں جانتے تھے ان کو بتایا جاتا تو ان کی جان پہچان میں اضافہ ہوتا۔

آخر کار جواب یہ آیا...... کہ اے ہاشمی تو کیا جانتا ہے کہ یہ انسان کیا ہیں؟...... اگر سنور جائے...... تو فرشتے اس پر رشک کرتے ہیں...... اگر بگڑ جائے ...... تو شیطان اس سے حیران ہوتے ہیں

یعنی انسانی مجمع کی فطرت ہے کہ جب کوئی بات ان کے سامنے کہی جائے تو کوئی مانتا ہے...... کوئی انکار کرتا ہے۔

کوئی دل سے لگاتا ہے ...... کوئی ٹھکرا دیتا ہے
کوئی پیار کرتا ہے ...... کوئی نفرت کرتا ہے
کوئی قبول کرتا ہے ...... کوئی منہ پھیر لیتا ہے

یہ انسان کی فطرت ہے کہ جب بھی کوئی نئی بات اس کے سامنے لیکر آؤ گے ...... تو کچھ لوگ تسلیم کریں گے اور کچھ انکار کر دیں گے ...... جس طرح کہ آقا ﷺ نے اپنے رب کا سچا پیغام لوگوں تک پہنچانے کیلئے مکہ کے چند لوگوں کو اکٹھا

کیا اور انہیں یہ اعلان سنایا کہ تم سب گواہی دو کہ اللہ کے سوا کوئی عبادت کے لائق نہیں اور محمد اللہ کے رسول ہیں

تو کیا خیال ہے کہ نتیجہ کیا سامنے آیا کہ......

کچھ اقرار کر گئے ...... کچھ انکار کر گئے
کچھ اپنے ہو گئے ...... کچھ بیگانے ہو گئے
کچھ وفادار ہو گئے ...... کچھ غدار ہو گئے
کچھ جم گئے ...... کچھ پھر گئے
کچھ بیٹھے رہے ...... کچھ چلے گئے

یعنی! اس وقت بھی

کسی نے اقرار کا نعرہ لگایا ......تو کسی نے انکار کا نعرہ لگایا
کسی نے محبت کا نعرہ لگایا ......تو کسی نے عداوت کا نعرہ لگایا

## شاہد، مبشر اور نذیر نبی ﷺ

یعنی ...... یہ بات ثابت ہو گی کہ انسان کی فطرت میں یہ چیز شامل ہے کہ

کچھ کا انکار کرتا ہے......اور کچھ کا اقرار کرتا ہے

اس لئے اللہ تعالیٰ نے جب اپنے محبوب ﷺ کے اوصاف کو بیان کرنا چاہا تو کسی بندے کو مخاطب نہیں کیا...... کسی عام انسان کو مخاطب نہیں کیا...... بلکہ! فرمایا

محبوب:

میں تمہاری ......شاہدیت بیان کر رہا ہوں
میں تمہارا ......مبشر ہونا بیان کر رہا ہوں
میں تمہارا ......نذیر ہونا بیان کر رہا ہوں

میں تمہارا ......داعی ہونا بیان کر رہا ہوں
میں تمہارا ......سراج منیر ہونا بیان کر رہا ہوں
میں تمہارے ......اوصاف بیان کر رہا ہوں
میں تمہارے ...... کمالات بیان کر رہا ہوں
میں تمہاری ......صداقتیں بیان کر رہا ہوں
میں تمہاری ...... عظمتیں بیان کر رہا ہوں
میں تمہاری ......رفعتیں بیان کر رہا ہوں
میں تمہاری ......عزتیں بیان کر رہا ہوں

اس لئے میرے محبوب میں یہ باتیں لوگوں کو مخاطب کر کے نہیں کہوں گا اس لئے کہ اگر یہ باتیں میں نے لوگوں سے کہہ دیں

تو کچھ ماننے والے ہو جائیں گے
تو کچھ انکار کرنے والے ہو جائیں گے

لیکن میرے محبوب میں مخاطب ہی تمہیں کر رہا ہوں......کہ:

تمہاری عزت کے متعلق
تمہاری عظمت کے متعلق
تمہاری رفعت کے متعلق
تمہاری رسالت کے متعلق
تمہاری نبوت کے متعلق

مجھے انکار پسند نہیں...... اسی لئے کسی سے نہیں بیان کرتا...... تمہیں ہی مخاطب کر کے کہہ رہا ہوں

یٰاَیُّھَا النَّبِیُّ اِنَّا اَرْسَلْنٰکَ شَاھِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِیْرًا

اے پیارے مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم میں یہ بات ان لوگوں سے نہیں کہوں گا......اس لئے......کہ:

اس میں ......تمہاری شاہدیت ہے
اس میں ......تمہاری مبشریت ہے
اس میں ......تمہاری نذیریت ہے
اس میں ......تمہاری نبوت ہے

اس لئے! میں نہیں چاہتا کہ کوئی اس کا انکار کردے......تو میں یہاں تمہیں مخاطب کر کے ان تمہارے اوصاف وکمالات کا ذکر کر رہا ہوں

اس لئے......کہ:

نہ اِدھر سے انکار ہوگا
نہ اُدھر سے انکار ہوگا

کیوں کہ میں نے تو یہ سب کچھ عطا کیا ہے......میں انکار کیسے کروں گا؟

اور تم نے تو یہ سب کچھ لیا ہے......اس لئے تم انکار کیسے کروگے؟

اے محبوب صلی اللہ علیہ وسلم!

میں کہتا رہوں ......اور تم مانتے رہو
میں سناتا رہوں ......اور تم سنتے رہو
میں نوازتا رہوں ......اور تم لیتے رہو

یہ..لوگوں کی اپنی قسمت ہے کہ اگر کوئی تمہاری زبان سے سن کر انکار کر دے......تو اس کا اپنا مقدر ہے......لیکن اس کی خوش بختی ہے کہ جو تمہاری زبان

سے سن کے اقرار کرے

تو اللہ تعالیٰ نے فرمایا

یٰۤاَیُّھَا النَّبِیُّ ...... اے نبی

اگر ''یَـانبی'' کہا جاتا تو پھر بھی کام چل جاتا...... لیکن یہاں پر اللہ نے ''یا نبی'' نہیں فرمایا بلکہ...... یٰۤاَیُّھَا النَّبِیُّ ...... فرمایا ہے...... میرے بھائیو:

اَیُّ بھی تو ندا کے لئے ہے...... اور ''یا'' بھی ندا کیلئے ہے

یعنی اَیُّ کا معنیٰ بھی وہی ہے ...... یعنی...... اے نبی

اور ''یا'' کا معنیٰ بھی وہی ہے...... یعنی...... اے نبی

اب ہمارے استعمال میں بھی یہ دونوں لفظ ہیں...... یعنی ہم کہتے ہیں:

یا نبی اللہ ...... ﷺ

یا رسول اللہ ...... ﷺ

یا حبیب اللہ ...... ﷺ

اور لفظ ''اَیُّ'' کو بھی ہم استعمال کرتے ہیں...... یعنی:

اَلتَّحِیَّاتُ لِلّٰہِ وَ الصَّلٰوتُ وَالطَّیِّبَاتُ اَسْلَامُ عَلَیْکَ اَیُّھَا النَّبِیُّ

یعنی جب ہم ویسے اپنے نبی کو پکارتے ہیں تو ''یا حبیب اللہ'' کہتے ہیں

اور جب نماز میں اپنے آقا ﷺ کو پکارتے ہیں...... تو یَـاَیُّھَـا النَّبِیُّ کہتے ہیں

تو قربان جاؤں...... جب میرے اللہ نے اپنے محبوب کو مخاطب فرمایا...... تو ان دونوں حرفوں کو اکٹھا کر کے مخاطب فرمایا...... کہ

یٰۤاَیُّھَا النَّبِیُّ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰکَ شَاھِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِیْرًا

یعنی اب ان اعتراض کرنے والوں سے پوچھو......کہ

تم سے تو ہمارا اک مرتبہ ''یَـا'' برداشت نہیں ہوتا......تم نے اللہ تعالیٰ کا دو مرتبہ حرف ندا یعنی یَا اور اَیُّ کیسے برداشت کرلیا ہے؟

یعنی اللہ نے قرآن پاک میں اپنے نبی کو دومرتبہ ''یَا'' کے ساتھ پکارا تو پوری جماعت چپ رہی......لیکن ہم نے صرف ایک ''یَا'' کے ساتھ یَا رَسُوْلَ اللہ ﷺ،

یا نبی اللہ ﷺ کہہ دیا
یا حبیب اللہ ﷺ کہہ دیا

تو ہنگامہ کھڑا کردیا گیا......آخر ایسا کون سا لفظ ہے......کہ جو ہم نے اپنے پاس سے لگالیا ہے......بھئی اللہ تو قرآن میں دوحروف ندا کے ساتھ پکار رہا ہے......ہم نے تو صرف ایک ''یا'' کیساتھ ہی اپنے نبی ﷺ کو پکارا ہے......تمہیں اعتراض کیوں ہوا؟

اب اگر کسی نے سوال کرنا ہو تو اللہ سے سوال کرے کہ اس نے ایسا کیوں کیا؟

لیکن آؤ میں یہاں پر ایک مزے کی بات پیش کرتا ہوں......کہ اللہ تعالیٰ ''عالم الغیب'' ہے......وہ آنے والے تمام وقت وحالات سے آگاہ ہے......اس لئے تو اس وحدہ لاشریک نے اپنے محبوب کو دومرتبہ حرف ندا یعنی ''یَا'' اور ''اَیُّ'' سے پکارا......تاکہ لوگوں کے اعتراض ختم ہوجائیں...... لوگوں کے منہ بند ہو جائیں......کہ میں بڑا ہو کر نبی کو دومرتبہ حرف ندا سے پکار رہا ہوں اور تم چھوٹے ہو کر نبی کو ایک مرتبہ بھی یا رسول اللہ ﷺ نہیں کہنے دیتے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## اللہ اور رسول کا تعلق:

دوستو!

اب مجھے یہاں اور بھی ایک بات ابھی کہنا ہے...... کہ اس آیت مبارکہ کو پڑھو اور اس کی روشنی میں اللہ اور اس کے رسول ﷺ کے تعلق کو پہچانو...... کہ:

اللہ تعالیٰ دے رہا ہے...... محمد مصطفیٰ ﷺ لے رہے ہیں:

اللہ تعالیٰ نے اپنے نبی ﷺ کو:

رسالت دی ...... نبوت دی
عزت دی ...... عظمت دی
رفعت دی ...... حکمت دی
محبوبیت دی ...... معصومیت دی

اور ایسا پیارا تعلق بیان فرمادیا...... کہ اے محبوب ﷺ
میں عطا کر رہا ہوں...... میں انکار کیوں کروں گا؟
...... تم لے رہے ہو...... اور تم انکار کیوں کروگے؟
یعنی یہ ایک تعلق ہے...... خدا اور مصطفیٰ ﷺ میں کہ خدا دے رہا ہے...... اور اس کا نبی لے رہا ہے...... اور ہمارا حال یہ ہے...... کہ:

اِدھر نبی دے رہا ہے...... ہم لے رہے ہیں

یعنی:

قرآن ہم نے ...... رسول اللہ ﷺ سے لیا
شریعت ہم نے ...... رسول اللہ ﷺ سے لی

طریقت ہم نے ......رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے لی
سنت ہم نے ......رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے لی
حکمت ہم نے ......رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے لی
علم ہم نے ......رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے لیا
''نماز'' ہم نے ......رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے لی
''روزہ'' ہم نے ......رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے لیا
''زکوٰۃ'' ہم نے ......رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے لیا
''حج'' ہم نے ......رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے لیا
''جہاد'' ہم نے ......رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے لیا
''سیرت'' ہم نے ......رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے لی
''اخلاق'' حسنہ ہم نے ......رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے لیا
''اسوہ'' حسنہ ہم نے ......رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے لیا
''احکامات'' ہم نے ......رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے لیے
''واجبات'' ہم نے ......رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے لیے
''قانون'' ہم نے ......رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے لیے
''ضابطہ'' ہم نے ......رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے لیے
''اصول'' زندگی ہم نے ......رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے لیے

میں بڑی بات کہنے والا ہوں...... انتہائی توجہ کرنا...... نبی صلی اللہ علیہ وسلم کی ذات پاک اللہ سے لے رہے ہیں...... اور مخلوق خدا کو دے رہے ہیں...... لیکن یہاں کہنے کی بات یہ ہے کہ نبی اپنے اللہ سے لے رہا ہے اور پھر بھی اللہ اپنے نبی کو دو

مرتبہ حرفِ ندا سے پکار رہا ہے......اور آج یہ امتی کیسا ہے کہ یہ سب کچھ نبی سے لے رہا ہے......اور پھر بھی نبی کو نہیں پکار رہا......؟

پھر بھی یا رسول اللہ ﷺ نہیں کہہ رہا؟
پھر بھی یا حبیب ﷺ نہیں کہہ رہا؟
پھر بھی یا نبی اللہ ﷺ نہیں کہہ رہا؟

## رسول ﷺ سے لینے کا طریقہ وسلیقہ:

دوستو!

اب سب سے پہلے میں یہاں ایک بات عرض کردوں کہ...... میں نے عرض کیا رسول اللہ ﷺ اللہ سے لیتے ہیں......اور بندوں کو دیتے ہیں......لیکن لینے کا بھی کوئی طریقہ وسلیقہ ہونا چاہئے

تو میں یہاں سب سے پہلے ایک مثال عرض کرتا ہوں بعد میں بھی یہ بتاؤں گا کہ رسول ﷺ سے لینے کا طریقہ وسلیقہ کیا ہے

## مثال:

لینے کے بھی بہت سارے طریقے ہوتے ہیں لیکن میں یہاں ایک مثال کے ذریعے سے اور مختلف لینے والوں کا ذکر کرتا ہوں

ایک تو لینے کا وہ طریقہ ہے کہ جو گناہ ہے اس میں ناجائز طریقے سے مال لیا جاتا......لیا بھی کیا جاتا ہے بلکہ لوٹا جاتا ہے

یعنی......دس یا پندرہ بندے اکٹھے ہوتے ہیں اور ایک سیٹھ کے گھر پر ڈاکہ ڈالتے ہیں اور وہاں کا سارا مال اپنے قبضے میں کر کے...... چھپتے اور چھپاتے ہوئے وہاں سے نکل جاتے ہیں کہ جہاں سے انہوں نے مال حاصل کیا ہوتا ہے

اور دوسرا طریقہ یہ ہے...... کہ ایک ضرورت مند آدمی کسی سیٹھ کے پاس گیا اور جا کر کہا سیٹھ صاحب...... السلام وعلیکم! اور سیٹھ آگے سے جواب دیتا ہے...... وعلیکم السلام جی کیسے آنا ہوا؟ کیا کام ہے؟

یعنی وہ ایک دو سوال ایسے کرتا ہے کہ جو سوال کرنا اس کا حق بنتا ہے...... کہ بھئی آپ کون ہو؟ کہاں سے آئے ہو؟ اور کیا چاہتے ہو؟ جب اس سیٹھ نے پوچھا...... بھئی تمہیں کیا کام ہے اور تم کس غرض سے آئے ہو؟ تو اس ضرورت مند آدمی نے جواب میں کہا۔

جناب سیٹھ صاحب میں بہت پریشان ہوں میری ایک جوان بیٹی ہے اس کی شادی کرنی ہے میرے پاس کچھ بھی نہیں ہے...... میں نے بہت کوشش کی لیکن کچھ بھی حاصل نہیں ہو سکا...... بہت مشکل سے اچھا رشتہ ملا تھا اور اگر اب میں وقت پر اپنی بیٹی کی شادی نہیں کرتا تو...... میری بہت زیادہ بے عزتی ہوگی...... برادری میں ناک کٹ جائے گی اور اگر میں اپنی بیٹی کو وقت پر بیاہ دوں تو عزت بچ جائے گی

رشتہ بچ جائے گا
رابطہ بچ جائے گا
نام رہ جائے گا

خیر! جب اس ضرورت مند آدمی نے اپنے حالات کی کہانی اس سیٹھ کو سنائی تو اس کو اس کی حالت پر ترس آگیا...... تو پھر اس سیٹھ نے کہا بابا تم پریشان کیوں ہوتے ہو؟ یہ لو دس ہزار روپے اور اپنی ضرورت پوری کر لو...... خیر وہ بندہ سیٹھ صاحب سے دس ہزار روپے لیکر اپنے گھر کی طرف جا رہا ہے...... اب وہ

ضرورت مند...... وہ حاجت مند...... دس ہزار روپے لیکر گھر کو جا رہا ہے اور راستے میں کہتا جا رہا ہے......

اے میرے اللہ ......اس سیٹھ کی خیر ہو
اے میرے اللہ ......اس سیٹھ کے بچوں کی خیر ہو
اے میرے اللہ ......اس سیٹھ کے کاروبار کی خبر ہو
اے میرے اللہ ......اس سیٹھ کے عزیزوں کی خیر ہو

یعنی وہ ضرورت مند آدمی روپیہ لینے کے بعد...... روپے کی تعریف نہیں کر رہا...... بلکہ وہ بار بار اس سیٹھ کو دعائیں دے رہا ہے...... وہ دس ہزار روپے جو سیٹھ صاحب نے دیئے...... وہ بھی تو بڑی چیز ہے...... لیکن وہ آدمی بار بار اس دینے والے کی خیر مانگ رہا ہے...... اس لئے کہ دینے والے نے:

اس کی عزت کا احساس کیا
اس کی ضرورت کا احساس کیا
اس کی پریشانی کو محسوس کیا
اس کی بے سرو سامانی کو محسوس کیا

تو اب لینے والے کی غیرت کا تقاضا ہے کہ وہ اس دینے والے کو دعائیں دے رہا ہے یعنی جب کسی سے مانگ کر لیا جائے گا...... تو پھر اس کے لئے دعائیں بھی کی جائیں گی...... کہ:

اللہ اس کو اچھا رکھے
اللہ اس کی آل کو اچھا رکھے

اللہ اس کے حال کو اچھا رکھے

اور دوسری طرف وہ جو ایک گروپ بنا کر کسی سیٹھ کے گھر میں ڈاکہ ڈال کر دولت اکٹھی کر کے لے جاتے ہیں...... تو وہ کبھی بھی سیٹھ کے لئے کلمۂ خیر نہیں کہتے...... بلکہ...... وہ مال لوٹ کر جاتے ہی ایک ایسی جگہ پر جاتے ہیں...... جو ان کا محفوظ ٹھکانہ ہو...... اور وہاں جا کر وہ حساب لگاتے ہیں کہ ہم کتنے آدمی تھے؟ اور لوٹی ہوئی رقم کتنی ہے؟ اور اس لوٹی ہوئی رقم کا تمام ڈاکوؤں میں کتنا کتنا حصہ آئے گا؟

یعنی سب کو اپنے اپنے حصے کی فکر ہے کوئی بھی ان میں سے سیٹھ صاحب کا نام تک نہیں لے رہا...... لیکن ایک آدمی نے ان میں سے سیٹھ کا ذکر کیا...... تو دوسرے تمام ڈاکو اس کو کہنے لگے...... کہ ارے چھوڑو! سیٹھ کو اس نے بس برباد ہونا تھا سو برباد ہو گیا۔

یعنی...... نتیجہ یہ نکلا کہ جو مال مانگ کر لیتا ہے...... وہ مال سے محبت نہیں کرتا بلکہ اس کے دینے والے سے محبت کرتا ہے

اور دوسری طرف جو مال کو لوٹ کے لے آئے...... وہ مال سے محبت کرتے ہیں مال دینے والے کا ذکر نہیں کرتے

میں یہاں بڑا جملہ کہنے والا ہوں کہ دونوں لینے والوں میں زمین و آسمان کا فرق ہے جو احسان مند ہے...... وہ:

دینے والے کا بھلا چاہ رہا ہے
دینے والے کی خیر مانگ رہا ہے
دینے والے کو دعا دے رہا ہے

تو میرے بھائیو! غور کرنا!

اسی طرح ہم نے بھی رسول ﷺ سے لیا ہے اور دوسروں نے بھی رسول ﷺ سے لیا ہے...... لیکن ہم اہلسنت و جماعت اپنے کریم کے احسان مند ہیں...... کہ:

یا رسول اللہ ﷺ...... آپ نے ہم کو شریعت دی ہے
یا رسول اللہ ﷺ...... آپ نے ہم کو طریقت دی ہے
یا رسول اللہ ﷺ...... آپ نے ہم کو معرفت دی ہے
یا رسول اللہ ﷺ...... آپ نے ہم کو شرافت دی ہے
یا رسول اللہ ﷺ...... آپ نے ہم کو صداقت دی ہے
یا رسول اللہ ﷺ...... آپ نے ہم کو عدالت دی ہے
یا رسول اللہ ﷺ...... آپ نے ہم کو علم دیا ہے
یا رسول اللہ ﷺ...... آپ نے ہم کو قانون دیا ہے
یا رسول اللہ ﷺ...... آپ نے ہم کو احکام دیئے ہیں
یا رسول اللہ ﷺ...... آپ نے ہم کو انعام دیئے ہیں

یعنی...... اس کریم نبی ﷺ نے ہم کو سینکڑوں جھوٹے معبودوں سے بچا کر...... ایک معبود حقیقی کی بارگاہ میں جھکا دیا ہے...... اس نے ہمیں لات ہُبل و عزّیٰ سے دور فرمایا اور ہمیں خالق حقیقی...... معبود حقیقی...... مالک حقیقی کی بارگاہ کے قریب کیا...... یہی وہ کریم ہیں کہ جنہوں نے دلوں کو کعبہ بنانے کا ڈھنگ سکھایا...... یہی وہ کریم ہیں کہ جنہوں نے سینہ کو مدینہ بنانے کا اصول دیا...... یہی وہ پیغمبر ہیں کہ جنہوں نے خدا کے نام پر زندگی کو قربان

کرنے کا حوصلہ دیا:

میرے دوستو!

اگر وہ سیٹھ پیسہ نہ دیتا تو ایک ضرورت مند دنیا میں رسوا ہو جاتا...... تو اگر مدینے والے کا کرم نہ ہوتا ہم آخرت میں رسوا ہو جاتے۔

تو اسی لئے...... میں کہتا ہوں کہ جیسے وہ ایک ضرورت مند مال لیکر بھی دینے والے کا احسان مند ہے...... اسی طرح سنی اپنے کریم نبی ﷺ سے سب کچھ لیکر نبی ﷺ کا نیاز مند ہے...... احسان مند ہے...... وہ ضرورت مند...... جس طرح سے سیٹھ کو دعائیں دے رہا تھا

سنی...... اسی طرح سے اپنے آقا ﷺ پر درود بھیجتا ہے...... وہ ضرورت مند...... جس طرح سیٹھ کی آل و اولاد کو دعائیں دے رہا تھا...... سنی اسی طرح اپنے آقا ﷺ کی آل کے لئے بلندیٔ درجات کی دعا کرتا ہے اور دوسری طرف وہ جو گروپ بنا کر لوٹنے گے تھے...... انہوں نے مال حاصل کیا...... غیر قانونی طریقے سے...... غیر اصولی طریقے سے

وہ مال کو تو اچھا کہتے ہیں...... لیکن دینے والے کے نیاز مند نہیں ہیں...... اسی طرح سنی اپنے آقا کا ہر حال میں نیاز مند ہے...... اور دوسرے سب کچھ لیکر بھی مال، یعنی، روزہ، نماز، حج اور جہاد کو تو اچھا کہہ رہے ہیں...... لیکن دینے والے میں عیب تلاش کر رہے ہیں دینے والے کو اپنے جیسا کہہ رہے ہیں...... یعنی دعاؤں سے دور بھاگ رہے ہیں...... اور سنی اپنی احسان مندی...... اور نیاز مندی کا اظہار یوں کر رہا ہے...... کہ:

مصطفیٰ جانِ رحمت پہ لاکھوں سلام
شمعِ بزمِ ہدایت پہ لاکھوں سلام

کیوں کہ ہمارا تعلق رہا مال سے بھی اور مال دینے والے سے بھی...... اور دوسری طرف ان لوگوں کا تعلق رہا صرف مال سے...... لیکن دینے والے سے نہیں:

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## اللہ نے جب سرکار کو یٰاَیُّھَا النَّبِیُّ کہا

میرے دوستو!

اب مجھے یہاں ایک اور نکتہ کی طرف آپ حضرات کی توجہ مبذول کروانی ہے...... کہ سوچو تو...... کہ جب اللہ تعالیٰ نے:

اپنے محبوب کو
اپنے پیارے کو
اپنے حبیب کو

یٰاَیُّھَا النَّبِیُّ کہا تو اس وقت نبی کہاں تھے؟ یقیناً جواب ہوگا...... کہ آپ ﷺ اس وقت زمین پر تھے...... یا پھر یوں کہہ لو...... کہ جب خدا نے میرے نبی ﷺ کو پکارا تو اس وقت نبی کہاں تھے؟...... یقیناً جواب بن آئے گا کہ مکاں میں تھے...... اور خدا لامکاں میں...... یعنی حقیقت یہ ہے کہ وہ ربِ لامکاں والا ہو کے...... مکاں والے کو پکار رہا...... اور تم مکان والے ہو کے مکاں والے کو نہیں پکارنے دیتے؟

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللہ
وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللہ

بس اب آپ حضرات توجہ سے نکات سنتے چلو! اللہ نے قرآن میں ارشاد فرمایا:

اَلنَّبِیُّ اَوْلٰی بِالْمُؤْمِنِیْنَ مِنْ اَنْفُسِھِمْ

یعنی...... قرآن اعلان کر رہا ہے...... اور رحمٰن کہہ رہا ہے...... کہ:

نبی مومنین کی جانوں سے بھی زیادہ قریب ہیں

بڑی توجہ فرمائیے گا!

## 1- نکتہ:

نبی مومنین کی جانوں سے بھی زیادہ قریب ہیں

تو یہاں پر سب سے پہلے یہ بات جاننا ضروری ٹھہرا کہ پتہ چلایا جائے کہ مومن سے جان کتنی قریب ہے؟

ایک صاحب کو میں نے پوچھا کہ بھئی آپ کی جان کہاں ہے؟ تو وہ جواب میں کہنے لگے...... بھئی ہاشمی میاں! میری جان جو ہے وہ میری ٹانگ میں ہے ...... تو میں نے پوچھا کہ جناب وہ کیسے؟

تو کہنے لگے کہ ایک مرتبہ راستے میں جاتے ہوئے مجھے ایک کانٹا چبھ گیا ...... تو بس اسی وقت میری جان نکل گئی...... اس دن سے مجھے معلوم ہوا کہ میری جان میری ٹانگ میں ہے...... تو میں نے کہا بھئی کوئی عقل کی بات کرو اگر تمہاری کانٹا چبھنے سے جان نکل گئی تو پھر تم زندہ کیسے ہو؟

اسی طرح کوئی کہتا ہے کہ میری جان میرے ہاتھوں میں ہے وہ اس لئے کہ ایک مرتبہ پھل کاٹتے ہوئے چھری میرے ہاتھ میں لگ گئی...... مجھے اس گھڑی بہت تکلیف ہوئی...... اتنی تکلیف ہوئی کہ میری جان نکل گی...... میں نے

پوچھا کہ بھئی اب تو آپ کے ہاتھ کا زخم بھی صحیح ہے اور آپ کی جان بھی میرے سامنے تو سلامت ہے...... لیکن ایک بات سمجھ میں نہیں آئی کہ جب چھری لگنے سے آپ کی جان نکل گئی تو پھر واپس کیسے آئی؟

بس میرا یہ کہنا تھا کہ وہ صاحب خاموش ہو گے...... اور کہنے لگے کہ یار میں نہیں جانتا کہ میری جان کہاں ہے؟

تو میں نے پھر کہا کہ اگر تمہیں آج تک یہ پتہ نہیں چل سکا کہ تمہاری جان کہاں ہے...... تو پھر وہ کیسے سمجھ میں آئے کہ جو جانوں سے بھی قریب ہے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

ہاں یہاں پر ایک بات انتہائی غور طلب ہے کہ نبی ﷺ تمام لوگوں کی جان سے قریب نہیں ہیں...... صرف مومنین کی جان کے قریب ہیں...... نہیں یقین تو آؤ پھر قرآن پڑھ کے دیکھ لو! اللہ نے فرمایا:

اَلنَّبِیُّ اَوْلٰی بِالْمُؤْمِنِیْنَ مِنْ اَنْفُسِھِمْ
نبی مومنین کی جانوں سے بھی قریب ہیں

اور غور کرنا یہ تفریق تمام انسانیت میں کی گئی...... کہ نبی صرف مومنین کی جانوں کے قریب ہیں...... یہ تفریق ملاں نے نہیں...... بلکہ......

یہ تفریق اللہ نے کی ہے
یہ تفریق مولوی نے نہیں کی

بلکہ!

یہ تفریق مولا نے کی ہے

یوں نہیں کہا گیا...... کہ

اَلنَّبِیُّ اَوْلٰی بِالنَّاسِ...... نہیں نہیں ایسا نہیں...... بلکہ فرمایا

اَلنَّبِیُّ اَوْلٰی بِالْمُؤْمِنِیْنَ مِنْ اَنْفُسِھِمْ

یعنی...... تمام لوگوں کے قریب نہیں...... بلکہ نبی تو مومنین کی جانوں سے بھی قریب ہیں...... تو اب اگر کوئی کہے کہ ’’یا‘‘ حرف ندا ہے...... اور یہ صرف قریب والے کے لئے ہے تو ان کے لئے جواب یہ ہے...... کہ قرآن تو ان کو جانوں سے بھی قریب کہہ رہا ہے...... تم نے کس طرح کی دوری ڈال رکھی ہے:

تو مجھے کہنے دیجئے...... کہ:

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللہ

وہی کہے گا کہ جس کا ایمان ہے کہ میرا نبی دور نہیں...... بلکہ مومنین کی جانوں سے بھی قریب ہے...... رب کعبہ کی قسم جب میرے رب نے...... اپنے نبی کو ہماری جانوں سے بھی قریب تر بنایا ہے تو دنیا کی کوئی طاقت نہیں کہ جو ہماری زبان سے

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللہ...... روک سکے

اس لئے کہ یہی ہمارا دین ہے...... قرآن کا دیا ہوا یقین ہے...... اور یہ یقین بھی ہر کسی کے لئے نہیں ہے...... بلکہ صرف لِلْمُؤْمِنِیْنَ ہے

مِنْ اَنْفُسِھِمْ ...... سے معلوم ہوا کہ وہ قریب ہے جان سے بھی

یعنی...... ہمارے لئے آقا ﷺ ’’حضور‘‘ ہیں...... اور لوگوں کے لئے دور ہیں...... تے قریب والے کو چاہئے کہ وہ کہے

یَا رَسُوْلَ اللہ ﷺ

یَا نَبِیَّ اللّٰہ ﷺ

یَا حَبِیْبَ اللّٰہ ﷺ

اور جس سے دور ہیں...... وہ بے شک نہ کہے......اس کا ذکر تو قرآن نے کیا ہی نہیں بلکہ قرآن نے تو......

اَلنَّبِیُّ اَوْلٰی بِالْمُؤْمِنِیْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ ......فرمایا ہے

## حکم اس کیلئے ہے جس کا لیا جائے:

میرے دوستو!

آیئے میں آپ کو یہاں ایک مثال کے ذریعے سے اسی بات کو پھر سے پیش کرتا ہوں...... تا کہ بات کو سمجھنے میں آسانی پیدا ہو جائے ......مثال کے طور پر اگر میں اس مائیک کے اندر جس میں ...... میں تقریر کر رہا ہوں...... اگر میں اسی مائیک میں کہوں کہ ''مجھے پانی دو''......تو کیا خیال ہے کتنے آدمی اٹھ کھڑے ہوں گے کہ بھئی ہاشمی میاں نے پانی مانگا ہے؟ یقینا سٹیج پر سے...... نیچے جلسہ گاہ میں سے...... آگے سے ...... اور پیچھے سے بہت سارے لوگ کھڑے ہو جائیں گے ...... اور اگر پوچھو کہ...... بھئی کیوں کھڑے ہوئے ہو؟......تو وہ سب کہیں گے کہ بھئی ہاشمی میاں نے پانی مانگا ہے...... اس لئے کھڑے ہوئے ہیں......یعنی اگر کسی ایک بندے کو ''نومی نیٹ'' نہیں کیا جائے گا......تو بہت سارے یہی سمجھیں گے کہ ہاشمی میاں نے یہ پانی لانے کا ہمیں ہی کہا ہے......اور اس کے برعکس اگر میں یہ سامنے موجود قاری صاحب کا نام لیکر کہوں کہ قاری صاحب مہربانی فرمایئے اور مجھے ایک گلاس پانی تو دیجئے......تو پھر صرف اتنے بڑے مجمع سے صرف قبلہ

قاری صاحب ہی اٹھیں گے ...... یعنی نتیجہ یہ نکلا کہ اگر کسی خاص طبقے کو یا خاص افراد کو مخاطب کر کے کوئی کام نہ کہا جائے تو سب ہی اس کام میں شریک ہو جاتے ہیں ...... لیکن جب نام لیکر کسی خاص فرد کو یا کسی خاص طبقے کو کوئی کام کہا جاتا ہے تو پھر اس سے مراد وہی ہوتا ہے جس کا نام لیکر مخاطب کیا جاتا ہے ...... اب دوسرے کو اس میں آنے کی گنجائش نہیں ہوتی ...... اللہ تعالیٰ نے بھی صرف مومنین کا ذکر فرمایا ...... یَآاَیُّھَا النَّاسُ ...... نہیں فرمایا ...... اس لئے کہ سب ہی اس میں شریک نہ ہو جائیں ...... بلکہ اس میں اگر شریک ہوں تو بس میرے محبوب کی واللیل کی زلفوں کے اسیر ہی شامل ہوں ...... یعنی اللہ تعالیٰ نے فرمایا:

اَلنَّبِیُّ اَوْلٰی بِالْمُؤْمِنِیْنَ مِنْ اَنْفُسِھِمْ

یعنی ...... نبی صرف مومنین کی جانوں کے قریب ہیں

اب جن کی جانوں کے قریب ہیں ...... وہی جان سے زیادہ قریب جانتے ہوئے کہہ رہے ہیں ......:

یَا رَسُوْلَ اللّٰہ ﷺ
یَا نَبِیَّ اللّٰہ ﷺ
یَا حَبِیْبَ اللّٰہ ﷺ

## منفرد عظمت کے حامل محمد ﷺ

میرے دوستو!

ابھی میں نے ایک مثال کے ذریعے سے مسئلہ کا رخ آپ حضرات کے سامنے پیش کیا اب آؤ ...... اسی مثال سے اب مسئلے کا دوسرا رخ آپ کے

سامنے پیش کرتا ہوں...... کہ جب کسی کو کسی کام کے متعلق کہا جائے اور ''نومی نیٹ'' نہ کیا جائے تو سب ہی وہ کام کرنے میں شریک ہو جاتے ہیں...... اور جب اس کے برعکس کیا...... یعنی خاص طبقہ کو پکار کر کوئی کام کہہ دیا تو وہ لاکھوں اور ہزاروں میں:

سب سے جدا
سب سے منفرد
سب سے خاص...... سب سے الگ تھلگ ہو جاتا ہے

اسی طرح جب میرے خالق نے اپنے محبوب کو یٰاَیُّهَا النَّبِیُّ کہہ کر پکار دیا ......تو پھر میرے نبی لاکھوں ہزاروں نبیوں میں سے:

سب سے جدا شان والے ہو گئے
سب سے خاص عظمت والے ہو گے
سب سے منفرد مقام والے ہو گے
سب سے الگ عزت والے ہو گے

تو پھر پتہ چلا کہ ''یٰاَیُّهَا النَّبِیُّ'' دو مرتبہ حرف ندا استعمال فرما کر اللہ تعالیٰ نے اپنے محبوب ﷺ کو فرمایا کہ ''اے منفرد شان والے نبی (ﷺ) اب کوئی بندہ کہہ سکتا ہے...... کہ ہاشمی میاں تم جو یٰاَیُّهَا النَّبِیُّ سے اپنے نبی کا منفرد اور خاص شان والا ہونا بیان کر رہے ہو...... قرآن کے اندر تو اللہ تعالیٰ نے مومنوں کے لئے بھی...... یٰاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا کا لفظ استعمال فرمایا ہے...... اب کیا مومنین بھی خاص شان والے اور منفرد ہو گئے ہیں؟

میں نے کہا ارے بھائی تم نے اس مفہوم کی جامعیت کو سمجھا ہی نہیں اگر اس

کی صحیح سمجھ آجاتی تو پھر تم یہ اعتراض نہ کرتے......لیکن آؤ میں وضاحت کیے دیتا ہوں! دیکھو!

جو حضرت سیدنا آدم علیہ السلام پر ایمان لائے ......وہ بھی مومن
جو حضرت سیدنا نوح علیہ السلام پر ایمان لائے ......وہ بھی مومن
جو حضرت سیدنا یونس علیہ السلام پر ایمان لائے ......وہ بھی مومن
جو حضرت سیدنا صالح علیہ السلام پر ایمان لائے ......وہ بھی مومن
جو حضرت سیدنا شعیب علیہ السلام پر ایمان لائے ......وہ بھی مومن
جو حضرت سیدنا ابراہیم علیہ السلام پر ایمان لائے ......وہ بھی مومن
جو حضرت سیدنا اسماعیل علیہ السلام پر ایمان لائے ......وہ بھی مومن
جو حضرت سیدنا اسحاق علیہ السلام پر ایمان لائے ......وہ بھی مومن
جو حضرت سیدنا یعقوب علیہ السلام پر ایمان لائے ......وہ بھی مومن
جو حضرت سیدنا یوسف علیہ السلام پر ایمان لائے ......وہ بھی مومن
جو حضرت سیدنا ہود علیہ السلام پر ایمان لائے ......وہ بھی مومن
جو حضرت سیدنا موسیٰ علیہ السلام پر ایمان لائے ......وہ بھی مومن
جو حضرت سیدنا عیسیٰ علیہ السلام پر ایمان لائے ......وہ بھی مومن

اللہ تعالیٰ نے خود ہی فیصلہ فرما دیا......کہ آدم سے لیکر عیسیٰ علیہ السلام تک تمام نبیوں اور رسولوں پر ایمان لانے والے مومنوں تم اپنے اپنے نبیوں پر ایمان لائے اس لئے تم بھی مومن......لیکن کُنْتُمْ خَیْرَ اُمَّۃٍ سے اعلان فرما دیا......کہ:

میرے محبوب صلی اللہ علیہ وسلم پر ایمان لانے والے مومن......لاجواب ہیں......بے مثال ہیں......منفرد ہیں......معتبر ہیں:

نبی پر ایمان لائے...... اس وجہ سے میرے محبوب ﷺ پر ایمان لانے والے مومن بھی:

خاص مومن ہیں
منفرد مومن ہیں
بے مثال مومن ہیں
لاجواب مومن ہیں

اس لئے تو تمہارے نبی کو دو مرتبہ حرف ندا یعنی ''یا'' اور ایُّ سے پکار رہا ہوں:

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

ہاں! ہاں! میرے ذہن میں الحمد اللہ ساری باتیں ہیں...... کہ کوئی اس پر پھر ایک اور اعتراض کرسکتا ہے...... کہ اللہ تعالیٰ نے قرآن پاک میں تو کافروں کو بھی ...... کہا ہے یٰۤاَیُّھَا الْکٰفِرُوْنَ...... اس میں انفرادیت کیسے ہوئی؟

یعنی اگر ہم کہیں کہ اللہ تعالیٰ نے قرآن میں یٰۤاَیُّھَا النَّبِیُّ ...... فرما کر میرے نبی کی انفرادیت اور بے مثلیت کو ظاہر فرمایا ہے ...... اور یٰۤاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا...... فرما کر میرے نبی کو ماننے والوں کی انفرادی شان کو بیان فرمایا ہے...... تو کوئی بھی کہہ سکتا ہے...... اے ہاشمی میاں...... اللہ تعالیٰ نے تو کافروں کو بھی یٰۤاَیُّھَا الْکٰفِرُوْنَ کہا ہے؟...... تو آؤ اس کا جواب بھی سن لو!

اللہ تعالیٰ نے انسانیت کی رشد و ہدایت کے لئے جتنے بھی انبیاء و

رسل مبعوث فرمائے ...... ان سب کا انکار کرنے والے بھی کافر ہیں ...... اور محمد مصطفیٰ ﷺ کا انکار کرنے والے بھی کافر ہیں ...... ہاں! ہاں! قرآن کہہ رہا ہے:

قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ...... یعنی قرآن میں کافروں کو بھی "یا" اور اَیُّ سے پکارا گیا ہے ...... دیکھئے!

جنہوں نے آدم علیہ السلام کا انکار کیا ...... وہ بھی کافر
جنہوں نے نوح علیہ السلام کا انکار کیا ...... وہ بھی کافر

اور!

جنہوں نے صالح علیہ السلام کا انکار کیا ...... وہ بھی کافر
جنہوں نے ابراہیم علیہ السلام کا انکار کیا ...... وہ بھی کافر
جنہوں نے اسماعیل علیہ السلام کا انکار کیا ...... وہ بھی کافر
جنہوں نے موسیٰ علیہ السلام کا انکار کیا ...... وہ بھی کافر
جنہوں نے عیسیٰ علیہ السلام کا انکار کیا ...... وہ بھی کافر

لیکن انہوں نے انبیاء کا انکار کیا ...... تو وہ کافر ہوئے ...... لیکن انہوں نے نبیٔ خدا کا انکار بھی کیا اور محبوب خدا کا انکار بھی کیا ...... ان کو اس لئے فرمایا:

قُلْ ...... اے محبوب آپ فرمادیجئے
یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ...... اے کافرو!
یعنی!

انہوں نے لاجواب نبی ﷺ کا انکار کیا ہے

انہوں نے بے مثال نبی ﷺ کا انکار کیا ہے
انہوں نے خاص نبی ﷺ کا انکار کیا ہے
انہوں نے محبوب نبی ﷺ کا انکار کیا ہے
انہوں نے پیارے نبی ﷺ کا انکار کیا ہے
انہون نے لاڈلے نبی ﷺ کا انکار کیا ہے

سابقہ تمام کافروں کا کفر ایک طرف...... محمد عربی ﷺ کی ذات کا انکار کرنے والے کافروں پر وعید خاص ہے

لعنت خاص ہے
عذاب خاص ہے
پکڑ خاص ہے

اس لئے کہ انہوں نے لاجواب اور بے مثال نبی اور محبوب ﷺ کا انکار کیا ہے تو اس لئے یہ کفاران سابقہ کافروں کی طرح نہیں بلکہ یہ سب سے بڑے کافر ہیں......

ان کی کفر میں انفرادیت ہے
ان کی کفر میں خاصیت ہے
ان کی کفر میں بے مثلیت ہے

## لفظ ''نبی'' کا معنیٰ ومفہوم:

تو اب آیئے پھر اسی آیت مبارکہ کی وضاحت کی طرف کہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا یٰاَیُّھَا النَّبِیُّ...... تو جب سے تقریر شروع ہوئی...... اس وقت سے لیکر اب تک تو یٰاَیُّھَا پر بات ہو رہی تھی...... لیکن اب آیئے لفظ اَلنَّبِیُّ پر بات کرتے

ہیں...... اس کے متعلق جب سے میں نے ہوش سنبھالا ہے...... بہت سارے ترجمے پڑھنے کو ملے...... مثلاً ایک ترجمہ امام اہلسنت و امام عاشقاں امام احمد رضا خاں بریلوی رحمۃ اللہ علیہ کا ترجمہ قرآن...... بنام ''کنز الایمان'' ہے اور پھر اس کے بعد محدث اعظم ہند...... سید محمد اشرف جیلانی رحمۃ اللہ علیہ کا ترجمہ قرآن ...... بنام ''معارف القرآن'' ہے...... اور بھی ان جیسے دوسرے سنی بزرگوں کے تراجم میں نے پڑھے لیکن کچھ قرآن پاک میں نے ایسے بھی ترجمے والے دیکھے ہیں...... کہ:

ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ ...... سے لیکر مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاس تک پورے قرآن کا ترجمہ کر دیا...... حیرت کی بات ہے...... کہ لفظ ''نبی'' کا ترجمہ انہوں نے نہیں کیا...... جہاں جہاں لفظ نبی آیا ہے...... مولوی صاحب وہاں وہاں خاموشی سے آگے گزر گے...... لیکن میں حیران ہوا...... کہ کیا ان کو لفظ ''نبی'' کا ترجمہ نہیں آتا؟

اگر لفظ ''نبی'' کا ترجمہ نہیں آتا ......تو پھر قرآن کی تفسیر کیسے کرو گے؟
اگر لفظ ''نبی'' کا ترجمہ نہیں آتا ......تو پھر قرآن سے تقریر کیسے کرو گے؟
اگر لفظ ''نبی'' کا ترجمہ نہیں آتا ......تو پھر قرآن دانی کیسے کرو گے؟
اگر لفظ ''نبی'' کا ترجمہ نہیں آتا ......تو پھر قرآن کی ترجمانی کیسے کرو گے؟

میرے بزرگو دوستو!

تو آیئے آج کی اس عظیم الشان کانفرنس میں...... میں

امام احمد رضا خاں رحمۃ اللہ علیہ کا ترجمہ پیش نہیں کروں گا
غزالیٔ زماں علامہ احمد سعید کاظمی رحمۃ اللہ علیہ کا ترجمہ پیش نہیں کروں گا

محدث کچھوچھوی رحمۃ اللہ علیہ کا ترجمہ پیش نہیں کروں گا

محدث اعظم مولا سردار احمد صاحب رحمۃ اللہ علیہ کا ترجمہ پیش نہیں کروں گا

حکیم الامت مولانا نعیم الدین مراد آبادی رحمۃ اللہ علیہ کا ترجمہ پیش نہیں کروں گا

بلکہ...... آج کی اس کانفرنس میں...... ہاشمی میاں...... ابو جہل کی نظر میں ''نبی'' کسے کہتے ہیں یہی بیان کرے گا...... بس میں آج کسی صحابی...... یا تابعی...... کسی مفسر...... یا محدث

کسی فقیہی...... یا کسی مفتی...... کسی معلم...... یا کسی متعلم...... کا کوئی قول اب اس حوالے سے پیش نہیں کروں گا...... بلکہ لفظ ''نبی'' کا معنی و مفہوم سمجھانے کیلئے اسلام کے سب سے بڑے دشمن ابو جہل کا نظریہ آپ کو سناؤں گا

ایک لمحے کے لئے تو آپ کو حیرانی ضرور ہوگی کہ ہاشمی میاں یہ کیا بول رہا ہے؟...... آج وقت ہے ایک ہو جانے کا...... آج وقت ہے اختلافات کا دروازہ بند کر کے آقا صلی اللہ علیہ وسلم کی رحمت والی چادر میں پناہ لینے کا...... اس لئے...... کہ

کس چیز کی کمی ہے آقا تیری گلی میں
دنیا تیری گلی میں عقبیٰ تیری گلی میں

خیر دوستو!

جو بات اب میں آپ حضرات کے سامنے پیش کرنے والا ہوں...... وہ کوئی نئی بات نہیں ہے...... مسلمان کے بچے بچے کو یہ واقعہ یاد ہے...... ہر سنی خطیب کو یہ روایت ازبر ہے...... اس میں کوئی مشکل بات نہیں ہے...... لیکن میں آج اس کو اپنے انداز سے پیش کرتا ہوں...... اور اسی واقعہ سے آپ کے سامنے میں لفظ ''نبی'' کا معنیٰ ...... ابو جہل کی زبان سے آپ کے سامنے پیش کرتا ہے...... تو

**آیئے سنیئے**

ایک دن ابو جہل نے اپنے ہاتھ میں چند کنکریاں...... اپنی مرضی سے اٹھائیں۔

اپنی مرضی کی جگہ سے اٹھائیں اپنی مرضی کے وقت میں اٹھائیں...... اپنی مرضی کے رنگ کی اٹھائیں...... اور ان کنکریوں کو اپنے ہاتھ میں لیکر...... نبی اکرم ﷺ کی بارگاہ بندہ نواز میں حاضر ہوا...... اب بڑی توجہ سے اگلی گفتگو سننا کہ اسلام کا سب سے بڑا دشمن آقا ﷺ کی بارگاہ اقدس میں حاضر ہوا...... اور کہنے لگا...... اے محمد (ﷺ)

اگر آپ سچے نبی ہو تو پھر بتاؤ کہ میری مٹھی میں کیا چیز ہے؟

سرکار ﷺ نے آگے سے جواب دیا کہ...... اگر وہ چیز خود ہی بتا دے کہ جو تیری مٹھی میں بند ہے تو پھر؟

یہ سن کر ابو جہل خوش ہوا اور کہنے لگا کہ یہ تو اور مشکل ہے یہ تو میرے سوال کے مقاصد میں اور بہتر ہے کہ وہ چیز خود بتائے کہ آپ کون ہیں؟

تو بس...... میرے نبی ﷺ نے توجہ کر دیا...... تو بند مٹھی میں کنکریوں نے کلمہ پڑھ لیا یہ کنکریوں کے کلمے کی آواز سنتے ہی ابو جہل بوکھلا گیا کہ ارے جس کو میں لایا وہ بھی اس کا ہو گیا؟

حضرات سامعین آپ نے یہ واقعہ اکثر مرتبہ سنا ہوگا...... اور ہمارے خطباء حضرات اس واقعہ کو اپنے زور خطابت اور اپنے حسن تقریر سے بہت ہی اچھے انداز میں پیش کرتے ہیں

## 2- نکتہ:

اگر کوئی آپ کے پنڈال میں باہر سے ایک شخص آئے اور اس نے اپنی مٹھی بند کی ہو اور وہ آ کر آپ کو کہے کہ بتاؤ...... میری بند مٹھی میں کیا ہے؟ تو آپ کو کیا معلوم کہ کیا ہے؟...... ہو سکتا ہے کہ اس کی مٹھی خالی ہو لیکن اگر وہ آپ سے سوال کرے تو آپ یہ نہیں کہہ سکتے کہ تمہاری مٹھی تو خالی ہے...... یا یہ نہیں کہہ سکتے کہ تمہاری مٹھی میں تو فلاں چیز ہے...... نہیں ...... بلکہ آپ اس سوچ میں پڑھ جاؤ گے...... کہ اس میں کیا ہو سکتا ہے؟ یعنی کسی کے علم کا امتحان لینے کے لئے یہ ضروری نہیں کہ آپ کی بند مٹھی میں کوئی چیز ہو...... مثلاً

آپ کسی جوہری کے پاس مٹھی بند کر کے جاؤ...... اور سوال کرو گے اے جوہری صاحب بتاؤ تو میری بند مٹھی میں کیا ہے؟

تو آپ پھر اس کو بتا دو کہ بھئی میری بند مٹھی میں......

ہیرا ہے
نیلم ہے
زرقون ہے
عقیق ہے
یاقوت ہے
مرجان ہے

اب تم بتاؤ کہ میری بند مٹھی میں یہ جو نگینہ ہے یہ اصلی ہے یا نقلی ہے...... تو وہ جوہری فوراً آگے سے کہے گا...... ارے بھائی مجھے اس کی کوالٹی تو تبھی معلوم ہو گی

کہ جب میں اس کو دیکھوں گا...... اس کو ٹیسٹ مشین کے ذریعے سے چیک کروں گا تو پھر ہی بتا سکوں گا...... کہ یہ پتھر اصلی ہے یا نقلی ہے...... مٹھی تو نے بند کر رکھی ہے...... اور پوچھ رہے ہو کہ بتاؤ بھئی یہ اصلی ہے یا نقلی ہے...... بھلا ایسے میں کیسے بتا سکتا ہوں؟

تو جناب ثابت یہ ہوا کہ جب کسی عام انسان کا امتحان لیا جائیگا...... یا کسی عام بشر کا امتحان لیا جائے گا...... تو مٹھی بند کر کے نہیں لیا جائیگا...... بلکہ مٹھی کھول کر کے امتحان لیا جائیگا...... یہاں پر ایک نکتہ یاد رکھنا ہے...... کہ:

## کافر بھی علم غیب کو مانتا ہے:

یہ بات تو اسلام کا دشمن ابو جہل بھی جانتا ہے کہ جب کسی عام بندے کا امتحان لیا جائے گا تو مٹھی کھول کر کے لیا جائے گا...... اس لئے کہ وہ عام بندہ تو غیب نہیں جانتا...... لیکن جب ''نبی'' کا امتحان لیا جائے گا تو مٹھی کھول کر نہیں بلکہ مٹھی بند کر کے امتحان لیا جائے گا...... اس لئے کہ جو ''نبی'' ہوتا ہے وہ غیب جانتا ہے'' اس لئے اس نے مٹھی کو کھولا نہیں بلکہ بند کر کے لایا ہے...... کہ اگر سچے نبی ہیں تو پھر ان کو معلوم ہوگا کہ میری مٹھی میں کیا ہے؟...... اسی لئے تو بند مٹھی نبی کے سامنے کر کے پوچھ رہا تھا کہ اس میں کیا ہے؟

یعنی ابو جہل بھی جانتا ہے کہ جو ''نبی'' ہوتا ہے اس کو مٹھی کھول کر دکھانے کی ضرورت نہیں ہوتی...... بلکہ نبی کو غیب کی خبر ہوتی ہے...... اسی وجہ سے تو مٹھی بند کر کے پوچھ رہا ہے کہ میری بند مٹھی میں کیا چیز ہے؟

اور ''نبی'' آگے سے یہ نہیں فرماتے کہ مٹھی کھول کر دکھا پھر میں تم کو اس کی

کو الٹی بتاؤں...... بلکہ نبی ﷺ نے توجہ کر دیا...... تو بند مٹھی میں موجود کنکریوں نے کلمہ پڑھ لیا...... سبحان اللہ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## 3- نکتہ!

یعنی جب بازار میں کسی جوہری کو امتحان میں ڈالے گا یا کو الٹی پوچھے گا تو چیز دکھانا ہو گا...... یعنی بند مٹھی کو کھولنا ہو گا...... اور یاد رکھو بند مٹھی کو کھول کر چیز کو دیکھ کر بتانا یہ جوہری کا کام ہے...... دیکھ کر بتانا یہ مولوی کا کام ہے...... اور بند مٹھی میں موجود چیز کے متعلق بتانا یہ نبی کا کام ہے...... آؤ اس پر ایک اور نکتہ پیش کرتا ہوں کہ ابھی تھوڑی دیر پہلے میں نے آپ سے کہا کہ اگر کوئی بندہ باہر سے آ کر یہ پوچھے کہ بھئی بتاؤ میری بند مٹھی میں کیا ہے؟

تو آپ کو یہ خیال گزرے گا ہو سکتا ہے...... کہ اس کی مٹھی خالی ہے اور یہ ویسے ہی ہمیں امتحان میں ڈال رہا ہے...... یہ بات آپ کیوں کہیں گے؟ صرف اس لئے کہ آپ کو پتہ نہیں کہ یہ خالی ہے کہ اس میں کچھ ہے...... لیکن قربان جاؤں...... اپنے غیب دان نبی ﷺ کے علم نبوت پر کہ جب آپ کو ابوجہل نے آ کر یہ پوچھا کہ آپ بتاؤ کہ میری بند مٹھی میں کیا ہے؟ تو یہ خیال نبی ﷺ کو نہیں گزرا کہ ہو سکتا ہے کہ اس کی مٹھی خالی ہو...... اس میں کوئی چیز نہ ہو اور یہ ویسے ہی مجھے امتحان میں ڈال رہا ہو...... نہیں نہیں ایسی کوئی بات میرے نبی ﷺ نے نہیں کہی...... ادھر ابوجہل نے سوال کیا...... ادھر سرکار ﷺ نے فرما دیا کہ اگر تمہاری بند مٹھی والی چیز ہی بتا دے تو پھر؟...... یعنی نبی ﷺ یہ غیب بھی جانتے ہیں کہ ابوجہل کی مٹھی خالی نہیں ہے...... اس

میں کچھ ہے...... (سبحان اللہ)

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

## 4- نکتہ!

یہاں ایک بات اور پتے کی کہنا چاہتا ہوں...... کہ جب ابو جہل نے نبی ﷺ سے اپنی مٹھی میں بند چیز کے متعلق سوال کیا تو جب رسول ﷺ نے فرما دیا...... کہ اگر تمہاری مٹھی میں بند چیز خود بتا دے کہ میں کون ہوں تو پھر؟...... یعنی اگر ابو جہل کو عقل ہوتی تو وہ یہیں سے سمجھ جاتا کہ جس رسول کو یہ پتہ ہے کہ میری مٹھی خالی نہیں ہے...... تو یہ ہستی وہ بھی جانتی ہے کہ جو چیز میری مٹھی میں بند ہے...... اس لئے...... کہ:

خدا جب دین لیتا ہے
تو عقلیں چھین لیتا ہے

آؤ! میں اس پر بھی ایک نکتہ پیش کئے دیتا ہوں...... کہ اگر ایک صندوق باہر سے لایا جائے تو آپ سے پوچھا جائے کہ اندر کون ہے......؟ تو آپ نہیں بتا سکیں گے اس لئے کہ آپ کے لئے وہ صندوق میں بند چیز ''غیب'' ہے اور اگر اس صندوق میں موجود چیز کو پوچھا جائے کہ باہر کون ہے تو وہ کیا جانے کہ باہر کون ہے؟ اس لئے کہ باہر والے کے لئے اندر والی چیز غیب ہے اور اندر والی چیز کیلئے باہر موجود لوگ ''غیب'' ہیں

میں پوری ذمہ داری سے آپ سے یہ سوال کرتا ہوں...... کہ جب ابو جہل نے مٹھی میں بند چیز کے متعلق سوال کیا تو آقا ﷺ نے اپنے علم نبوت

سے بتادیا کہ تمہارا ہاتھ خالی نہیں......اور اگر وہ چیز جو مٹھی میں بند ہے اگر وہ خود بتا دے تو پھر؟......ابھی آپ نے سنا کہ نبی ﷺ کے لئے وہ مٹھی میں بند چیز ''غیب'' ہے اور مٹھی میں بند چیز کے لئے باہر والے ''غیب'' ہیں......لیکن جب نبی ﷺ کی توجہ ہوئی تو......وہ کنکریاں رسالت کی گواہی دینے لگیں تو بتاؤ کہ ان کو کس نے بتایا کہ باہر کون ہے؟

ارے جس نبی کے اشارے اور توجہ سے بے جان کنکریوں کو یہ معلوم ہو گیا کہ میرے باہر اللہ کا نبی ہے......اور اس کی رسالت کی گواہی دینی ہے......تو جس نبی کی توجہ سے بے جان کنکریوں کو غیب کا پتہ چل جائے اس نبی ﷺ کے اپنے علم غیب کی انتہا کیا ہوگی؟

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## 5- نکتہ!

ابھی آپ نے ایک نکتہ سماعت فرمایا...... کہ جب غیب دان نبی ﷺ کی توجہ ہو گی تو پھر اس بند مٹھی میں موجود بے جان کنکریوں کو بھی ''غیب'' معلوم ہو گیا...... کہ باہر کون ہے؟ ہاں! بھئی معلوم ہوا تو گواہی دی تھی

اب اس کے بعد ایک اور نکتہ پیش خدمت ہے کہ جو چیز کوئی خرید کے لایا ہو ظاہر ہے اپنی پسند کی چیز لائے گا......اور آ کے خود ہی بتائے گا اور وہ ابوجہل جو کنکریاں اپنی مرضی سے......تعداد بھی اپنی مرضی سے گن کے لایا اور چن کے لایا

اب وہ کنکریاں کہ جن کو ابوجہل لیکر آیا...... جو ابوجہل کا انتخاب تھا وہ بے

جان ہو کر جانتی ہیں...... کہ مٹھی کے باہر کون ہیں

یعنی ابوجہل کا انتخاب کنکریاں اور وہ بھی نبی ﷺ کی توجہ سے غیب جاننے لگیں...... تو ابوجہل کے انتخاب کے علم کو تو مان لیا...... بے جان کنکریوں کی گواہی کو تو مان لیا...... لیکن قربان جاؤں! جس ہستی کو خدا نے نبی بنا کر بھیجا ہو...... رحمت کی جان بنا کر بھیجا ہو...... اور سب سے بڑی بات کہ جو خود اپنے خدا کا انتخاب ہو اس کے علم ''غیب'' کی شان کیا ہوگی؟

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## 6- نکتہ!

آؤ یہاں پر اسی حوالے سے ایک اور نیا نکتہ پیش کرتے ہیں...... سماعت فرمائیے...... کہ قرآن حضرت سیدنا عیسیٰ علیہ السلام کی شان مسیحائی کے متعلق ارشاد فرماتا ہے...... کہ:

وَاُحْیِ الْمَوْتٰی بِاِذْنِ اللّٰہِ

اور وہ مردوں کو زندہ کرتے اللہ کے حکم سے

میرے بھائیو!

حضرت سیدنا عیسیٰ علیہ السلام کی شان پر ''ہاشمی میاں'' کے ماں باپ قربان ہوں...... قرآن ان کے ایک بے مثال معجزے کا ذکر فرما رہا ہے...... کہ وہ اللہ کے حکم سے مردوں کو زندہ کرتے تھے

. اب زندہ کرنا کیا ہے؟ یعنی وہ بندہ جس میں پہلے روح موجود تھی...... پہلے جان موجود تھی...... پہلے سانسیں موجود تھیں...... پہلے حرکت کی طاقت موجود تھی...... حضرت عزرائیل علیہ السلام ''ملک الموت'' آئے اور روح نکال کر لے گئے

تو پھر حضرت عیسیٰ علیہ السلام نے وہ مردہ جب زندہ کیا تو اس میں وہ پہلے والی روح لٹائی گی...... یعنی وہی روح اللہ کے اذن سے...... اللہ کی مرضی سے...... اللہ کے حکم سے...... اس مردے میں واپس ڈالی جاتی تو وہ مردہ زندہ ہو جاتا...... یعنی سمجھنے کی بات یہ ہے کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام اس مردے میں کوئی نئی روح نہیں ڈالتے تھے صرف وہی پہلے والی روح ہی اس مردے کے جسم میں لٹا دی جاتی اور وہ اللہ کے حکم سے کھڑا ہو جاتا...... زندہ ہو جاتا...... بولنے لگتا...... دیکھنے لگتا...... پہنچاننے لگتا

## جس طرف نگاہ اٹھی عدم میں دم آ گیا:

لیکن قربان جاؤں! کائنات کے والی آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی عظمت وشان پر:

پتھروں میں کوئی روح نہیں ہوتی
پتھروں میں کوئی جان نہیں ہوتی
پتھروں میں قوت گویائی نہیں ہوتی
پتھروں میں قوت گواہی نہیں ہوتی

تو میرے نبی صلی اللہ علیہ وسلم کی توجہ خاص سے بے جان کنکریوں میں بھی جان آ گئی...... جن میں پہلے جان کا تصور بھی نہیں تھا...... ارے جس ہستی کے اشارے سے بے جان چیز کو جان کی دولت...... گویائی کی طاقت

گواہی کی قوت...... مل جائے اس ہستی کی اپنی عظمت کا معیار کیا ہوگا؟

## 7- نکتہ!

دیکھو جب ایک بے جان جس کو بولنے کی طاقت نہیں...... پہچاننے کا شعور نہیں...... اپنا حال معلوم نہیں کوئی غرور نہیں...... تو جب اس پر نگاہ نبوت کا لطف

کرم ہو جائے تو وہ جاندار ہو جائے...... وفادار ہو جائے...... رسالت کی گواہی کی دعویدار ہو جائے...... ارے جس کریم نبی ﷺ کی نظر اگر بے جان پر پڑھ جائے تو وہ تمام پتھروں میں منفرد ہو جائے...... تو پھر اگر اس کریم نبی ﷺ کی نظر کسی جان والے پر ہو جائے...... کسی مسلمان پر ہو جائے...... کسی انسان پر ہو جائے...... تو اس کی انفرادی شان کا معیار کیا ہوگا؟

ارے جس کریم نبی ﷺ کی نگاہ کرم سے "حجر" سنور رہے ہیں اس کریم نبی ﷺ کی نگاہ کرم سے "بشر" کیوں نہیں سنور سکتے؟

## 8- نکتہ!

یہ مقام سیدنا عیسیٰ علیہ السلام ہے کہ جس مردے سے روح نکل چکی تھی...... اس میں اللہ کے حکم سے وہی روح دوبارہ داخل کر دی گی اور یہ مقام مصطفیٰ ﷺ ہے کہ جس میں پہلے کبھی جان نہیں رہی...... اس بے جان میں نگاہ نبوت کی برکت سے پہلی مرتبہ جان داخل کی گئی...... اور ایک بات اس حوالے سے اور سنو...... کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام اگر اللہ کے حکم سے جان داخل کرتے تو وہ انسانوں یا پرندوں میں داخل کرتے...... اب آپ ذرا غور فرمائیے کہ انسان بھی جاندار ہیں اور پرندے بھی جاندار ہیں جب ان میں روح لٹائی جائے گی تو یہ کوئی نئی بات نہ ہوگی...... یعنی ایک مرتبہ جان نکل جانے کے بعد دوبارہ جان کا لٹایا جانا حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا بے مثال معجزہ تو ہے...... لیکن ان کی پچھلی حالت بھی اسی جان کے ساتھ تھی لیکن جب مرنے کے بعد پھر اللہ کے حکم سے ان مردوں کو زندہ کیا گیا تو یہ وہی پرانی روح یعنی پہلے والی روح ہی ان مردوں میں لٹائی گئی......

یعنی ان کو پھر سے جاندار بنایا گیا...... جو پہلے بھی جاندار تھے...... لیکن قربان جاؤں! اپنے نبی ﷺ کی عظمتوں پر کہ ان کی نگاہِ کرم سے اس بے جان میں نئی جان داخل کی گئی کہ جس میں پہلے کبھی جان رہی ہی نہیں...... بلکہ بشر میں پہلے جان کا تصور ہوسکتا ہے لیکن ''حجر'' کے لئے پہلے جان کا تصور نہیں کیا جاسکتا...... اس لئے کہ وہ بے جان پتھر ہے...... لیکن جب نگاہِ مصطفیٰ ﷺ ہوئی تو پھر وہی پتھر ایک جاندار پتھر بن گیا...... یعنی ثابت یہ ہوا کہ جاندار بشر کو مردہ ہوجانے کے بعد پھر جاندار بشر بنانا یہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا کمال ہے...... اور بے جان حجر کو پتھر کو جاندار پتھر بنانا یہ صرف میرے کریم آقا ﷺ کا کمال ہے۔

## 9- نکتہ!

اسی پر ایک نکتہ اور سماعت کرو...... کہ کنکری نے جب کلمہ پڑھا تو کس کے ہاتھ میں تھی؟ ...... اسلام دشمن، نبی ﷺ کے دشمن...... ابوجہل کے ہاتھ میں تھی...... یعنی:

کنکریاں ...... بت پرست کے ہاتھ میں ہیں
کنکریاں ...... لات پرست کے ہاتھ میں ہیں
کنکریاں ...... عزیٰ پرست کے ہاتھ میں ہیں

بس آج کی رات میں میرا یہ جملہ یاد رہا تو ان شاء اللہ تادیر مزہ دے گا...... کہ کنکریاں دشمنِ اسلام کے ہاتھ میں ہیں:

حضرت سیدنا ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ ...... کے ہاتھ میں نہیں ہیں
حضرت سیدنا عمر فاروق رضی اللہ عنہ ...... کے ہاتھ میں نہیں ہیں

حضرت سیدنا عثمان غنی رضی اللہ عنہ ......کے ہاتھ میں نہیں ہیں
حضرت سیدنا علی المرتضی رضی اللہ عنہ ......کے ہاتھ میں نہیں ہیں
حضرت سیدنا خالد بن ولید رضی اللہ عنہ ......کے ہاتھ میں نہیں ہیں
حضرت سیدنا بلال حبشی رضی اللہ عنہ ......کے ہاتھ میں نہیں ہیں
حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ ......کے ہاتھ میں نہیں ہیں
حضرت براٗ بن عازب رضی اللہ عنہ ......کے ہاتھ میں نہیں ہیں

بس غور کرنا میرے آخری جملوں پر کہ وہ کنکریاں......رسول ﷺ کے کسی دوست کی مٹھی میں نہیں ہیں......بلکہ دشمن کی مٹھی میں ہیں:

کنکریاں!

دشمن اسلام ......کی گرفت میں ہیں
دشمن اسلام ......کے کنٹرول میں ہیں
دشمن اسلام ......کے قبضہ میں ہیں
دشمن اسلام ......کے نرغے میں ہیں
دشمن اسلام ......کی قید میں ہیں
دشمن اسلام ......کے چنگل میں ہیں
دشمن اسلام ......کے اختیار میں ہیں
دشمن اسلام ......کی مٹھی میں ہیں
دشمن اسلام ......کے وجود میں ہیں
دشمن اسلام ......کے ماحول میں ہیں
دشمن اسلام ......کی نگرانی میں ہیں

## ہم ناموس رسالت ﷺ کی پہرہ داری کریں گے:

لیکن قربان جاؤں...... جب دشمن اسلام نے نبی ﷺ کو آزمانے کے لئے ...... نبی کی عصمت وعزت پر حملہ کرنے کی کوشش کی تو ان بے جان کنکریوں نے یہ نہیں دیکھا...... کہ:

وہ کس کی مٹھی میں ہیں
وہ کس کے کنٹرول میں ہیں
وہ کس کے ماحول میں ہیں
وہ کس کی گرفت میں ہیں
وہ کس کی نگرانی میں ہیں

انہوں نے فوراً ناموس رسالت ﷺ کے تحفظ کے لئے اپنا کردار ادا کرتے ہوئے رسالت برحق کی گواہی دے کر یہ ثابت کر دیا...... کہ انسان چاہے جس کسی کے کنٹرول میں ہو...... چاہے جس کسی کی گرفت میں ہو...... چاہے جس کسی کی نگرانی میں ہو...... لیکن جب ناموس رسالت پر کوئی حملہ آور ہونے کی کوشش کرے تو چپ نہیں رہنا:

غلامی کا حق ادا کرنا ہے
تابعداری کا حق ادا کرنا ہے
اپنائیت کا حق ادا کرنا ہے
وفاداری کا حق ادا کرنا ہے

ناموس رسالت ﷺ کے تاج وتخت کے تحفظ کے لئے چوکیداری کرنی ہے...... انجام کی پرواہ کیے بغیر نبی ﷺ کی ناموس کیلئے نوکری کرنی ہے...... اور

ہم جہان بھر کو یہ اعلان سنا دینا چاہتے ہیں......کہ:

اگر بھوٹان میں یا سوڈان میں
اگر بنگال میں یا بنکاک میں
اگر بمبئی میں یا کراچی میں
چاہے جھنگ میں یا لاہور میں
چاہے ایشیاء میں یا عرب میں
چاہے افغانستان میں یا ایران میں
چاہے افریقہ میں یا امریکہ میں
چاہے تنزانیہ میں یا برطانیہ میں
چاہے نجد میں یا عراق میں
چاہے اردن میں یا تہران میں

بلکہ اگر دنیا کے کسی حصے میں بھی میرے رسول ﷺ کی عزت پر حملہ ہوا......ناموس رسالت پر ہمارا امتحان لینے کی کسی نے اگر کوشش کی تو وہ یاد رکھے!......کہ ابوجہل کی مٹھی میں بے جان کنکری نے نہیں دیکھا کہ وہ کس کی مٹھی میں ہے......تو اسی طرح اگر ناموس رسالت ﷺ پر حملہ ہوا تو ہم بھی نہیں دیکھیں گے......کہ:

ہم کس کی مٹھی میں ہیں
ہم کس کی گرفت میں ہیں
ہم کس کے کنٹرول میں ہیں

ہم لبیک یا رسول ﷺ کی صدائیں لگاتے ہوئے میدان میں اتر

آئیں گے...... اس لئے کوئی سوچ سمجھ کر جرأت کرے...... اس لئے کہ ہم اپنے نبی ﷺ کی ناموس کے تحفظ کیلئے کسی کے رعب و دبدبے کو خاطر میں نہیں لائیں گے ...... ابوجہل کی مٹھی میں بند کنکریوں نے انسانیت کو یہ درس دے دیا کہ انہوں نے وقت آنے پر ابوجہل کی طرف نہیں دیکھا...... ناموس رسالت ﷺ کے تحفظ کے لئے نبی ﷺ کی ذات کی طرف دیکھا ہے:

یاد رکھو...... کہ:

اگر یہ ...... کوڑے کا ڈھیر بن جانے والی کنکریاں
اگر یہ ......پاؤں کے نیچے روندی جانے والی کنکریاں
اگر یہ ......حقیر جانی جانے والی کنکریاں
اگر یہ ......استنجے کا ڈھیر بن جانے والی کنکریاں
اگر یہ ......جوتے کے نیچے دبا دی جانے والی کنکریاں

تو وہ بے جان کنکریاں اگر تحفظ ناموس رسالت ﷺ کے لئے ابوجہل کی مٹھی کی پرواہ نہیں کرتیں...... تو یاد رکھو اے دنیا والو...... وہ تو پتھر تھیں لیکن ہم حجر نہیں ''بشر'' ہیں...... اگر میرے رسول ﷺ کی ذات پاک پر حملہ کیا گیا تو ہم کبھی چپ نہیں رہیں گے۔

وہ حملہ چاہے ......میرے نبی ﷺ کے اسلام پر ہو
وہ حملہ چاہے ......میرے نبی ﷺ کے نظام پر ہو
وہ حملہ چاہے ......میرے نبی ﷺ کے انعام پر ہو
وہ حملہ چاہے ......میرے نبی ﷺ کے مقام پر ہو

وہ حملہ چاہے ...... میرے نبی ﷺ کے احترام پر ہو
وہ حملہ چاہے ...... میرے نبی ﷺ کے کلام پر ہو
وہ حملہ چاہے ...... میرے نبی ﷺ کے نام پر ہو

ہم بھی یہ نہیں دیکھیں گے...... کہ:

ہم کس کے قبضے میں ہیں
ہم کس کے کنٹرول میں ہیں
ہم کس کی نگرانی میں ہیں
ہم کس کے اختیار میں ہیں

اے دنیا والو! ہم نے اپنے نبی سے یہ وعدہ کر لیا ہے...... کہ ہم اپنی چادر و چار دیواری تو قربان کر دیں گے...... لیکن قصر ناموس رسالت ﷺ کی چوکھٹ پر چوکیداری کرنا نہیں چھوڑیں گے...... ہاں! یہ ہمارا اپنے کریم نبی ﷺ سے وعدہ ہے...... یہ مکین گنبد خضری سے ہمارا عہد و پیمان ہے...... اگر کسی ابوجہل نے آزمانا ہو تو جب چاہے آزما لے...... ہمارا عقیدہ یہ ہے...... کہ

تیرے نام پر مٹا ہوں مجھے کیا غرض نشاں سے
مجھے خاک میں ملا کر میری خاک بھی اڑا دو

ارے کیا ملے گا...... اتنا ایثار و قربانی کا وعدہ کرنے سے؟ جان و مال کی پروا کیئے بغیر قصر ناموس رسالت کی چوکھٹ پر چوکیداری کرنے سے؟...... تو میرے بھائیو! یہی تو جواب وہ کنکریاں دے گئی ہیں...... کہ جب تک وہ چپ تھیں تو اس وقت تک ابوجہل کی مٹھی میں تھیں لیکن جب ناموس رسالت ﷺ کیلئے بول پڑیں

تو پھر محمد مصطفی ﷺ کے قدموں میں تھیں......یعنی

جو چپ رہتا ہے ......وہ دشمن اسلام کے ہاتھ میں دبا رہتا ہے

جو نام نبی پر بول پڑتا ہے ......وہ بانی اسلام ﷺ کے قدموں میں آجاتا ہے

جو چپ رہتا ہے ......وہ کافر کے کنٹرول میں رہتا ہے

جو بول پڑتا ہے ......وہ پیغمبر کی نگاہ میں آ جاتا ہے

تو میرے آج کی تلاوت کئے ہوئے لفظوں کا ترجمہ مکمل ہوا

یٰاَیُّھَا النَّبِیُّ ......اے غیب کی خبریں بتانے والے:

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ

⁂

## موضوع...... بسم اللہ شریف کی فضیلتیں

نَحْمَدُہٗ وَ نَسْتَعِیْنُہٗ وَ نَسْتَغْفِرُہٗ وَ نُؤْمِنُ بِہٖ
وَ نَتَوَکَّلُ عَلَیْـہِ وَ نَعُوْذُ بِاللّٰـہِ مِنْ شُرُوْرِ
اَنْفُسِنَا وَ مِنْ سَیِّاٰتِ اَعْمٰلِنَا وَ مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ
فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَ مَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَ
نَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ
وَ نَشْھَدُ اَنَّ سَیِّدَنَا مَوْلَانَا وَ حَبِیْبَنَا وَ
سِرَاجَنَا وَ اَشْرَفَنَا وَ سَیِّدَ نَا مُحَمَّدٍ ﷺ

اَمَّا بَعْدُ!

قَالَ اللّٰہ تَبَارَکَ وَ تَعَالٰی فِی الْقُرآنِ الْمَجِیْدِ وَ
الْفُرْقَانِ الْحَمِیْدِ...... اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ
الرَّجِیْمِ

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
صَدَقَ اللّٰہُ مَوْلٰنَا الْعَظِیْمِ

اِنَّ اللّٰـہَ وَمَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوْنَ عَلَی النَّبِیِّ ط
یٰٓاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْہِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ہ

بارگاہ رسالت مآب ﷺ میں ہدیہ درود و سلام پیش کیجیے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِکَ وَرَسُوْلِکَ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ
اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

علماء کرام...... مشائخ عظام...... سامعین بزرگو دوستو پوری ذمہ داری سے انتہائی وفاداری سے درود وسلام پڑھیے

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

نکل کر سینے سے...... جا پہنچے مدینے میں...... ذرا ایسے ذوق محبت میں پڑھ کے دیکھیے

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

آپ کے اس برمنگھم میں رہتے ہوئے ایک عاشق نے وہ کچھ کہہ دیا ہے کہ جس کا ابھی بہت سارے لوگوں کو خیال بھی نہیں آیا...... وہ کہتا ہے...... کہ:

میں اس میں ے کشی کے ہوں پہ تصدق
پلاتے ہیں جتنا پیئے جا رہا ہوں
مدینے کی باتیں اور مدینے کے چرچے
بس یہی کام ہر دم میں کیے جا رہا ہوں

آج دل کرتا ہے کہ ہم مدینے جائیں اور بس واپس نہ آئیں...... اور بس در رسول ﷺ ہو فقیر کا سر ہو اور جان رخصت ہو جائے...... یعنی جو مدینہ شریف میں جاتا ہے اس عاشق کو لوٹنے کا خیال تک بھی نہیں آتا...... لیکن محدث کچھوچھوی رحمۃ اللہ علیہ نے مدینے سے واپسی کی بات کی...... مدینے سے لوٹنے واپس آنے کی بات کی ہے...... وہ فرماتے ہیں...... کہ:

مدینے کا ابھی کچھ کام کرنا ہے سید
مدینے سے بس اس لئے جا رہا ہوں

بارگاہ رسالت ﷺ میں ہدیہ درود وسلام ایک مرتبہ اور پیش کیجئے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

آج کی یہ محفل...... محفل ذکر نور ہے...... بس ماشاء اللہ ہر طرف سے درود وسلام کی صدائیں اٹھ رہی ہیں اور دلوں میں نور اتار رہی ہیں...... یوں کہہ لو کہ آج کی رات سب باراتی اکھٹے ہیں...... اور جہاں باراتی ہوتے ہیں دولہا بھی وہیں ہوتا ہے تو آیئے میں اپنے موضوع کا آغاز کرتا ہوں...... اللہ تعالیٰ نے ہمیں ''تسمیہ شریف'' کے مبارک کلمات قرآن کی آیت کی صورت میں عطا کئے ہیں اور رسول خدا ﷺ نے ہمیں حکم دیا ہے...... کہ ہم جو کام بھی شروع کیا کریں تو وہ بسم اللہ الرحمٰن الرحیم سے شروع کیا کریں۔

## بسم اللہ کی برکتیں:

میرے دوستو!

آج میری تقریر کا عنوان بھی ''بسم اللہ الرحمٰن الرحیم'' ہے تو اس حوالے سے ہی آج گفتگو کروں گا...... ان شاء اللہ

دیکھئے آپ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ سے قرآن کو شروع کرتے ہیں...... اور کوئی نیک کام جائز کام، حلال کام شروع کرتے ہیں...... تو بھی بسم اللہ الرحمٰن الرحیم پڑھتے ہیں...... مثلاً ابھی تقریر کے لئے کھڑے ہوئے تو بھی بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ...... دائیں ہاتھ سے روٹی کا ٹکڑا لیا اور منہ میں

ڈالنے سے پہلے کہا بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ...... اور جب کوئی پانی پینے لگتا ہے...... پانی کا گلاس ہاتھ میں لیتا ہے تو پانی بعد میں پیئے گا پہلے پڑھے گا بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ:

بسم اللہ کی عزتیں
بسم اللہ کی رفعتیں
بسم اللہ کی فضیلتیں
بسم اللہ کی عظمتیں

اور!...... بسم اللہ کی برکتیں...... ماشاءاللہ مسلمان کا بچہ بچہ جانتا ہے

اگر دل میں ...... ایمان ہو ایقان ہو
اگر دل میں ...... خلوص ہو تقویٰ ہو
اگر دل میں ...... یقین ہو اعتماد ہو

تو اگر نہ جانے میں زہر کا گلاس بھی بسم اللہ پڑھ کر پی لیا...... تو وہ زہر زہر نہیں رہتا بلکہ شفا والا بن جاتا ہے...... سبحان اللہ

بسم اللہ کی برکتیں پوچھنی ہیں!

تو اس سے پوچھو...... جنہوں نے بسم اللہ لکھ کر خط دریائے نیل میں ڈال دیا

بسم اللہ کی برکتیں پوچھنی ہیں!

تو ان سے پوچھو...... جنہوں نے بسم اللہ پڑھ کر پتھریلی زمین سے خندق کھود ڈالی

بسم اللہ کی برکتیں پوچھنی ہیں!

تو ان سے پوچھو...... جنہوں نے بسم اللہ پڑھ کر قدم بڑھایا تو فتح مکہ ہو گیا

بسم اللہ کی برکتیں پوچھنی ہیں! تو

صحابہ کرام سے پوچھو......تابعین کرام سے پوچھو......
بسم اللہ کی برکتیں پوچھنی ہیں......تو

بلال حبشی رضی اللہ عنہ سے پوچھو
سلیمان فارسی رضی اللہ عنہ سے پوچھو
بسم اللہ کی برکتیں پوچھنی ہیں......تو

سیدنا ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ سے پوچھو
سیدنا عمر فاروق رضی اللہ عنہ سے پوچھو
سیدنا عثمان غنی رضی اللہ عنہ سے پوچھو
سیدنا شاہ مرداں رضی اللہ عنہ سے پوچھو
بسم اللہ کی برکتیں پوچھنی ہیں......تو

غوث جیلانی رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھو...... مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھو
بسم اللہ کی برکتیں پوچھنی ہیں......تو

خواجہ نظام الدین رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھو...... بابا فرید الدین رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھو
بسم اللہ کی برکتیں پوچھنی ہیں......تو

سید مہر علی رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھو...... پیر سید جماعت علی رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھو
بسم اللہ کی برکتیں پوچھنی ہیں......تو

میاں شیر ربانی رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھو...... محدث کچھوچھوی جیلانی رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھو
بسم اللہ کی برکتیں پوچھنی ہیں......تو

خواجہ نظام الدین رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھو...... بابا فرید الدین رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھو
بسم اللہ کی برکتیں پوچھنی ہیں......تو

داتا لاہور والے سے پوچھو...... ہر اللہ والے سے پوچھو

میں خانقاہ میں پیدا ہوا ہوں اور اللہ والوں کی محبت اور تربیت میں رہا ہوں اس لئے آپ سے ایک بات عرض کرر ہا ہوں کہ جب بھی کچھ لو...... جب بھی کچھ کھاؤ...... جب بھی کچھ پیئو...... تو کچھ بھی لیتے وقت ہمیشہ کا یہ وظیفہ بنالو...... کہ جب بھی کچھ لوتو کہو

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

توان شاءاللہ...... آپ کے پاس خیر ہی آئے گی شر دور ہو جائے گا...... ذرا غور فرمائیے گا...... کہ

اگر اپنے کاموں میں برکت چاہتے ہو
اگر اپنے کاموں میں رحمت چاہتے ہو

تو پھر ہر کام کو شروع کرو تو کہو...... بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ اور دوسری طرف بازار جاؤ...... اپنے پہننے کی کوئی چیز خریدو...... یا کھانے کی کوئی شے خریدو یا پینے کا کوئی مشروب خریدو تو بسم اللہ الرحمٰن الرحیم پڑھ کرلو...... اور جب اپنے پاس سے کسی کو کچھ دو...... تو کہو...... اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ

وہ اس لئے کہ جو تم حاصل کر رہے ہو...... وہ اللہ کی رحمت ہے اس کا فضل ہے اس لئے جب اللہ کا فضل ملے...... اللہ کی رحمت ملے...... تو مومن کہتا ہے۔

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اور جب تمہارے پاس سے کچھ جائے...... تمہارا عزیز جائے...... وہ مال و جان کی صورت میں ہو یا پھر انسان کی صورت میں تو کہو

اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّآ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ

اس لئے کہ جو تم نے لیا...... وہ اللہ کا فضل ہے...... جو تم نے دیا وہ اللہ کا حکم ہے

فضل کے ملنے پر اس رب کی تسبیح بیان کرنا مسلمان کا طریقہ ہے...... اور اس کے حکم کو تسلیم کرنا مسلمان کا فریضہ ہے۔

## بسم اللہ شریف کی حکمتیں:

میرے دوستو!

آیئے اب اس ''بسم اللہ'' کی چند حکمتوں پر بات کرتے ہیں...... حدیث شریف میں آیا کہ جب تم کچھ کھانے پینے لگو...... تو ابتداء بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ سے کرو وہ اس لئے کہ ایسا پاک کام اللہ کے پاک نام سے شروع کرنے کی وجہ سے...... شیطان کی شرکت سے پاک ہو جاتا ہے یعنی شیطان اس کھانے میں شریک نہیں ہوتا یعنی اگر کوئی بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ پڑھ کر کھانا شروع نہ کرے تو...... اس کے ساتھ شیطان شریک ہے۔

لیکن جب کوئی مسلمان بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ پڑھ کر شروع کرے تو اس کے ساتھ رحمت وحدہٗ لاشریک ہے...... یعنی:

ادھر ...... بغیر ''بسم اللہ'' شیطان کی نحوست شریک ہے

ادھر ...... ''بسم اللہ'' پڑھ کر رحمان کی رحمت شریک ہے

تو اگر کسی نے اپنے کسی نیک کام سے شیطان کو بھگانا ہو تو...... وہ بسم اللہ پڑھے اور اگر اپنے پاس رحمت رحمٰن کو لانا ہو تو...... پھر بھی بسم اللہ پڑھے انتہائی توجہ فرمایئے!

کہ قرآن ''بسم اللہ الرحمٰن الرحیم'' سے شروع ہو رہا ہے اور ادھر ''الناس'' کی ''سین'' پر ختم ہو رہا ہے...... اور اگر ان دونوں حرفوں کو اکٹھا کیا جائے...... تو کیا بنتا ہے؟...... ''حرف'' با'' اور حرف ''سین'' کو جب یکجا کیا تو بنا'' بس''

شروع میں ''ب'' اور انتہا میں ''سین'' جب اکٹھا دونوں کو ملا لیا تو بنا'' بس'' یعنی یہ جو ''ب'' اور ''سین'' کے درمیان تیس پارے ہیں 'بس یہی رب کو پیارے ہیں:''

بس ......یہی قدرت کا پیغام ہے
بس ......یہی قدرت کا انعام ہے
بس ......یہی قدرت کا فرمان ہے
بس یہی قدرت کا نشان ہے

یعنی...... قرآن کی ابتدا میں سب سے پہلے آنے والے حرف سے یعنی '' ب '' سے لیکر '' سین '' تک '' بس '' یہی اللہ کی لاریب کتاب ہے

اور ایک مزے کی بات یہ ہے کہ اگر الناس کی ''سین'' کو پہلے پڑھو اور ابتدا کی ''ب'' کو بعد میں لگاؤ...... تو یہ بنے گا ''سب''

یعنی...... اللہ کا پیغام...... قدرت کا کلام یہی ہے ''سب''

اور دوسری طرح...... اللہ کا انعام ہے...... اللہ کا فرمان ہے یہی قرآن ''بس''

یعنی...... فیصلہ ہو گیا...... کہ:

اس سے کچھ زیادہ نہیں...... یہی ہے ''بس''

اس سے کچھ کم نہیں...... یہی ہے ''سب''

كُلُّ صَغِيْرٍ وَّ كَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ ......جو کچھ چھوٹا بڑا اسی میں ہے......''بس''
وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ......ہر خشک وتر اس کتاب میں ہے......''سب''یعنی......کچھ بھی باہر نہیں کہ جو اس کے اندر نہیں...... یہ قرآن نے خود فیصلہ فرمادیا

## سورۂ فاتحہ شریف کی وسعتیں:

عزیز دوستو!

ہمارے علماء کرام فرماتے ہیں...... کہ قرآن سارے کا فیض اللہ تعالیٰ نے سورۃ الفاتحہ میں رکھ دیا......یعنی قرآن کی تعلیمات کو اگر مختصراً دیکھنا چاہتے ہو تو ......انہیں قرآن کی سورۂ فاتحہ میں تلاش کرو

جو کریم رسول ﷺ خود مومنوں پر احسان بن کر تشریف لائے ہیں......وہ فرماتے ہیں

اِنَّ اللّٰهَ اَعْطَانِيْ فِيْمَا مَنَّ بِهٖ عَلَيَّ اِنِّيْ اُعْطِيْتُكَ فَاتِحَةَ الْكِتَابِ وَهِيَ مِنْ كُنُوْزِ عَرْشِيْ

بے شک اللہ تعالیٰ نے سورۂ فاتحہ کو مجھے عطا فرما کر احسان فرمایا ہے اور فرمایا کہ میں نے تمہیں سورۂ فاتحہ اپنے عرش کے خاص خزانوں میں سے عطا فرمائی ہے یعنی ......قرآن سارے کے رموز اگر پانے ہوں......تو وہ اللہ نے سورۂ فاتحہ میں محفوظ فرمادیئے ہیں......اس بے مثال سورت کو!

فاتحہ کہا جاتا ہے ......ام القرآن کہا جاتا ہے

ام الکتاب کہا جاتا ہے ......فاتحۃ القرآن کہا جاتا ہے
سورۃ الشافیہ کیا جاتا ہے ......سورۃ الرقیہ کہا جاتا ہے
سورۃ الواقیہ کہا جاتا ہے ......سورۃ الکافیہ کہا جاتا ہے
فاتحۃ القرآن کہا جاتا ہے ......اساس القران کہا جاتا ہے
سورۃ الصلاۃ کہا جاتا ہے ......سورۃ الشفاء کہا جاتا ہے
سورۃ النور کہا جاتا ہے ......سورۃ الحمد کہا جاتا ہے
سورۃ الاحسان کہا جاتا ہے ......سورۃ الدعا کہا جاتا ہے

اتنی عظمت والی سورۂ مبارکہ...... اگر پورے قرآن کی حکمتیں اکٹھی کی جائیں......تو وہ سمٹ کر سورۂ فاتحہ بن جاتی ہے... ہر صغیر و کبیر اس میں

ہر خشک و تر اس میں
دعا کا قرینہ اس میں
عطا کا خزینہ اس میں
نجات کا سفینہ اس میں
احسان خداوندی اس مین
خزائن خداوندی اس میں
فلاح کے راستے اس میں
اتباع کے ضابطے اس میں
احترام بندگی اس میں
انعام خداوندی اس میں

تو کیا خیال ہے کہ یہ ساری حکمتیں بس قرآن میں محفوظ ہیں...

اور اس قرآن کی ساری وسعتیں سورۃ فاتحہ میں محفوظ ہیں ...... تو جس سینہ میں یہ قرآن آیا ...... اس سینہ پاک کی حکمتوں کی وسعتوں کا اندازہ کون کرسکتا ہے؟

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## 1- نکتہ:

تو علماء کرام یہ بھی فرماتے ہیں ...... کہ اگر ساری سورۃ فاتحہ کی حکمتوں کو اکٹھا کیا جائے ...... تو وہ سب اکٹھی ہو کر ''بسم اللہ الرحمٰن الرحیم'' ...... میں آ جاتی ہیں اور اگر کوئی پورے قرآن کے پڑھنے کا ثواب لینا چاہتا ہے تو وہ سورۃ فاتحہ ایک مرتبہ پڑھ لے ...... اور اب جو کہتا ہے کہ ہم تو فاتحہ نہیں پڑھتے ...... لگتا ہے کہ ان کو پورے قرآن کے پڑھنے کے ثواب سے لگاؤ نہیں ہے؟

یعنی فاتحہ پڑھنے سے اللہ ثواب دے رہا ہے ...... اور مولوی فاتحہ پڑھنے کو بدعت بتا رہا ہے ...... ہاں تو بندے کہتے ہیں ...... کہ:

فاتحہ ...... چاہے قل شریف والے دن ہو
فاتحہ ...... چاہے دسویں والے دن ہو
فاتحہ ...... چاہے چہلم والے دن ہو
فاتحہ ...... چاہے عرس والے دن ہو

ہم تو نہیں پڑھیں گے ...... یعنی انکار کس کا کر رہے ہیں ...... قرآن کے پڑھنے کا تو قربان جاؤں ...... میرا رب بھی بڑا حکمتوں والا اور عزتوں والا ہے ...... اس نے کہا کہ اگر تم یہاں کسی اہتمام کے ساتھ فاتحہ نہیں پڑھو گے ...... تو میں

تمہیں مسجد میں لے جاؤں گا...... تم سے وضو کرواؤں گا...... پھر نماز پڑھاؤں گا......اور فاتحہ کو نماز کی ہر رکعت میں اہتمام کے ساتھ باقاعدگی کے ساتھ...... پابندی کے ساتھ پڑھواؤں گا۔

دیکھنا تو سہی!

فجر میں ......چار مرتبہ
ظہر میں ......بارہ مرتبہ
عصر میں ......آٹھ مرتبہ
مغرب میں ......سات مرتبہ
عشاء میں ......سترہ مرتبہ

مولوی صاحب پڑھ رہے ہیں...... لیکن سوچنے کی بات ہے کہ خود ثواب لینے کے لئے تو ہر دن میں 48 مرتبہ پڑھ رہے ہیں......اور کسی مسلمان بھائی کو ثواب پہنچانے کیلئے ایک مرتبہ پڑھنے کو بھی ''بدعت'' کہہ رہے ہیں

بھئی اگر کسی کو ثواب پہنچانا بدعت ہے...... تو خود ثواب لینے کے لئے پڑھنا عبادت کیسے رہے گا؟ الحمدللہ ہم فاتحہ مسرور ہو کر پڑھتے ہیں لیکن کچھ لوگ مجبور ہو کر پڑھتے ہیں:

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## بسم اللہ کی ''ب'' کا نقطہ:

عزیز دوستو!

علماء کرام نے فرمایا ہے کہ سارے قرآن کی حکمتیں اگر اکٹھی ہو

جائیں تو وہ سورہ فاتحہ میں ہیں...... اور ساری سورہ فاتحہ کی حکمتوں کو یکجا کیا جائے تو وہ ''بسم اللہ الرحمٰن الرحیم'' میں ہیں...... اور اگر بسم اللہ کی حکمتوں کو اکٹھا کیا جائے تو وہ بسم اللہ کی ''ب'' میں محفوظ ہیں...... اور صوفیا کرام فرماتے ہیں کہ ''ب'' کو بھی مختصر کر دیا جائے تو اس کی ساری حکمتیں ''ب'' کے نقطے میں محفوظ ہیں...... یعنی:

قرآن کو مختصر کرو...... تو فاتحہ ہے
فاتحہ کو مختصر کرو...... تو بسم اللہ ہے
بسم اللہ کو مختصر کرو...... تو بسم اللہ کا ''ب'' ہے
اور اگر ''ب'' کو مختصر کرو...... تو ''ب'' کا نقطہ ہے

یعنی اگر ''ب'' کے نقطے کی حکمتوں کو کھولو تو ''ب'' ہے اور ''ب'' کی وسعتوں کو دیکھو تو ''بسم اللہ الرحمٰن الرحیم'' ہے...... اس بسم اللہ کی حکمتوں کو دیکھو تو پوری سورۃ فاتحہ ہے...... اور اگر سورۃ فاتحہ کی حکمتوں اور وسعتوں کو دیکھو تو پورا قرآن نظر آئے گا۔

آؤ...... آگے سنو!

شاہ زمن...... والد حسین وحسن...... آفتاب نبوت کے وفادار...... چمنستان ولایت کی بہار...... شیر پروردگار...... قوت پروردگار......

مولا علی المرتضیٰ رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں

انا نقطه تحت الباء

بسم اللہ کے نیچے کا نقطہ میں ہوں:

عزیزو!

اب سنتے چلو سورۃ فاتحہ کی حکمتیں...... مجھے تو سمجھ نہیں آتی کہ لوگ یہ کیوں کہتے ہیں...... کہ ہم کسی کی فاتحہ میں شریک نہیں ہوتے؟

حالانکہ خود بھی فاتحہ پڑھتے ہیں...... نماز چاہے فرض کی ہو:

نماز چاہے سنت کی ہو
نماز چاہے وتر کی ہو
نماز چاہے نفل کی ہو
نماز چاہے فجر کی ہو
نماز چاہے ظہر کی ہو
نماز چاہے مغرب کی ہو
نماز چاہے عشاء کی ہو
نماز چاہے اشراق کی ہو
نماز چاہے چاشت کی ہو

ارے بھائی نماز چاہے کسی بھی مسجد میں اکیلے پڑھے:

دہلی کی مسجد میں پڑھے
یا...... بادشاہی مسجد میں پڑھے
فیصل مسجد میں پڑھے
یا جامع مسجد میں پڑھے

ارے بھائی فاتحہ تو پڑھنی ہی پڑھے گی...... اگر جماعت کروا رہا ہے...... امام بن کر امامت کروا رہا ہے...... تو پھر بھی مصلیٰ امامت پر کھڑے ہو کر...... جب تک فاتحہ نہیں پڑھے گا...... بھائی نماز پوری نہیں ہوگی...... تو پھر کیوں انکار کرتے

ہو فاتحہ کا جب ایک دن میں اتنی مرتبہ تو پڑھتے ہو بھلا پھر انکار کیسا؟

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## بسم اللہ سے روحانی برکات:

خیر بات پھر فاتحہ کی طرف نکل گئی...... بڑی محنت سے بات ہم بسم اللہ الرحمٰن الرحیم پر لائے تھے...... کہ:

بِسْمِ اللّٰہ ......قلب و ذہن میں بٹھا لو
بِسْمِ اللّٰہ ......ہر وقت کا وظیفہ بنا لو
بِسْمِ اللّٰہ ......خیر ہی خیر ہے
بِسْمِ اللّٰہ ......برکت ہی برکت ہے
بِسْمِ اللّٰہ ......فضل ہی فضل ہے
بِسْمِ اللّٰہ ......رحمت ہی رحمت ہے
بِسْمِ اللّٰہ ......شیطان سے بچاؤ کی تدبیر ہے
بِسْمِ اللّٰہ ......شفا حاصل کرنے کی کلید ہے
بِسْمِ اللّٰہ ......درجات کی بلندی کا ذریعہ ہے
بِسْمِ اللّٰہ ......رزق میں وسعت کا وظیفہ ہے
بِسْمِ اللّٰہ ......نقصان سے محفوظ رہنے کا نسخہ ہے
بِسْمِ اللّٰہ ......قرآن کی ابتدا کا طریقہ ہے

لیکن...... یہ بات میں آگے کر گیا ہوں...... کہ قرآن کی وسعتوں کو سمیٹو تو فاتحہ بنتی ہے...... اور اگر ساری فاتحہ کی برکات کو اکٹھا کیا جائے تو یہ وسعتیں ''بسم اللہ الرحمٰن الرحیم'' میں سمٹ جاتی ہیں...... اور جب ''بسم اللہ الرحمٰن

الرحیم'' کی حکمتوں کو اکٹھا کیا جائے تو وہ بسم اللہ...... کی ''ب'' کے نقطے میں سب محفوظ ہیں اور مولا علی شیر خدا رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں...... کہ ''بسم اللہ'' کے نیچے کا نقطہ میں ہوں!

تو میری تحقیق اس نتیجے پر پہنچی ہے کہ پورا قرآن سمجھنا ہو تو علی کو سمجھو...... اور ''علی'' کو سمجھنا ہو تو پہلے قرآن کو سمجھو:

## 2- نکتہ:

میرے دوستو!

اب جو نقطہ ہوتا ہے...... وہ کیا ہے؟...... نقطہ اس کو کہتے ہیں کہ جس کے جتنے بھی حصے کر لئے جائیں وہ ختم نہ ہو...... اس کو نقطہ کہتے ہیں...... یعنی جسے ختم نہ کیا جا سکے...... جسے کاٹا نہ جا سکے اسے نقطہ کہتے ہیں اور سائنس دانوں کی زبان میں اسی کو ''ایٹم'' کہتے ہیں...... ایک ایسا جز کہ جس کے حصے کئے جائیں اور وہ پھر بھی اپنی حیثیت رکھتے ہوں...... اس کو ایٹم کہتے ہیں...... یعنی ایسا نقطہ ایسا جز کہ جس کو توڑا نہ جا سکے...... ختم نہ کیا جا سکے...... مٹایا نہ جا سکے...... اور

ایٹم ایک قوت کا نام ہے
ایٹم ......ایک طاقت کا نام ہے
ایٹم ......ایک اقتدار کا نام ہے
ایٹم ......ایک پاور کا نام ہے

اور جہاں ایٹم ہے وہی سپر پاور ہے...... کہ:

امریکہ میں ایٹم ہے ......وہ پاور بنا ہوا ہے

برطانیہ میں ایٹم ہے ......وہ پاور بنا ہوا ہے
فرانس میں ایٹم ہے ......وہ پاور بنا ہوا ہے
جرمن میں ایٹم ہے ......وہ پاور بنا ہوا ہے
چائنہ میں ایٹم ہے ......وہ پاور بنا ہوا ہے
پاکستان میں ایٹم ہے ......وہ پاور بنا ہوا ہے
ہندوستان میں ایٹم ہے ......وہ پاور بنا ہوا ہے

یعنی...... جہاں ایٹم ہے......وہاں اقتدار ہے......اختیار ہے...... پاور ہے ......قوت ہے...... جرأت ہے......حریت ہے......ہم دیکھتے ہیں کہ ایٹم کے آگے......

کویت جھکا ہوا ہے
دوبئی جھکا ہوا ہے
سعودیہ جھکا ہوا ہے

ایٹم کے آگے......:

عمان جھکا ہوا ہے
اردن جھکا ہوا ہے
عراق جھکا ہوا ہے
ابوظہبی جھکا ہوا ہے

اور ایٹم کے آگے دنیا جھکی ہوئی ہے......اور اگر کسی بھی مسلمان ملک میں ”ایٹم“ بنانے کا نعرہ بلند ہوتا ہے......تو واشنگٹن ہلنے لگتا ہے......تمام ایٹمی طاقتیں حرکت میں آجاتی ہیں......

امریکہ کو غصہ آنے لگتا ہے
برطانیہ کو بخار آنے لگتا ہے
فرانس کو ناگوار لگنے لگتا ہے
جرمن کو اعتراض ہونے لگتا ہے
چائنہ کو پسینہ آنے لگتا ہے

صرف اس وجہ سے کہ اس مسلمان ملک میں ایٹم کہاں سے آگیا...... تو پھر تمام اکٹھے ہوکر اس ملک کو تباہ کرنے کی پلاننگ کرنے لگتے ہیں...... یعنی ایٹم بڑی طاقت ہے کہ جب چاہے کسی کی آنکھوں میں آنکھیں ڈال لے...... اس کو اپنی طاقت پر

بڑا فخر ہوتا ہے
بڑا ناز ہوتا ہے
بڑا بھروسہ ہوتا ہے
بڑا سہارا ہوتا ہے
بڑا مان ہوتا ہے

یعنی نتیجہ یہ نکلا کہ...... ایٹم ایک نقطہ ہے اور نقطہ ایک ‘‘ایٹم’’ کو کہتے ہیں بس اب اس ساری گفتگو پر میں آپ کو نتیجہ دے رہا ہوں...... کہ میرے مولا علی رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں...... کہ وہ بسم اللہ کی ‘‘ب’’ کا نقطہ میں ہوں...... جو ذات خود کو ‘‘ب’’ کا نقطہ بتائے...... تو اصل میں وہ اپنی اس خصوصیت کا ذکر فرما رہے ہیں...... کہ جو ‘‘ب’’ کا نقطہ ہوگا:

اس دل میں جرأت ہوگی

اس دل میں قوت ہوگی
اس دل میں جذبہ ہوگا
اس دل میں بندگی کا سلیقہ ہو گا

وہ جرأت والا اور قوت والا...... کفار کے سامنے ڈٹ جانا جانتا ہے...... وہ اپنے سر کو اللہ کے سوا کسی کے آگے جھکانا نہیں آتا۔

## 3- نکتہ:

میرے دوستو!

اب اس اگلے نکتے پر ذرا غور کرنا...... کہ:

ہم نے آیت تلاوت کی...... بسم اللہ

غور کرنا...... باللہ الرحمٰن الرحیم قرآن نے نہیں کہا

## بسم اللہ میں ''ب'' استعانت کیلئے ہے:

یعنی علماء کرام جو اس محفل میں موجود ہیں...... وہ جانتے ہیں کہ اس بسم اللہ میں جو لفظ ''ب'' ہے وہ ''استعانت'' کیلئے ہے...... استعانت کیلئے یعنی ''مدد'' کیلئے ہے...... اگر ''اسم'' کو چھوڑ کر معنیٰ کرو تو وہ یہ ہوگا کہ اللہ کی مدد سے...... لیکن بات قابل غور ہے کہ آپ باللہ الرحمٰن الرحیم نہیں کہہ رہے...... آپ تو...... بسم اللہ الرحمٰن الرحیم...... پڑھ رہے ہو؟

تو جب پڑھا بسم اللہ...... تو آپ اللہ سے مدد نہیں مانگ رہے...... آپ تو اسم اللہ سے مدد مانگ رہے ہو؟ لفظ ہے ''ب'' اسم اللہ...... لیکن جب ہم ایک قاعدے کے تحت اس کو پڑھتے ہیں تو پڑھتے کیا ہیں؟ بسم اللہ...... تو بھائی اگر اللہ سے مدد مانگنا ہے ڈائریکٹ تو پھر باللہ الرحمٰن الرحیم کہو! بسم اللہ کیوں

پڑھ رہے ہو؟

انتہائی غور کیجئے میں علماء کی موجودگی میں یہ بات کر رہا ہوں...... کہ حرف ''ب'' اللہ پر داخل نہیں ہے...... ''اسم'' اللہ پر داخل ہے اب غور سے سنو! کہ میں ہوں...... عبداللہ

تو کیا عبداللہ سے مدد مانگنا اللہ سے مدد مانگنا ہے؟

اور اگر...... حبیب اللہ...... سے مدد مانگیں تو کیا یہ اللہ سے مدد مانگنا ہے؟ تو مسئلہ یہ ظاہر ہوا...... کہ:

عبداللہ...... میں جو اللہ ہے ...... وہ اللہ ہے ...... عبد غیر اللہ ہے
حبیب اللہ...... میں جو اللہ ہے ...... وہ اللہ ہے ...... حبیب غیر اللہ ہے
رسول اللہ...... میں جو اللہ ہے ...... وہ اللہ ہے ...... رسول غیر اللہ ہے
کتاب اللہ...... میں جو اللہ ہے ...... وہ اللہ ہے ...... کتاب غیر اللہ ہے
کلام اللہ...... میں جو اللہ ہے ...... وہ اللہ ہے ...... کلام غیر اللہ ہے
کلیم اللہ...... میں جو اللہ ہے ...... وہ اللہ ہے ...... کلیم غیر اللہ ہے
خلیل اللہ...... میں جو اللہ ہے ...... وہ اللہ ہے ...... خلیل غیر اللہ ہے
ذبیح اللہ...... میں جو اللہ ہے ...... وہ اللہ ہے ...... ذبیح غیر اللہ ہے

یعنی......

حبیب اللہ ...... میں اللہ علیحدہ ہے ...... جو حبیب ہے وہ کوئی اور ہے
رسول اللہ ...... میں اللہ علیحدہ ہے ...... جو رسول ہے وہ کوئی اور ہے
کتاب اللہ ...... میں اللہ علیحدہ ہے ...... جو کتاب ہے وہ کوئی اور ہے
کلام اللہ ...... میں اللہ علیحدہ ہے ...... جو کلام ہے وہ کوئی اور ہے

تو اسی طرح بسم اللہ ...... میں جو اللہ ہے ...... وہ تو اللہ ہے ...... لیکن جو اسم ہے وہ کوئی اور ہے ...... بھائیو! ''اسم'' کا معنی اللہ نہیں بلکہ اسم جدا ہے اور اللہ......اللہ ہے

یعنی ...... یہ بات طے ہوگئی کہ بسم اللہ میں......''اسم'' الگ ہے اور ''اللہ'' الگ ذات ہے......جیسے:

عبداللہ میں ...... ''عبد'' الگ ذات ہے ......اور اللہ الگ ہے
حبیب اللہ میں...... ''حبیب'' الگ ذات ہے ...... اور اللہ الگ ہے
رسول اللہ میں ...... ''رسول'' الگ ذات ہے ...... اور اللہ الگ ہے

اسی طرح میں بار بار کہہ رہا ہوں......کہ

بسم اللہ......میں......اسم الگ ذات ہے اور اللہ الگ ہے

آؤ...... ہم تمہیں آسانی سے یہ بات سمجھانے کیلئے لکھنوی لہجے میں سمجھا دیتے ہیں...... تو میں نے اپنی لکھنوی زبان میں ...... اور لکھنوی انداز میں لکھنؤ کے ایک بندے سے پوچھا کہ جناب آپ کا اسم کیا ہے تو آگے سے بولا کہ جناب بندۂ ناچیز کو ''عبدالرحیم'' کہتے ہیں ...... ذرا غور کرنا ...... کہ سوال ہوا تھا کہ آپ کا ''اسم'' کیا ہے تو انہوں نے جواب میں اپنا نام بتا دیا...... اپنا حوالہ پیش کر دیا کہ مجھے ''عبدالرحیم'' کہتے ہیں تو نتیجہ یہ نکلا کہ جو کسی کو متعارف کروائے ...... وہ ''اسم'' ہے اگر کوئی مجھے کہے کہ آپ کا اسم کیا ہے یعنی جو مجھے پہلے نہیں جانتا لیکن! جب وہ مجھ سے جان پہچان بنانا چاہے گا تو یقیناً پوچھے گا کہ جناب آپ کا اسم کیا ہے؟

تو میں آگے سے اسے فوراً بتاؤں گا کہ میرا نام ''سید محمد ہاشمی میاں'' ہے تو ''اسم'' کے متعلق سوال ہوا تھا...... میں نے اپنا پورا نام اس پوچھنے والے کو بتا دیا...... یعنی نتیجہ یہ نکلا...... کہ:

جو کسی کو متعارف کروائے
جو کسی کو پہچانوائے

اس کو ''اسم'' کہتے ہیں...... یعنی......

جو آپ کا تعارف کروائے اس کو اسم کہتے ہیں
جو آپ کا حوالہ کہلوائے اس کو اسم کہتے ہیں
جو اجنبیت کو مٹائے اس کو اسم کہتے ہیں

یعنی...... کسی غیر متعارف کو متعارف کروانے والے کو ''اسم'' کہتے ہیں

بندے کا اسم تو وہ ہے کہ جس سے بندہ پہچانا جائے...... جانا جائے متعارف کروایا جائے...... حوالہ کہلوائے...... تو اب مجھے کہنا پڑھتا ہے کہ اللہ کا اسم اس کو کہتے ہیں کہ جس نے اللہ کو پہچانوایا ہو...... متعارف کروایا ہو...... تو آؤ ایک حدیث قدسی پیش کرتا ہوں...... تا کہ بات واضح ہو جائے...... کہ اللہ کو کس نے متعارف کروایا ہے؟

## اللہ کو متعارف کروانے والی ذات:

اللہ تعالیٰ فرماتا ہے

کُنْتُ کَنْزًا مَخْفِیًّا...... میں چھپا ہوا خزانہ تھا
فَاَحْبَبْتُ اَنْ اُعْرَفَ...... مجھے محبت ہوئی کہ میں پہچانا جاؤں
تو فَخَلَقْتُ الْخَلْقَ...... میں نے مخلوق بنا ڈالی

اب سوال ہے...... کہ اس لاشریک کو کس مخلوق نے متعارف کروایا ہے؟ کس نے پہچانوایا ہے...... اس کا جواب دربار رسالت ﷺ سے لیجئے ...... کہ فرمایا

اَوَّلُ مَا خَلَقَ اللّٰهُ نُوْرِیْ

سب سے پہلے اللہ نے میرا نور پیدا کیا

جب اس ذات پاک نے خود کو متعارف کروانے کیلئے ...... نور محمد ﷺ کو تخلیق فرمایا۔

یہی وہ ذات محمد ﷺ ہے کہ جس نے خدا کو پہچانوایا...... ایسا پہچانوایا...... کہ دنیا کے 36 ہزار دیوتاؤں میں

آج بھی وہ جانا جا رہا ہے
آج بھی وہ پہچانا جا رہا ہے

محمد مصطفیٰ ﷺ نے خدا کو ایسا پہچانوایا کہ گوروں کی اس سرزمین ''مانچسٹر'' میں بھی وہ پہچانا جا رہا ہے...... ایسا متعارف کروادیا...... کہ

آج جبکہ ظالم اپنے ظلم پر نازاں ہے...... اور ماتحت کو انسانیت کے درجے سے گرانے کی کوشش میں ہے اور اپنی ظالمانہ کاروائیاں جاری رکھے ہوئے ہے آج کشمیر کو دیکھ لو...... عراق کو دیکھ لو

فلسطین کو دیکھ لو
چیچنیا کو دیکھ لو
برما کو دیکھ لو

ہر طرف ظالم جبر کی انتہا کرتے ہوئے...... مظلوم پر اپنا قبضہ جمائے

ہوئے ہے:

نماز سے روکا جا رہا ہے

نیاز سے روکا جا رہا ہے

تعلیم سے روکا جا رہا ہے

تعظیم سے روکا جا رہا ہے

مسجد سے روکا جا رہا ہے

پردے سے روکا جا رہا ہے

اور...... کہیں پر ایسا ظلم ہو رہا ہے...... کہ

باپ کے کندھے پر بیٹھے...... ننھے بچے کو باپ کے کندھے سے کھینچ کر زمین پر گرا کر...... اس معصوم کے سامنے اس کے باپ کے سینے میں گولیاں اتاری جا رہی ہیں...... سہاگ اُجاڑے جا رہے ہیں...... نوجوان شہید کیے جا رہے ہیں...... ماں کے سینے سے لگے اس کے بچے...... اس کے نور العین کو کھینچ کر اس کی ماں کی حیا والی چادر کو تار تار کیا جا رہا ہے

لیکن وہ معصوم بچہ ہاتھ اٹھا کر نعرہ بلند کرتا ہے...... کہ:

اللہ اکبر

اللہ اکبر

اللہ سب سے بڑا ہے

اے جابروں سن لو! اے ظالموں سن لو!

اللہ سب سے بڑا ہے

ایسا میرے نبی ﷺ نے اپنے رب کو متعارف کروا دیا ہے...... کہ معصوم بچہ

بھی جانتا ہے......کہ:

سب سے بڑا خدا ہے
سب سے یکتا خدا ہے
سب کا کبریا خدا ہے
سب کا مولا خدا ہے

ایسا میرے نبی ﷺ نے خدا کو پہچانوایا ہے......متعارف کروایا ہے

ارے جس دنیا میں:

سہاگ لٹ رہا ہے
مکان جل رہا ہے
دکان لٹ رہی ہے
زمین چھن رہی ہے

ایسے میں اگر مظلوم کی آواز بلند ہوتی ہے......تو قربان جاؤں......"نعرہ تکبیر کی آواز بلند ہوتی ہے"

قربان جاؤں!

اللہ کو......ایسا متعارف کروادیا میرے نبی ﷺ نے کہ وہ رب:

ہند میں پہچانا جا رہا ہے
سندھ میں پہچانا جا رہا ہے
کشمیر میں پہچانا جا رہا ہے
دھیر میں پہچانا جا رہا ہے
ہندوں کی بھیڑ میں پہچانا جا رہا ہے

یہودیوں کے شہر میں پہچانا جا رہا ہے
کفر کے محلات میں پہچانا جا رہا ہے
فلسطین کی زمین میں پہچانا جا رہا ہے

اسم اللہ......ذات پاک مصطفیٰ ﷺ ہے:

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

جیسے...... رسول ﷺ نبی اللہ ہیں
جیسے...... رسول ﷺ حبیب اللہ ہیں
جیسے...... رسول ﷺ رسول اللہ ہیں
جیسے...... رسول ﷺ محبوب اللہ ہیں
جیسے...... رسول ﷺ برھان اللہ ہیں
جیسے...... رسول ﷺ نور اللہ ہیں
تو ایسے ہی......رسول ﷺ ''اسم اللہ'' بھی ہیں

تو میں نے کہا......کہ بسم اللہ میں ''ب'' ''حرف استعانت'' ہے......اور اس کے بعد اسم اللہ ہے......تو ثابت ہوا کہ اسم اللہ کی مدد سے ''اللہ کو پہچانو

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

وَاٰخِرُ دَعۡوَانَا اَنِ الۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ

* * *

## موضوع……ذکرِ رسول ﷺ کی اہمیت

نَحْمَدُہٗ وَ نَسْتَعِیْنُہٗ وَ نَسْتَغْفِرُہٗ وَ نُؤْمِنُ بِہٖ وَ نَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَ نَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَ مِنْ سَیِّاٰتِ اَعْمٰلِنَا وَ مَنْ یَّھْدِیْہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَ مَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَ نَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰـہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ وَ نَشْھَدُ اَنَّ سَیِّدَنَا مَوْلَانَا وَ حَبِیْبَنَا وَ سِرَاجَنَا وَ اَشْرَفَنَا وَ سَیِّدَنَا مُحَمَّدٍ ﷺ

اَمَّا بَعْدُ!

قَالَ اللّٰہُ تَبَارَکَ وَ تَعَالٰی فِی الْقُرْاٰنِ الْمَجِیْدِ وَ الْفُرْقَانِ الْحَمِیْدِ…… اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ
صَدَقَ اللّٰہُ مَوْلٰنَا الْعَظِیْمُ

اِنَّ اللّٰـہَ وَمَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوْنَ عَلَی النَّبِیِّ ط
یٰٓاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْہِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ○

بارگاہِ رسالت مآب ﷺ میں ہدیہ درود و سلام پیش کیجیے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدِیْ يَا رَسُوْلَ اللّٰه
وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ يَا سَيِّدِیْ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

محترم سامعین!

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ...... محمد اللہ کے رسول ہیں

یہ اس آیت مقدسہ کا سیدھا سا ترجمہ ہے...... جو میں نے آپ کی موجودگی میں آپ حضرات کے سامنے تلاوت کرنے کا شرف حاصل کیا ہے

## ''آیت'' کسے کہتے ہیں:؟

میں نے ابھی آپ حضرات کے سامنے قرآن پاک کی ایک آیت مقدسہ تلاوت کرنے کا شرف حاصل کیا ہے...... یاد رکھیۓ کہ...... قرآن کی ہر آیت اللہ تعالیٰ کا کلام ہے...... دیکھیۓ جو میں بولوں گا وہ میری بولی ہوگی

جو ''علامہ قمر الزمان'' بولیں گے وہ ان کا ارشاد ہوگا

جو...... کوئی مفسر بولے ...... وہ اس مفسر کا قول ہوگا
جو...... کوئی محدث بولے ...... وہ اس محدث کا قول ہوگا
جو...... کوئی فقیہی بولے ...... وہ اس فقیہی کا فرمان ہوگا
جو...... کوئی مفتی بولے ...... وہ اس مفتی کا فرمان ہوگا
آپ جو کہیں...... وہ آپ کا کہنا ہے
میں جو کہوں...... وہ میرا کہنا ہے

اور جو خدا کہے وہ اس کا کلام ہے اب دیکھنا ہے...... کہ:

یہ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ...... کس نے کہا ہے؟

جواب یہ ہوگا...... کہ بھئی...... یہ اللہ کا فرمان ہے اور اللہ نے خود اپنے

قرآن میں ارشاد فرمایا ہے...... یعنی اگر "برطانیہ" کی اس سرزمین پر کوئی مجھے پوچھ لے کہ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ...... کیا ہیں؟

تو ہم آگے سے جواب دیں گے کہ بھئی قرآن سے پڑھ رہا ہوں...... اور ظاہر ہے کہ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ اللہ کی آیت ہیں......

اللہ کا قول ہیں
اللہ کا فرمان ہیں
اللہ کا ارشاد ہیں

اب ایمان والے کو تو تسلی ہوگی...... کہ یہ میرے رب کا کہنا ہے...... میرے رب کا قول ہے...... لیکن امتی ہونے کے ناطے ایک غلام کے دل میں یہ تڑپ پیدا ہوئی...... کہ

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ ﷺ آپ کا کہنا کیا ہے؟

تو اس کا جواب اگر لینا ہو تو پھر پڑھیئے حدیث کی کتابوں کو...... کہ رسول ﷺ ایک دو کو نہیں...... بلکہ پورے مجمع کو فرما رہے ہیں...... کہ

یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ قُوْلُوْا لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ تُفْلِحُوْا
اے لوگو! لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه کہو تو تم فلاح پا جاؤ گے

غور کیجئے گا...... کہ:

ہم جب قرآن پڑھتے ہیں...... تو رب کہتا ہے...... مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ
اور جب قولِ مصطفیٰ ﷺ سنتے ہیں...... تو نبی فرماتے ہیں: قُوْلُوْا لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه

میں قربان جاؤں! کتنی خوبصورت تقسیم ہے...... کہ

اے محبوب ﷺ...... آپ کا ذکر میں کروں...... میرا ذکر آپ کریں

یعنی...... لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ تم کہو...... مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ میں کہوں

وہ اس لئے...... کہ:

جو لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ...... کا دشمن ہو وہ تیرے کہے کا دشمن ہو

جو مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ...... کا دشمن ہو وہ میرے کہے کا دشمن ہو

اور...... اب جن لوگوں نے لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ...... کہا ہے گویا وہ رسول اللہ ﷺ کی ایک سنت پر عمل کر رہے ہیں

اور...... جو بار بار...... کئی بار...... ہزار بار مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ کہہ رہے ہیں گویا وہ سنت کبریاء پر نظر رکھتے ہیں

## ذکر مصطفیٰ ﷺ کی جامعیت:

میرے دوستو!

کوئی بھی ذکر ہو...... کسی کا بھی ذکر ہو تو ذکر ہمیشہ اپنے ذاکر کی وجہ سے اہم ہوتا ہے...... مثال کے طور پر...... آپ میں سے بھی کوئی بندہ بولتا رہے، ہو سکتا ہے کہ ان سننے والوں میں سے کئی بندے ایسے ہوں گے...... کہ جو اس عام بولنے والے کی بات پر:

دھیان نہ دیں:
توجہ نہ دیں
اہمیت نہ دیں

لیکن جب اس مجمع میں علامہ قمر الزمان بولنے لگے...... تو ذکر ذاکر کی وجہ سے اہم ہو گیا اب پورے مجمع سے ہر بندہ:

انتہائی توجہ کیساتھ
انتہائی یکسوئی کیساتھ
انتہائی دلجمعی کیساتھ

گفتگو سننے لگا...... آخر کیوں؟...... صرف اس لئے کہ بھئی پہلے بولنے والا ایک عام سا بندہ تھا عام سی گفتگو کر رہا تھا...... لیکن اب اتنے بڑے علامہ بات کر رہے ہیں...... تو

یقیناً کوئی بڑی بات ہی کریں گے
یقیناً کوئی اہم بات ہی کریں گے

سب نے ان کی گفتگو پر توجہ دی...... یقیناً اس میں:

ان کی قابلیت کا اثر تھا
ان کی علمیت کا اثر تھا
ان کی شہرت کا اثر تھا

یعنی میں کہنا یہ چاہتا ہوں...... کہ عام بندے کی بات بھی عام ہوتی ہے لیکن جب کوئی پڑھا لکھا خاص آدمی بات کرتا ہے تو یقیناً اس کی بات بھی خاص ہوتی ہے...... تو:

اعلیٰ ذات کی ...... بات بھی اعلیٰ ہوتی ہے
افضل ذات کی ...... بات بھی افضل ہوتی ہے
اہم ذات کی ...... بات بھی اہم ہوتی ہے
معتبر ذات کی ...... بات بھی معتبر ہوتی ہے
کامل ذات کی ...... بات بھی کامل ہوتی ہے

پاکیزہ ذات کی ...... بات بھی پاکیزہ ہوتی ہے

تو بھائیو! ذکر مصطفیٰ ﷺ کی جامعیت اور کاملیت کے اندازے کے لئے اتنا کہہ دینا ہی کافی ہے کہ بھئی یہ ذکر خود خدا کر رہا ہے ...... اب اسی ''ذاکر'' کی ذات کی اہمیت سے اس ذکر کی اہمیت کا اندازہ کر سکو تو کرو!

اور یاد رکھو! ذکر مصطفیٰ ﷺ کی جامعیت کا معیار یہ ہے کہ جو ذات یہ ذکر کر رہی ہے ...... وہ مٹنے والی نہیں ہے ...... اگر وہ ذات پاک مٹنے والی نہیں ہے تو پھر یہ ذکر جو وہ کر رہا ہے ...... وہ کون مٹا سکتا ہے؟

ارے یہ رسول ﷺ کا ذکر تو مٹے گا ہی نہیں ...... وہ اس لئے کہ جب تک ذاکر رہے گا ...... اس وقت تک:

ذکر بھی باقی رہے گا
ذکر بھی قائم رہے گا
ذکر بھی زندہ رہے گا
ذکر بھی موجود رہے گا
ذکر بھی مقصود رہے گا

یعنی جب تک ذاکر باقی اس وقت تک ذکر ہوتا رہے گا ...... ایک صاحب مجھے کہنے لگے کہ یہ ذکر بھی ختم ہو جائے گا ...... میں نے کہا وہ کیسے؟

صاحب کہنے لگے کہ جب ''ہاشمی میاں'' تم چلے جاؤ گے ...... تو پھر میں نے آگے سے جواب دیا ارے یہ ذکر میرے جانے سے ختم تھوڑی ہوگا ...... میں چلا جاؤں گا تو کوئی اور آ کر یہ ذکر کرے گا ...... ہاں کوئی اور دوسرا عالم آ جائے گا اور

پھر کہنے لگا...... جب دوسرا عالم بھی چلا گیا تو پھر

میں نے کہا پھر تیسرا عالم آ جائے گا...... اور پھر کہنے لگا...... جب علماء بھی دنیا سے چلے گئے تو پھر؟

میں نے کہا بھئی پھر باقی امت ذکر کرتی رہے گی

اور پھر کہنے لگا...... جب امت ختم ہوگئی...... تو پھر؟ کون ذکر کرے گا؟

میں نے کہا بھئی فرشتے تو ہوں گے یہ ذکر کرنے والے اور پھر کہنے لگا...... کہ جب فرشتے بھی ختم ہو جائیں گے

تو میں نے کہا...... ارے یہ ذکر اللہ نے کسی زمانے اور مخلوق کا محتاج نہیں رکھا...... جب کوئی نہیں رہے گا حی القیوم رب تو باقی رہے گا؟

وہ کہہ رہا ہے...... مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ

اور جب تک کوئی ذاکر نہیں مٹتا تو اس وقت تک جو وہ ذکر کر رہا ہے وہ بھی نہیں مٹتا...... تو:

وہ ذات تو لافانی ہے ...... یہ ذکر بھی لافانی ہے
وہ ذات بھی قائم ہے ...... یہ ذکر بھی قائم ہے

## ذکر مصطفیٰ ﷺ ہمیشہ رہے گا:

یعنی اگر کوئی ذاکر کسی پر مہربان ہو جائے ...... تو جب تک وہ ہے اس کا ذکر بھی باقی ہے اگر کسی پر ملک کا صدر مہربان ہو جائے ...... تو جہاں تک اس کا حکم چلتا ہے ...... وہاں تک وہ ذکر یعنی اس منظور نظر کا ذکر بھی رہتا ہے۔

اگر کسی پر ہندوستان کا صدر مہربان ہو جائے تو پھر ہندوستان کے تمام

صوبوں میں اس مذکور کا ذکر چلے گا

اگر پاکستان کا صدر کسی پر مہربان ہو جائے تو پھر پاکستان کے چاروں صوبوں میں اس مذکور کا ذکر ہوتا رہے گا

نتیجہ یہ نکلا کہ جس کو جس سے پیار ہے...... وہ وہاں تک اس محبوب کے ذکر کو پھیلائے گا کہ جہاں تک:

اس کی حکمرانی چلتی ہے
اس کی شاہی چلتی ہے
اس کی مرضی چلتی ہے
اس کا سکہ چلتا ہے

تو میرے بھائیو! اگر معمولی اقتدار کا یہ حال ہے تو پروردگار کے ذکر کرنے کی کون انتہا جان سکتا ہے؟

تو جس پروردگار کی کونین کی ہر ہر شے پر حکومت ہو...... تو پھر کوئی جگہ باقی بچے گی کہاں کہ جہاں رسول ﷺ کا ذکر پاک نہیں ہوگا؟

ارے...... زندگی پر اس کی حکومت ہے
بندگی پر اس کا قبضہ ہے

تو لہٰذا! زندگی میں بھی رسول ﷺ کا ذکر ہے اور بندگی میں بھی رسول کا ذکر ہے

## کونین میں ہو رہے ہیں چرچے رسول ﷺ کے:

میرے دوستو!

یہ بات اچھی طرح سے ذہن نشین کر لیجئے کہ جہاں تک ذاکر کا حکم چلتا ہے

پھر کہنے لگا...... جب دوسرا عالم بھی چلا گیا تو پھر

میں نے کہا پھر تیسرا عالم آجائے گا......اور پھر کہنے لگا...... جب علماء بھی دنیا سے چلے گئے تو پھر؟

میں نے کہا بھئی پھر باقی امت ذکر کرتی رہے گی

اور پھر کہنے لگا...... جب امت ختم ہو گئی......تو پھر؟ کون ذکر کرے گا؟

میں نے کہا بھئی فرشتے تو ہوں گے یہ ذکر کرنے والے اور پھر کہنے لگا......

کہ جب فرشتے بھی ختم ہو جائیں گے

تو میں نے کہا...... ارے یہ ذکر اللہ نے کسی زمانے اور مخلوق کا محتاج نہیں رکھا...... جب کوئی نہیں رہے گا حی القیوم رب تو باقی رہے گا؟

وہ کہہ رہا ہے...... مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ

اور جب تک کوئی ذاکر نہیں مٹتا تو اس وقت تک جو وہ ذکر کر رہا ہے وہ بھی نہیں مٹتا......تو:

وہ ذات تو لافانی ہے ......یہ ذکر بھی لافانی ہے
وہ ذات بھی قائم ہے ......یہ ذکر بھی قائم ہے

## ذکر مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم ہمیشہ رہے گا:

یعنی اگر کوئی ذاکر کسی پر مہربان ہو جائے ......تو جب تک وہ ہے اس کا ذکر بھی باقی ہے اگر کسی پر ملک کا صدر مہربان ہو جائے ......تو جہاں تک اس کا حکم چلتا ہے...... وہاں تک وہ ذکر یعنی اس منظور نظر کا ذکر بھی رہتا ہے۔

اگر کسی پر ہندوستان کا صدر مہربان ہو جائے تو پھر ہندوستان کے تمام

صوبوں میں اس مذکور کا ذکر چلے گا

اگر پاکستان کا صدر کسی پر مہربان ہو جائے تو پھر پاکستان کے چاروں صوبوں میں اس مذکور کا ذکر ہوتا رہے گا

نتیجہ یہ نکلا کہ جس کو جس سے پیار ہے...... وہ وہاں تک اس محبوب کے ذکر کو پھیلائے گا کہ جہاں تک:

اس کی حکمرانی چلتی ہے
اس کی شاہی چلتی ہے
اس کی مرضی چلتی ہے
اس کا سکہ چلتا ہے

تو میرے بھائیو! اگر معمولی اقتدار کا یہ حال ہے تو پروردگار کے ذکر کرنے کی کون انتہا جان سکتا ہے؟

تو جس پروردگار کی کونین کی ہر ہر شے پر حکومت ہو...... تو پھر کوئی جگہ باقی بچے گی کہاں کہ جہاں رسول ﷺ کا ذکر پاک نہیں ہوگا؟

ارے...... زندگی پر اس کی حکومت ہے
بندگی پر اس کا قبضہ ہے

تو لہٰذا! زندگی میں بھی رسول ﷺ کا ذکر ہے اور بندگی میں بھی رسول کا ذکر ہے

## کونین میں ہو رہے ہیں چرچے رسول ﷺ کے:

میرے دوستو!

یہ بات اچھی طرح سے ذہن نشین کر لیجئے کہ جہاں تک ذاکر کا حکم چلتا ہے

وہاں تک مذکور کا ذکر ہوتا رہتا ہے......جیسا کہ

آؤ دیکھ لو

نماز میں اللہ کا ذکر ہے تو رسول اللہ ﷺ کا ذکر ہے
اذان میں اللہ کا ذکر ہے تو رسول اللہ ﷺ کا ذکر ہے
کلمہ میں اللہ کا ذکر ہے......تو رسول اللہ ﷺ کا ذکر ہے
زمین میں اللہ کا ذکر ہے......تو رسول اللہ ﷺ کا ذکر ہے
آسمان میں اللہ کا ذکر ہے......تو رسول اللہ ﷺ کا ذکر ہے
فرش پر اللہ کا ذکر ہے......تو رسول اللہ ﷺ کا ذکر ہے
عرش پر اللہ کا ذکر ہے......تو رسول اللہ ﷺ کا ذکر ہے

یعنی......

مکان میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے
لامکان میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے
عالم ارواح میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے
بزم شہداء میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے
نبیوں میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے
رسولوں میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے
صدیقوں میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے
سخیوں میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے
ولیوں میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے
مومنوں میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے

مفسرین میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے
محدثین میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے
مجتہدین میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے
محسنین میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے
مقررین میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے
شریعت میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے
طریقت میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے
جہان میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے
قرآن میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے
صداقت میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے
عدالت میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے
پاکستان میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے
ہندوستان میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے
محشر میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے
قبر میں ......رسول ﷺ کا ذکر ہے

یعنی ......قبرستان وہ ایسی جگہ کہ جہاں کسی کا ذکر نہیں ہے وہاں بھی خدا اور رسول ﷺ کا ذکر ہے......جیسے......کہ

مَنْ رَّبُّکَ......کیساتھ......مَادِیْنُکَ ہے اور پھر مَادِیْنُکَ کے بعد

مَاکُنْتَ تَقُوْلُ فِیْ ھٰذَا الرَّجُلُ

یہ قبر میں رسول ﷺ کا ذکر ہی تو ہے اور کیا ہو رہا ہے؟

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## اعلیٰ محبوب کا ذکر بھی اعلیٰ

دوستو!

جب دیکھا تو ہر جگہ رسول ﷺ کا ذکر پاک ہوتا ہوا پایا

یہاں رسول کا ذکر ہے...... وہاں رسول کا ذکر ہے

مومن کے گھر میں رسول کا ذکر ہے...... ہر خشک و تر میں رسول کا ذکر ہے...... جنت میں رسول ﷺ کا ذکر ہے

اور جب میں نے یوں بولا...... تو ایک صاحب کہنے لگے...... ارے ہاشمی میاں تو نے تو ہر جگہ پر کہہ دیا کہ رسول ﷺ کا ذکر ہے...... تو پھر کیا جہنم میں بھی ہوتا ہے؟

میں نے کہا بھئی اگر وہ رسول کا ذکر کرتا تو جہنم میں جاتا ہی کیوں؟

لیکن اگر علماء اجازت دیں تو میں اس کے بارے میں بھی کچھ کہتا ہوں کہ یہ بھی ممکن ہے سوال ہوا وہ کیسے؟

دیکھو بھئی جنت میں تو رسول اللہ ﷺ کا ذکر پاک ہوگا...... اس میں تو کوئی شک نہیں...... جنت میں جانے والے تمام اللہ کا شکر ادا کریں گے کہ اے اللہ تیرا بہت بہت شکریہ کہ تو نے ہمیں یہ اپنی رحمت والی جگہ عطا فرمائی...... یعنی جنت کی سکونت عطا فرمائی

اے...... اللہ تیرا شکر ہے...... تیری مہربانی ہے
تیری رحمت ہے...... تیری نعمت ہے
تیرا کرم ہے...... تیرا فضل ہے

کہ......

ہم نے تجھے مانا اور تیرے رسول کو مانا......تو یہ جگہ ملی
ہم نے تیری تابعداری کی اور تیرے رسول کی تابعداری کی ......تو یہ جگہ ملی
ہم نے تجھ سے وفاداری کی اور تیرے رسول سے وفاداری کی ......تو یہ جگہ ملی
ہم تجھ پر اور تیرے رسول پر قربان ہوتے رہے......تو یہ جگہ ملی
ہم تجھ پر اور تیرے رسول پر مرتے رہے......تو یہ جگہ ملی
ہم تیری اور تیرے رسول کی محبت میں رہے......تو یہ جگہ ملی
ہم تیرا اور تیرے رسول کا حکم مانتے رہے......تو یہ جگہ ملی
ہم تیری تسبیح اور تیرے رسول پر درود پڑھتے رہے......تو یہ جگہ ملی

ہاں! ہاں! جنت والے کہیں گے......کہ یا اللہ تیرا شکر ہے......کہ:

ہم نے مدینہ دیکھا یا نہ دیکھا لیکن زیارت مدینہ کی تڑپ رکھتے ہیں...... اور جتنی مرتبہ بھی زندگی میں ربیع الاول شریف آیا تیرے حبیب ﷺ کا میلاد مناتے رہے......محفل نعت سجاتے رہے......درود شریف پہنچاتے رہے......اور جھوم جھوم کر صلاۃ وسلام پیش کرتے رہے تو آج جنت نصیب ہوئی ذرا توجہ کرنا......کہ یہ ساری باتیں تو ایک جنتی جنت ملنے پر خوشی میں کہے گا......اپنی مسرت وذوق میں کہے گا......لیکن دوسری طرف ہو سکتا ہے......کہ اس وقت کوئی جہنمی جہنم میں روتے ہوئے شرمندگی سے ندامت سے افسوس سے ہاتھ ملتے ہوئے کہتا ہو......کہ:

اے میرے اللہ بہت بہت افسوس!

کاش ......ہم نے رسول ﷺ کو اپنے جیسا نہ سمجھا ہوتا

کاش ......ہم نے رسول پاک کے خلاف کوئی کتاب نہ لکھی ہوتی

کاش ......ہم نے رسول کے علم کو جانوروں کے علم سے تشبیہ نہ دی ہوتی

کاش ......ہم نے شیطان کی وسعت علمی کو نبی کے علم سے زیادہ نہ بتایا ہوتا

کاش ......ہم نے رسول ﷺ کو اپنے جیسا بشر نہ سمجھا ہوتا

بس جہنم والے اپنی ایک غلطی کو یاد کر کے کہتے ہوں گے......کہ:

کاش......ہم نے لوگوں کے پیچھے لگ کر دامن غوث اعظم نہ چھوڑا ہوتا

آج تو ایک ایک غلطی کو تسلیم کرے گا......اور کہے گا......کہ:

کاش......میں نے رسول ﷺ کو ایسے مانا ہوتا ......جیسے ابوبکر نے مانا تھا

کاش......میں نے رسول ﷺ کو ایسے مانا ہوتا ......جیسے عمر فاروق نے مانا تھا

کاش......میں نے رسول ﷺ کو ایسے مانا ہوتا ......جیسے عثمان غنی نے مانا تھا

کاش......میں نے رسول ﷺ کو ایسے مانا ہوتا ......جیسے حیدر کرار نے مانا تھا

کاش......میں نے رسول ﷺ کو ایسے مانا ہوتا ......جیسے بلال حبشی نے مانا تھا

کاش......میں نے رسول ﷺ کو ایسے مانا ہوتا ......جیسے سلمان فارسی نے مانا تھا

اور کچھ یوں بھی کہیں گے......کہ:

کاش......میں نے رسول ﷺ کو ایسے مانا ہوتا ......جیسے غوث اعظم نے مانا تھا

کاش......میں نے رسول ﷺ کو ایسے مانا ہوتا ......جیسے امام اعظم نے مانا تھا

کاش......میں نے رسول ﷺ کو ایسے مانا ہوتا ......جیسے داتا علی ہجویری نے مانا تھا

کاش......میں نے رسول ﷺ کو ایسے مانا ہوتا ......جیسے خواجہ اجمیری نے مانا تھا

کاش......ہماری سمجھ میں وہ بات آ جاتی ......جو امام احمد رضا نے سمجھائی تھی

کاش ہماری سمجھ میں وہ بات آ جاتی ......جو فضل خیر آبادی نے سمجھائی تھی

اور وہ جہنم میں چلتے ہوئے بھی بار بار یہ کہہ رہا ہے کہ کاش میں نے رسول ﷺ کو مانا ہوتا...... تو وہ جہنم میں بار بار افسوس کر رہا ہے...... اور بار بار رسول ﷺ کا نام لے رہا ہوتا ہے...... تو ایسے میں اس کی زبان سے بھی ذکر رسول ﷺ ہو رہا ہے...... لیکن

میرے بھائیو!

جنت میں بھی ذکر رسول ﷺ ہو رہا ہے
جہنم میں بھی ذکر رسول ﷺ ہو رہا ہے
لیکن...... دونوں ذکر کرنے والے...... ذاکر برابر نہیں ہیں...... یعنی!
جنت میں جو ذکر ہو رہا ہے...... وہ الگ ہے
جہنم میں جو ذکر ہو رہا ہے...... وہ الگ ہے
دونوں کے ذکر کرنے میں فرق یہ ہے...... کہ:
جنتی مسرور ہو کر ذکر کر رہا ہے
جہنمی مجبور ہو کر ذکر کر رہا ہے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## وہ کونسی جگہ ہے جہاں رسول ﷺ کا ذکر نہیں ہے؟

میرے دوستو!

ہم نے پیچھے جنتی گفتگو بھی کی اس میں ثابت ہوا کہ
جہاں میں ہر طرف
جہاں میں ہر جگہ
جہاں میں ہر گھڑی

جہاں میں ہر سو

ذکر خدا بھی ہو رہا ہے...... اور ذکر رسول ﷺ بھی ہو رہا ہے...... لیکن ایک جگہ ایسی ہے کہ جہاں ذکر خدا تو ہو رہا ہے...... لیکن ذکر مصطفیٰ ﷺ نہیں ہو رہا...... اب آپ سب حیران ہو جاؤ گے...... کہ ہاشمی میاں آپ نے تو کہا تھا کہ ہر جگہ پر ذکر خدا کے ساتھ ذکر مصطفیٰ ﷺ بھی ہو رہا ہے...... لیکن اب آپ خود ہی کہہ رہے ہو...... کہ:

ایک مقام ایسا ہے
ایک جگہ ایسی ہے
ایک ساعت ایسی ہے
ایک لمحہ ایسا ہے

کہ جس میں ذکر خدا تو ہوتا ہے لیکن وہاں اس گھڑی...... اس مقام پر ذکر خدا کے ساتھ ذکر مصطفیٰ ﷺ نہیں ہوتا...... تو یہ کیسے ہو سکتا ہے میرے بھائیو! آؤ میں اب آپ کو جگہ بھی بتاتا ہوں...... کہ جہاں ذکر خدا تو ہوتا ہے...... لیکن ذکر مصطفیٰ ﷺ نہیں ہوتا...... اور اس جگہ پر ذکر مصطفیٰ ﷺ کیوں نہیں ہوتا...... میں وہ بھی عرض کیے دیتا ہوں۔

دیکھیے! آپ ایک بکری یا بکرا...... مرغی یا مرغا لیں اور اس کو ذبح کرنے کیلئے جب زمین پر لٹاتے ہیں اور پھر ہاتھ سے چھری اٹھاتے ہیں...... اور بسم اللہ پڑھ کر اس مرغا یا کسی اور:

جانور کی گردن پر چلاتے ہیں
جانور کو ذبح کرتے ہیں

جانور کی شہ رگ کاٹتے ہیں

تو اس گھڑی صرف:

اللہ کا نام لیا جاتا ہے
اللہ کو یاد کیا جاتا ہے
اللہ کو پکارا جاتا ہے

بسم اللہ کہا جاتا ہے...... بسم الرسول نہیں کہا جاتا...... یعنی یہ ایک وہ مقام ہے کہ جس موقعہ پر اللہ کا ذکر کیا جاتا ہے...... لیکن رسول ﷺ کا ذکر نہیں کیا جاتا

آیئے اب بات کرتے ہیں کہ اس موقعہ پر ذکر رسول ﷺ کیوں نہیں کیا جاتا...... نام رسول ﷺ کیوں نہیں لیا جاتا؟

تو آپ سب سے پہلے دیکھئے کہ جب آپ جانور کو لٹا کر کیا کرنے لگے ہیں. ذبحہ کرنے لگے ہیں:

جان کنی کا مرحلہ ہے
شہ رگ کاٹنے کا مرحلہ ہے
جان جانے کا لمحہ ہے
تکلیف سہنے کا موقعہ ہے

یہ مقام مقام غضب ہے اس مقام غضب پر اس مقام ذبح پر یاد رکھئے کہ میرا رب جبار بھی ہے قہار بھی ہے

اس لئے ایسے مقام پر مناسب ہے......

جبار کا ذکر کرو قہار کا ذکر کرو

ایسے مقام پر ذکر رسول ﷺ نہ کرنے میں حکمت یہ ہے کہ جس مقام ذبح پر

تم جبار کا ذکر کر رہے ہو...... قہار کا ذکر کر رہے ہو

ایسے مقام پر رحمت عالم کو آواز نہ دو

حکمت یہ ہے کہ ارے نادان جان لینے کے لئے رسول ﷺ کا ذکر نہیں کرتے...... بلکہ جان بچانے کیلئے رسول ﷺ کا ذکر کرتے ہیں

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## لفظ رسول کا معنیٰ و مفہوم:

اب یہ بات تو ثابت ہو گئی...... کہ ہر جگہ پر رسول ﷺ کے چرچے ہو رہے ہیں...... آؤ اب اس آیت پر بات کرتا ہوں...... جو خطبہ میں تلاوت کرنے کا شرف حاصل کیا ہے...... کہ:

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

اور لفظ ''رسول'' کا معنیٰ و مفہوم سمجھنے کے لئے تین باتیں اشد ضروری ہیں:

پہلا بھیجنے والا اگر بھیجنے والا کوئی نہیں تو کون بھیجے گا؟

دوسرا آنے والا اگر آنے والا کوئی نہیں تو کیا بھیجو گے؟

تیسرا پانے والا اگر پانے والا کوئی نہیں تو کس کے پاس بھیجو گے؟

''رسول'' کا معنیٰ ہے...... بھیجا گیا...... تو پھر اس کے معنیٰ کو صحیح جامعیت اور کاملیت کیساتھ سمجھنے کے لئے تین چیزوں کا ہونا ضروری ہے جو میں نے عرض کردیں۔

## مثال:

اگر ہم یہاں سے ایک پوسٹ کارڈ روانہ کریں اسلام آباد کے ایڈریس پر...... تو اس میں بھی تین چیزیں سامنے آتی ہیں...... کہ

1- بھیجنے والے آپ ہوئے

2- جانے والا پوسٹ کارڈ ہوا

3- اسلام آباد کے پتے پر روانہ ہوا

یعنی...... تینوں چیزیں اشد ضروری ہیں...... یعنی!

اگر بھیجنے والا ہی نہ ہو ...... تو کون بھیجے گا؟

اگر جانے والا ہی نہ ہو ...... تو کون جائے گا؟

اگر ایڈریس ہی نہ ہو ...... تو کہاں جائے گا؟

میں نے ایک مثال کے ذریعے سے یہ باتیں عرض کیں...... کہ رسول کا معنیٰ بھیجا ہوا...... اور بھیجنے کے لئے یہ تینوں باتیں ضروری ہیں جو میں نے آپ حضرات کے سامنے عرض کی ہیں

تو لفظ...... ''رسول'' کے معنیٰ اور مفہوم کے متعلق بات کو آگے بڑھاتے ہوئے...... ہم ان تینوں باتوں کا جواب اللہ کے قرآن سے دیکھتے ہیں...... اللہ تعالیٰ ارشاد فرماتا ہے۔

بھیجا کس نے...... قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ...... اللہ کی طرف سے آیا

کون آیا...... مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ...... محمد اللہ کے رسول ہیں

کن کی طرف آیا...... لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا

یعنی قرآن کی آیات سے معلوم ہوا...... کہ

بھیجنے والا...... اللہ تعالیٰ ہے
آنے والے...... رسول ﷺ ہیں
جن کی طرف آیا...... وہ آپ سب لوگ ہیں

یعنی ......رسول ﷺ اللہ اور اس کے بندوں کے درمیان والے ہیں

## (1) نکتہ:

اب سوال یہاں یہ پیدا ہوتا ہے کہ رسول ﷺ درمیان میں کیوں ہیں؟...... یعنی اللہ تعالیٰ ......اور اس کی مخلوق ...... کے درمیان میں رسول ﷺ موجود ہیں تو ظاہر ہوا کہ ''رسول'' وہ ہوتا ہے کہ جس کا تعلق ہمہ وقت نیچے بھی ہو اور اوپر بھی ہو یعنی......

اوپر خدا سے رابطہ ہو
نیچے مخلوق خدا سے رابطہ ہے

تو رسول ﷺ دونوں کے درمیان میں ہیں یعنی خدا اور اس کے بندوں کے درمیان......رابطہ ہیں

واسطہ ہیں
وسیلہ ہیں

## ذات مصطفیٰ ﷺ وسیلۂ کامل:

رسول کا معنیٰ تو آپ کو سمجھ میں آگیا...... کہ بھیجا ہوا...... اور اب غور کرنا ہے کہ رسول ...... اللہ اور بندوں کے درمیان کیوں ہیں...... آؤ میں عرض کئے دیتا ہوں...... کہ اللہ نے اپنے رسول کو اپنے درمیان اور بندوں کے درمیان اس لئے رکھا کہ اے محبوب ﷺ آپ......

اللہ سے لو اور بندوں کو دو
اللہ سے سیکھو اور بندوں کو سکھاؤ

یعنی...... اے محبوب ﷺ آپ کو جو چاہیئے...... آپ اپنے خدا سے لو اور

بندو تمہیں جو چاہئے...... تم میرے رسول سے لو!

محبوب ﷺ آپ کو:

قرآن چاہئے خدا سے لو
شریعت چاہئے خدا سے لو
طریقت چاہئے خدا سے لو
قانون چاہئے خدا سے لو
دستور چاہئے خدا سے لو
ضابطہ چاہئے خدا سے لو

یعنی...... اے میرے رسول ﷺ آپکو جو چاہئے آپ مجھ سے لیتے رہو......

اور اے میرے بندوں تمہیں جو چاہئے تم رسول سے لیتے رہو

اے میرے بندو!

تم نماز ...... میرے رسول ﷺ سے لینا
تم حج ...... میرے رسول ﷺ سے لینا
تم زکوٰۃ ...... میرے رسول ﷺ سے لینا
تم قانون...... میرے رسول ﷺ سے لینا
تم انعام ...... میرے رسول ﷺ سے لینا
تم مقام ...... میرے رسول ﷺ سے لینا
تم نظام ...... میرے رسول ﷺ سے لینا
تم دستور ...... میرے رسول ﷺ سے لینا
تم بندگی ...... میرے رسول ﷺ سے لینا

یعنی...... اللہ کے بندے جو بھی لیں، رسول سے لیں!

دیکھیں!

اگر نماز ڈائریکٹ اللہ سے نہیں مل رہی
اگر حج ڈائریکٹ اللہ سے نہیں مل رہا
اگر زکوٰۃ ڈائریکٹ اللہ سے نہیں مل رہی
اگر جہاد ڈائریکٹ اللہ سے نہیں مل رہا

ارے...... اگر شریعت ڈائریکٹ نہیں ملتی
تو پھر...... مشیت ڈائریکٹ کیسے ملے گی

ایک نکتے کی بات جو اس میں ہے...... وہ یہ کہ رسول ﷺ اللہ اور اس کے بندوں کے درمیان ہیں...... اور جو درمیان میں ہوتا ہے اس کا رابطہ اوپر خدا سے بھی ہوتا...... نیچے مخلوق خدا سے بھی ہوتا ہے۔

مثال کے طور پر آپ اپنے ہاتھ کی تین سامنے والی انگلیوں کو دیکھیں تو آپ کو مسئلہ سمجھ میں آجائے گا...... کہ درمیان والی انگلی کا رابطہ اوپر والی انگلی سے بھی ہے اور نیچے والی چھوٹی انگلی سے بھی ہے...... اور اگر نیچے والی انگلی ڈائریکٹ اوپر والی انگلی کو ملنا چاہے تو مل نہیں سکتی...... اس وقت تک کہ جب وہ اپنے درمیان والی انگلی سے مل نہ جائے...... واسطہ نہ بنالے...... رابطہ نہ بنالے...... وسیلہ نہ بنالے...... تو اگر نیچے والی انگلی درمیان والی سے ملے بغیر اوپر والی سے مل نہیں سکتی تو پھر بندہ...... رسول اللہ ﷺ کے وسیلے کے بغیر خدا سے کیسے مل سکتا ہے؟...... اور دوسری حکمت اس کے اندر یہ ہے کہ درمیان والی انگلی اوپر والی انگلی سے جب چاہے مل جائے...... لیکن نیچے والی انگلی اوپر والی سے جب چاہے مل

نہیں سکتی...... جب تک کہ وہ درمیان والی کا وسیلہ نہ بنا لے...... یعنی اللہ تعالیٰ نے اپنے رسول کو اپنے اور بندوں کے درمیان ایسا رابطہ بنا دیا ہے...... ایسا وسیلہ بنا دیا ہے...... کہ اگر میرے بندو!

تم مجھ سے ملنا چاہتے ہو
میرا قرب پانا چاہتے ہو

تو پہلے درمیان والے کو راضی کرو...... یعنی پہلے رسول ﷺ کی غلامی اختیار کرو...... جب تم رسول ﷺ کے قرب میں آ گئے...... غلامی میں آ گئے تو پھر تمہارا

رسول ﷺ کی وساطت سے
رسول ﷺ کے وسیلے سے
رسول ﷺ کے رابطے سے

خدا سے بھی رابطہ ہو جائے گا...... اور تم اپنے خدا کو پا لو گے...... لیکن پہلے درمیان والے سے ملنا ضروری ہے...... اور مخلوق اور خالق کے درمیان واسطہ محمد عربی ﷺ کی ذات پاک ہے...... اسی لئے تو اعلیٰ حضرت عظیم البرکت نے کہا تھا...... کہ

بخدا خدا کا یہی ہے در نہیں اور کوئی مفر مقر

## رسول ﷺ کی بارگاہ میں ایماناً جانا یا امتحاناً جانا:

میرے دوستو!

بات یہ ثابت ہوئی...... کہ اللہ تک پہنچنے کے لئے رسول ﷺ کی بارگاہ میں جانا از حد ضروری ہے...... اور پھر رسول ﷺ کی بارگاہ میں جانے کی بھی دو حالتیں ہیں ایک بندہ ایماناً جاتا ہے...... ایک بندہ امتحاناً جاتا ہے...... حضرت سیدنا عمر فاروق رضی اللہ عنہ نے جب اسلام قبول نہیں کیا تھا...... ابھی حالت کفر میں

ہیں......اور جب سنا......کہ

آج مسلمانوں کی تعداد بیں ہو گئی ہے
آج مسلمانوں کی تعداد تیں ہو گئی ہے
آج مسلمانوں کی تعداد پینتیس ہو گئی ہے
آج مسلمانوں کی تعداد انتالیس ہو گئی ہے

تو بس نکلے صحن کعبہ سے......تلوار ہاتھ میں ہے کہا آج میں مسلمانوں کے نبی کو "معاذ اللہ" ختم کر دوں گا......قتل کر دوں گا......بس میں اور برداشت نہیں کروں گا......اب یہ کام یہیں پر رک جانا چاہیے......اور میں اب "چالیسواں" مسلمان نہیں ہونے دوں گا۔

سنا آپ نے عمر رضی اللہ عنہ حالت کفر میں کیا کہہ رہے ہیں؟ میں چالیسواں نہیں ہونے دوں گا......قدرت کی آواز آئی......ارے چل تو سہی تو چالیسواں نہیں ہونے دے گا......تو کیا جانے کہ وہ چالیسواں تو ہی تو ہے ادھر حالت کفر میں چالیسویں کی مخالفت کرنے والے عمر جب بارگاہ رسالت ﷺ میں حاضر ہوئے......تو جب قرب نصیب ہوا......میرے کریم رسول ﷺ کی اس مانگی ہوئی "دعا" کو قبولیت کا رنگ چڑھا......

آقا ﷺ کا قرب نصیب ہوا
آقا ﷺ کی نگاہ سے نگاہ ملی

تو پھر حالت کفر سے نکل کر حالت ایمان میں داخل ہو گے......اور اللہ کی الوہیت کی گواہی دیکر محمد ﷺ کی رسالت کی گواہی دیکر حالت ایمان میں آ گے......حالت قرب میں آ گئے

تو پھر بارگاہ رسالت ﷺ سے ایسا ایمان کا رنگ نصیب ہوا......

کہ ساری عمر حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے مومنوں کو قرب مصطفیٰ ﷺ کی برکات سے حاصل ہونے والی دولت ایمانی کی کیفیت کی حقیقت سمجھانے میں گزار دی

میرے دوستو!

میں نے عرض کیا کہ رسول ﷺ کی بارگاہ میں حاضری دینے والوں کی بہت ساری قسمیں ہیں...... اور دو قسمیں عرض کرنا ہیں مجھے اس مقام پر...... اب عرض کر رہا ہوں کہ ایک ہے ایماناً حاضر ہونا اور ایک ہے امتحاناً حاضر ہونا تو رسول ﷺ کی بارگاہ میں امتحان لینے کیلئے تو ابو جہل بھی حاضر ہوا تھا

مختصر کرتا ہوں...... کہ ہاتھ میں کنکریاں اٹھا کر آگیا اور:

رسول ﷺ...... کی عزت کا امتحان لینے لگا
رسول ﷺ...... کی نبوت کا امتحان لینے لگا
رسول ﷺ...... کی رسالت کا امتحان لینے لگا
رسول ﷺ...... کی صداقت کا امتحان لینے لگا
رسول ﷺ...... کی علمیت کا امتحان لینے لگا

جس بھی کسی کو شک ہے...... وہ آج بھی امتحان لئے رہا ہے......

کبھی مقام رسالت کے متعلق
کبھی عظمت نبوت کے متعلق
کبھی معیار علمیت کے متعلق

تو ابوجہل نے جب امتحان لینے کا ارادہ کیا تو ہاتھ میں کنکریاں اٹھائی ہوئی ہیں...... اور رسول ﷺ کی بارگاہ میں حاضر ہو کر...... سوال کرتا ہے کہ بتاؤ میری مٹھی میں کیا چیز ہے؟ جبکہ:

باہر والے سے...... مٹھی میں بند چیز غیب ہے
اندر والے سے...... باہر موجود ہستی غیب ہے

لیکن...... قربان جاؤں! باہر موجود رسول ﷺ کی ذات پاک نے...... اپنی نگاہ رحمت کے اشارے سے اس مٹھی میں بند چیز کو بلا لیا...... اور مٹھی میں بند چیز نے باہر والی کریم ذات رسول ﷺ کو پہچانتے ہوئے درود مصطفیٰ ﷺ پڑھ کر سنا دیا

امتحانا رسول ﷺ کی بارگاہ میں آنے والا......

رسوا ہو گیا
لاجواب ہو گیا
حواس باختہ ہو گیا
ذلیل و شرمندہ ہو گیا
شرمسار ہو گیا
بوجہ شرمندگی...... خاموشی سے فرار ہو گیا

**لبیک یا رسول اللہ ﷺ**

میرے دوستو!

فیصلہ ہو گیا...... کہ جو دل میں بغض لیکر رسول ﷺ کی بارگاہ میں آئے گا رسوا ہو جائے گا...... اور جو گلے میں غلامی رسول ﷺ کا پٹہ

پہن کر آئے گا...... وہ ایمان کی دولت پا جائے گا...... قرب کی لذتیں پا جائے گا۔

خیر جو بات مجھے اب یہاں پر عرض کرنا ہے وہ یہ ہے کہ جب کنکری ابوجہل کی مٹھی میں ہے اس نے یہ نہیں دیکھا:

کہ کس کی قید میں ہے
کہ کس کی نگرانی میں ہے
کہ کس کے کنٹرول میں ہے
کہ کس کی حراست میں ہے
کہ کس کی مٹھی میں ہے
کہ کس کی حکومت میں ہے
کہ کس کی گرفت میں ہے

ان ساری چیزوں کو نظر انداز کرتے ہوئے...... جب ان بے جان کنکریوں نے دیکھا...... کہ:

اب بات رسول ﷺ کی صداقت کی آ گئی ہے
اب بات رسول ﷺ کی عظمت کی آ گئی ہے
اب بات رسول ﷺ کی عزت کی آ گئی ہے
اب بات رسول ﷺ کی عصمت کی آ گئی ہے

تو پھر انہوں نے یہ نہیں...... دیکھا کہ ہاتھ کس کا ہے؟ کنٹرول کس کا ہے؟ بلکہ بے جان ہو کر...... جانداروں والا کام کر دکھایا...... حجر ہو کر وفاداروں والا کام کر دکھایا...... اور نعرہ رسالت ﷺ لگایا

اور بولیں

لبیک یارسول اللہ ﷺ

## وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ …… کا ہے سایہ تجھ پر:

ارے میرے بھائیو!

میں یہاں پر ایک بات کرنا چاہتا ہوں …… کہ آج تم بھی تو کلمہ پڑھتے ہو! لیکن تمہارے کلمہ پڑھنے اور ان کنکریوں کے کلمہ پڑھنے میں جو فرق ہے ایک نظر اس پر بھی ڈال لو …… کہ:

تم کلمہ …… اسلام آباد میں پڑھتے ہو
تم کلمہ …… لاہور، پشاور میں پڑھتے ہو
تم کلمہ …… گجرات و سکھر میں پڑھتے ہو
تم کلمہ …… ملکوال و ساہیوال میں پڑھتے ہو
تم کلمہ …… گوجرانوالہ و جڑانوالہ میں پڑھتے ہو

لیکن …… ان بے جان کنکریوں سے سبق حاصل کرو ان سے غلامی کا طریقہ وسلیقہ سیکھو …… ان بے جان کنکریوں سے حق گوئی کا جذبہ حاصل کرو ان بے جان کنکریوں سے ادائے محبت سیکھو …… کہ وہ تو کافر کے کنٹرول میں ہیں!

لیکن میں قربان جاؤں! کہ کلمہ محمد مصطفیٰ ﷺ کا پڑھ رہی ہیں

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## بے جان نے جانِ عالم کی خبر دی:

ان کنکریوں نے ایک درس دیا ہے …… ایک محبت کا سبق دیا ہے

...... کہ جب نبی ﷺ کی عزت کا مسئلہ ہو جائے ...... جب نبی ﷺ کی ناموس وعظمت پر حملہ ہو تو پھر خاموش نہیں رہنا ...... پھر صدائے حق بلند کرنی ہوگی ...... اس لئے آج ہم برطانیہ کی سرزمین پر ہونے والے اس عظیم الشان جلسے میں اللہ کو حاضر وناظر مانتے ہوئے ...... اللہ ورسول کو گواہ بناتے ہوئے ...... اپنے قادری ...... چشتی ...... نقشبندی اور چشتی نظامی بزرگوں کی مدد لیتے ہوئے اللہ تعالیٰ کی قسم کھا کر آج یہ وعدہ کرتے ہیں ...... کہ:

اگر ہماری رگوں میں کسی مرد مومن کا خون ہے اور اگر ہماری رگوں میں کسی مومنہ ماں کے پاک دودھ کا اثر ہے تو:

اور اگر ...... ہمارے خون میں غوث جیلانی کی محبت ہے
اور اگر ...... ہمارے دل میں خواجہ اجمیری کی الفت ہے
اور اگر ...... ہمارے سینے میں داتا ہجویری کی عقیدت ہے

تو پھر آج ہم ایک مرتبہ پھر یہ قسم کھاتے ہیں ...... کہ

اگر دنیا کے کسی حصے میں
اگر دنیا کے کسی قصبے میں
اگر دنیا کے کسی شہر میں
اگر دنیا کے کسی نگر میں
اگر دنیا کے کسی علاقے میں
اگر دنیا کے کسی محلے میں

میرے رسول ﷺ کی ناموس پر حملہ کیا گیا تو پھر ہم بھی نہیں دیکھیں گے کہ

ہم کس کی مٹھی میں ہیں

ہم نہیں دیکھیں گے ...... کہ ہم کس کے کنٹرول میں ہیں
ہم نہیں دیکھیں گے ...... کہ ہم کس کی گرفت میں ہیں
ہم نہیں دیکھیں گے ...... کہ ہم کس کی سرزمین میں ہیں
ہم نہیں دیکھیں گے ...... کہ ہم کس کی نگرانی میں ہیں

تمام دشمنان اسلام! اچھی طرح سے یہ سن لیں ...... کہ:

ہم یہ نہیں دیکھتے کہ ہم کتنے ہیں
ہم یہ نہیں دیکھتے کہ ہم کیسے ہیں
ہم یہ نہیں دیکھتے کہ ہم کہاں ہیں

اور یاد رکھنا کہ اگر کسی بدبخت نے گستاخانہ خاکوں کو چھاپنے کی بات کی ...... تو وہ پہلے تاریخ پڑھ لے ...... ان مسلمانوں کی غیرت کی ہسٹری اپنی نظر سے گزار لے ...... کہ اگر ایک لعنتی راجپال گستاخانہ کتاب شائع کرتا ہے تو پھر اس سرزمین پر کوئی ''غازی علم الدین'' بھی پیدا ہو جاتا ہے اور اپنی نگرانی میں میرے رسول ﷺ کی عصمت و ناموس پر حملہ کرنے کی پلاننگ کرنے والے لعنتی سن لیں!

کہ ہمارے دل میں محبت مصطفیٰ ﷺ ہے
ہمارے دل میں الفت مصطفیٰ ﷺ ہے

اور ہم میں کوئی ناموس رسالت کے تحفظ کیلئے جان دے دینے والا مرتا نہیں ہے ...... بلکہ شہید ہوتا ہے ...... اور جو بچ جاتا ہے وہ

غازی ہوتا ہے ...... اور مرتے تو گستاخ ہیں ...... شہید تو وہ ہوتا ہے کہ بار بار پھر شہید ہونے کی خواہش کرتا ہے اور مرتا وہ ہے جو شرمندہ ہوتا ہے ۔

ہم ناموس رسالت پر ہونے والے حملوں سے خاموش رہ کر قیامت کے دن رسول ﷺ کی بارگاہ میں شرمندہ نہیں ہونا چاہتے ...... بلکہ ہر تحفظ ناموس رسالت ﷺ پر جان کا نذرانہ دیکر امر ہونا چاہتے ہیں ...... اس لئے

کوئی جرأت نہ کرے ...... مسلمانوں کے ایمان کو آزمانے کی
کوئی جرات نہ کرے ...... مسلمانوں کی غیرت کو للکارنے کی

ارے مسلمانوں نے یہ بات اچھی طرح سے اپنے دل و دماغ میں بٹھا رکھی ہے ...... کہ:

جب تک میں نہ مرمٹوں عظمت شاہ بطحا پر
خدا شاہد ہے کامل میرا ایمان ہو نہیں سکتا

ارے جان کا نذرانہ پیش کر دینا ہمارے لئے دنیا جہاں کی دولتوں سے بڑی سعادت ہے ...... اور اگر وقت آیا تو ہم یہ سعادت کبھی بھی ہاتھ سے نہیں جانے دیں گے ...... کیونکہ اگر

کفر برباد کرنے والا ہے ...... تو مدینے والا آباد کرنے والا ہے

اللہ تعالیٰ نے اپنے حبیب ﷺ کو ہماری طرف بھیجا اور آپ ﷺ آخری رسول ہیں ...... اور اب ہم ''قصر ختم نبوت'' پر پہرہ دینا بھی نہیں بھول سکتے ...... ہم ناموس رسالت ﷺ کے تحفظ

کیلئے نوکری دینا کبھی چھوڑ نہیں سکتے ...... قرآن نے بتا دیا...... ہم نے دل میں بسا لیا...... کہ

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ...... محمد اللہ کے رسول ہیں

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُلِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ

⁂

## موضوع...... نماز پڑھنا اور نماز بچانا

نَحْمَدُہٗ وَ نَسْتَعِیْنُہٗ وَ نَسْتَغْفِرُہٗ وَ نُؤْمِنُ بِہٖ وَ نَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَ نَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَ مِنْ سَیِّاٰتِ اَعْمٰلِنَا وَ مَنْ یَّھْدِیْہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَ مَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَ نَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَ نَشْھَدُ اَنَّ سَیِّدَ نَا مَوْلَانَا وَ حَبِیْبَنَا وَ سِرَاجَنَا وَ اَشْرَفَنَا وَ سَیِّدَ نَا مُحَمَّدٍ ﷺ

اَمَّا بَعْدُ!

قَالَ اللّٰہُ تَبَارَکَ وَ تَعَالٰی فِی الْقُرْآنِ الْمَجِیْدِ وَ الْفُرْقَانِ الْحَمِیْدِ...... اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

وَاَقِیْمُوا الصَّلٰوۃَ

صَدَقَ اللّٰہُ مَوْلٰنَا الْعَظِیْمُ

اِنَّ اللّٰہَ وَمَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوْنَ عَلَی النَّبِیِّ ط
یٰٓاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْہِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ۝

بارگاہ رسالت مآب ﷺ میں ہدیہ درود وسلام پیش کیجئے

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰه
وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰه

اللہ کا یہ گھر ہے......اور آج ہم نماز جمعہ کی ادائیگی کیلئے یہاں اکٹھے ہوئے ہیں......ہم کیا کرنے آئے ہیں؟......نماز پڑھنے......تو آج میری کوشش ہے کہ ہم نماز کو سمجھ کے جائیں......تاکہ ہماری نماز سمجھ کیساتھ ہو سکے نہ سمجھ کیساتھ نہ ہو! بس دو ہی باتیں ہیں......جن کو اگر میں طوالت کیساتھ کہتا تو......ایک گھنٹہ لگ جاتا......لیکن وہی باتیں میں بیس منٹ میں مکمل کروں گا۔

ان شاء اللہ! یعنی......میری کوشش ہوگی کہ مال آپ کو ایک گھنٹے کا ملے لیکن وہ بیس منٹ میں حاصل ہو جائے!

میں نے خطبہ میں مکمل آیت تلاوت نہیں کی......بلکہ ایک مکمل آیت کریمہ کا ایک پہلا حصہ تلاوت کرنے کا شرف حاصل کیا ہے وہ لفظ ہیں

وَاَقِیْمُوْا......قائم کرو الصَّلٰوۃَ......نماز

یعنی......اللہ کی مرضی ہے کہ ''نماز کو قائم کرو''! اللہ تعالیٰ یہی چاہتا ہے کہ نماز کو قائم کرو!......لوگوں کی مرضی ہے کہ پڑھو! لیکن رحمٰن کی مرضی ہے کہ قائم کرو

## اقامت نماز کا حکم:

بس آج مجھے اقامت نماز پر بات کرنی ہے......اور بس نماز کا قائم کرنا ہی آپ کو سمجھانا ہے......اللہ تعالیٰ نے نماز قائم کرنے کا حکم دیا......اور نماز کے قائم کرنے کیلئے بھی دو شرائط ہیں......اور اگر ان دو شرائط میں سے ایک بھی کم ہوگی تو

نماز قائم نہیں ہو گی

اور کسی بھی چیز کی کاملیت اور جامعیت کیلئے دو چیزیں ضروری ہیں...... یعنی:

آپ حافظ قرآن بننا چاہتے ہیں ......تو دو باتیں ضروری ہیں
آپ عالم قرآن بننا چاہتے ہیں ......تو دو باتیں ضروری ہیں
آپ وکیل بننا چاہتے ہیں ......تو دو باتیں ضروری ہیں
آپ ڈاکٹر بننا چاہتے ہیں ......تو دو باتیں ضروری ہیں
آپ انجینئر بننا چاہتے ہیں ......تو دو باتیں ضروری ہیں
آپ پائلٹ بننا چاہتے ہیں ......تو دو باتیں ضروری ہیں

یعنی ...... جو باتیں میں نے عرض کی ہیں...... ان تمام عہدوں کو حاصل کرنے کیلئے دو باتیں ضروری ہیں...... مثلاً:

حافظ قرآن کیلئے وہ دو باتیں یہ ہیں...... کہ

قرآن پڑھتا رہے اور اس کو یاد رکھے

وہ اس لئے کہ اگر کوئی حافظ قرآن بننے کا خواہش مند قرآن پڑھتا جائے اور پھر ساتھ ساتھ بھولتا جائے...... تو وہ کبھی بھی حافظ قرآن نہیں بن سکے گا یعنی ...... حافظ بننے کیلئے! (1) قرآن کو پڑھنا بھی ضروری (2) اور پڑھے ہوئے کا بچانا بھی ضروری ہے۔

اور اسی طرح اگر کوئی امیر بننا چاہتا ہے...... دولت مند بننا چاہتا ہے تو اس کیلئے بھی دو چیزیں ضروری ہیں وہ دو چیزیں کیا ہیں

1- دولت کا کمانا 2- اس دولت کو بچانا

اور پھر اسی طرح عالم دین بننے کیلئے بھی دو چیزوں کی ضرورت ہے

1- علم حاصل کرنا ضروری ہے 2- اس علم کو بچانا ضروری ہے

اور پھر اس کے بعد ڈاکٹر بننے کے لئے بھی ایسی ہی دو چیزوں کی ضرورت ہے۔

1- میڈیکل کی اعلیٰ تعلیم حاصل کرنا ضروری ہے اور تعلیم کو بچانا ضروری ہے

## 1- نکتہ!

میرے دوستو!

جیسے میں نے عرض کیا کہ ہر مہارت حاصل کرنے کیلئے ...... دو چیزیں ضروری ہیں ہر عہدہ حاصل کرنے کیلئے دو چیزیں ضروری ہیں...... ایک اس چیز کو حاصل کرنا...... اور دوسرا پھر حاصل کرنے کے بعد اس کو بچائے رکھنا...... اس کا تحفظ کرنا اس کو سنبھال کے رکھنا...... اس کے متعلق احتیاط کرنا ضروری ہے!

اسی طرح نماز کا حکم ہو رہا ہے وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ...... نماز قائم کرو

میرے بھائیو! نماز کے لئے بھی دو چیزیں ضروری ہیں...... ایک اس کو پڑھنا...... اور دوسرا اس کو قائم رکھنا یعنی پڑھی ہوئی نماز کو بچانا

اور اگر کوئی بندہ...... نماز تو پڑھتا ہے...... لیکن بچاتا نہیں ہے تو پھر اس کا تو یہ حال ہے...... کہ:

نماز پڑھتا گیا ...... گنواتا گیا
نماز پڑھتا گیا ...... گنواتا گیا
نماز پڑھتا گیا ...... مٹاتا گیا
نماز پڑھتا گیا ...... لٹاتا گیا

سوال یہ پیدا ہوتا ہے کہ بھئی:

کیا ......نمازیں بھی برباد ہو سکتی ہیں؟
کیا ......قیام بھی برباد ہو سکتے ہیں؟
کیا ......رکوع بھی برباد ہو سکتے ہیں؟
کیا ......سجدے بھی برباد ہو سکتے ہیں؟

## عبادتیں بھی برباد ہو جاتی ہیں:

ابھی ہم اسی......ہو سکتا......ہو سکتا......کی باتیں کر رہے تھے......کہ کسی نے کہا ارے ہاشمی میاں تم نہیں جانتے......:

عبادتیں برباد ہو سکتی ہیں
نمازیں برباد ہو سکتی ہیں
قیام برباد ہو سکتے ہیں
رکوع برباد ہو سکتے ہیں
سجدے برباد ہو سکتے ہیں

ارے وہ کیسے؟ تو جواب آیا کہ جو آدم علیہ السلام کے سامنے اکڑ گیا تھا......اس کے یہی سجدے اور رکوع......اور عبادتیں ہی تو برباد ہوئیں تھیں! تو اس کا مطلب یہ ہوا......کہ:

ابلیس کو عبادت کرنا آتا تھا......لیکن بچانا نہیں آتا تھا
قرآن پڑھ کے دیکھو!

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۔ اَبٰى وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ

اور جب تمہارے رب نے فرشتوں کو حکم دیا کہ آدم کو سجدہ کریں تو سب نے سجدہ کیا...... مگر ابلیس نے نہیں

## 2- نکتہ:

ابھی میں نے آپ کو یہ ثابت کر دیا قرآن کی روشنی میں کہ عبادتیں بھی برباد ہوئیں:

ابلیس کی نمازیں بھی برباد ہوئیں
ابلیس کے قیام بھی برباد ہوئے
ابلیس کے رکوع بھی برباد ہوئے
ابلیس کے سجدے بھی برباد ہوئے

یعنی...... اکیلا صرف نماز کو پڑھنا ہی نہیں...... بلکہ بچانا بھی ہے؟

تو اب وہ جو اپنی عبادتیں اور نمازیں بچا نہ سکا...... آپ سب کو اس سے بچنا ہے

ارے کیوں خود کو بچانا ہے؟

بھئی اس لئے کہ وہ تمہارا دشمن ہے اور دشمن سے خود کو بچایا ہی جاتا ہے

اللہ تعالیٰ ارشاد فرماتا ہے:

اِنَّ الشَّیْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِیْنٌ
بے شک شیطان انسان کا کھلا دشمن ہے

دیکھئے...... کہ:

آپ جب نماز پڑھتے ہیں...... یا قرآن پاک کی تلاوت کرتے ہیں...... تو

سب سے پہلے اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم پڑھ کر...... پہلے اپنا کلیجہ ٹھنڈا کرتے ہیں

یعنی:

اگر آپ کا موڈ ہے ......سورۃ رحمٰن پڑھنے کا
اگر آپ کا موڈ ہے ......سورۃ یٰسین پڑھنے کا
اگر آپ کا موڈ ہے ......سورۃ واقعہ پڑھنے کا
اگر آپ کا موڈ ہے ......سورۃ ملک پڑھنے کا

تو اللہ تعالیٰ فرماتا ہے کہ ڈائریکٹ نہ پڑھنا...... تو پہلے کیا پڑھنا ہے؟

اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم

یعنی...... اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ...... پہلے کہنا
بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ...... بعد میں کہنا

تو اصل میں یہاں حکمت یہ ہے کہ اللہ کی منشائے الٰہی یہ ہے کہ مجھے الرحمٰن اور ''رحیم'' بعد میں کہنا پہلے تم میرے دشمن کی مذمت کرو! پہلے شیطان کو کہو مردود...... تاکہ بعد میں کامل ہو جائے درود......

اس لئے ہم جب بھی قرآن پڑھیں تو حکم ہے...... کہ •
سب سے پہلے اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ...... پڑھو
سب سے پہلے بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ...... پڑھو
اس کے بعد...... آیات اللہ...... پڑھو

ہر جگہ پورا سسٹم ہی یہی ہے...... اَعُوْذُ بِاللّٰہ پہلے ...... بِسْمِ اللّٰہ بعد میں...... آیت اللہ اس کے بعد میں...... یہ کیا مطلب ہے؟ اس میں کیا

حکمت ہے

ارے بھائی حکمت یہ ہے کہ تمہیں دشمن خدا سے جتنی نفرت ہوگی...... محبت خداوندی اتنی ہی معتبر ہوگی

اور میں آج درگاہ ابوالبیان رحمۃ اللہ علیہ پر گوجرانوالہ کی سرزمین پر کھڑا ہو کر ایک جملہ آپ کو دے رہا ہوں...... کہ:

دشمن خدا سے جتنی نفرت ہوگی...... محبت خداوندی اتنی ہی معتبر ہوگی

اور اسی طرح دشمن رسول سے جس قدر تمہیں نفرت ہوگی!...... محبت رسول صلی اللہ علیہ وسلم اتنی ہی معتبر ہوگی

## شیطان کے خلاف خوب بولو!

میرے دوستو!

ایک بات اور یہاں پر عرض کرنا چاہتا ہوں کہ شیطان کے خلاف جب بھی بولو تو خوب بولو...... اس لئے کہ وہ ایک تو دشمن خدا ہے...... اور دوسرا وہ ہماری برادری کا بھی نہیں ہے...... ارے وہ تو ''جن'' ہے...... ہماری برادری تو انسانوں سے ہے...... اس لئے اب میں اگر شیطان کے خلاف بولوں گا تو کسی کو برا نہیں لگنا چاہئے...... اس لئے کہ وہ تو انسان کا دشمن ہے! قرآن کہتا ہے

اِنَّ الشَّیْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِیْنٌ

بے شک شیطان انسان کا کھلا دشمن ہے

اللہ نے جب شیطان لعین کے دشمن ہونے کی بات کی تو یہ نہیں فرمایا...... کہ لِلْمُؤْمِنِیْنَ...... یعنی مومنین کیلئے دشمن ہے

بلکہ فرمایا...... لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِیْنٌ

یعنی صرف مومنین کیلئے دشمن نہیں...... بلکہ پوری انسانیت کے لئے دشمن ہے......تو پھر انسانوں کو چاہئے کہ وہ اپنے دشمن کے خلاف بولیں

اور اگر میں شیطان کو برا کہوں......اور اندر کھاتے کسی کو برا لگے......تو پھر ہم سمجھ جائیں گے......کہ اس کا اندر کھاتے اس شیطان سے کوئی تعلق ہے

اب میں یہاں آپ سب سے ایک سوال کرنا چاہتا ہوں...... کہ آپ شیطان سے بچنا چاہتے ہیں کہ نہیں؟

یقیناً آپ سب حضرات شیطان سے بچنا چاہتے ہیں......اس مقام پر میں صرف ایک لفظ بتاؤں گا کہ اس شیطان سے کیسے بچنا ہے

بھئی اگر اس شیطان سے بچنا ہے تو پھر ضروری ہے کہ پہلے اس کو پہچان لو! اگر تم شیطان کو پہچانو گے نہیں تو بچو گے کیسے؟

یعنی......سب سے پہلے پہچان ضروری ہے...... دیکھئے ایک دو تین سال کا بچہ ہے وہ اپنے پیشاب اور پاخانہ سے بچتا نہیں ہے...... وہ اس لئے کہ وہ اس کو پہچانتا نہیں ہے......اور جب پہچان لیتا ہے تو پھر خوب بچتا ہے......اسی طرح:

اگر جراثیم سے بچنا ہے ......تو اس کی پہچان ضروری ہے
اگر وائرس سے بچنا ہے......تو اس کی پہچان ضروری ہے
اگر برائی سے بچنا ہے ......تو اس کی پہچان ضروری ہے
اگر ناپاکی سے بچنا ہے ......تو اس کی پہچان ضروری ہے
اگر شیطان سے بچنا ہے ......تو اس کی پہچان ضروری ہے

تو آیئے اب میں عرض کرتا ہوں ...... کہ شیطان کو پہچاننا کیسے ہے؟ تو شیطان کی پہچان کرنی ہے......تو دیکھو!

اللہ تعالیٰ نے جب اسے پیدا کیا اور اس کو عبادت کرنے کا حکم دیا......تو اس ابلیس نے اللہ کی عبادت......:

ایک سال نہیں کی
ایک سو سال نہیں کی
ایک ہزار سال نہیں کی
ایک لاکھ سال نہیں کی

بلکہ اس نے اللہ کی عبادت چھ کروڑ سال تک کی ہے! یعنی...... اتنا عبادت گزار تھا کہ اگر پوری دنیا میں اس زمین پر اس کے سجدے رکھے جائیں تو آپ کو رائی رکھنے کی جگہ بھی ایسی نہیں ملے گی کہ جہاں اس کا سجدہ نہ پڑا ہو......وہ چھ کروڑ سال تک......

عبادت کرتا رہا ہے
نماز پڑھتا رہا ہے
رکوع کرتا رہا ہے
سجدہ کرتا رہا ہے
تسبیح کرتا رہا ہے
قیام کرتا رہا ہے

یعنی......اس ابلیس کو بنانے کے بعد جب اللہ نے اس کو ایک مرتبہ کہا......کہ:

تم میری عبادت کرو! تو اس نے کتنی دیر عبادت کی چھ کروڑ برس تک......

اور جب اللہ نے فرمایا......کہ

میرے آدم نبی کی تعظیم کرو تو پھر ایک سیکنڈ بھی نہیں کی...... بس اسی سے ہم پہچان گے...... کہ

عبادت کہو تو کرے گا
نبی کی تعظیم کہو تو نہیں کرے گا

اور آج یہی پہچان ہے...... اس کے پیروکاروں کی...... کہ:

اگر نماز کا کہو...... تو نمازیں پڑھیں گے
اگر رکوع کا کہو...... تو رکوع کریں گے
اگر قیام کا کہو...... تو قیام کریں گے
اگر سجدہ کا کہو...... تو سجدے کریں گے
اگر تسبیح کا کہو...... تو تسبیح کریں گے

میرے بھائیو...... غور کرنا میرے جملوں پر کہ اگر ایسے لوگوں...... کو نبی کی تعظیم کا کہا جائے تو فوراً انکار کر دیتے ہیں:

یعنی...... عبادت کرنے میں وہ بھی ہوشیار تھا
عبادت کرنے میں یہ بھی ہوشیار ہیں
لیکن...... جو اس کا انکار تھا
آج وہی ان کا انکار ہے
اور...... جو اس کا رزلٹ ہے
وہی ان کا رزلٹ ہے

## شیطان کا کیا حال ہوا؟

میرے دوستو!

وہی انسان کا کھلا دشمن شیطان...... کہ اس کی پوزیشن کا یہ حال تھا...... کہ عبادت کرتا پھرتا...... موج میں رہتا...... اور جب چاہتا جنت میں گھومتا پھرتا اور جنت کے دروازے اس کے لئے ہر وقت کھلے تھے اور جنت میں جب داخل ہو جاتا تو پنگھوڑے پر بیٹھ جاتا...... اور فرشتے اس پنگھوڑے کی ڈوری پکڑ کر اس کا جھولا جھولاتے تھے!

وہاں بھی عزت کی نگاہ سے دیکھا جاتا تھا...... کہ اللہ کا عبادت گزار ہے...... کیا مقام تھا کہ جب جی چاہا جنت کے جس طبقے میں چاہا گھوم لیا...... جنت کے جھولے پر بیٹھا اور جھول لیا...... اگلی باتوں پر غور کرنا لیکن جب اس نے تعظیم نبوت کرنے سے انکار کر دیا تو پھر اللہ نے ایسا حال کیا...... ایسا خوار کیا...... ایسا ذلیل کیا...... ایسا رسوا کیا...... کہ جنت سے ایسا باہر نکالا کہ پھر کبھی بھی جنت میں داخل نہیں ہو سکے گا۔

ارے...... جب جنت کے جھولوں پر جھولنے والا...... اور جنت میں رہنے والا ''تعظیم نبوت'' سے انکار کرنے پر جنت سے ایسا باہر ہوا کہ پھر جنت میں کبھی داخل نہیں ہو سکے گا تو میں ایک بات پوچھتا ہوں کہ جب ''تعظیم نبوت'' سے انکار کرنے پر جنت میں رہنے والا باہر ہو گیا...... تو جواب کوئی تعظیم نبوت سے انکار کرے وہ تو پہلے ہی باہر ہے وہ جنت میں کیسے داخل ہو سکے گا؟

### 3- نکتہ:

اب یہاں پر ایک نکتہ اور پیش کرتا ہوں اس کے بعد اگلی بات جاری رکھتے ہیں...... کہ استاد، استاد ہوتا ہے...... اور چیلا، چیلا ہوتا ہے...... یعنی شاگرد، شاگرد ہی ہوتا ہے وہ استاد کی ٹکر میں نہیں آ سکتا۔

اب دیکھیے شیطان نے جب ارادہ کیا کہ نبی کی توہین کرنی ہے...... تعظیم نبوت سے انکار کرنا ہے تو دیکھیے اس نے انداز کیا اپنایا ہے...... دیکھیے سب سے پہلے اس کے ذہن میں کیا آیا ہے؟

اس نے حضرت آدم علیہ السلام کی تمام خوبیوں سے نظر ہٹا کر...... صرف ایک خوبی کو سامنے رکھا اور پھر اسی ایک خوبی پر ہی اعتراض کر کے ہمیشہ ہمیشہ کیلئے ذلیل ہو گیا...... ہمیشہ ہمیشہ کیلئے خوار ورسوا ہو گیا وہ خوبی کونسی تھی...... کہ جس پر ابلیس نے اعتراض کیا...... وہ خوبی تھی سیدنا آدم علیہ السلام کا مٹی سے پیدا کیا جانا اس نے سجدہ نہ کرنے کی ایک بڑی وجہ بھی یہی بتائی کہ۔

آدم علیہ السلام مٹی سے بنے ہیں

قرآن نے بتایا ہے کہ اس ابلیس نے یہ اعتراض کیا اور سجدہ نہ کرنے کی وجہ بیان کی کہ یہ مٹی سے بنا ہے اور میں آگ سے بنا ہوں یعنی...... جب نبی کی توہین کرنا چاہا تو سب سے پہلے مٹی کا تصور ذہن ابلیس میں آیا...... یعنی استاذ بولا...... کہ:

آدم مٹی سے ہیں

اور شاگرد بولا...... کہ

نبی مرکر مٹی میں ہیں

ارے دیکھو تو وہ ابلیس بھی مٹی سوچ رہا ہے...... اور اس کے شاگرد بھی مٹی سوچ رہے ہیں؟

اور یہ دیکھیے...... کہ ابلیس نے نبی کو مٹی سے کہا...... اس نے یہ بات کہیں لکھی نہیں وہ تو اللہ تعالیٰ نے قرآن میں اس کے انکار کرنے کی وجہ بیان کر

دی...... کہ ابلیس نے کہا اَنَا خَیْرٌ مِّنْہُ ...... یعنی وہ استاذ تھا...... نہ اس لئے اس نے انکار کیا لیکن اس کا ثبوت خود سے نہیں چھوڑا...... اس نے کفر کیا لیکن اس کفر کا نشان پیچھے نہیں چھوڑا...... وہ تو اللہ نے بتا دیا...... ورنہ اس نے تو ثبوت نہیں چھوڑا!! اور ادھر دوسری طرف شاگرد اس قدر بے وقوف ہیں...... کہ یہ سب کچھ اپنی کتابوں میں چھاپ گے...... ارے استاد چھپا گیا اور شاگرد چھاپ گیا کتابوں میں:

## تعظیم نبوت میں جھکنا اور قیام کرنا:

میرے دوستو!

ادب کے حوالے سے یہاں پر ایک اور چیز بیان کرتا ہوں کہ ابلیس کو کہا گیا کہ نبی کی تعظیم میں جھکو...... تو وہ جھکا نہیں...... اور ادھر شاگرد کو کہا جاتا ہے کہ اٹھو ...... یعنی قیام کرو تو وہ اٹھتا نہیں ہے!

یعنی...... استاد جھکتا نہیں ہے

شاگرد اٹھتا نہیں ہے

وہ تعظیم کیلئے جھکنے کو تیار نہیں...... آج اس کے شاگرد تعظیم کیلئے اٹھنے کو تیار نہیں ہیں اور قربان جاؤں! یہاں میرے نبی کا معجزہ دیکھو! کہ اے لوگو! تم تعظیم نبوت کے لئے نہیں اٹھو گے...... میں تمہیں آب زم زم کیلئے اٹھا دونگا دیکھو......:

ہم نے گھر کا پانی بیٹھ کے پیا
ہم نے گھڑے کا پانی بیٹھ کے پیا
نہر کا پانی بیٹھ کے پیا

کنواں کا پانی بیٹھ کے پیا
نل کا پانی بیٹھ کے پیا
پھلوں کا پانی بیٹھ کے پیا

اور جب کسی نے ہمارے ہاتھ میں...... ایک گلاس میں پانی ڈال کر تھما دیا اور ساتھ کہا کہ یہ ”آب زم زم“ ہے...... تو ہم فوراً کھڑے ہو گے! آخر کیوں بھئی اس لئے کہ وہ تمام جگہوں کے پانی جو ہم نے بیٹھ کر پیئے وہ تو سب کے سب عام پانی تھے لیکن یہ خاص پانی ہے...... اس لئے اس کی تعظیم کرتے ہوئے اس کو کھڑے ہو کر پینا سنت ہے

سوچنے کی بات یہ ہے...... کہ پانی کے لئے قیام ہو رہا ہے...... اور پانی کی تعظیم کیلئے کھڑے ہو کر سب آب زم زم پی رہے ہو!

اور وہ پانی بھی نکلا تو حضرت اسماعیل علیہ السلام کے قدموں کے نتیجہ میں...... ارے میں پوچھتا ہوں کہ قدم کی رگڑ سے نکلنے والے پانی کی عزت کا عالم یہ ہے تو پھر اس پاک قدم کی عظمت کا کیا عالم ہوگا؟

یہاں آپ کو ایک خاص جملہ دے رہا ہوں!...... کہ
آب زم زم کیلئے قیام تعظیمی کرنے والو!
تم کیا ساقیٔ آب کوثر کیلئے قیام نہیں کرو گے؟

مین نے آگے عرض کیا تھا...... کہ وہ ابلیس تعظیم میں جھکنے کو تیار نہیں...... اور ادھر ایک مولوی تعظیم میں اٹھنے کو تیار نہیں

ویسے اندر کھاتے مقصد ایک ہی ہے کہ نبی کی تعظیم نہیں کرنی...... میرے بھائیو!

اب تو سجدۂ تعظیمی بھی حرام ہے...... لیکن قیام تعظیمی حرام نہیں ہے......

اب سجدہ تو شریعت نے غیر اللہ کیلئے حرام کر دیا...... لیکن قیام تعظیمی کو حرام قرار نہیں دیا۔

## طریقہ بدلنے سے قانون کی دفعہ نہیں بدلتی:

یعنی اب سجدہ سے تعظیم نبوت نہیں ہوگی...... بلکہ قیام تعظیمی سے نبوت کی تعظیم کی جائے گی اور یاد رکھئے...... کہ طریقہ بدلنے سے قانون کی دفعہ نہیں بدلتی...... ایک مثال سنیئے ہندوستان میں قتل کی سزا ہے 302 اور یقیناً آپ کے پاکستان میں بھی قتل کی دفعہ 302 ہی ہے...... اللہ ناحق قتل سے بچائے اس لئے کہ یہ کبیرہ گناہ ہے اس لئے اس سے بچنا ضروری ہے

لیکن اگر کسی نے کسی بھی وجہ سے کسی کو قتل کر دیا تو...... اس پر قانون کی دفعہ 302 ہی لاگو کی جائے گی...... اب:

چاہے...... کوئی چاقو سے قتل کرے
چاہے...... کوئی بندوق سے قتل کرے
چاہے...... کوئی کلہاڑی سے قتل کرے
چاہے...... کوئی اینٹ سے قتل کرے
چاہے...... کوئی پتھر سے قتل کرے
چاہے...... کوئی خنجر سے قتل کرے

تو سب قاتلوں کی سزا 302 وہ اس لئے کہ طریقہ بدلنے سے دفعہ نہیں بدلتی

مثلاً...... ایک قاتل کو عدالت میں پیش کیا جائے...... اور وہاں پہلے کسی قاتل کی سزا سنائی جا رہی ہو...... جس نے کسی بندے کو بندوق سے قتل کیا ہو! تو جب اس کا

فیصلہ سنایا گیا تو وہ دفعہ 302 کا سنایا گیا

تو اب دوسرا قاتل جب جج صاحب کے سامنے پیش ہوا تو کہنے لگا کہ جی ابھی آپ نے فلاں بندے کو سزا سنائی ہے؟ وہ جج صاحب بولے کہ ہاں سنائی ہے وہ بھی قاتل تھا اور تم بھی ایک قاتل ہو...... لیکن وہ دوسرا قاتل فوراً جج صاحب کے سامنے بول کے کہنے لگا جی صاحب! اس نے بندوق کی گولی سے قتل کیا تھا اور میں نے تو بندوق کبھی چلائی ہی نہیں...... میں نے تو گولی سے قتل نہیں کیا...... میں نے تو چھری سے قتل کیا ہے...... تو یہ گفتگو سن کر جج صاحب بولے...... ارے وہ بھی قاتل تھا تم بھی قاتل ہو...... جو سزا اس کی تھی وہی سزا تیری ہے۔

اس لئے کہ آلہ قتل بدلنے...... یا طریقہ قتل بدلنے سے قتل کی دفعہ نہیں بدلتی...... تو بھائی یہی بات تو ہم اس وقت سے کر رہے ہیں کہ طریقہ بدلنے سے قانون کی دفعہ نہیں بدلتی۔

اگر کسی کو نبی کیلئے جھکنے سے انکار ہو...... یا اٹھنے سے انکار ہو...... طریقہ بدلنے سے سزا نہیں بدلتی۔

اب کھل کر یہ بات سامنے آگئی ہے کہ ابلیس کو عبادت کرنا آتا تھا...... لیکن بچانا نہیں آتا تھا۔

اور نماز کو بچانے پر اس لئے زیادہ زور دیا جا رہا ہے کہ اس دنیا میں اگر کوئی سب سے آسان کام ہے...... تو وہ نماز کا پڑھنا ہے...... لیکن نماز کو بچانا یہ بہت مشکل ہے یعنی نماز پڑھنا بہت آسان عبادت ہے

دیکھئے...... یہی ایک عبادت ہے...... کہ جو آپ ہر حال میں کر سکتے ہیں

......اور یاد رکھئے!

ہر حال میں آپ روزہ نہیں رکھ سکتے
ہر حال میں آپ زکوٰۃ نہیں دے سکتے
ہر حال میں آپ حج نہیں کر سکتے
ہر حال میں آپ جہاد نہیں کر سکتے

لیکن نماز واحد ایک ایسی عبادت ہے کہ جو آپ ہر حال میں پڑھ سکتے ہیں......اتنی آسانیاں ہیں اس میں!......کہ:

کھڑے ہو کر نہیں پڑھ سکتے......بیٹھ کر پڑھو!
بیٹھ کر نہیں پڑھ سکتے......تو لیٹ کر پڑھو
لیٹ کر نہیں پڑھ سکتے......تو اشارے سے پڑھو
اشارے سے نہیں پڑھ سکتے......تو ارادے سے پڑھو

یہی عبادت نماز ہے کہ جو سب سے زیادہ آسانیاں اپنے دامن میں رکھتی ہے اس کے لئے:

نہ کوئی پاسپورٹ کی ضرورت ہے
نہ کوئی درخواست کی ضرورت ہے
نہ کوئی ویزہ لگوانے کی ضرورت ہے
نہ کوئی قربانی کرنے کی ضرورت ہے
نہ جدہ کی طرح مال چیک کروانے کی ضرورت ہے

اور دوسری عبادات......زکوٰۃ میں مال کی قربانی کا جذبہ چاہئے۔
حج میں لذتوں کی قربانی کا ارادہ چاہئے

جہاد میں جان کی قربانی کا حوصلہ چاہیے

لیکن نماز واحد ایسی عبادت ہے...... کہ جس کے لئے ایک لوٹا پانی کی ضرورت ہے بس پاکی ہوگی...... وضو ہوگیا تو:

نہ جگہ کی کوئی قید ہے
نہ مقام کی کوئی قید ہے
نہ مخصوص لباس کی کوئی قید ہے

اور اس سے بھی آسانی یہ ہے کہ اگر کسی کو پانی میسر نہ آئے...... پانی نہ مل سکے...... تو وہ تیمم کر کے نماز پڑھ سکتا ہے

تو نتیجہ کیا نکلا...... یہی کہ نماز پڑھنا آسان ہے...... لیکن بچانا مشکل ہے

ذرا غور کرنا...... میری گفتگو پر...... کہ نماز پڑھنا اتنا آسان ہے...... کہ مدینہ کی سرزمین پر

دل میں کفر رکھ کر
دل میں بغض رکھ کر
دل میں حسد رکھ کر

مدینے کے منافقوں نے رسول ﷺ کی اقتدا میں بھی نماز پڑھی...... اور منافق بھی ایسے تھے کہ ان کی مذمت میں ایک آیت مبارکہ نازل نہیں ہوئی...... بلکہ پوری سورۃ المنافقون نازل کی گئی ہے...... یعنی ضرورت تھی قیامت تک منافقوں کو پہچاننے کی اس لئے ایک آیت کو نازل نہیں کیا...... بلکہ پوری سورۂ منافقون نازل فرمائی تاکہ قیامت میں آنے والوں کو منافقوں کی پہچان ہوجائے!

نماز پڑھنا اتنا آسان ہے ...... کہ منکرین زکوٰۃ بھی نماز پڑھتے تھے ...... انہوں نے بھی نماز پڑھنے سے انکار نہیں کیا تھا بلکہ زکوٰۃ دینے سے انکار کیا تھا۔

تو ثابت ہوا کہ نماز کا پڑھنا آسان ہے لیکن نماز کو بچانا مشکل ہے ...... نماز پڑھنا اتنا آسان ہے ...... کہ منکرین زکوٰۃ کو بھی نماز پڑھنا آتا تھا!

لیکن نماز کو بچانا ...... حضرت ابوبکر رضی اللہ عنہ کو آتا تھا
نماز کو پڑھنا اتنا آسان ہے کہ نماز پڑھنا باغیان عثمان کو بھی آتا تھا
لیکن نماز کو بچانا ...... حضرت عثمان رضی اللہ عنہ کو آتا تھا
نماز کو پڑھنا اتنا آسان ہے کہ نماز پڑھنا خارجیوں کو بھی آتا تھا
لیکن نماز کو بچانا ...... حضرت علی رضی اللہ عنہ کو آتا تھا
نماز کو پڑھنا اتنا آسان ہے کہ نماز پڑھنا یزیدیوں کو بھی آتا تھا
لیکن نماز کو بچانا ...... حسین ابن علی رضی اللہ عنہ کو آتا تھا
نماز کو پڑھنا اتنا آسان ہے کہ نماز پڑھنا مامون کو بھی آتا تھا
لیکن نماز کو بچانا ...... امام احمد بن حنبل رضی اللہ عنہ کو آتا تھا
نماز کو پڑھنا اتنا آسان ہے کہ نماز پڑھنا ”شہنشاہ اکبر“ کو بھی آتا تھا
لیکن نماز کو بچانا ...... امام ربانی کو آتا تھا
ارے ایسے میں ...... ایک جملہ آپ کو دینا چاہتا ہوں ...... کہ
نماز پڑھنا تو پاکستان کے ...... ہر بدعقیدہ کو بھی آتا ہے
لیکن نماز کو بچانا ...... اہلسنت کو آتا ہے

## نماز پڑھنی کیسے ہے اور بچانی کیسے ہے؟

میرے بھائیو!

بس میں نے یہ بات تقریر کے شروع میں عرض کی تھی کہ میں آپ کو بتاؤں گا کہ نماز کو بچانا کیسے ہے؟

تو آؤ اس کے لئے پہلے یہ جاننا ضروری ہے نماز کو پڑھنا کیسے ہے...... اور پھر اس کے بعد میں اس پڑھی ہوئی نماز کو بچانا کیسے ہے؟

نماز کو پڑھنا کیسے ہے؟...... اگر نماز پڑھنی سیکھنی ہے تو کسی بھی دار العلوم میں داخلہ لے لو...... تمہیں نماز پڑھنا سکھا دیں گے...... کسی بھی جماعت کے مفتی صاحب کے پاس چلے جاؤ...... تمہیں نماز پڑھنی سکھا دیں گے

کسی بھی مسلک کے عالم کے پاس چلے جاؤ...... تمہیں نماز پڑھنا سکھا دیں گے

یاد رکھیے...... آپ جہاں بھی چلے جاؤ...... وہاں نماز پڑھنا آپ کو......

تین دن میں سکھا دیا جائے گا
دس دن میں سکھا دیا جائے گا
تیس دن میں سکھا دیا جائے گا
ساٹھ دن میں سکھا دیا جائے گا

لیکن نماز کو بچانا نہیں سکھائے گا...... اس لئے...... کہ:

نماز کو بچانا سیکھنا ہے ......تو غوث اعظم رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھ
نماز کو بچانا سیکھنا ہے ......تو امام اعظم رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھ

نماز کو بچانا سیکھنا ہے ......تو داتا علی ہجویری رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھ
نماز کو بچانا سیکھنا ہے ......تو خواجہ اجمیری رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھ
نماز کو بچانا سیکھنا ہے ......تو میاں شیر ربانی رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھ
نماز کو بچانا سیکھنا ہے ......تو مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھ
نماز کو بچانا سیکھنا ہے ......تو سید جماعت علی شاہ رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھ
نماز کو بچانا سیکھنا ہے ......تو سید مہر علی شاہ رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھ
نماز کو بچانا سیکھنا ہے ......تو فرید الدین رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھ
نماز کو بچانا سیکھنا ہے ......تو نظام الدین رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھ
نماز کو بچانا سیکھنا ہے ......تو امام احمد رضا بریلوی رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھ

## نماز ہوتی کب ہے؟

اب آؤ اس کے بعد آپ کو بتاؤں کہ نماز ہوتی کب ہے؟...... ابھی خطاب کے بعد آپ سب لوگ نماز پڑھیں گے......تو اس کے ساتھ یہ بھی ضروری ہے کہ نماز پڑھنے والے کو معلوم ہو کہ نماز پختہ کب ہوتی ہے؟ اور نماز ادا کب ہوتی ہے

یعنی...... یہ دونوں باتیں جاننا اہم ہے کہ نماز ہوتی کب ہے؟ اور نماز پختہ کب ہے...... باتیں دو ہی ہیں...... کہ نماز ہوتی کب ہے؟ نماز بچتی کب ہے؟

دیکھو...... کہ جب نماز پڑھو گے......تو پھر اس کو بچاؤ گے...... لیکن یہ بھی تو ضروری ہے کہ نماز ہوتی کب ہے...... اگر ہوئی ہی نہ تو بچاؤ گے کیسے...... اور اگر بچا پاؤ گے تو پھر قائم ہوئی......تو قرآن بھی قائم کرنے کا

کہہ رہا ہے

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ......اور نماز قائم کرو

تو اتنا اہم مسئلہ سننے کے لئے اپنے دل کی کھڑکیاں کھول لو......تا کہ جو بات میں کہنا چاہتا ہوں......وہ آسانی سے آپ کے دل میں بیٹھ جائے

کوئی بہت دیر لیکر میں نے کوئی لمبے جملے نہیں کہنے......بس دو ہی جملوں میں مسئلہ کو آپ کے سامنے پیش کرنا ہے......کہ نماز ہوتی کب ہے؟......اور نماز بچتی کب ہے

میرے بھائیو!

بس میں آپ کے سامنے اختتامی اور تاریخی دو جملے عرض کرنا چاہتا ہوں......کہ نماز ہوتی کب ہے؟ اور نماز بچتی کب ہے؟

دیکھو...... جب کعبۃ اللہ کی طرف چہرہ ہو تو تب نماز ہوتی ہے......اور جب دل حالت نماز میں رسول اللہ کی طرف ہو تو ''نماز بچتی'' ہے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

چہرہ کعبۃ اللہ کی طرف ہو......دل رسول اللہ ﷺ کی طرف ہو تو نماز ہوتی بھی رہے گی اور نماز بچتی بھی رہے گیا

اور یاد رکھو کہ......جس دل میں رسول ﷺ آجائیں......وہ دل پنجاب کے کسی پنجابی کا سینہ نہیں رہتا......وہ تو مدینہ بن جاتا ہے

یاد رکھئے......میں نے آپ کے سامنے نماز کے متعلق یہ گفتگو جو عرض کی ہے......اس کا خلاصہ یہ ہے کہ......نماز پڑھتے رہو اور جو طریقہ میں نے عرض کیا

ایسے بچاتے رہو اور جب پڑھتے رہو گے...... اور بچاتے رہو گے

تو پھر نماز قائم ہو جائے گی

اور...... وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ...... پر عمل پورا ہو جائے

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

※ ※ ※

## موضوع...... آدم علیہ السلام زمین پر خلیفۃ اللہ

نَحْمَدُہٗ وَ نَسْتَعِیْنُہٗ وَ نَسْتَغْفِرُہٗ وَ
نُؤْمِنُ بِہٖ وَ نَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَ نَعُوْذُ بِاللّٰہِ
مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَ مِنْ سَیِّاٰتِ
اَعْمٰلِنَا وَ مَنْ یَّھْدِیْہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ
وَ مَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَ نَشْھَدُ
اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ
وَ نَشْھَدُ اَنَّ سَیِّدَنَا مَوْلَانَا وَ حَبِیْبَنَا
وَ سِرَاجَنَا وَ اَشْرَفَنَا وَ سَیِّدَنَا
مُحَمَّدٍ صلی اللہ علیہ وسلم

اَمَّا بَعْدُ!

قَالَ اللّٰہ تبارَکَ وَ تعَالٰی فِی الْقُرْاٰنِ الْمَجِیْدِ وَ
الْفُرْقَانِ الْحَمِیْدِ...... اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ
الرَّجِیْمِ

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَۃً
صَدَقَ اللّٰہُ مَوْلٰنَا الْعَظِیْمِ

اِنَّ اللّٰہَ وَمَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوْنَ عَلَی النَّبِیِّ ط
یٰٓاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْہِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ○

بارگاہ رسالت مآب صلی اللہ علیہ وسلم میں ہدیہ درود وسلام پیش کیجیے

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰه

وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰه

شیخ الاسلام والمسلمین، رئیس المحققین، محدث اعظم ہند رحمۃ اللہ علیہ کے جانشین، مدنی میاں صاحب اور جگر گوشہ غزالی زماں سید حامد سعید کاظمی شاہ صاحب......

اور سادات کرام اور علمائے ملت اسلامیہ......اور معزز حاضرین وسامعین

میں جانتا ہوں کہ آپ شیخ الاسلام کی زیارت کر رہے ہیں......اور ان کی خطابت سے بھی محظوظ ہونا چاہتے ہیں......ان شاء اللہ وہ بھی میرے بعد آپ کے سامنے خطاب فرمائیں گے......تو انتہائی توجہ فرمائیں......آپ توجہ فرمائیں اور طبیعت جھوم جائیگی......اگر بات آپ کی سمجھ میں آجائے تو......اللہ تعالیٰ فرماتا ہے!

اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً

میں زمین میں خلیفہ بنانا چاہتا ہوں

## اللہ نے جب خلیفہ بنایا:

اللہ نے خلیفہ بنایا......تو پھر مان لینا چاہئے......کہ جب اللہ بنانے والا ہے تو کون ہے انکار کرنے والا؟

لیکن ہم دیکھتے ہیں......کہ قرآن میں ارشاد ربانی ہے! کہ

جب اللہ نے فرمایا کہ میں زمین میں خلیفہ بنانے والا ہوں تو ایک کھڑا ہو گیا......تو کہنے لگا......سارے فرشتے مانیں......مانیں

لیکن میں نہیں اس کو ماننے والا! اور اس نہ ماننے والے کا ذکر بھی قرآن میں ہے

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۔ اَبٰى وَاسْتَكْبَرَ
وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ

دیکھا آپ نے...... کہ اللہ نے فرمایا میں خلیفہ بنانے والا ہوں...... تو ایک نے انکار کر دیا...... ایک اکڑ گیا...... تو معلوم ہوا کہ خلافت کا انکار کرنا کوئی آج کا نیا پرابلم نہیں...... صرف موقعہ جدا جدا ہے...... انکار خلافت سے ہی ہو رہا ہے۔

یعنی...... جب اللہ نے اپنا خلیفہ دیا تو شیطان نے انکار کر دیا...... جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنا خلیفہ دیا...... تو بے ایمان نے انکار کر دیا

ذرا دیکھو تو...... اللہ کے فرمانے میں کتنا زور ہے...... کتنی طاقت ہے؟ کہ فرمایا

اِنِّیْ جَاعِلٌ...... میں بنا رہا ہوں...... اور دوسری طرف جو انکار کر رہا ہے...... اس کی بھی "میں" ہے...... کہ اَنَا خَیْرٌ مِّنْهُ...... میں اس سے بہتر ہوں

دونوں پر غور کرنا...... کہ

ایک ہے رحمٰن کی "میں"
ایک ہے شیطان کی "میں"

اسی "میں" میں اب تو سوچ کہ کس "میں" میں...... "میں" (ہوں) ایک ایسی "میں" بھی تھی...... بڑی عزت والی "میں" تھی...... بڑی قسمت والی "میں" تھی...... کہ یا اللہ! اس انسان کو کاہے کو بنائے گا؟

اس کے پاس ...... بندوق ہوگا ...... تو بندوق بلاوجہ چلائے گا
اس کے پاس ...... میزائل ہوگا ...... تو میزائل بلاوجہ چلائے گا

وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ...... ہم ہیں نہ تیری تسبیح وحمد بیان کرنے کیلئے

لیکن اللہ نے جواب دیا کہ...... نہیں جو میں جانتا ہوں وہ تم نہیں جانتے دیکھو...... تو ذرا کہ فرشتوں نے فسادی کتنی جلدی سے پہچان لئے...... لیکن قربان جاؤں...... میرا رب بڑا حکمت والا اور علم والا ہے

وہ جانتا ہے...... کہ:

اگر آدم نہیں جائیں گے ...... تو شیث کیسے پیدا ہوں گے؟
اگر آدم نہیں جائیں گے ...... تو نوح کیسے پیدا ہوں گے؟
اگر آدم نہیں جائیں گے ...... تو ابراہیم کیسے پیدا ہوں گے؟
اگر آدم نہیں جائیں گے ...... تو اسماعیل کیسے پیدا ہو گے؟
اگر آدم نہیں جائیں گے ...... تو موسیٰ کیسے پیدا ہوں گے؟
اگر آدم نہیں جائیں گے تو صدیقین...... صالحین...... مومنین کیسے پیدا ہوں گے؟...... جب اللہ تعالیٰ نے فرمایا

إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ

تو فوراً سب سرنڈر ہو گے...... فرشتے بولے...... اے اللہ ٹھیک ہے جیسے تیرا حکم ہے...... تیری رضا ہے

اس لئے کہ تو لازوال ہے...... لاشریک ہے

یعنی انسان کے فسادات کا حوالہ دینے والے فرشتوں نے اپنی ''میں'' کو اللہ کی رضا میں...... اللہ کے حکم میں...... ختم کر دیا

یعنی...... وہ تیری میں تو رضائے الٰہی میں ختم ہو گی...... باقی بچی دو ''میں''

''ایک رحمٰن کی میں''
''دوسری شیطان کی میں''

## آدم علیہ السلام کی خلافت کا انکار کرنیوالا:

عزیز دوستو!

سب سے پہلے ہم اس حوالے سے بات کرتے ہیں...... کہ آخر سب سے پہلے خلافت کا انکار کس نے کیا...... تو یہ آپ کو بتا دوں کہ پہلی مرتبہ خلافت کا انکار کرنے والا کسی چالیس دن کے مذہبی ماحول میں رہنے والا نہیں تھا؟...... یا سال دو سال...... دس سال وہ انکار کرنے والا کسی مذہبی ماحول میں نہیں رہا...... بلکہ وہ تو اتنی دیر مذہبی ماحول میں رہا...... کہ آپ کی تو عمر بھی اتنی نہیں ہو سکتی! یعنی ابلیس نے 6 کروڑ سال تک...... قیام کی حالت میں...... رکوع کی حالت میں...... سجدے کی حالت میں

اپنے رب کی تسبیح بیان کی تھی...... اپنے رب کی عبادت کی تھی...... اپنے رب کو سجدے کیے تھے اس رب کے لئے لمبے قیام کئے تھے اور دوسری طرف وہ ایسا جنتی تھا کہ جنت کے دروازے ہر وقت اس کیلئے کھلے ہوئے تھے کوئی اس کو روکتا نہیں تھا...... کوئی اس کو ٹوکتا نہیں تھا سب کو پتہ تھا کہ بڑا عبادت گزار ہے...... بڑا اصوفی اور پرہیز گار ہے...... بلکہ وہ جنت کے جھولے پر جا کر بیٹھ جاتا اور فرشتے اس کے جھولے کی ڈوری پکڑ کر اس کو جھولا دیتے...... فرشتے خدمت کے لئے اس کے آگے پیچھے ہوتے...... وہ جنت کی نعمتوں سے فائدہ اٹھاتا...... اور جب دل کرتا اپنے رب کی بارگاہ میں اپنے سر کو جھکا لیتا...... اور ایک لمبے عرصے تک وہ اسی سجدے کی حالت میں پڑا رہتا...... تو بس جب وہ عزت و اعزاز کے دن ختم ہونے لگے...... تو اس کا سبب یہ بنا کہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا کہ میں نے زمین پر اپنا خلیفہ آدم علیہ السلام کو بنایا ہے اور تمام فرشتو تم آدم کو سجدہ کرو!

تو پڑھو قرآن کیا کہتا ہے...... کہ سب سے پہلے خلافت کا انکار کس نے کیا تھا؟

جبرائیل سجدے میں جھک گئے ...... اسرافیل سجدے میں جھک گئے
میکائیل سجدے میں جھک گئے ...... عزرائیل سجدے میں جھک گئے
یعنی...... تمام ملائکہ فوراً اپنے رب کے حکم پر لبیک کہتے ہوئے...... سیدنا آدم علیہ السلام کی خلافت کو تسلیم کرتے ہوئے سجدے میں گر گئے

اور وہاں وہ خلافت کا دشمن اکڑ گیا...... اس نے انکار کر دیا...... اس میں فخر پیدا ہو گیا...... اس میں برتری کا اظہار آ گیا...... اس نے سجدہ کرنے سے انکار کر دیا...... اور جب سجدہ کرنے سے انکار کر دیا تو ظاہر ہے خلافت آدم سے انکار کر دیا

تو اب اس کے ساتھ معاملہ کیا ہوا...... اس کو اپنی چھ کروڑ سال کی کی ہوئی عبادت کا کوئی اجر نہیں ملا...... کوئی ثواب نہیں ملا بلکہ وہ سب اجر اس نے ضائع کر لئے...... تو معلوم ہوا کہ تعظیم نبوت سے انکار کر دینا...... اس سے بڑا گناہ کوئی نہیں...... اس قدر گناہ کبیرہ ہے کہ گستاخ نبوت کے اعمال بھی ضائع ہو جاتے ہیں...... اس کے سجدے بھی بے اثر ہو جاتے ہیں...... اس کے قیام بھی بے سرور ہو جاتے ہیں...... خیر میں بات کرنے والا ہوں کہ وہ جو چھ کروڑ سال کا عبادت گزار تھا اور جنت میں رہنے والا تھا...... جنت کا جنتی جھولا جھولنے والا تھا تو قرآن کی گواہی موجود ہے کہ اللہ تعالیٰ نے جنت میں رہنے والے اس سابقہ صوفی کو جنت سے فوراً نکال دیا...... تو سبب کیا بنا:

## تعظیم نبی سے انکار کی سزا

## خلافت نبی سے انکار کی سزا

یعنی جنت میں رہنے والا بھی تعظیم نبوت نہ کرنے کے سبب جنت سے ہمیشہ ہمیشہ کیلئے باہر ہو گیا...... تو جو پہلے سے ہی باہر ہو! وہ بھی تو اپنے انجام کی خبر لے!

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## خلیفہ کسے کہتے ہیں؟:

عزیز دوستو!

یہ تو ابھی میں نے مثال پیش کر دی کہ خلافت سے سب سے پہلے انکار کس نے کیا...... اور پر جس نے سب سے پہلے خلافت کا انکار کر دیا...... اسے قرآن گواہ ہے کہ اللہ نے دنیا اور آخرت میں ذلیل و رسوا کر دیا...... تو اب آیئے اس حوالے سے بات کرتے ہیں...... کہ خلیفہ کہتے کسے ہیں؟...... اللہ تعالیٰ نے قرآن پاک میں حضرت آدم علیہ السلام کی خلافت کا اعلان فرمایا ہے...... اور حضرت آدم علیہ السلام کی اس خلافت پر ہمارا پورا ایمان ہے...... اس لئے کہ جس نے انکار کیا تھا اس کا حال دیکھ لیا نہ آپ نے؟ تو خیر ''خلیفہ'' بنا ہے ''خلف'' سے اور ''خلف'' کا مطلب ہوتا ہے ''پیچھے'' یعنی جس طرح کہ کہتے ہیں کہ جو نبی ﷺ کے بعد آئے وہ ان کے خلیفہ ہیں...... اور پھر جو ان کے بعد آئے وہ ان کے خلیفہ ہیں۔

**مثال:**

اگر کسی کو نماز کے لئے وضو کرنا ہے...... یا تلاوت قرآن کیلئے وضو کرنا ہے اور اس کو پانی نہیں مل رہا تو اس کے لئے شریعت کا حکم ہے کہ اگر پانی میسر نہ ہو تو

وہ تیمّم کرے اس لئے کہ تیمّم اس کا خلیفہ ہے......اس کے بعد میں ہے......اس کا نائب ہے......یعنی

جو کام تم وضو کرکے کر سکتے تھے
تو وہ کام تم تیمّم کرکے بھی کر سکتے ہو

وضو کر کے تم نماز پڑھ سکتے تھے...... وضو کر کے تم قرآن پڑھ سکتے تھے......تو جب پانی نہیں ملا......تو پھر اس کا خلیفہ مل گیا......یعنی آپ نے تیمّم کرلیا......تو اب جو کام وضو کے کرنے سے ممکن تھے وہ کام آپ تیمّم کرنے کے بعد بھی کر سکتے ہیں......یعنی تیمّم......وضو کا خلیفہ ہے اور خلیفہ کا کام ہی یہ ہے کہ وہ اصل تک لے جائے:

### 1- نکتہ:

اور جب ہم کہیں گے کہ سیدنا آدم علیہ السلام اللہ کے خلیفہ ہیں تو پھر خیال آئے گا......کہ اللہ کو ''خلف'' نہیں اور یہ آدم علیہ السلام کیسے خلیفہ ہیں؟

اللہ کا کوئی آگا نہیں ......اللہ کا کوئی پیچھا نہیں
اللہ کا کوئی بیک نہیں ......اللہ کا کوئی فرنٹ نہیں
اللہ کا کوئی تحت نہیں ......اللہ کا کوئی فوق نہیں
اللہ جہت سے پاک ہے ......اللہ اطراف سے پاک ہے
اللہ مسکن سے پاک ہے ......اللہ مکاں سے پاک ہے
اللہ تعین سے پاک ہے ......اللہ دور اور حدود سے پاک ہے
اللہ صورت سے پاک ہے ......اللہ اشکال سے پاک ہے

تو میرے بھائیو! یہ بات تو طے ہے کہ اللہ کا کوئی آگا نہیں......کوئی پیچھا

نہیں......تو جو ہر طرح کی جہت سے پاک ہے......تو پھر خلیفہ کا معنیٰ تو ہے...... پیچھے آنے والا...... پیچھے کہلانے والا......تو جب اللہ تعالیٰ ان ساری باتوں سے پاک ہے تو پھر آدم علیہ السلام خلیفہ کس کے؟......جو ذات کبریاء خلف سے پاک ہو! اس کا کوئی خلیفہ کیسے؟

غور سے سننا......اس نکتے کو......کہ:

اللہ تعالیٰ خلف سے پاک ہے......یہ ہمارا ایمان ہے......کیا ہے؟ اللہ
خلف سے پاک ہے......یہ ہمارا ایمان ہے
اور آدم خلیفہ ہیں......یہ اللہ کا قرآن ہے
ہم...... نہ ایمان چھوڑیں گے
نہ قرآن چھوڑیں گے

ہم ڈھونڈیں گے کہ آخر وہ ہے کون جو آدم سے پہلے؟ اور آدم علیہ السلام اس کے بعد ہیں! یعنی وہ ہستی اب تلاش کرنی ہے کہ جس کے بعد آدم علیہ السلام ہیں......یعنی

وہ ذات کہ جو......سلف ہیں
اور آدم علیہ السلام جس کے......خلف ہیں
تو پھر ہم ایسی ہستی کو ڈھونڈیں گے......کہ

جو آدم سے پہلے ہوں......آدم علیہ السلام اس کے بعد ہوں
جو آدم سے ماقبل ہوں......آدم علیہ السلام اس کے مابعد ہوں
جو آدم کے سلف ہوں......آدم علیہ السلام اس کے خلف ہوں

ابھی ہم یہ سوچ ہی رہے تھے......ابھی ہم پہچان ہی رہے تھے......ابھی

ہم ابتدا اور انتہا کی باتیں کر ہی رہے تھے...... ابھی ہم تحت اور فوق کا فلسفہ دیکھ رہے تھے...... ابھی ہم ماقبل...... اور مابعد کی بحث چھیڑ رہے تھے...... تو ایسے میں دل پر کسی نے دستک دی کہ اے ہاشمی! اس کا جواب مدینے کے تاجدار دے چکے ہیں

اور حدیث نے ہماری رہنمائی کر دی!...... کہ:

اَوَّلُ مَا خَلَقَ اللّٰهُ نُوْرِیْ

اللہ نے سب سے پہلے میرے نور کو پیدا فرمایا

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

## سب سے پہلے نور مصطفیٰ ﷺ بنایا گیا:

عزیز دوستو!

ہم نے اپنی گفتگو یہاں سے شروع کی کہ اللہ فرما رہا ہے...... کہ میں زمین میں اپنا خلیفہ بنا رہا ہوں...... تو خلیفہ...... ''خلف'' سے ہے...... اور ''خلف'' عربی زبان کا لفظ ہے...... اور عربی میں خلیفہ کا معنیٰ ہوا بعد میں آنے والا...... بعد کا جانشین...... بعد کا نائب تو پھر جب ہم اس تلاش میں نکلے کہ وہ کونسی ہستی ہے...... کہ:

جو آدم علیہ السلام سے پہلے ہے ......اور آدم بعد میں ہیں
جو آدم علیہ السلام سے ماقبل ہے ......اور آدم مابعد ہیں
جو آدم علیہ السلام سے سلف ہے ......اور آدم خلف ہیں

تو حدیث پاک نے ہماری رہنمائی کر دی...... کائنات کے سب سے عظیم

ہادی ورہنما کے قول نے رہنمائی فرمادی!

کہ!

اَوَّلُ مَا خَلَقَ اللّٰهُ نُوْرِیْ

سب سے پہلے میرا نور پیدا کیا گیا

تواب ضروری ہے...... کہ وہ پاک ہستی سب مخلوقات سے پہلے ہو!

زمین سے پہلے ...... زماں سے پہلے
مکیں سے پہلے ...... مکاں سے پہلے
موت سے پہلے ...... حیات سے پہلے
جبرائیل سے پہلے ...... میکائیل سے پہلے
عزائیل سے پہلے ...... اسرافیل سے پہلے
ہوا سے پہلے ...... فضا سے پہلے
پہاڑوں سے پہلے ...... دریاؤں سے پہلے
صدیقین سے پہلے ...... صالحین سے پہلے
مرسلین سے پہلے ...... نبین سے پہلے
اولیا سے پہلے ...... اتقیاء سے پہلے
اوتاد سے پہلے ...... ابدال سے پہلے
رقبا سے پہلے ...... قرباء سے پہلے
خطبا سے پہلے ...... نقبا سے پہلے
ہریالی سے پہلے ...... روشنی سے پہلے
دمک سے پہلے ...... چمک سے پہلے

آیات سے پہلے ...... کائنات سے پہلے
باغ ارم سے پہلے
آدم سے پہلے

## حضرت آدم علیہ السلام سے پہلے "نبی"

## 2- نکتہ:

توجہ سے سماعت فرمایئے گا...... ابھی مجھے یہاں ایک نکتہ بیان کرنا ہے...... کہ

حدیث پاک سے یہ بات تو ثابت ہوگئی...... کہ ہر چیز سے پہلے میرے اللہ نے میرے نبی کے نور کو پیدا فرمایا...... یہ حدیث پاک جو میں نے اولیت مصطفیٰ ﷺ کے حوالے سے پیش کی یہ ایک مشہور و معروف حدیث ہے

آیئے اب ایک اور حدیث بیان کرتا ہوں پھر اس کی روشنی میں ایک اہم نکتہ بیان کرتا ہوں حدیث پاک ہے...... کہ:

كُنْتُ نَبِيًّا وَّ آدَمُ بَيْنَ الْمَآءِ وَ الطِّيْنِ.

میں اس وقت بھی نبی تھا جب آدم پانی اور مٹی کے درمیان تھے

اور اس کے علاوہ ایک اور حدیث پاک با اختلاف الفاظ "ترمذی شریف" میں بیان ہوئی ہے...... کہ

كُنْتُ نَبِيًّا وَّ آدَمُ بَيْنَ الرُّوْحِ وَالْجَسَدِ

میں اس وقت بھی نبی تھا جبکہ آدم ابھی روح اور جسم کے درمیان تھے

ان دونوں حدیثوں سے یہ ثابت ہوگیا کہ حضور ﷺ آدم علیہ السلام سے پہلے نبی تھے...... سب غور کرنا حدیث کے پہلے الفاظ ہیں

کُنْتُ نَبِیًّا ...... میں نبی تھا

یہاں یہ عرض کروں کہ یہاں آپ ﷺ نے اپنے منصب کا ذکر فرمایا کہ ...... کُنْتُ نَبِیًّا ...... میں نبی تھا

یہ بات تو ثابت ہو گی ...... کہ حضور ﷺ حضرت آدم علیہ السلام سے پہلے نبی ہیں ...... آیئے اب بات آگے بڑھاتے ہیں! ...... کہ

ایک سوال پیدا ہوتا ہے:

کہ ...... دنیا میں پہلا آدمی کون ہے؟
دنیا میں پہلا بشر کون ہے؟
دنیا میں پہلا انسان کون ہے؟

اسی لئے حضرت آدم علیہ السلام کو ابوالبشر کہتے ہیں ...... کہ آدم سے پہلے کوئی بشر نہیں ...... اسی لئے آدم علیہ السلام کو آدمی کہتے ہیں ...... کہ ان سے پہلے کوئی آدمی نہیں ہے ...... نکتہ سننا! کہ

آدم علیہ السلام سے پہلے کوئی ...... آدمی نہیں ...... اور رسول ﷺ فرماتے ہیں
میں آدم علیہ السلام سے بھی پہلے نبی ہوں

آدم علیہ السلام سے پہلے کوئی بشر نہیں ...... اور رسول ﷺ فرماتے ہیں
میں آدم علیہ السلام سے بھی پہلے نبی ہوں

تو صاف ظاہر ہے ...... کہ:

جو آدم علیہ السلام سے پہلے ...... وہ آدمیت سے پہلے
جو آدم علیہ السلام سے پہلے ...... وہ بشریت سے پہلے
جو آدم علیہ السلام سے پہلے ...... وہ انسانیت سے پہلے

تو اب تم جواب دو کہ جو بشریت سے پہلے ہوگا...... وہ بشر کیسے ہوگا...... اس کا مطلب ہے...... کہ

میرا نبی بشریت سے پہلے نبی رہ چکا ہے!

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## نبی ﷺ کیلئے کائنات بنائی گئی:

اب اگر مزید غور کیا جائے...... حدیث پاک کے الفاظ کو باریکی سے پڑھا جائے حقائق پر نظر ڈالی جائے...... معارف کو دل میں اتارا جائے تو یہ حقیقت سامنے آ جائے گی:

بشریت کی ابتداء ...... آدم علیہ السلام سے ہوئی
آدمیت کی ابتداء ...... آدم علیہ السلام سے ہوئی
انسانیت کی ابتداء ...... آدم علیہ السلام سے ہوئی

## 3- نکتہ!

نکتے پر غور کرنا اب جو میں نے جملہ دینا ہے اسے ''کیچ'' کرلو...... کہ

بشریت بعد میں ...... میرا نبی پہلے
آدمیت بعد میں ...... میرا نبی پہلے
انسانیت بعد میں ...... میرا نبی پہلے

تو آج کیوں...... نور و بشر پر مناظرے کئے جا رہے ہیں؟ ارے میرے نبی ﷺ نے خود اپنے فرمان اقدس سے فیصلہ فرما دیا ہے...... کہ:

میرے نبی ﷺ بشریت سے بھی پہلے نبی رہ چکے ہیں

تو یہاں ایک اہم نکتہ اپنی جھولی میں ڈال لو! کہ

ثابت ہو گیا...... کہ "حکم نبوت" کیلئے...... بشریت ضروری نہیں ہے

بلکہ! اعلان نبوت کیلئے...... بشریت ضروری ہے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ

وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

رضائے خداوندی تو یہ ہے...... کہ

اے میرے حبیب ﷺ آپ کو جب نبی بنایا جائے گا...... تو بشر نہیں بنایا جائے گا...... اور جب مکہ میں اعلان نبوت کرنا ہو گا تو پھر تمہیں بشریت کیساتھ مبعوث کیا جائے گا۔

## رسول ﷺ بندوں اور رب کے درمیان وسیلہ:

اس لئے کہ!

اگر تم بشر بن کر نہیں جاؤ گے ......تو بشر کو راستہ کون دکھائے گا؟

اگر تم آدمی بن کر نہیں جاؤ گے ......تو آدمی کی رہنمائی کون کرے گا؟

اے میرے نبی......

جب تم چلو گے ......تو میرے بندوں کو چلنا آ جائے گا
جب تم بولو گے ......تو میرے بندوں کو بولنا آ جائے گا
جب تم تجارت کرو گے ......تو میرے بندوں کو تجارت کرنا آ جائے گا
جب تم امامت کرو گے ......تو میرے بندوں کو امامت کرنا آ جائے گا
جب تم تعلیم دو گے ......تو میرے بندوں کو تعلیم دینا آ جائے گا
جب تم جہاد کرو گے ......تو میرے بندوں کو جہاد کرنا آ جائے گا

جب تم نماز پڑھو گے ......تو میرے بندوں کو نماز پڑھنا آ جائے گا

اے محبوب ﷺ

آپ غار حرا میں بیٹھ جائیے......تا کہ میرے بندوں کو خلوت میں رہنا آ جائے

آپ نکاح کیجئے......تا کہ میرے بندوں کو ازدواجی زندگی گزارنا آ جائے

اے میرے پیغمبر ﷺ!

آپ بارگاہ کبریاء میں جھک جائیے......تا کہ میرے بندوں کو اللہ کی بارگاہ میں جھکنا آ جائے

آپ اپنے پیٹ پر پتھر باندھ لیجئے......تا کہ میرے بندوں کو پیٹ پر پتھر باندھنا آ جائے

اے رسول ﷺ!

آپ قبر میں لیٹ جائیے......تا کہ میرے بندوں کو قبر میں لیٹنا آ جائے

آپ اللہ کیلئے لہولہان ہو جائیے......تا کہ میرے بندوں کو سر کٹانا آ جائے

اور!

کربلا میں وقت آئے تو اپنا خاندان قربان کر دیجئے......تا کہ میرے بندوں کو قربانی دینا آ جائے

## ہم بشر اپنی ضرورت کیلئے...... نبی بشر ہدایت کیلئے:

عزیز دوستو!

بشر تو ہم بھی ہیں......لیکن ہم بشر ہیں اپنی زندگی کی ضرورت کیلئے......لیکن! قربان جاؤں میرے نبی ﷺ بشر ہیں......لیکن لوگوں کی ہدایت کیلئے......لوگوں

کی رہبری کیلئے لوگوں کی بندہ پروری کیلئے

امتیو یادرکھو!

ہم تم بھی بشر...... ہیں وہ بھی بشر

تمہاری بشریت اور ہے...... ان کی بشریت اور ہے
تم بشر ضرورت کیلئے ...... وہ بشر ہدایت کیلئے !

## 4- نکتہ!

آؤ اب یہاں ایک اور نکتہ دیتا ہوں! اپنے موضوع سے وابستہ نکتہ بیان کررہا ہوں

ذرا کیچ کرنا...... کہ ایک حدیث ہے...... لیکن حدیث قدسی ہے...... حدیث قدسی سے مراد کہ فرمان خدا کا ہے...... زبان میرے مصطفیٰ ﷺ کی ہے

لَوْلَاکَ لَمَا خَلَقْتُ الْاَفْلَاکَ

اگر آپ کو پیدا کرنا مقصود نہ ہوتا تو میں افلاک کو پیدا نہ کرتا

اور پھر!

لَوْلَاکَ لَمَا خَلَقْتُ الدُّنْیَا

اگر آپ کو پیدا کرنا مقصود نہ ہوتا تو میں دنیا کو پیدا نہ کرتا

تو ثابت ہوا

افلاک نبی کیلئے ...... سماک نبی کیلئے
ہوا نبی ﷺ کیلئے ...... فضا نبی ﷺ کیلئے
مکاں نبی ﷺ کیلئے ...... سماں نبی ﷺ کیلئے
آسماں نبی ﷺ کیلئے

## مثال:

یہاں ایک بات کرنا چاہتا ہوں کہ اسٹیج پر شیخ الاسلام مدنی میاں تشریف فرما ہیں جب تک شیخ الاسلام رہیں گے آپ یہاں رہو گے کہ نہیں؟

ماء شاء اللہ آپ بہت سمجھدار ہیں...... جواب آیا ہے کہ جب تک حضرت موجود ہیں ہم یہاں رہیں گے...... قانون یہ ہے کہ جو جس کیلئے ہوتا ہے وہ اس کے رہنے تک رہتا ہے اور جو لوگ کانفرنس میں میرے لئے آئے ہوں گے...... وہ میرے جاتے ہی غیب ہونا شروع ہو جائیں گے

جو لوگ شیخ الاسلام کیلئے آئے ہیں وہ تب تک رہیں گے کہ جب تک حضور شیخ الاسلام رہیں گے...... تو ثابت ہوا کہ جو جس کیلئے ہوتا ہے وہ اس کے رہنے تک رہتا ہے!

اگر محفل میرے لئے سجائی گئی ہے...... تو جب تک ہاشمی ہے مائیک رہے گا

جب تک ہاشمی ہے...... سجاوٹ رہے گی
جب تک ہاشمی ہے...... لائٹنگ رہے گی
جب تک ہاشمی ہے...... مجمع رہے گا

یہ ساری مثالیں بات سمجھانے کیلئے کہہ رہا ہوں...... کہ جو جس کیلئے ہوتا ہے وہ اس کے رہنے تک موجود رہتا ہے...... اور اگر ہاشمی میاں کیلئے آئے ہو تو...... ہاشمی میاں کے اسٹیج پر موجود رہنے تک رہو گے؟

جو جو...... ہاشمی میاں کیلئے ہے
وہ وہ...... ہاشمی میاں کے رہنے تک رہے گا

جو جو ......مدنی میاں کیلئے ہے
وہ وہ ......مدنی میاں کے رہنے تک رہے گا

اور جب ہم دونوں بھائی...... یہاں اس ہال سے باہر چلے جائیں گے......
تو آپ ایک گھنٹے کے بعد ہال میں آ کر دیکھنا...... یہاں کچھ بھی نظر نہیں آئے گا......اس لئے کہ وہ چلے گئے ہیں کہ جن کے لئے سب سجایا گیا تھا

تو پھر آؤ......اصل مقصد کی بات کرتا ہوں!......کہ

جب سب کچھ نبی ﷺ کیلئے ہے......تو اس وقت تک سب رہے گا جب تک نبی ﷺ رہیں گے!

جب تک نبی ﷺ ہیں ......سورج رہے گا
جب تک نبی ﷺ ہیں ......چاند رہے گا
جب تک نبی ﷺ ہیں ......ستارے رہیں گے
جب تک نبی ﷺ ہیں ......نظارے رہیں گے
جب تک نبی ﷺ ہیں ......دریا رہے گا
جب تک نبی ﷺ ہیں ......سمندر رہے گا
جب تک نبی ﷺ ہیں ......پہاڑ رہیں گے
جب تک نبی ﷺ ہیں ......غار رہیں گے

جب پوری کائنات ہے ہی میرے نبی ﷺ کیلئے تو جب تک میرے نبی ﷺ رہیں گے......اس وقت تک پوری کائنات کا وجود رہے گا

جیسا......کہ:

جب تک شیخ الاسلام ہیں ......جلسہ رہے گا

جب تک شیخ الاسلام ہیں ...... مجمع رہے گا
جب تک شیخ الاسلام ہیں ...... مائیک رہے گا
جب تک شیخ الاسلام ہیں ...... لائٹنگ رہے گی
جب تک شیخ الاسلام ہیں ...... روشنی رہے گی
جب تک شیخ الاسلام ہیں ...... آمدورفت رہے گی

یعنی ...... جو جس کیلئے ہوتا ہے ...... وہ اس کے رہنے تک رہتا ہے ...... تو جب ساری دنیا میرے نبی ﷺ کے لئے وجود میں آئی ہے ...... تو جب تک رسول ﷺ ہیں ...... اس وقت تک پوری کائنات رہے گی ...... اور جب رسول ﷺ نہیں رہیں گے ...... تو:

زمین کا فرش سمیٹ لیا جائے گا
آسمان کا شامیانہ لپیٹ لیا جائے گا
ستاروں کے قمقمے بجھا دیئے جائیں گے
آبشاروں سے نغمے مٹا دیئے جائیں گے
سمندروں سے طغیانی ختم ہو جائے گی
پہاڑوں کی بلندی ختم ہو جائے گی

غور کرنا ...... ثابت ہوا کہ میرے نبی ﷺ کے رہنے کا نام وجود ہے ...... اور نہ رہنے کا نام قیامت ہے ...... یہیں سے ایک صوفی نے نکتہ پکڑ لیا ...... کہ:

جس دل میں مصطفیٰ ﷺ ہیں اس دل میں نور وجود ہے
اور جس دل میں نبی ﷺ نہیں ہیں اس دل میں قیامت مچی ہوئی ہے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## سرکار ﷺ غلاموں کو دیکھ رہے ہیں:

یہ بات تو ثابت ہوگی کہ جو جس کیلئے ہوتا ہے...... وہ اس کے رہنے تک رہتا ہے جس طرح کہ میں نے جلسے میں حضور شیخ الاسلام کی موجودگی والی مثال عرض کی ...... کہ جب تک شیخ الاسلام رہیں گے ...... اس وقت تک جلسہ رہے گا ...... جلسے کا سارا نظام قائم رہے گا ...... اس لئے کہ یہ جلسہ تھا ہی ان کیلئے ...... تو جو جس کیلئے ہوتا ہے ...... وہ اس کے رہنے تک رہتا ہے ...... تو یہ پوری کائنات ہے ہی میرے نبی ﷺ کیلئے ...... تو جب تک میرے نبی ﷺ رہیں گے ...... اس وقت تک کائنات کا نظام رہے گا ...... اور جب حضور ﷺ چلے گئے تو پھر دنیا کا نظام ...... یہ کائنات کا وجود بھی ختم ہو جائے گا

ارے اسی کا نام تو ''قیامت'' ہے ...... اور تم قیامت کس کو کہتے ہو؟

## 5- نکتہ!

یہاں آخری موڑ پر ایک نکتہ اور عرض کرنا چاہتا ہوں ...... کہ میں اکیلا آپ کے سامنے موجود ہوں ...... اسٹیج پر علماء کرام کی کثیر تعداد موجود ہے اور آپ سامعین سے ہال بھرا ہے اور ہزاروں کی تعداد میں لوگ اس پنڈال میں موجود ہیں ...... لیکن بہت سارے لوگ جو ہال کے اندر جگہ نہ ملنے کی وجہ سے باہر موجود ہیں ...... وہ آپس میں باتیں کر رہے ہیں ...... ایک شخص آیا کہنے لگا کہ ارے کون بول رہا ہے؟

دوسرے آگے سے جواب دیتے ہیں بھئی ہاشمی میاں بول رہے ہیں

وہ کہے گا ...... کہ دکھائی تو دے نہیں رہے تم کہتے ہو ...... کہ ہاشمی میاں بول رہے ہیں؟ تو ایسے میں ان ہال سے باہر موجود لوگوں میں سے ایک سمجھدار آدمی

بول کر کہے گا ارے ہاشمی میاں ہی بول رہے ہیں...... وہ کہے گا کہ تمہارے پاس کیا دلیل ہے کہ یہ ہاشمی میاں بول رہے ہیں؟

تو وہ کہے گا کہ ارے ان کا آخری خصوصی خطاب تھا...... اب آخری وقت ہے...... اور آواز سے پہچانا جا رہا ہے...... کہ ہاشمی میاں بول رہے ہیں...... اگر دکھائی نہیں دے رہا تو کیا؟ اور دوسرا بولا کہ بھائی جلسے کا نظم وضبط بتا رہا ہے کہ وہ ہاشمی میاں اندر موجود ہے...... اور اگر وہ اندر موجود نہ ہوتے تو جلسہ بھی ختم ہو چکا ہوتا...... وہ اس لئے کہ سارا نظام بتا رہا ہے کہ ابھی ہاشمی میاں اندر موجود ہے...... دیکھو! ان بندوں نے اندر آ کر مجھے دیکھا نہیں ہے...... لیکن گواہی دے رہے ہیں...... میں ان کو نظر نہیں آ رہا...... لیکن وہ میری موجودگی پر دلائل دے رہے ہیں

اسی طرح اگر نبی ﷺ ہمیں نظر نہیں بھی آتے تو کیا ہوا؟

ہم کائنات کا نظام دیکھ کر ......نبی ﷺ کو مانیں گے
ہم آسمان دیکھ کر ......نبی ﷺ کو مانیں گے
ہم زمین دیکھ کر ......نبی ﷺ کو مانیں گے
ہم سورج دیکھ کر ......نبی ﷺ کو مانیں گے
ہم ستارے دیکھ کر ......نبی ﷺ کو مانیں گے
ہم چاند دیکھ کر ......نبی ﷺ کو مانیں گے
ہم چمن دیکھ کر ......نبی ﷺ کو مانیں گے
ہم گلشن دیکھ کر ......نبی ﷺ کو مانیں گے

اس لئے کہ یہ سارا کائنات کا نظام میرے نبی ﷺ کی وجہ سے قائم ہے اور

نبی ﷺ موجود ہیں تو کائنات کا نظام چل رہا ہے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## آدم علیہ السلام خلیفۃ اللہ کیسے؟

اب یہ بات تو ثابت ہوگئی...... کہ اس محفل کا مہکا مہکا ماحول...... اس محفل سے یا رسول اللہ ﷺ کی اُٹھتی ہوئی صدائیں...... آپ کے نعروں کی دلنشیں صدائیں...... ایسا دیدنی ذوق...... ایسا قابل تعریف شوق...... یہ سب اس حقیقت کی غمازی کر رہا ہے...... کہ ابھی محفل جاری ہے...... اس لئے کہ آج کی محفل کے معزز مہمان موجود ہیں...... وہ ابھی محفل میں موجود ہیں...... تو محفل ہو رہی ہے یعنی جان محفل...... اس محفل میں موجود ہے تو محفل سجی ہوئی ہے

ارے...... بات سمجھ لیجئے کہ یہ سارا نظام کائنات بتا رہا ہے...... کہ اگر یہ کائنات کا نظام چل رہا ہے...... تو:

کائنات میں جان کائنات موجود ہیں
کائنات میں مقصود کائنات موجود ہیں
کائنات میں باعث کائنات موجود ہیں
کائنات میں اصل کائنات موجود ہیں
کائنات میں روحِ کائنات موجود ہیں
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

## 6- نکتہ!

اب یہ بات تو آپ کے سامنے ظاہر ہوگی کہ آدم علیہ السلام سے پہلے کون ہے؟

اور حضرت آدم علیہ السلام کس کے خلیفہ ہیں؟

حضرت آدم علیہ السلام کا ماقبل کون ہیں؟
اور...... حضرت آدم علیہ السلام کس کے مابعد ہیں؟
حضرت آدم علیہ السلام کے سلف کون ہیں
اور...... حضرت آدم علیہ السلام کس کے خلف ہیں؟

لیکن اب یہاں ایک نکتہ مجھے اور عرض کرنا ہے...... کہ جب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم حضرت آدم علیہ السلام کے ''سلف'' ہیں...... تو آدم علیہ السلام ان کے خلف ہیں! تو پھر حضرت آدم علیہ السلام کو خلیفۃ اللہ کیوں کہا گیا ہے...... خلیفۃ الرسول کیوں نہیں کہا گیا؟

جس طرح کہ ہم کہتے ہیں ...... حضرت ابوبکر رضی اللہ عنہ خلیفۃ الرسول ہیں
جس طرح کہ ہم کہتے ہیں ...... حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ خلیفۃ الرسول ہیں
جس طرح کہ ہم کہتے ہیں ...... حضرت عثمان غنی رضی اللہ عنہ خلیفۃ الرسول ہیں
جس طرح کہ ہم کہتے ہیں ...... حضرت علی المرتضیٰ رضی اللہ عنہ خلیفۃ الرسول ہیں

## اطاعت مصطفوی...... اطاعت خداوندی ہے:

تو پھر یہاں ایک سوال پیدا ہوتا ہے کہ پھر آدم علیہ السلام کو بھی کہو خلیفۃ الرسول...... ان کو خلیفۃ اللہ کیوں کہتے ہیں؟

آیئے...... یہ سوال بھی میں آپ کو قرآن سے سمجھانے کی کوشش کرتا ہوں

ارے اعتراض کرنے والوں سے پوچھو...... کہ:

خلیفۃ الرسول ہی خلیفۃ اللہ ہیں...... ارے کیوں بھول گئے ہو؟

کہ ہجرت کی رات ہے...... میرے نبی صلی اللہ علیہ وسلم کی ذات ہے......

حضرت علی رضی اللہ عنہ کا ساتھ ہے...... باہر کافروں کی گھات ہے...... بڑی مشکل میں معاملات ہیں...... لیکن ایسے حالات میں...... میرے نبی ﷺ نے حضرت علی المرتضیٰ رضی اللہ عنہ سے فرمایا...... کہ اے علی میرے بستر پر سو جاؤ کس کے بستر پر فرمایا...... میرے بستر پر سو جاؤ!! اور صبح اٹھنا...... اور جن لوگوں کی امانتیں ہیں...... وہ ان ان لوگوں کو واپس کر کے...... پھر تم بھی چلے آنا...... امانت واپس کرنا بہت ضروری ہیں...... اس لئے کہ کہیں دامن امانت پر داغ نہ آئے...... کوئی یہ نہ کہے کہ نبی تو ہماری امانتیں لیکر چلے گئے ......تو قربان جاؤں! موت کے اس خطرناک بستر پر...... کافروں کے حملے کی زد میں...... حضرت علی المرتضیٰ رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ میں انتہائی آرام کی نیند سو گیا...... اور ایسی چین وسکون کی نیند مجھے پوری زندگی نہیں آئی دیکھئے! اگر دو پولیس والے ہمارا دروازہ کھٹکھٹائیں تو کئی ہفتے تک نیند نہیں آتی...... تو ادھر چالیس جان کے دشمن موجود ہیں...... اور ان کی ۸۰ آنکھیں محاصرہ کئے ہوئے ہیں...... لیکن علی رضی اللہ عنہ سے پوچھا کہ وہ کیوں؟ تو جواب آیا کہ میری جان کی امان کی گارنٹی رسول ﷺ دے چکے تھے...... کہ صبح اٹھنا اور یہ امانتیں لوگوں کو واپس کرنا...... تو مجھے یقین ہو گیا...... کہ آج کی رات جو کچھ بھی ہو لیکن مجھے کچھ نہیں ہونے والا...... اس لئے کہ میرے رسول ﷺ نے مجھے صبح اٹھنے کی گارنٹی دے دی ہے...... سبحان اللہ

خیر...... ایسے ماحول میں رسول ﷺ گھر سے نکلتے ہیں...... باہر کافروں کی جماعت موجود ہے...... تو ایسے میں میرے رسول ﷺ نے ہاتھ میں کنکریاں لیں اور پڑھ کر کے کافروں کی طرف پھینک دیں...... کسی کو میرے رسول ﷺ

نظر ہی نہیں آئے......اور آپ ﷺ آرام وسکون کیساتھ ان لوگوں کے درمیان سے گزر گئے! انتہائی توجہ چاہوں گا......کہ جب رسول ﷺ نے کافروں کو کنکری ماری......تو:

تاریخ کہتی ہے ...... کہ رسول ﷺ نے کنکری ماری
مشاہدہ کہتا ہے ...... کہ رسول ﷺ نے کنکری ماری
حالات کہتے ہیں ...... کہ رسول ﷺ نے کنکری ماری
ثبوت کہتے ہیں ...... کہ رسول ﷺ نے کنکری ماری
روایت کہتی ہے ...... کہ رسول ﷺ نے کنکری ماری
لیکن......رحمٰن کہتا ہے......قرآن کہتا ہے

وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى

اور نہیں ماری آپ نے کنکری جب ماری آپ نے بلکہ اللہ نے ماری

دیکھو......تو!

ارادہ نبی ﷺ کا
مارنا نبی ﷺ کا
پھینکنا نبی ﷺ کا

لیکن اللہ فرما رہا ہے!

وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى

اور نہیں ماری آپ نے کنکری جب ماری آپ نے بلکہ اللہ نے ماری

اب آپ سب سے سوال کرتا ہوں......کہ:

رسول ﷺ ......کے کنکری پھینکنے کو اللہ نے اپنا پھینکنا کہا کہ نہیں؟

رسول ﷺ ...... کے کنکری مارنے کو اللہ نے اپنا مارنا کہا کہ نہیں؟

ارے ...... پھینکے رسول اللہ ...... قرآن کہے پھینکتا ہے ...... اللہ کا

ذرا سوچو تو ...... ایسا کیوں ہوا؟ ایسا کیسے ہو گیا؟

ایک اور آیت مبارکہ ...... سنیئے اللہ تعالیٰ فرماتا ہے

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ

جس نے اطاعت کی رسول کی تحقیق اس نے اطاعت کی اللہ کی

کیا مطلب اس کا؟ بھئی مطلب صاف ظاہر ہے ...... کہ

جو ...... مطیع الرسول ہے ...... وہی تو مطیع اللہ ہے

اب بتاؤ ...... کہ مطیع الرسول کو اللہ نے مطیع اللہ کہا کہ نہیں؟

تو نتیجہ یہ نکلا ...... کہ جس غایت قرب کی بنیاد پر ...... مطیع الرسول کو مطیع اللہ کہا جا رہا ہے ...... اسی غایت قرب کے بنیاد پر ...... خلیفۃ الرسول کو ...... خلیفۃ اللہ کہا جائے گا

اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً

## خلافت راشدہ:

اور جب تک آپکی نورانی خلافت کا رشتہ ...... خلافت راشدہ سے تھا ...... تو اس وقت تک چودہ خانوادے خلیفہ رہے آپکی خلافت، خلافت تھی ......

یاد رکھو!

| | | | |
|---|---|---|---|
| ایمان | مضبوط | تو | خلافت مضبوط |
| عقیدہ | مضبوط | تو | خلافت مضبوط |
| پابندی شرع | مضبوط | تو | خلافت مضبوط |

روحانی تقاضوں کی تکمیل مضبوط تو خلافت مضبوط

اور...... غوث اعظم مضبوط خلافت ہے

امام اعظم مضبوط خلافت ہے

خواجۂ اعظم مضبوط خلافت ہے

مجدد اعظم مضبوط خلافت ہے

یہ جتنے بھی اعظم ہیں......سب میں نبی ﷺ کی نیابت کا نور......اور علیؓ کی حمایت کا رنگ موجود تھا......تب ان کی خلافت مضبوط تھی۔

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

* * *

## موضوع......نورانیت مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم

نَحْمَدُهٗ وَ نَسْتَعِيْنُهٗ وَ نَسْتَغْفِرُهٗ وَ نُؤْمِنُ بِهٖ وَ نَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَ نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَ مِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمٰلِنَا وَ مَنْ يَّهْدِيْهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَ مَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَ نَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَ نَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَ نَا مَوْلَانَا وَ حَبِيْبَنَا وَ سِرَاجَنَا وَ اَشْرَفَنَاوَ سَيِّدَ نَا مُحَمَّدٍ صلی اللہ علیہ وسلم

اَمَّا بَعْدُ!

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰى فِى الْقُرْآنِ الْمَجِيْدِ وَ الْفُرْقَانِ الْحَمِيْدِ...... اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِيْنٌ

صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلٰنَا الْعَظِيْمِ

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ط

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ○

بارگاہ رسالت صلی اللہ علیہ وسلم میں درود و سلام کا ہدیہ پیش کیجئے!

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ صلی اللہ علیہ وسلم

پشیماں نہ ہوں شرمساروں سے کہہ دو
وہ نبی ﷺ آگے غم کے ماروں سے کہہ دو
زمانے کے اندھوں کو تم احمد کی مدحت
کہہ دیں ذرا تیس پاروں سے کہہ دو

معراج مصطفیٰ ﷺ کو ذہن میں رکھ کر شعر سنیئے! کہ

محمد ﷺ چلیں ہیں سوئے عرش اعظم
ادب سے رہیں چاند تاروں سے کہہ دو
میرے مصطفیٰ ﷺ ہی میرے ناخدا ہیں
سمندر کے مسرور داروں سے کہہ دو
میں خار مدینہ کو ترجیح دوں گا
گلوں کو بتا دو بہاروں سے کہہ دو!
میں ہوں ہاشمی کا میرا ہاشمی ہے
یہی بات آقا اشاروں سے کہہ دو

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ
اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

قَدْ جَآءَکُمْ مِّنَ اللّٰہِ نُوْرٌ وَّ کِتٰبٌ مُّبِیْنٌ ۝
تحقیق آیا تمہاری پاس اللہ کی طرف سے ایک نور اور روشن کتاب

## اللہ کی طرف سے آیا تمہارے پاس:

اب اس آیت مبارکہ میں ذکر ہوا کہ...... تمہارے پاس نور آیا ہے اور یہ

بات بھی طے شدہ ہے کہ جو کسی کے پاس آتا ہے...... کسی کو ملتا ہے...... تو کسی وقت میں ملتا ہے...... کسی تاریخ میں ملتا ہے...... مثلاً:

آپ کو پاکستان ملا...... تو فلاں تاریخ تھی یا نہیں؟ 14 اگست

آپ کو پچھلے سال بیٹا ملا...... تو تاریخ تھی یا نہیں؟ ستمبر، اکتوبر، نومبر کوئی تو ہوگی؟

کیا...... اس مجمع میں سے کوئی یہ کہہ سکتا ہے...... کہ:

ہمیں پاکستان ملا...... اور اس دن کوئی تاریخ نہیں تھی؟

ہمیں بیٹا ملا...... اور اس دن کوئی تاریخ نہیں تھی؟

یعنی...... آپ کو بھی ملنے والی چیز اور کوئی بھی آنے والا کسی نہ کسی وقت کے ساتھ ملتا ہے...... اب وہ وقت کا محتاج نہیں ہوگا...... بلکہ وہ وقت یاد دلاتا ہے کہ اس وقت کیا ہوا تھا۔

وہ تاریخ یاد دلاتی ہے کہ اس میں کیا ہوا تھا؟

یعنی...... 14 اگست کو آپ کو پاکستان ملا، تو اب بتایئے کہ 14 اگست آپ کے لئے اہم دن ہے کہ نہیں؟ فخرِ پاکستان ہے کہ نہیں؟ تاریخ وجودِ پاکستان ہے کہ نہیں؟

اب اگر کوئی 14 اگست کے دن کو نہ مانیں...... اور اس دن کو کوئی اہمیت نہ دے تو وہ سب کچھ ہو سکتا ہے...... لیکن پاکستان کا وفادار نہیں ہو سکتا

اب اگر کوئی یہاں آ کر ہم پر اعتراض کرتا ہے تو اس سے لکھواؤ...... کہ:

14 اگست کو جشنِ آزادی منانا حرام ہے؟

اور اگر کوئی انڈیا سے آیا ہو تو اس سے بھی لکھواؤ...... کہ 15 اگست کو جشن

آزادی منانا حرام ہے؟

اگر کوئی کہے 14 اگست کو جشن آزادی منانا حرام ہے...... تو وہ پاکستان میں رہنے کا حقدار نہیں...... اگر کوئی کہے 15 اگست کو جشن آزادی منانا حرام ہے...... تو وہ ہندوستان میں رہنے کا حقدار نہیں

اب کوئی یہ نہیں کہہ سکتا...... کہ 14 اگست کا جشن آزادی بدعت ہے

اب کوئی یہ نہیں کہہ سکتا...... کہ 15 اگست کا جشن آزادی بدعت ہے

اگر کوئی اس کو ناجائز کہے کہ یہ حرام ہے...... تو ان دونوں ملکوں میں رہنے کا حقدار نہیں...... وہ اس لئے کہ دنیا دیکھتی ہے کہ:

جب کچھ ملا تو...... تاریخ کیا تھی؟
جب کچھ ملا تو...... مہینہ کیا تھا؟
جب کچھ ملا تو...... وقت کونسا تھا؟

اس لئے کہ دنیا تاریخ دیکھتی ہے کہ کس تاریخ میں کونسی نعمت ملی!...... ارے

جو اپنے وطن کو نعمت نہ سمجھے
جو اپنے وطن کا ملنا باعث خوشی نہ سمجھے

تو ثابت ہوا کہ جو 14 اگست کو خوشی نہ منائے...... وہ پاکستان کا وفادار نہیں

جو 15 اگست کو خوشی نہ منائے وہ ہندوستان کا وفادار نہیں

میں مانتا ہوں کہ 14 اگست میں ایک اہم بات ہے...... میں جانتا ہوں کہ 15 اگست میں ایک اہم بات ہے...... لیکن جو ۱۲ ربیع الاول کے دن کی بات ہے اس کی کیا بات ہے:

ارے...... بارہ ربیع الاول میں جو بات ہے!

وہ نہ تو ......پاکستان میں ہے
وہ نہ تو ......ہندوستان میں ہے
وہ نہ تو ......انگلستان میں ہے

اس لئے کہ 14 اگست کو پاکستان والے آزاد ہوئے......اور 15 اگست کو ہندوستان والے آزاد ہوئے......لیکن قربان جاؤں

۱۲ ربیع الاول کے دن تمام انسانیت کی آزادی ہوئی

اور میں نے عرض کیا کہ جو ۱۴ اگست یا ۱۵ اگست کو خوشی نہ منائے......وہ پاکستان اور ہندوستان کا غدار ہے......اور جو ۱۲ ربیع الاول کو خوشی نہ منائے......تو وہ:

تمام انسانیت کا غدار ہے
تمام آدمیت کا غدار ہے

## قَدْ جَآءَکُمْ......تحقیق آیا تمہارے پاس:

عزیز دوستو!

عربی زبان میں لفظ "قد" تحقیق کیلئے آتا ہے......یعنی ایسی تحقیق کہ جسے جھٹلایا نہ جاسکے......اور جو اس تحقیق کو جھٹلائے وہ خود جھوٹا ہو جائے۔

دیکھئے:

حضرت ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ ...... تحقیق سے امام المسلمین ہیں
حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ ...... تحقیق سے امیر المومنین ہیں
حضرت عثمان غنی رضی اللہ عنہ ...... تحقیق سے امیر المسلمین ہیں
حضرت علی المرتضیٰ رضی اللہ عنہ ...... تحقیق سے امام المومنین ہیں

اور کئی بندے اس تحقیق کا انکار بھی کرتے ہیں...... اور ان کا انکار کرنا خود ان انکار کرنے والوں کو جھوٹا ثابت کر رہا ہے...... ان نفوس کے تحقیق سے:

امام المسلمین ہونے میں کوئی شک نہیں
امیر المومنین ہونے میں کوئی شک نہیں
خلیفۃ المسلمین ہونے میں کوئی شک نہیں
سید المومنین ہونے میں کوئی شک نہیں

یعنی تحقیق اسے کہتے ہیں کہ جو اٹل ہو...... اور جو اس کو تبدیل کرنا چاہے...... وہ خود تبدیل ہو جائے...... اور جو اس کو جھٹلانا چاہے وہ خود جھوٹا ہو جائے...... تو ثابت ہوا کہ تحقیق انتہائی پکی بات کو کہتے ہیں:

## 1- نکتہ!

یہ بات تو آپ کو یاد ہوگئی کہ ”تحقیق“ اس پکی بات کو کہتے ہیں...... کہ جو تحقیق پیش کر رہا ہو...... وہ اصل میں ساری تحقیق کا مغز پیش کر رہا ہو...... اور تحقیق اتنی پکی بات کو کہتے ہیں کہ جس میں تحقیق پیش کرنے والے نے ہر طرح کی خوبیاں دیکھ لی ہوں تو ادھر تو اللہ فرما رہا ہے ”قَدْ“ تحقیق جَآءَ...... آیا...... یعنی قَدْ جَآءَ تحقیق آیا...... تحقیق کے ساتھ آیا...... ویسے ہی نہیں آیا...... غور طلب بات یہ ہے کہ جَآءَکُمْ...... آیا تمہاری طرف بھی کہہ دیا جاتا تو بات مکمل ہو سکتی تھی...... بات پوری ہو سکتی تھی...... لیکن ایسا نہیں کہا گیا...... اور یہ شروع میں لفظ ”قَدْ“ لگانے کی آخر ضرورت کیا تھی؟

تو یاد رکھئے...... اللہ عالم الغیب ہے...... اس کو سب معلوم ہے کہ کب کوئی کیسا بندہ پیدا ہونا ہے

اس کو پتہ ہے ...... کہ کب کتنا ڈالر ہوگا
اس کو پتہ ہے ...... کہ کب کتنا پریشر ہوگا
اس کو پتہ ہے ...... کہ کب کتنا ہنود ہوگا
اس کو پتہ ہے ...... کہ کب کتنا یہود ہوگا

اس وحدہٗ لاشریک نے اس آیت کے شروع میں لفظ ''قد'' اس لئے لگا دیا کہ......اے محبوب ﷺ آپ کو میں نے نور کہا

اب ایسا نہ ہو کہ کوئی اس کو بس خیال ہی کہہ دے......کوئی اس ''نور'' کو بس تصور ہی نہ کہہ دے......قربان جاؤں! اس لئے اللہ نے فرمایا

قَدْ جَآءَكُمْ......یعنی میں نے ان کو تحقیقاً نور بنایا ہے
خیالاً نور نہیں بنایا......میں نے ان کو حقیقت میں نور بنایا ہے
تصوراً نور نہیں بنایا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## کیا تحقیق بدل سکتی ہے؟

ہاں! بھئی کوئی کہہ سکتا ہے کہ بھئی ہاشمی تم تحقیق پر اتنا زور دے رہے ہو اور ہم نے تو دیکھا ہے کہ تحقیق تو بدل بھی جاتی ہے

مثلاً......سائنس دانوں نے تحقیق کی اور زمین کے گول ہونے کا تصور پیش کیا......اور پھر اس کے بعد تحقیق بدلی اور نئی تحقیق یہ آئی کہ زمین فٹ بال کی طرح گول ہے......یعنی یہاں یہ بات ثابت ہو رہی ہے......کہ تحقیق بدلتی رہتی ہے!

ایک چھوٹے نے تحقیق کی اور اپنی تحقیق کسی کے سامنے پیش کی تو بڑے نے اس تحقیق کو بدل دیا

ایک بچہ تحقیق کر کے تقریر کرنے آیا...... اور کوئی اس سے بڑا مقرر آیا اور اس نے اس تحقیق کو بدل کے رکھ دیا...... اس سے اختلاف ظاہر کر دیا...... اور خود اپنی تحقیق کو پیش کر دیا...... اور کوئی اس کے بعد آیا...... اور اس نے اس تحقیق کو بھی بدل دیا اسی طرح محدث کی تحقیق کو مجدد اور مجدد کی تحقیق کو مجتہد کاٹ سکتا ہے کہ نہیں؟ ہاں! بھئی بدل سکتا ہے...... آؤ تمہیں آسان سی مثال سے یہ بات سمجھا دوں اور جب کسی کا کیس ڈسٹرکٹ کورٹ میں آیا تو جج نے گواہوں کے بیان سننے کے بعد اس قاتل کو پھانسی کی سزا سنا دی

اور پھر جب وہ ہائیکورٹ میں اپیل لیکر گئے تو اس آدمی کی سزا عمر قید میں بدل گئی...... اور پھر جب وہ کیس سپریم کورٹ میں گیا تو انہوں نے کیس پر تحقیق کرنے کے بعد باریکیاں جاننے کے بعد اس آدمی کی رہائی کا حکم دے دیا...... بتاؤ ایسا ہوتا ہے کہ نہیں؟

ڈسٹرکٹ کورٹ کا فیصلہ ہائیکورٹ میں چیلنج ہو گیا
اور ہائیکورٹ کا فیصلہ سپریم کورٹ میں چیلنج ہو گیا

اصل بات یہ ہے کہ ڈسٹرکٹ کورٹ کے سامنے جب کیس گیا تو انہوں نے ایف آئی آر کی کاپی چیک کرتے ہوئے...... گواہوں کے بیان سننے...... مدعیوں کے بیانات لینے کے بعد یہ تحقیق کیا کہ زید نے مار ڈالنے کے لئے یہ قدم اٹھایا اور فلاں فلاں بندے کو مار ڈالا تو پھر عدالت اس نتیجے پر پہنچی کہ قتل کرنے والے قاتل کو پھانسی ہو گی...... اور پھر ہائیکورٹ نے اپنی تحقیق کے مطابق فیصلہ کیا اور جب یہی کیس سپریم کورٹ تک پہنچا تو انہوں نے کہا قتل تو فلاں وقت ہوا اور ایف آئی آر کوئی اور وقت بتا رہی ہے...... 4 گھنٹے کا ٹائم ہے اس میں تو بہت

کچھ طے کیا جا سکتا ہے...... خیر شک کی بناء پر مقدمے کو جھوٹا قرار دے دیا گیا...... جو کہ ان کی تحقیق میں آ رہا تھا...... انہوں نے اس کے مطابق فیصلہ سنا دیا...... اور اس کو رہا کر دیا گیا۔

جیسے یہاں تحقیق بدل گئی...... ایسے ہی تحقیق تو بدلتی رہتی ہیں۔

یہ ساری مثال عرض کرنے کا مطلب یہ تھا کہ نیچے والے کی تحقیق کو...... اوپر والا کاٹ سکتا ہے چھوٹے کی تحقیق کو بڑا کاٹ سکتا ہے...... جاہل کی تحقیق کو علم والا کاٹ سکتا ہے...... لیکن یہ کبھی نہیں ہو سکتا...... کہ:

سپریم کورٹ کی تحقیق کو ......ہائیکورٹ کاٹ دے
ہائیکورٹ کی تحقیق کو ......ڈسٹرکٹ کورٹ کاٹ دے
ڈسٹرکٹ کورٹ کی تحقیق کو ......تھانے والا کاٹ دے

اصل یہ ثابت ہوا...... کہ

نیچے والے کی تحقیق کو ......اوپر والا کاٹ سکتا ہے

لیکن!

اوپر والے کی تحقیق کو ......نیچے والا نہیں کاٹ سکتا

تو!

مولوی کی تحقیق کو ......مولانا کاٹ سکتا ہے
مولانا کی تحقیق کو ......علامہ کاٹ سکتا ہے
علامہ کی تحقیق کو ......مجتہد کاٹ سکتا ہے
مجتہد کی تحقیق کو ......امام کاٹ سکتا ہے
اور ......امام کی تحقیق کو علی رضی اللہ عنہ کاٹ سکتے ہیں

تو آیئے...... بارگاہ رسالت سے مسئلہ حل کرواتے ہیں کہ یارسول اللہ ﷺ یہاں تو تحقیق بدل رہی ہے...... لیکن آپ تو تحقیق کیساتھ نور تشریف لائے ہیں...... آپ ﷺ کس کی تحقیق سے نور ہیں؟

تو قربان جاؤں! جواب قرآن دے رہا ہے

قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ

تحقیق آیا تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور

یعنی...... یہ تو پروردگار کی تحقیق ہے اس کو تو کوئی کاٹ نہیں سکتا

اس لئے کہ اس کو تو وہ کاٹے:

جو اللہ سے زیادہ علم والا ہے
جو اللہ سے زیادہ قدرت والا ہے
جو اللہ سے زیادہ طاقت والا ہے
جو اللہ سے زیادہ پاور والا ہے

تو اس نتیجے پر پہنچو گے...... کہ

کوئی اللہ سے بڑھ کر علم والا نہیں ...... تو پھر اس تحقیق کو کوئی کاٹنے والا نہیں
کوئی اللہ سے بڑھ کر طاقت والا نہیں ...... تو پھر اس تحقیق کو کوئی کاٹنے والا نہیں

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## نور تمہارے پاس تشریف لائے:

یہ بات تو آپکے ذہن نشین ہو گئی کہ...... اگر بدل سکتی ہے تحقیق تو وہ تحقیق کسی دنیادار کی ہوگی...... لیکن جو تحقیق بدل نہیں سکتی وہ سچے پروردگار کی ہوگی...... اور تحقیق بدل سکتی ہے وہ تحقیق کسی دنیا کے سائنسدان کی ہے اور جو تحقیق بدلتی نہیں

وہ رحیم ورحمٰن رب کی تحقیق ہے

## 2- نکتہ!

اب تک تو ہم نے سمجھ لیا کہ دنیا والے کی تحقیق تو بدل سکتی ہے...... لیکن دنیا بنانے والے کی تحقیق نہیں بدل سکتی اور اللہ نے فرمایا: قَدْ جَآءَكُمْ ...... تحقیق تمہاری طرف آیا...... اب:

اس تحقیق کی صداقت میں شک نہیں ہو سکتا
اس تحقیق کی عظمت میں شک نہیں ہو سکتا
اس تحقیق کی بلندی میں شک نہیں ہو سکتا
اس تحقیق کی پائیداری میں شک نہیں ہو سکتا

تو اب آیئے اس کے جَآءَكُمْ ...... تمہاری طرف...... پر بات کا آغاز کرتے ہیں...... آیت مقدسہ کے اس حصے پر غور کرو...... تو ایک لفظ بیان ہوا ہے جَآءَ یعنی لفظ قَدْ کے بعد جآء فرمایا گیا...... کیا مطلب؟

جَآء...... آیا اور آتا وہی ہے جو پہلے سے موجود ہو...... اور اگر پہلے سے نہیں ہوگا تو پھر آئے گا کیسے؟ مثلاً

یہ آج کی محفل جس مسجد میں ہو رہی ہے اس مسجد کا نام کیا ہے ''چشتیہ مسجد'' تو اب بتاؤ کہ ہم محفل میں ذکر سننے اور سنانے کے لئے مسجد چشتیہ میں آئے ہیں کہ نہیں؟ یقیناً ہم سب حاضرین آئے ہوئے ہیں...... اور اگر آئے ہوئے ہیں تو ہم پہلے سے موجود ہیں کہ نہیں؟ یعنی ثابت ہوا کہ آتا وہ ہے جو پہلے سے موجود ہو!

جس طرح کہ میں ہاشمی میاں آج اس مسجد میں آیا ہوں اور میں پہلے

کہیں پر موجود تھا تو آیا...... لیکن اگر میں پہلے سے موجود نہ ہوتا تو پھر مسجد چشتیہ میں آتا کیسے؟

اور اگر کوئی کہے کہ ہم نے علامہ منیر الزماں صاحب کی مسجد میں ہاشمی کو بنایا...... تو وہ میرا غوث اعظم کا پوتا ہونا کدھر گیا وہ میرا مولائے کائنات حیدر کرار کا بیٹا ہونا کدھر گیا؟...... اس لئے کہ ابھی تو بنا ہوں

تو بھائیو! آپ میرے لئے بنایا...... یا بنانے کا لفظ نہیں بولیں گے...... آپ میرے لئے آیا اور آج کے دن بلایا کا لفظ بولیں گے۔

وہ اس لئے کہ بنانا اس کو کہتے ہیں کہ جب کوئی سٹارٹ لئے جب کسی کا آغاز ہو...... جب کسی کی ابتدا ہو

جس طرح کہتے ہیں...... گھر بنایا...... تو بنایا کا لفظ وہاں بولا جائے گا کہ جہاں کسی کی ابتدا ہو...... آغاز ہو

اور جس کے بنانے کا ذکر نہیں ہوگا تو وہاں کہا جائے گا کہ فلاں شخص آیا......

تو اب آؤ قرآن کے الفاظ پر غور کرو

اللہ تعالیٰ نے یہ نہیں فرمایا کہ میں نے نور بنایا...... بلکہ فرمایا

قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ

تحقیق تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا

غور کرنا! اللہ نے فرمایا کہ نور آیا...... اور آتا وہی ہے کہ جو پہلے سے موجود ہو

## نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے نور کو کب بنایا؟

تمہارا ملک بنا...... اس کے بننے کی ایک تاریخ ہے...... ایک وقت ہے کہ جب اس کو بنایا گیا... جس کو آپ بنائیں...... اس کے وجود میں آنے کا دن اور

تاریخ بھی آپ کو معلوم ہے...... لیکن ہم بات کر رہے ہیں...... آقا ﷺ کے نور بن کر آنے کی......

### 3- نکتہ!

یعنی ہم بات کر رہے ہیں...... رسول ﷺ کے نور بنکر آنے کی جس طرح کہ قرآن نے فرمایا:

قَدْ جَآءَكُمْ مِنَ اللّٰهِ نُوْرٌ
تحقیق آیا تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور

غور کرنا! میرے جملوں پر...... کہ اللہ نے اس آیت مقدسہ میں نور کے آنے کا ذکر کیا ہے...... بنانے کا ذکر نہیں فرمایا...... فرمایا نور آیا...... یہ نہیں فرمایا کہ کب بنایا؟

قَدْ جَآءَكُمْ مِنَ اللّٰهِ نُوْرٌ
یہ تو بتایا کہ نور آیا
یہ نہیں بتایا کہ کب بنایا

رضائے الٰہی یہ ہے کہ میرے بندو تم جتنا سمجھ سکتے ہو میں تمہیں اتنا ہی بتاتا ہوں!

"نور" آیا ہے بس یہ دیکھو!
"نور" بنایا ہے کب یہ تم کیا سمجھو؟

آؤ...... آپ میرا ساتھ دو کہ ہم یہ مسئلہ حل کریں کہ نور محبوب ﷺ اللہ نے کب بنایا؟

بس یہ کہہ کر میں پھنس گیا ہوں...... خدا گواہ ہے کہ میں نہیں جانتا کہ اللہ نے

نبی ﷺ کے نور کو کب بنایا؟ یقین کرو

میرے باپ محدث کچھوچھوی رحمۃ اللہ علیہ ...... بھی نہیں بتا پائیں گے کہ کب بنایا؟
میرے امام امام احمد رضا رحمۃ اللہ علیہ ...... بھی نہیں بتا پائیں گے کہ کب بنایا؟
میرے سرکار داتا گنج بخش رحمۃ اللہ علیہ ...... بھی نہیں بتا پائیں گے کہ کب بنایا؟
میرے خواجہ، خواجہ غریب نواز رحمۃ اللہ علیہ ...... بھی نہیں بتا پائیں گے کہ کب بنایا؟
میرے غوث، غوث اعظم رحمۃ اللہ علیہ ...... بھی نہیں بتا پائیں گے کہ کب بنایا؟
میرے ہادی مجدد اعظم رحمۃ اللہ علیہ ...... بھی نہیں بتا پائیں گے کہ کب بنایا؟

اور میں کہہ رہا ہوں کہ آؤ پتہ چلائیں کہ اللہ تعالیٰ نے اپنے نبی ﷺ کا ''نور کب بنایا؟

اور جب پتہ چلانے چلے کہ کب بنایا تو اب میں ایک اشارے کی زبان بولتا ہوں خدا کرے آپ کو یہ ہمارے لکھنؤ کے اس انداز کی سمجھ آجائے جو انداز سمجھ میں آجائے تب بنایا......

میں یہ تو بتا رہا ہوں کہ ربیع الاول میں نور آیا
میں یہ تو بتا رہا ہوں کہ ۱۲ کی تاریخ میں نور آیا

اور میں کیا بتاؤں کہ نور کب بنایا...... اور جب دنیا میں ''کب'' نہیں تھا تب بنایا

اب تم پوچھو گے ...... کس ٹائم میں بنایا؟
اب میں کہوں گا ...... ٹائم سے بھی پہلے بنایا
اب تم پوچھو گے ...... کس وقت میں بنایا؟
اب میں کہوں گا ...... وقت سے بھی پہلے بنایا

اب تم پوچھوگے ...... کس لمحے میں بنایا؟
اب میں کہوں گا ......لمحے سے بھی پہلے بنایا
اب تم پوچھو گے ...... کس جگہ میں بنایا؟
اب میں کہوں گا ......جگہ سے بھی پہلے بنایا
اب تم پوچھوگے ...... کیا جنت میں بنایا؟
اب میں کہوں گا ......نہیں جنت سے بھی پہلے بنایا
اب تم پوچھو گے ......کیا سدرہ پر بنایا؟
اب میں کہوں گا ......نہیں سدرہ سے بھی پہلے بنایا

ارے......! نور مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم کو:

لوح سے پہلے بنایا
قلم سے پہلے بنایا
کرسی سے پہلے بنایا
آدم سے پہلے بنایا
نوح سے پہلے بنایا
شیث سے پہلے بنایا
یونس سے پہلے بنایا
دانیال سے پہلے بنایا
ایوب سے پہلے بنایا
خلیل سے پہلے بنایا
جبرائیل سے پہلے بنایا

ہود سے پہلے بنایا
صالح سے پہلے بنایا
موسیٰ سے پہلے بنایا
عیسیٰ سے پہلے بنایا
یحییٰ سے پہلے بنایا
ذکریا سے پہلے بنایا
یعقوب سے پہلے بنایا
یوسف سے پہلے بنایا
اسماعیل سے پہلے بنایا
اسحاق سے پہلے بنایا

اور یہاں تک……کہ:

عبدمناف سے پہلے بنایا
عبدالمطلب سے پہلے بنایا

ارے…… یہ میرے مصطفیٰ ﷺ ہیں …… کہ جو اپنے باپ سے بھی پہلے تھے۔

یعنی! عبداللہ سے پہلے بنایا

یہ میرے نبی ﷺ کی انفرادی شان ہے……کہ:

آپ ﷺ ……اپنے آبا سے پہلے
آپ ﷺ ……اپنے اجداد سے پہلے
آپ ﷺ ……اپنے خاندان سے پہلے

آپ ﷺ ..... اس زمین و آسمان سے پہلے

میرے دوستو!

میں تو صرف آپ کو یہاں تک لانا چاہتا تھا..... آگے جواب تو خود میرے نبی ﷺ نے دیا ہے کہ..... میں کب بنا ہوں

فرمایا:

اَوَّلُ مَا خَلَقَ اللّٰہُ نُوْرِیْ

سب سے پہلے اللہ نے میرے نور کو پیدا فرمایا

میں رب ..... کا پہلا شہکار ہوں

میں رب ..... کا پہلا مظہر ہوں

میں رب ..... کی پہلی رچنا ہوں

میں رب ..... کی پہلی مخلوق ہوں

## نور مصطفیٰ ﷺ کو کہاں رکھا؟

یہاں میں نے عرض کیا کہ آؤ میں بتاؤں کہ اللہ نے کب بنایا..... اصل یہ ہے کہ ہم بھی نہیں جانتے کہ کب بنایا..... لیکن قربان جاؤں میرے رسول ﷺ نے خود ہی اس مسئلہ کو حل فرما دیا ہے..... پتہ بتا دیا ہے

اَوَّلُ مَا خَلَقَ اللّٰہُ نُوْرِیْ

اللہ نے سب سے پہلے میرے نور کو پیدا فرمایا

## 4- نکتہ!

اب یہ معلوم تو ہو گیا..... کہ اللہ نے میرے نبی ﷺ کا نور سب سے پہلے پیدا فرمایا..... لیکن اس کے بعد ایک اور سوال ہے کہ وہ نور مصطفیٰ ﷺ کہاں رکھا

گیا؟ آؤ ایک مثال سے بات کو آگے بڑھاتے ہیں...... کہ میں تقریر کر رہا ہوں اور علامہ منیر الزماں صاحب ہدیہ پیش کر رہے ہیں...... نذرانہ دے رہے ہیں......اور علامہ صاحب یہ نذرانہ کہاں رکھ رہے ہیں؟

میرے قدموں میں رکھ رہے ہیں

اور اگر قدموں کی جگہ نہ ہوتی ...... تو پھر کہاں رکھتے؟

جواب......میرے ہاتھوں پر رکھ دیتے

اور اگر یہ ہاتھ بھی نہ ہوتے......تو پھر کہاں رکھتے؟

جواب......میری جیب میں رکھ دیتے

اور اگر میری جیب بھی نہ ہوتی......تو پھر کہاں رکھتے؟

جواب......پھر یہ گھر میں دے آتے

اور اگر گھر بھی نہ ہوتا...... تو پھر کہاں رکھتے؟

جواب......تو پھر یہ بینک میں رکھ دیتے

اور اگر بینک بھی نہ ہوتا...... تو پھر کہاں رکھتے؟

جواب......تو پھر یہ کسی دوست کے ہاں رکھ دیتے

اور اگر دوست بھی نہ ہوتا...... تو پھر کہاں رکھتے؟

اور آگے سے کوئی کہہ سکتا ہے...... کہ ہاشمی میاں کیا نہ ہوتا...... نہ ہوتا کر رہے ہو بس ہم کسی بھی جگہ میں رکھ دیتے......لیکن سوال تو پھر بھی باقی ہے کہ...... اگر کوئی جگہ بھی نہ ہوتی تو پھر کہاں رکھتے؟

یعنی......اگر کوئی جگہ بھی موجود نہیں تو پھر اس نذرانہ کو کہاں رکھو گے؟

تو اللہ تعالیٰ نے جب سب سے پہلے نور مصطفیٰ ﷺ کو بنایا......تو پھر

رکھا کہاں؟

وہ نور ......آدم میں ہوگا نہیں...... وہ آدم سے پہلے
وہ نور ......جنت میں ہوگا نہیں...... وہ جنت سے پہلے
وہ نور ......حور میں ہوگا نہیں ...... وہ حور سے پہلے
وہ نور ......غلمان میں ہوگا نہیں...... وہ غلمان سے پہلے

ارے وہ نور مصطفیٰ ﷺ ہو!

ذرہ ذرہ سے پہلے ہے
صحرا صحرا سے پہلے ہے
چمن چمن سے پہلے ہے
گلشن گلشن سے پہلے ہے
گل گل سے پہلے ہے
کلی کلی سے پہلے ہے
فلک افلاک سے پہلے ہے
سمک سماک سے پہلے ہے
ستاروں سیاروں سے پہلے ہے
چاند اور چاندنی سے پہلے ہے
سونا اور چاندی سے پہلے ہے
زمیں سے پہلے ہے
آسماں سے پہلے ہے
زمین سے پہلے ہے

مکیں سے پہلے ہے
مکاں سے پہلے ہے

ارے...... جب سب سے پہلے ہے...... تو پھر آخر رکھا کہاں ہے؟

ہاں! ہاں! سوچنے کی بات ہے...... کہ...... جو:

مکہ سے بھی پہلے ...... مدینہ سے بھی پہلے
وفادار سے بھی پہلے ...... غدار سے بھی پہلے
عرب سے بھی پہلے ...... عجم سے بھی پہلے
روشنی سے بھی پہلے ...... اندھیرے سے بھی پہلے
قلم سے بھی پہلے ...... کلام سے بھی پہلے
لوح سے بھی پہلے ...... تحریر سے بھی پہلے
مقرر سے بھی پہلے ...... تقریر سے بھی پہلے
محرر سے بھی پہلے ...... تحریر سے بھی پہلے
مدبر سے بھی پہلے ...... تدبیر سے بھی پہلے
محقق سے بھی پہلے ...... تحقیق سے بھی پہلے

جب سب سے پہلے بنایا...... تو پھر سوچو تو رکھا کہاں؟

جواب آتا ہے...... اے ہاشمی پاگل مت بن...... یہ وہ نور نہیں ہے جسے جگہ چاہیے...... ارے وہ تم ہو کہ جب انگلینڈ میں آؤ تو جگہ چاہیے

کوئی جہلم سے آیا...... یو کے میں ...... تو جگہ چاہیے
کوئی گجرات سے آیا...... امریکہ میں ...... تو جگہ چاہیے
کوئی دہلی سے آیا...... برونائی میں ...... تو جگہ چاہیے

کوئی ممبئی سے آیا...... فرانس میں ......تو جگہ چاہئے
کوئی لاہور سے آیا...... دوبئی میں ......تو جگہ چاہئے
کوئی کراچی سے آیا...... شارجہ میں ......تو جگہ چاہئے

فرمایا ارے یہ تم ہو کہ ہر کسی کو رہنے، ٹھہرنے، بیٹھنے کیلئے کوئی نہ کوئی جگہ چاہئے...... یہ میرا محبوب ہے اس کو کوئی جگہ نہیں چاہئے۔

ارے وہ اس لئے کہ نبی ﷺ تو نور ہیں

اور جگہ کو نور چاہئے......نور کو کوئی جگہ نہیں چاہئے

اللہ کہہ رہا ہے کہ یہ تو میں نے اپنے محبوب کا نور اپنے لئے بنایا ہے......

ارے یہ میں نے کسی جگہ کے لئے کب بنایا ہے اور جب بنایا تو پھر نور محمدی ﷺ کو بنا کر بنانے والے نے اپنے قرب خاص میں رکھ لیا۔

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## نور مصطفیٰ ﷺ قرب خدا میں:

عزیز دوستو

جب اللہ نے نور مصطفیٰ ﷺ کو وجود بخشا تو فرمایا ’’اے نور‘‘ تو میرے محبوب کا نور ہے......بس یہاں میں بنانے والا ہوں

اور......تو اول بننے والا ہے

یعنی بس بنانے والا ایک خدا ہے اور دوسرا محبوب ﷺ کا نور ہے......ابھی تو کوئی دوسرا بنا ہی نہیں......ابھی تو بس راز کی باتیں ہو رہی ہیں......کہ

میں بنانے والا ......تو بننے والا
میں بنا کے دیکھوں ......تو بن کے دیکھ

میں سجا کے دیکھوں ......تو سج کے دیکھ
میں نکھار کے دیکھوں ......تو نکھر کے دیکھ

بس بنایا اس لئے ہے کہ محبوب میں تمہیں دیکھوں تو مجھے دیکھ......اور ابھی تو کوئی تیسرا ہے ہی نہیں کہ جوان کے دیکھنے کو دیکھے!

باقی تھرڈ کلاس تو بعد میں ہیں......اس وقت تو کوئی بھی نہیں تھا......فرمایا

تم مجھے دیکھو...... میں تمہیں دیکھوں ......یہی تو رضا ہے
تم مجھے دیکھو...... میں تمہیں دیکھوں ......یہی تو تقرب ہے
تم مجھے دیکھو...... میں تمہیں دیکھوں ......یہی تو محبت ہے

ابھی نہ کوئی زمانہ ہے......ابھی نہ کوئی وقت ہے......نہ کوئی مقام ہے......نہ کوئی دوسری مخلوق ہے...... بس ایک بنانے والا ہے ...... دوسرا بننے والا ہے......فرمایا......محبوب

تم مجھے اپنی طبیعت سے دیکھو!
میں تجھے اپنی مشیت سے دیکھوں

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

## 5- نکتہ:

ابھی یہاں پر مجھے ایک بات اور کہنا ہے کہ محبت، محبت میں فرق ہوتا ہے ......محبت و محبت کا معیار جدا جدا ہوتا ہے......

ایک محبت ہے......سیدہ فاطمۃ الزہراء رضی اللہ عنہا کی کہ ہاتھوں میں چکی چلا چلا کر چھالے پڑے ہوئے ہیں......لیکن پھر بھی ذکر خدا جاری ہے

ایک محبت ہے......سیدنا بلال حبشی رضی اللہ عنہ کی...... تپتا صحرا ہے سینے پر گرم وزنی پتھر پڑا ہے......لیکن زبان پر ذکر خدا جاری ہے......کلمہ مصطفیٰ ﷺ جاری ہے

ایک محبت ہے......عمار بن یاسر رضی اللہ عنہ کی تکلیف پر تکلیف برداشت ہو رہی ہے......لیکن ہر لحہ بہ لحہ محبت الٰہی بڑھتی جا رہی ہے......ذرا بھر بھی کمی نہیں آ رہی

لیکن یہ بھی تو سوچنے کی بات ہے کہ یہ تو بندوں کی محبت ہے اپنے رب سے یہ تو بندوں کی محبت ہے اپنے پروردگار سے...... لیکن جب پروردگار کو محبت ہوئی تو وہ کیسی محبت تھی؟ اس محبت کا انداز کیسا تھا؟ اس محبت کا معیار کیا ہوگا؟

ارے اللہ کا اپنے محبوب سے محبت کا معیار تم کیا جانو! بس یہیں سے اندازہ کرو......کہ اس نے سب سے پہلے اپنے محبوب کے نور کو بنایا......کہ تم مجھے دیکھو بس میں تمہیں دیکھوں

میں تیری ......نبوت دیکھتا رہوں
تم میری ......الوہیت دیکھتے رہو
میں تیری ......ذات کو دیکھوں
تم میری ......ذات کو دیکھتے رہو

ارے محبوب میں نے تیرے نور کو سب سے پہلے اس لئے بنایا کہ......

اب یہاں جملہ سننا، اے محبوب تیرا نور بنا کر میں دیکھ رہا ہوں ......اور تو بن کر مجھے دیکھ رہا ہے

میری محبت تم سے یہ ہے......کہ:

جیسا میں تمہیں دیکھوں ایسا کوئی دوسرا دیکھنے نہ پائے
اور جیسے تو مجھے دیکھے ایسا کوئی دوسرا مجھے دیکھنے نہ پائے

اے محبوب جیسا تو مجھے دیکھ لے گا...... ایسا کوئی دوسرا نبی بھی دیکھنے نہ پائے...... وہ طور پر جو دیکھیں گے حضرت موسیٰ علیہ السلام وہ ذات کی تجلی نہیں...... بلکہ صفات کی تجلی ہوگی......یعنی......

وہ سیدنا موسیٰ علیہ السلام ہیں ......جو طور سے دیکھ رہے ہیں
یہ محمد مصطفیٰ ﷺ ہیں ...... جو نور سے دیکھ رہے ہیں

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

## معراج کی شب قربِ خداوندی:

عزیزانِ گرامی!

ایک تو یہ قربِ خداوندی تھا......تو ابھی میں نے عرض کیا......اور ایک اور میرے نبی ﷺ کو قربِ خداوندی حاصل ہوا کہ جب درمیان میں کوئی دوسرا نہیں تھا! اور وہ قرب میرے نبی کو معراج کی شب حاصل ہوا...... کہ ایک خدا بنانے والا دیکھ رہا ہے......اور دوسرا محمد مصطفیٰ ﷺ بننے والا دیکھ رہا ہے......یا پھر ایسے کہہ لو کہ ایک قربِ خاص میں بلانے والا دیکھ رہا ہے......اور دوسرا قربِ خاص میں جانے والا دیکھ رہا ہے۔

اب جب...... نور بنایا ......تو بھی دوسرا دیکھنے والا کوئی نہیں
اور جب...... عرش پر بلایا ......تو بھی دوسرا دیکھنے والا کوئی نہیں
عرش پر بھی ......ایک دیکھنے والا مصطفیٰ ہے

......اور دکھانے والا خدا ہے

جبرئیل علیہ السلام بھی سدرہ پر رک گئے...... کہ میں آگے نہیں جا سکتا...... ارے آگے کیوں نہیں جا رہے ہے......؟

تم تو ...... امام الملائکہ ہو؟

تم تو ...... رسول الملائکہ ہو؟

تو جبرئیل علیہ السلام جواب دیتے ہیں...... سرکار ﷺ میں ذرا برابر بھی آگے نہیں بڑھ سکتا اس لئے کہ میں آپ ﷺ جیسا نہیں ہوں

جبرئیل علیہ السلام کا عقیدہ سنو!

کہ یارسول اللہ ﷺ میں آپ جیسا نہیں ہوں...... دونوں پوائنٹ غور سے سمجھو! کہ اے محبوب ﷺ میں آپ کے ساتھ نہیں جا سکتا وہ اس لئے میں آپ ﷺ کے جیسا نہیں ہوں...... اور میں آپ ﷺ کو روکوں گا بھی نہیں وہ اس لئے کہ آپ ﷺ میری طرح نہیں ہیں

بس فیصلہ ہوگیا...... کہ

نبی ﷺ کو اپنے جیسا نہ کہنا ...... یہ عقیدہ ہے، جبرئیل امین کا

### 6- نکتہ:

بھئی اتنا تو فائنل ہوگیا کہ جبرئیل کا عقیدہ بھی یہی ہے کہ نبی ہماری مثل نہیں ہے...... اور اب میں نے یہاں ایک نکتہ اس معراج پر قرب خداوندی کے حوالے سے عرض کرنا ہے اور وہ نکتہ بھی بہت اہم ہے کہ جب میرے حضور ﷺ اپنے سفر معراج پر روانہ ہوئے تو پھر آپ ﷺ زمین سے کس طرف گئے؟

آپ سب کا جواب ہے کہ مکاں سے آپ ﷺ ” لامکاں کی طرف

گئے ...... اب سوچنے کی بات ہے کہ یہ "لامکاں" کیا ہے؟

ویسے تو کہتے ہیں کہ لا کا معنی نہیں ...... مکاں کا معنٰی کوئی جگہ ...... یعنی کہنے کو تو معنی ہوا ...... کہ نبی ﷺ وہاں تشریف لے گئے ...... کہ جو "لامکاں" ہے ...... یعنی کوئی جگہ نہیں ہے

ارے یہ سب کیسے ہوا دیکھو کہ جب میرے نبی ﷺ مکہ سے چلے تو ...... مکاں کا ذکر ہوا

مسجد حرام سے چلے تو بھی جگہ کا ذکر ہوا ...... بلکہ یہ ذکر تو قرآن میں بھی ہوا ...... اور اس کے بعد جہاں پہنچے اس کا ذکر بھی قرآن میں ہوا یعنی "مسجد اقصیٰ" اس کے بعد جہاں پہنچے ...... اس کا ذکر بھی روایات میں ہوا یعنی

پہلے آسمان کا ذکر ہوا
دوسرے آسمان کا ذکر ہوا
تیسرے آسمان کا ذکر ہوا
چوتھے آسمان کا ذکر بھی ہوا
پانچویں آسمان کا ذکر بھی ہوا
چھٹے آسمان کا ذکر بھی ہوا
ساتویں آسمان کا ذکر بھی ہوا

لیکن پھر اس کے بعد ہم کہتے ہیں ...... کہ رسول ﷺ "لامکاں" تک پہنچے ...... ارے اگر وہ کوئی جگہ ہی نہیں تو پھر رسول ﷺ کہاں پہنچے؟ ...... تو بس ابھی اسی سوچ میں پڑے ہوئے تھے ...... تو کسی کہنے والے نے کہہ

دیا...... ارے سن...... اس کے بعد جب محبوب ﷺ اللہ کے قرب خاص میں پہنچ گئے ......تو وہاں کے لئے ’’لامکاں‘‘ کا لفظ بولا گیا...... وہ اس لئے کہ رسول ﷺ نے اپنے سر کی آنکھوں سے اپنے رب کو دیکھا ہے! اور...... اللہ......

حدود و قیود سے پاک ہے
جسم و جسمانیات سے پاک ہے
شکل واشکال سے پاک ہے
وقت و اوقات سے پاک ہے

تو بس مسئلہ حل ہو گیا...... کہ جہاں رسول ﷺ نے اپنے خدا کو دیکھا......
وہی تو ہے ’’لامکاں‘‘ اس لئے کہ جس ذات کو دیکھا جا رہا ہے
وہ حدود و قیود سے پاک ہے تو پھر وہی لامکاں میں تھا
جہاں رسول ﷺ نے اپنے رب کو دیکھا...... اس کو تو لامکاں کہتے ہیں...... اس لئے کہ ’’مکاں‘‘ تو جگہ کو کہتے ہیں...... اور اللہ تو جگہ سے پاک ہے...... اس لئے جہاں رسول ﷺ نے اپنے رب کو دیکھا اسی کو تو ’’لامکاں‘‘ کہتے ہیں...... اس لئے کہ:

لامحدود کی حد ہو نہیں سکتی!
لامتناہی کی انتہا ہو نہیں سکتی!

تو جہاں اس لامحدود کو دیکھا...... تو اب بات لامحدود کی تھی...... تو وہاں یہ بولا گیا کہ آپ ﷺ لامکاں تک پہنچے
عزیزانِ گرامی:

اب یہاں یہ بھی تو دیکھنا ہے کہ رسول ﷺ جب لامکاں میں خدا کو دیکھ رہے تھے تو اس وقت آپ ﷺ خود کہاں تھے؟ ارے اسی ''لامکاں'' میں میرے نبی ﷺ بھی تو تھے...... جب کہ وہ خدا کو دیکھ رہے تھے......یعنی آپ ﷺ جب مکاں سے نکل گئے تو پھر جہاں تھے وہ لامکاں تھا......اس لئے کہ وہاں جلوۂ خدا تھا...... لامحدود کے جلوے کے لئے جہاں جلوہ کروایا گیا وہی مقام تو ہے لامکاں کا......ارے جب تک رسول ﷺ مکاں میں تھے:

ہمیں معلوم تھا...... کہ وہ نبی ﷺ ہیں
ہمیں معلوم تھا...... کہ وہ رسول ﷺ ہیں
ہمیں معلوم تھا...... کہ وہ عبداللہ کی جان ہیں
ہمیں معلوم تھا...... کہ وہ آمنہ رضی اللہ عنہا کے لال ہیں
ہمیں معلوم تھا...... کہ وہ فخر المرسلین ﷺ ہیں
ہمیں معلوم تھا...... کہ وہ رحمتہ اللعالمین ﷺ ہیں

ارے یہ تو سب باتیں اس وقت کی ہیں...... کہ جب رسول ﷺ مکاں میں تھے اور اب ''ملاں جی'' تم بتاؤ کہ جب رسول ﷺ ''مکاں'' سے ''لامکاں'' میں چلے گئے تو اب رسول ﷺ اس وقت کیا ہیں؟

ہاں! ہاں! میرا یہ سوال ہے کہ جتنی دیر تک رسول ﷺ لامکاں میں رہے اتنی دیر تک خود رسول ﷺ کیا تھے!

آپ ﷺ مکہ میں کیا ہیں؟ ......میں یہ نہیں پوچھ رہا
آپ ﷺ مدینہ میں کیا ہیں؟ ......میں یہ نہیں پوچھ رہا

آپ ﷺ طائف میں کیا ہیں؟ ......میں یہ نہیں پوچھ رہا
آپ ﷺ بدر میں کیا ہیں؟ ......میں یہ نہیں پوچھ رہا

ارے میں تو یہ پوچھ رہا ہوں کہ جب رسول ﷺ ’’لامکاں‘‘ میں تھے تو اس وقت کیا تھے؟ یہ نہ کہو کہ جی اس کا کوئی جواب نہیں

اس کا جواب ہے......اگر آپ نے لینا ہو تو......

غوث اعظم رحمۃ اللہ علیہ کی چوکھٹ پر جاؤ گے ....تو وہ اس کا جواب بتائیں گے
اگر امام اعظم رحمۃ اللہ علیہ کی چوکھٹ پر جاؤ گے ....تو وہ اس کا جواب بتائیں گے
اگر جماعت علی شاہ رحمۃ اللہ علیہ کی چوکھٹ پر جاؤ گے ....تو وہ اس کا جواب بتائیں گے
اگر مہر علی رحمۃ اللہ علیہ کی چوکھٹ پر جاؤ گے ....تو وہ اس کا جواب بتائیں گے
اگر خواجہ اجمیری رحمۃ اللہ علیہ کی چوکھٹ پر جاؤ گے ....تو وہ اس کا جواب بتائیں گے
اگر داتا علی ہجویری رحمۃ اللہ علیہ کی چوکھٹ پر جاؤ گے ....تو وہ اس کا جواب بتائیں گے
اگر شیر ربانی رحمۃ اللہ علیہ کی چوکھٹ پر جاؤ گے ....تو وہ اس کا جواب بتائیں گے
اگر مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ کی چوکھٹ پر جاؤ گے ....تو وہ اس کا جواب بتائیں گے
اگر بہاؤ الدین ذکریا رحمۃ اللہ علیہ کی چوکھٹ پر جاؤ گے ....تو وہ اس کا جواب بتائیں گے
اگر امام احمد رضا رحمۃ اللہ علیہ کی چوکھٹ پر جاؤ گے ....تو وہ اس کا جواب بتائیں گے

ہاں ...... آپ کو میرے اس سوال کا جواب ملے گا ......ضرور ملے گا......لیکن ایسے ماحول میں یہ جواب ملے گا کہ جس ماحول میں نعت مصطفیٰ ﷺ کی گونج ہو گی ......جس زبان پر درود مصطفیٰ ﷺ کی چاشنی ہو گی

ارے اس کا جواب اگر غور کرو تو خود ہی خدا نے دے دیا ہے... کہ

اے محبوب ﷺ......

میں نے آپ کو آمنہ رضی اللہ عنہا کے پیٹ میں رکھا ...... تاکہ لوگ خدا نہ سمجھیں
میں نے آپ کو عبداللہ رضی اللہ عنہ کا بیٹا بنایا ...... تاکہ لوگ خدا نہ سمجھیں
میں نے آپ کو عبدالمطلب رضی اللہ عنہ کا پوتا بنایا ...... تاکہ لوگ خدا نہ سمجھیں
میں نے آپ کو امیر حمزہ رضی اللہ عنہ کا بھتیجا بنایا ...... تاکہ لوگ خدا نہ سمجھیں
میں نے آپ کو خدیجہ رضی اللہ عنہا کا شوہر بنایا ...... تاکہ لوگ خدا نہ سمجھیں
میں نے آپ کو فاطمہ رضی اللہ عنہا کا بابا بنایا ...... تاکہ لوگ خدا نہ سمجھیں
میں نے آپ کو حسنین رضی اللہ عنہ کا نانا بنایا ...... تاکہ لوگ خدا نہ سمجھیں

تو محبوب ...... آپ ﷺ زمین پر بولو ...... تاکہ میرے بندوں کو بولنا آجائے

آپ ﷺ کھانا کھاؤ ...... تاکہ میرے بندوں کو کھانا کھانا آجائے
آپ ﷺ پانی پیو ...... تاکہ میرے بندوں کو پانی پینا آجائے
آپ ﷺ شادی کرو ...... تاکہ میرے بندوں کو شادی کرنا آجائے
آپ ﷺ فاطمہ کو پالو ...... تاکہ میرے بندوں کو اولاد پالنا آجائے
آپ ﷺ تجارت کو جاؤ ...... تاکہ میرے بندوں کو تجارت کرنا آجائے
آپ ﷺ مزدوری کرو ...... تاکہ میرے بندوں کو مزدوری کرنا آجائے
آپ ﷺ ذرا رو لو ...... تاکہ میرے بندوں کو رونا آجائے
آپ ﷺ قیام کرو ...... تاکہ میرے بندوں کو قیام کرنا آجائے
آپ ﷺ بستر پر لیٹ جاؤ ...... تاکہ میرے بندوں کو لیٹنا آجائے
آپ ﷺ قبر میں لیٹ جاؤ ...... تاکہ میرے بندوں کو قبر میں لیٹنا آجائے

اے محبوب میرے پیارے محبوب ﷺ

میں نے آپ ﷺ کو کھانا کھلایا ...... تاکہ یہ آپ کو خدا نہ سمجھیں
میں نے آپ ﷺ کو پانی پلایا ...... تاکہ یہ آپ کو خدا نہ سمجھیں
میں نے آپ ﷺ کو کسی کی اولاد بنایا ...... تاکہ یہ آپ کو خدا نہ سمجھیں
میں نے آپ ﷺ کو آمنہ کا بیٹا بنایا ...... تاکہ یہ آپ کو خدا نہ سمجھیں
میں نے آپ ﷺ کو عبداللہ کا نورِ نظر بنایا ...... تاکہ یہ آپ کو خدا نہ سمجھیں
میں نے آپ ﷺ کو حلیمہ کے گھر پالا ...... تاکہ یہ آپ کو خدا نہ سمجھیں
میں نے آپ ﷺ کو خدیجہ کا شوہر بنایا ...... تاکہ یہ آپ کو خدا نہ سمجھیں
میں نے آپ ﷺ کو فاطمہ کا بابا بنایا ...... تاکہ یہ آپ کو خدا نہ سمجھیں
میں نے آپ ﷺ کو حسنین کا نانا بنایا ...... تاکہ یہ آپ کو خدا نہ سمجھیں

ارے میرے پیارے محمد مصطفیٰ ﷺ میں نے آپ کو مکاں میں اس لئے بھیجا تاکہ کوئی آپ ﷺ کو خدا نہ سمجھے ...... اور پھر لامکاں میں اس لئے بلایا ...... تاکہ کوئی اپنے جیسا نہ سمجھے:

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

اے محبوب ﷺ ...... آپ کو مکان میں رکھا ...... تاکہ لوگ خدا نہ کہیں
اور پھر ...... لامکاں میں اس لئے بلایا ...... تاکہ لوگ جدا نہ سمجھیں

## نور مصطفیٰ ﷺ سے چمک پانے والے:

عزیزانِ گرامی!

وہ نور مصطفیٰ ﷺ جس کو اللہ نے سب سے پہلے بنایا ...... اور پھر جب وہ نور تخلیق آدم علیہ السلام کے بعد آدم علیہ السلام میں چمکا ...... آدم علیہ السلام میں دمکا ...... تو وہ خود تو

چمک ہی رہا تھا...... ساتھ آدم علیہ السلام کو بھی چمکا دیا......:

ارے نور مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم نے آدم علیہ السلام کو ایسا چمکایا
کہ...... پھر آدم علیہ السلام کی تعظیم میں فرشتوں نے سر کو جھکایا

اور اسی وقت یہ واقعہ ہوا تھا...... کہ

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ

تو اسی دن سے دو جماعتیں وجود میں آ گئیں...... ایک نبی کی تعظیم کرنے والی جماعت...... ایک نبی کا انکار کرنے والی جماعت

لیکن فرق یہ ہے...... کہ

نبی کی تعظیم کرنے والوں کا تعلق ...... نوریوں سے ہے
نبی کی تعظیم سے انکار کرنے والوں کا تعلق ...... ناریوں سے ہے

تو میں کہہ رہا تھا کہ جب نور مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم آدم علیہ السلام میں داخل کیا گیا...... جب اس نور نے آدم علیہ السلام میں چمکنا شروع کیا تو پھر حکم خدا سے فرشتوں نے حضرت آدم علیہ السلام کو سجدہ کیا...... اور پھر جب اس کے بعد...... وہ نور پاک پشتوں میں سے ہوتا ہوا...... پاک رحموں سے ہوتا ہوا...... سیدنا ابراہیم علیہ السلام تک پہنچا تو پھر یہاں دنیا جانتی ہے کہ خلیل اللہ علیہ السلام کو آگ میں گرایا گیا...... لیکن آگ نور مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم کی موجودگی میں...... حکم خدا سے جلا نہ سکی...... یعنی یہ فائنل ہو گیا کہ جب نور مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم حضرت سیدنا ابراہیم علیہ السلام میں چمکا تو پھر نار نمرود خلیل اللہ علیہ السلام کو جلا نہ سکی

اور پھر اس کے بعد جب یہ نور حضرت اسماعیل علیہ السلام میں آیا تو تاریخ گواہ ہے کہ باپ چھری چلا رہے ہیں...... لیکن گردن کٹ نہ سکی......اور

وہ نور......جو قرب خدا میں چمکا
وہ نور......جو اللہ کے پاس میں چمکا
وہ نور......جو خدا کے قریب ہے
وہ نور......جو خدا کا حبیب ہے
وہ نور......جو آدم علیہ السلام میں چمکا
وہ نور......جو شیث علیہ السلام میں چمکا
وہ نور......جو نبیوں میں چمکا
وہ نور......جو رسولوں میں چمکا

اے سنیوں خوشی سے عید مناؤ...... کہ وہ نور ۱۲ ربیع الاول کو تمہیں چمکانے کیلئے زمین پر آ گیا

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ صلی اللہ علیہ وسلم

اور یاد رکھو......

وہ نور جب آدم میں تھا......تو آدم علیہ السلام کا جواب نہ تھا"
وہ نور جب شیث میں تھا......تو شیث علیہ السلام کا جواب نہ تھا

یعنی:

صبح طیبہ میں ہوئی بٹتا ہے باڑہ نور کا:

یہ نور جہاں جاتا ہے......کٹنے نہیں دیتا
یہ نور جہاں جاتا ہے......مٹنے نہیں دیتا

یہ نور جہاں جاتا ہے ...... بجھنے نہیں دیتا
یہ نور جہاں جاتا ہے ...... گرنے نہیں دیتا

تاریخ گواہ ہے...... کہ:

وہ نور...... ابراہیم علیہ السلام میں تھا ...... تو آگ جلا نہ سکی
وہ نور ...... اسماعیل علیہ السلام میں تھا...... تو چھری کاٹ نہ سکی

تو اے مسلمانو! اب وہ نور تمہارے سینوں میں موجود ہے...... تو اب تمہیں اس دنیا سے کون ختم کر سکے گا؟

اب اگر کشمیر آزاد کروانا ہے...... تو نور مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم کو دل میں بسانا ہوگا
اب اگر فلسطین آزاد کروانا ہے...... تو نور مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم کو دل میں بسانا ہوگا

وہ نور پاک جو آدم علیہ السلام سے ہوتا ہوا نبیوں کی پاک پستوں تک پہنچا...... وہ نور جو پاک نبیوں سے ہوتا ہوا...... پاک رسولوں سے ہوتا ہوا پاک ماؤں کے پاکیزہ ارحام میں رہتا ہوا...... عبد مناف تک پہنچا

اور پھر اس کے بعد...... عبد مناف سے ہوتا ہوا...... سید نا عبد اللہ تک پہنچا تو اب جب اس نور کی جلوہ گری دنیا میں ہونی ہے...... تو وقت کونسا چنا گیا؟

یقیناً صادق الامین کیلئے وقت بھی صبح وصادق کا چنا گیا...... وہ اس لئے:

کہ آنے والا نبی صادق ہے
آنے والا رسول صادق ہے
آنے والا رہبر صادق ہے
آنے والا ہادی صادق ہے

تو پھر اس کی آمد آمد کیلئے جو وقت چنا گیا...... وہ وقت بھی صبح صادق کا وقت تھا

وہ نور جب آیا تو ......فرشتے بھی مسرور ہو رہے ہیں
وہ نور جب آیا تو ......حوریں نغمہ سراء ہو رہی ہیں
وہ نور جب آیا تو .....فضائیں بھی معطر ہو رہی ہیں
وہ نور جب آیا تو ......ہوائیں بھی معنبر ہو رہی ہیں

بس باران کرم بنکر میرے مصطفیٰ ﷺ تشریف لائے...... بے قراروں کو قرار مل گیا...... بے سہاروں کو سہارا مل گیا...... انسانیت کو رہبر و رہنما مل گیا...... آدمیت کو تسکین و قرار مل گیا...... جنت کو جان جنت مل گیا...... امت کو جان رحمت مل گیا

تو ایسے میں وہ نور سیدہ آمنہ رضی اللہ عنہا کے آنگن میں اتر آیا...... منظر بڑا دلکش ہے...... کہ سیدہ آمنہ رضی اللہ عنہا کے دروازے پر ہاتھ باندھے نوری کھڑے ہیں...... آمد آمد کے ترانے سب کے لبوں پر سجے ہیں...... نور کی بارش چھم چھم برس رہی ہے تو آنے والا ایسا بے مثال آیا...... کہ:

چاند جس کا کھلونا بن گیا
سورج جس کا اشارہ بن گیا

اور نوری اپنی نورانی جماعت کیساتھ مل کر درود و سلام پڑھ رہے ہیں...... تو ایسے میں جب ایک عاشق صادق نے سنا کہ مصطفیٰ جان رحمت ﷺ آ گئے ہیں تو:

وہی نور ......جو کبھی اپنی دادی کو چمکا رہا تھا
وہی نور ......جو کبھی اپنے دادا کو چمکا رہا تھا

وہی نور ......جو کبھی نبیوں کو چمکا رہا تھا
وہی نور ......جو کبھی رسولوں کو چمکا رہا تھا

تو ۱۲ ربیع الاوّل کی ہر مرتبہ آمد اپنے ساتھ سرکار صلی اللہ علیہ وسلم کی آمد آمد کے وقت کی یادیں اور بہاریں لیکر آتا ہے......تو بریلی کی چٹائی پر بیٹھے میرے امام......امام عشق ومحبت نے یوں کہہ دیا......کہ

چمک تجھ سے پاتے ہیں سب پانے والے
میرا دل بھی چمکا دے چمکانے والے

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

⁂

## موضوع...... معراج مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم

نَحْمَدُهٗ وَ نَسْتَعِيْنُهٗ وَ نَسْتَغْفِرُهٗ وَ نُؤْمِنُ بِهٖ وَ نَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَ نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَ مِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمٰلِنَا وَ مَنْ يَّهْدِيْهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَ مَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَ نَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَ نَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا مَوْلَانَا وَ حَبِيْبَنَا وَ سِرَاجَنَا وَ اَشْرَفَنَا وَ سَيِّدَنَا مُحَمَّدًا صلی اللہ علیہ وسلم

اَمَّا بَعْدُ!

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰى فِى الْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ وَ الْفُرْقَانِ الْحَمِيْدِ...... اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَى
صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلٰنَا الْعَظِيْمُ

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ط
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ○

بارگاہ رسالت مآب صلی اللہ علیہ وسلم میں ہدیہ درود وسلام پیش کیجیے

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدِيْ يَا رَسُوْلَ اللّٰه
وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ يَا سَيِّدِيْ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

علماء کرام...... سادات کرام...... اور میری دینی ماؤں بہنو!

میرے عزیز بھائیو...... بیٹیو...... اور عزیز بچو

گجرات کی اس سرزمین پر ماشاء اللہ اتنا بڑا اجتماع نہ تو کوئی سیاسی ہے اور نہ ہی کوئی ناموری کیلئے اس جلسے کا اہتمام کیا گیا ہے...... خالصتاً اللہ کی رضا حاصل کرنے کیلئے یہ اہتمام کیا گیا ہے...... اور ہم کو اور آپ سب کو اس میں مدعو کیا گیا ہے...... اور آج کے اس جمع غفیر نے بھی ثابت کر دیا ہے کہ گجرات میں دین ان لوگوں کی محنت سے نہیں پھیلا جو کہ خود کیلئے آئے تھے ...... بلکہ گجرات میں دین ان صوفیاء کی نگاہ کمال سے پھیلا ہے کہ جو صرف خدا کیلئے آئے تھے!

## ذکر معراج...... لفظ سُبْحَانَ سے شروع کرنے میں حکمت:

عزیز دوستو!

آج گجرات کی سرزمین پر اتنے بڑے اجتماع کا اہتمام اس لئے کیا گیا ہے تاکہ غلام اور عاشق لوگ بیٹھ کر یہ سن سکیں کہ آقا ﷺ کو معراج کیسے ہوا ہے؟ دیکھئے یہ رجب المرجب کا مہینہ ہے...... اس رجب میں دو باتیں عجب ہیں...... یعنی اس ماہ رجب میں نبی کا عرش پر جانا بھی ہے...... اور علی کا فرش پر آنا بھی ہے

اس ماہ رجب میں...... مصطفیٰ عرش بریں پر گئے...... اور علی فرش زمیں پر آئے:

خیر میں نے اسی سفر معراج پر گفتگو کرنے کے ارادے سے قرآن کی ایک مشہور آیت مقدسہ تلاوت کی ہے......غور کیجئے! کہ

اس محفل میں ہم نے اپنے رسول ﷺ کا معراج بیان کرنا ہے...... لیکن یہ آیت جو میں نے تلاوت کی ہے...... اس میں معراج تو رسول کا بیان ہو رہا ہے...... لیکن ابتدا میں اللہ اپنی پاکی لفظ ''سبحان'' سے بیان کر رہا ہے۔

آخر اس سفر معراج مصطفیٰ ﷺ کو بیان کرتا ہوں...... ابتدا لفظ ''سبحان'' سے کرنے میں بھی ضرور کوئی بڑی حکمتیں ہوں گی؟

سب سے بڑی ایک حکمت جو ہے...... وہ یہ ہے کہ زمین سے سفر شروع ہوا پھر رسول ﷺ ہواؤں سے بھی گزر گئے...... فضاؤں سے بھی گزر گئے

تنہائیوں سے بھی گزر گئے ...... خلاؤں سے بھی گزر گئے
جہانوں سے بھی گزر گے ...... آسمانوں سے بھی گزر گئے

تو اللہ عالم الغیب ہے...... وہ جانتا ہے کہ کچھ لوگ میرے حبیب ﷺ کے جسمانی معراج پر اعتراض کریں گے...... کچھ لوگ اس جسمانی معراج کا انکار کر دیں گے...... وہ اس لئے کہ جب ایک بشر دو سو کلومیٹر اوپر چلا جائے تو ظاہر ہے کہ آکسیجن بند ہو جائے گی...... اب بشر آکسیجن کے بغیر زندہ رہ نہیں سکتا...... اور پھر آسمانوں میں سے ہر آسمان کی موٹائی پانچ سو سال کی مسافت ہے...... اور پھر ایک آسمان سے دوسرے آسمان کا لمبا سفر ہے...... تو جب ایک جانے والے پر:

ہواؤں کی رکاوٹ آئے گی
فضاؤں کی رکاوٹ آئے گی
آسمان کی رکاوٹ آئے گی
فاصلوں کی رکاوٹ آئے گی

تو ہوسکتا ہے کہ کوئی انکار کردے کہ بھئی ایک بشر یہ سارے فاصلے کیسے طے کرسکتا ہے؟...... تو قربان جاؤں ...... اللہ عالم الغیب کی شان والے رب کی حکمتوں پر...... کہ آیت کو لفظ سبحان سے شروع کیا...... یعنی سب سے پہلے اپنے نام پاک سے ابتدا فرمائی...... کہ کوئی یہ بحث نہ کرتا پھرے...... کہ کوئی کیسے گیا؟

بلکہ یہ سوچو کہ کون لے گیا

تو پھر اس لئے فرمایا...... کہ

سُبْحٰنَ الَّذِیْٓ اَسْرٰی بِعَبْدِہٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَی الْمَسْجِدِ الْاَقْصٰی

سفر معراج کو اس لئے اپنے نام سے شروع کیا...... کہ لوگوں کو پتہ چل جائے...... کہ:

جس ہوا کو میں نے پیدا کیا ہے...... اس کی کیا ہمت کہ میں لے جاؤں اور وہ راستے میں رکاوٹ بن جائے؟

جس فضا کو میں نے پیدا کیا ہے...... اس کی کیا ہمت کہ میں لے جاؤں اور وہ راستے میں رکاوٹ بن جائے؟

جس آسمان کو میں نے پیدا کیا ہے...... اس کی کیا ہمت کہ میں لے جاؤں اور وہ راستے میں رکاوٹ بن جائے؟

جس آسمانی موٹائی کو میں نے پیدا کیا ہے...... اس کی کیا ہمت کہ میں لے جاؤں اور وہ راستے میں رکاوٹ بن جائے؟

جس سردی کو میں نے پیدا کیا ہے...... اس کی کیا ہمت کہ میں لے جاؤں اور وہ راستے میں رکاوٹ بن جائے؟

جس گرمی کو میں نے پیدا کیا ہے...... اس کی کیا ہمت کہ میں لے جاؤں اور وہ راستے میں رکاوٹ بن جائے؟

تو معلوم ہوا...... کہ جس کو خدا لے جاتا ہے......اس کو نہ آسمان روک سکتا ہے......اور نہ اس کو جہان روک سکتا ہے

### 1- نکتہ:

سُبْحٰنَ الَّذِیْ اَسْرٰی بِعَبْدِہٖ کے ایک ایک لفظ پر ہمارا ایمان ہے...... اوراسم اللہ تعالیٰ کی پاکی سے ابتدا کر کے لوگوں کو یہ بتایا جا رہا ہے...... کہ یہ بعد میں کہنا کہ گیا کون...... پہلے یہ دیکھو کہ لیکر گیا کون؟

لیکن ہاشمی یہاں پر ایک بات کرنا چاہتا ہے ...... ذرا غور سے سماعت کیجئے گا ...... کہ لیکر جانے والے میں لیجانے کی طاقت ہے تو پھر یہ بھی تو ضروری ہے ...... کہ جانے والے میں بھی ...... جانے کی صلاحیت ہو...... آیئے ایک مثال سے بات کو آسان کرتا ہوں ...... ایک شخص نے اپنے ہاتھ میں پتھر لیا اور اپنی پوری طاقت کے ساتھ سوفٹ تک اس کو اچھال دیا...... اور پھر ایک دوسرے شخص نے ایک کاغذ کا ٹکڑا لیا اور اس کو اپنی پوری طاقت کے ساتھ سوفٹ تک اچھالنے کی کوشش کی لیکن کیا ہوگا ...... کہ وہ کاغذ کا ٹکڑا جتنی بھی طاقت

سے اچھالا جائے گا وہ آپ کے ہاتھ میں ہی رہ جائے گا...... آخر ایسا کیوں ہوا؟

ایسا اس لئے ہوا کہ اوپر بھیجنے والے میں تو اوپر بھیجنے کی طاقت ہے لیکن جانے والے میں...... اوپر جانے کی صلاحیت نہیں ہے۔

اس اجتماع میں ہاشمی یہ اعلان کرتا ہے کہ...... میرے خدا میں اپنے بندے کو سیر پر لیجانے کی قدرت ہے...... تو میرے رسول ﷺ میں بھی اوپر جانے کی صلاحیت ہے۔

## سفر معراج مسجد حرام سے مسجد اقصیٰ تک کیوں؟

عزیزان گرامی!

میرے نبی ﷺ میں اوپر جانے کی صلاحیت موجود تھی...... تبھی تو مکاں سے لامکاں تک تشریف لے گئے لیکن یہاں پھر قرآن کی طرف آؤ کہ اللہ تعالیٰ نے جب حبیب ﷺ کا سفر معراج بیان فرمایا تو

مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَی الْمَسْجِدِ الْاَقْصٰی
مسجد حرام سے مسجد اقصیٰ تک

یعنی اللہ نے جب سورہ بنی اسرائیل کی ابتدا میں سفر معراج کا ذکر فرمایا تو صرف مسجد حرام سے مسجد اقصیٰ یعنی ''بیت المقدس'' تک کا ذکر کیا...... اس آیت میں اس کے آگے کا ذکر نہیں ہوا...... جبکہ حقیقت تو یہ ہے کہ میرے نبی ﷺ معراج کی شب مکاں سے لامکاں تک تشریف لے گئے...... اور خود قرآن دوسرے مقام پر معراج کی ان بلندیوں کا ذکر کرتا ہے...... مثلاً

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنٰى

یہ بھی تو معراج مصطفیٰ ﷺ کا حصہ ہے……لیکن جب سورہ بنی اسرائیل کے اندر معراج مصطفیٰ ﷺ کا ذکر فرمایا تو صرف مسجد حرام سے لیکر مسجد اقصیٰ تک کا ذکر فرمایا……آخر کیوں؟ آؤ سنو!

ایک بچہ انڈیا کے شہر احمد آباد میں پیدا ہوا……اب جب تک وہ جوان ہوا اس وقت تک کبھی وہ اپنے شہر احمد آباد سے باہر گیا ہی نہیں……اور اس کے آس پاس والے……اس کے عزیز رشتہ دار سب یہ جانتے ہیں کہ یہ نوجوان کبھی اپنے شہر سے باہر نہیں گیا…… ہماری آنکھوں کے سامنے رہتا ہے

اور ایک دن وہ کہے کہ میں جرمن گیا ہوں……ان میں سے تو کسی نے جرمن دیکھا ہی نہیں……اس لئے وہ خاموش تو ہو جائیں گے لیکن دل ہی دل میں یہ ضرور سوچیں گے……کہ بھئی یہ نوجوان کہہ رہا ہے کہ میں جرمن گیا ہوں اور رات بھر میں جرمن کی سیر کر کے آیا ہوں……بس وہ سوچتے ضرور ہوں گے لیکن اس سے کوئی سوال نہیں کرے گا……کہ ارے اگر تو جرمن گیا ہے تو بتاؤ……فلاں سنٹر کس جگہ ہے؟ بتاؤ فلاں ہوٹل کس جگہ ہے؟ بتاؤ فلاں مارکیٹ کس جگہ ہے؟ یعنی وہ جن کو بتایا جا رہا ہے کہ میں جرمن کی سیر کر کے آیا ہوں ان میں سے کوئی بھی ایسا سوال نہیں کرے گا……صرف اس لئے کہ ان میں سے تو کوئی خود جرمن گیا ہی نہیں……جرمن کے بارے میں ان کو کوئی اتنی معلومات نہیں وہ آگے سے جرمن کی سیر کا دعویٰ کرنے والے کو سوال کیسے کریں گے؟

تو اگر وہ نوجوان یہ دعویٰ کرتا کہ میں اپنے شہر احمد آباد سے ممبئی گیا ہوں اور میں رات کو ممبئی کی سیر کر کے واپس آیا ہوں ...... تو فوراً اس کے قریب رہنے والے اس سے سوال کرنا شروع ہو جائیں ...... کہ بتاؤ جامع مسجد کہاں ہے؟ ...... وہ کہے گا کہ فلاں مسجد شوکت روڈ پر واقع ہے ...... تو ان میں سے ایک اعتراض کر دے گا ...... کہ نہیں یہ صحیح نہیں بتا رہا ...... بلکہ جامع مسجد تو ظفر علی روڈ پر واقع ہے ...... پھر پوچھیں گے اچھا اگر تم ممبئی گے ہو تو بتاؤ کہ تاج محل ہوٹل کہاں واقع ہے؟

یعنی جب کسی کے سامنے اس چیز کا ذکر کیا جائے جس کو وہ جانتے ہیں تو پھر وہ یقیناً صرف اس کے متعلق سوالات کریں گے ...... اور اگر ایسی جگہ کا ذکر کرے کہ جس کو کوئی نہیں جانتا تو پھر سوال کیسے کیا جا سکتا ہے؟

جیسے کہ میں نے سیر کرنے والے کے متعلق جرمن کی مثال عرض کی کہ جرمن میں کوئی ان قریب رہنے والوں میں سے گیا ہی نہیں وہ کیا جانیں کہ ...... کہاں کی سیر کر کے آیا ہے۔

قربان جاؤں

عالم الغیب کی شان والے رب کی حکمتوں پر کہ جب اپنے محبوب ﷺ کے سفر معراج کا ذکر فرمایا تو صرف

مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَی الْمَسْجِدِ الْاَقْصٰی

صرف اس لئے بیان فرمایا ہے کہ اگر میرا محبوب یہ بتائے کہ میں لامکاں تک گیا ہوں ...... میں سات آسمانوں سے پار گیا ہوں تو ان میں سے کسی نے دیکھا ہی نہیں ان کو بتانا کیسا؟

تو اللہ تعالیٰ نے صرف اس لئے "مسجد حرام سے مسجد اقصیٰ تک کے سفر معراج کا ذکر فرمایا اس لئے کہ کفار مکہ نے مسجد حرام کو بھی دیکھا ہوا تھا...... اور مسجد اقصیٰ کو بھی دیکھا ہوا تھا جب آقا ﷺ نے اپنے معراج کا ذکر کیا تو وہ لوگ کہنے لگے اچھا بتاؤ کہ مسجد اقصیٰ کے دروازے کتنے ہیں؟ اچھا بتاؤ کہ مسجد اقصیٰ کے ستون کتنے ہیں؟

یعنی انہوں نے صرف وہاں تک کا سوال کیا جہاں تک وہ دیکھ چکے تھے...... تو مسجد حرام سے مسجد اقصیٰ تک قرآن کا بیان کرنے کا مطلب یہ نہیں ہے کہ معراج مصطفیٰ ﷺ صرف اتنا ہی ہے...... بلکہ اس لئے ذکر کیا کہ یہ معراج مصطفیٰ ﷺ کی انتہا نہیں...... بلکہ کفار مکہ کی معلومات کی حد تھی...... اس لئے فرمایا:

مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَی الْمَسْجِدِ الْاَقْصٰی
مسجد حرام سے لیکر مسجد اقصیٰ تک

## میرے نبی کو معراج بھی نازکیساتھ ہوا:

دیکھئے محبوب ﷺ کی معراج پاک کا معاملہ بھی عجیب ہے بلکہ عجیب تر ہے...... کہ راتوں کو قیام میں گزارنے والے محبوب ﷺ کو جب معراج کروایا گیا تو اس دن محبوب ﷺ کو سلا دیا گیا...... اس کی حکمت کیا تھی؟

محبوب ﷺ کو شب معراج سلا دینے میں حکمت یہ تھی ...... کہ جو خود طالب ہوتا ہے وہ سوتا نہیں ہے...... محبوب ﷺ کو معراج کی شب اس لئے سلا دیا کہ زمانے کو پتہ چل جائے کہ محبوب ﷺ آج طالب نہیں ہیں بلکہ مطلوب ہیں اور جبرئیل علیہ السلام آج کی رات طالب کا پیغام لیکر

خود چوکھٹ پر حاضر ہو رہے ہیں ...... اور محبوب ﷺ خود مطلوب بن کر سو رہے ہیں

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

ارے میرے نبی ﷺ کو تو معراج بھی ناز کے ساتھ ہوا تھا...... آج محبوب ﷺ سو رہے ہیں...... اور جبرئیل علیہ السلام کو کہا جا رہا ہے ...... کہ جاؤ جبرئیل......تم محبوب ﷺ کو جگاؤ......میں کہتا ہوں......کہ ارے

اس کریم کو جبرئیل علیہ السلام کیا جگائیں گے کہ جو خود انسانیت کو جگانے آیا ہو؟

اگر کہا جائے کہ جاؤ جبرئیل محبوب ﷺ کو بیدار کرو......تو ارے اس کریم کو جبرئیل علیہ السلام کیا بیدار کریں گے کہ جو غافل ہی نہیں ہیں؟

## 2- نکتہ:

اب یہاں ایک بات تو طے شدہ ہے کہ جب کوئی کسی کو لینے آئے گا تو وہاں ہی آئے گا...... جہاں وہ جانے والا تشریف فرما ہوگا میرے رسول ﷺ فرماتے ہیں......کہ میں ام ہانی رضی اللہ عنہا کے گھر موجود تھا

اب دوسری بات یہ ہے کہ جب کوئی کسی کو لینے آئے......تو ظاہر ہے آکر وہ آواز دے گا...... جب اگلا بندہ متوجہ ہوگا تو پھر اپنا مقصد و مقصود بیان کیا جائے گا......لیکن ادھر معاملہ تھوڑا مختلف ہے......ادھر جبرئیل علیہ السلام نبی پاک ﷺ بے مثال ہستی کو لینے آیا ہے......

وہ ہستی......سید الانبیاء ﷺ ہیں

اور جو لینے آیا ہے ......وہ سید الملائکہ ہیں

جس کو لینے آیا ہے ......وہ ہستی بھی سردار ہے

اور جو لینے آیا ہے .....وہ ہستی بھی سردار ہے

اب دیکھنا ہے کہ ان دونوں میں بڑا سردار کون ہے؟

تو وہ جبرئیل علیہ السلام نے اپنے آنے کے انداز سے ہی ثابت کر دیا کہ بڑا سردار کون ہے؟

دیکھئے...... بخاری شریف میں ایک حدیث پاک میں سرکار ﷺ فرماتے ہیں:

فُرِجَ عَنْ سَقْفِ بَيْتِي وَأَنَا بِمَكَّةَ فَنَزَلَ جِبْرِيْلُ

میں مکہ میں تھا میرے گھر کی چھت کو چیر کر جبرئیل آئے

تو جبرئیل علیہ السلام نے آ کر جب محبوب ﷺ کو آرام فرماتے ہوئے دیکھا ...... تو آواز نہیں دی...... دروازہ نہیں کھٹکھٹایا...... بلکہ چھت سے جبرئیل علیہ السلام حاضر خدمت ہوئے...... آخر اس میں بھی تو کوئی حکمت ہوگی؟

اور آؤ سنو:

وہ حکمت یہ تھی کہ جبرئیل علیہ السلام نے اپنے اس عمل سے یہ ثابت کر دیا کہ جس ہستی کو میں سید الملائکہ، فرشتوں کا سردار لینے آیا ہوں...... یہ ہستی مجھ سے بھی بڑی سردار ہے...... بلکہ یہ تو میری بھی سردار ذات ہے...... اس لئے آواز نہیں دی چھت کے ذریعے سے حاضر خدمت ہو کر قدمین مبارک پر لب رکھ کر یہ ثابت کیا کہ میری انتہا جہاں پر ہوتی ہے...... سید الانبیاء ﷺ کی ذات کی یہاں سے ابتدا ہوتی ہے

اور دوسری اس کے اندر یہ حکمت بھی تھی...... کہ زمانے بھر کو معلوم ہو جائے کہ میں معصوم ہو کر...... "سید الملائکہ" ہو کر اس بارگاہ کا اتنا بڑا خادم

ہوں......اس لئے کہ میں ان جیسا نہیں ہوں......اور اب بتایئے کہ جس ہستی کی مثل "سید الملائکہ" بھی نہیں ہیں......کوئی عام مولوی اس ذات کی مثل ہونے کا دعویٰ کیسے کر سکتا ہے؟

اور پھر ایک بات "تفسیر روح البیان" میں علامہ اسماعیل حقی رحمۃ اللہ علیہ نے بھی بیان کی ہے......میرا دل تو چاہ رہا ہے کہ وہ بات بھی آپ کو سنا جاؤں!

وہ روایت نقل فرماتے ہیں

کہ جبرئیل علیہ السلام تمام فرشتوں کی ایک بڑی جماعت کیساتھ حاضر خدمت ہوئے اور آ کر اپنے پروں سے آقا ﷺ کو جگایا......دیکھئے یہاں بھی یہ بات ثابت کی جا رہی ہے......کہ سید الملائکہ کون ہے......اور سید الانبیاء ﷺ کا مقام کیا ہے؟

یعنی جبرئیل علیہ السلام نے اپنے پروں سے ہوا دیکر والی کائنات ﷺ کو جگایا ہے تا کہ زمانے بھر کو معلوم ہو جائے......کہ:

جو سردار ہوتا ہے
جو حاکم ہوتا ہے
جو سلطان ہوتا ہے

وہ جب آرام کرتا ہے تو دربان اس کو ہوا دیکر ثابت کرتا ہے......کہ:

یہ میرا آقا ہے......میں اس کا غلام ہوں
یہ میرا مولیٰ ہے......میں اس کا خادم ہوں
یہ میرا سرداز ہے......میں اس کا نوکر ہوں
یہ میرا سلطان ہے......میں اس کا دربان ہوں

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ صلی اللہ علیہ وسلم

## اَسْرٰی کس سیر کو کہتے ہیں؟

عزیزانِ گرامی

قرآن پاک پڑھیئے...... اور سورہ بنی اسرائیل کی جو آیت مقدسہ آج میں نے تلاوت کی ہے...... اس کی حکمتوں پر غور کیجئے...... وہ ایسے کہ معراج تو دوسرے نبیوں کو بھی اللہ تعالیٰ نے کروائی ہے...... لیکن قرآن کی اَلْحَمْدُ سے لیکر والناس کی ''س'' تک کوئی مجھے کسی دوسرے نبی کی معراج کیلئے 'اَسْرٰی' کا لفظ نکال کر دکھائے...... نہیں یہ صرف آپکو محمد مصطفیٰ ﷺ کی معراج کیلئے ہی ملے گا!

وہ اس لئے کہ اللہ تعالیٰ نے اپنے حبیب ﷺ کی بے مثال معراج کیلئے اَسْرٰی کا لفظ بیان کیا تاکہ لوگوں کو پتہ چل جائے...... کہ:

تمام انبیاء کرام علیہم السلام جس رسول کی معراج میں ہم مثل نہیں ہیں
اس کی ذات میں کوئی ہم مثل کیسے ہوسکتا ہے؟

### 3- نکتہ:

لفظ اَسْرٰی بھی دعوت فکر دے رہا ہے...... تاکہ یہ بات سب کے ذہن نشین ہوجائے...... اور عقیدے درست ہوجائیں کہ اَسْرٰی حالت بیداری کی سیر کو کہا جاتا ہے...... خواب کیلئے استعمال نہیں ہوتا! ہاں!

امام قرطبی نے تفسیر قرطبی میں اس آیت مقدسہ کا ترجمہ کرتے ہوئے...... یہ نکتہ بیان فرمایا ہے...... کہ:

وَلَا یُقَالُ فِی النَّوْمِ اَسْرٰی

حالت خواب کی سیر کو اسریٰ نہیں کہا جاتا...... کہ لفظ اسریٰ ہی محبوب ﷺ کی بیداری اور جسمانی معراج کی دلیل ہے...... اور دوسری اس لفظ ''اَسْرٰی'' کے اندر ایک اور حکمت بھی ہے کہ ''ہم نے سیر کروائی...... یعنی اللہ فرمارہا ہے کہ ہم لے گے...... میں لے گیا اپنے بندۂ خاص کو...... آؤ اب ذرا دوسرے انبیاء کرام علیہم السلام کی معراج کی طرف بھی قرآن کی آیات سے آشنائی لے لو!

حضرت موسیٰ علیہ السلام کو معراج ہوا کوہ طور پر...... تو اللہ تعالیٰ نے اپنے کلیم علیہ السلام کی معراج کا ذکر قرآن میں ان الفاظ میں فرماتا ہے

وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰی لِمِيْقَاتِنَا

اور جب موسیٰ ہمارے وعدے پر حاضر ہوئے

یعنی غور کا مقام ہے...... کہ معراج موسیٰ علیہ السلام کو ہو رہی ہے...... لیکن موسیٰ علیہ السلام مقررہ وقت پر...... مقررہ جگہ پر خود تشریف لیجارہے ہیں

یعنی موسیٰ علیہ السلام اکیلے جارہے ہیں...... جبرئیل ساتھ نہیں ہیں...... فرشتوں کا پروٹوکول ساتھ نہیں ہے! مثال پر غور کرنا

قرآن کے اندر ایک اور مقام پر ایک اور نبی کی معراج کا ذکر بھی ہوا حضرت سیدنا ابراہیم علیہ السلام کی معراج کا ذکر بھی قرآن پاک میں ہوا ہے:

قرآن کہہ رہا ہے:

وَقَالَ اِنِّیْ ذَاهِبٌ اِلٰی رَبِّیْ سَيَهْدِيْنِ

اور کہا میں اپنے رب کی طرف جانے والا ہوں اب وہ مجھے راہ دے گا

سیدنا ابراہیم علیہ السلام بھی خود اپنے جانے کا ذکر فرما رہے ہیں...... لیکن قربان جاؤں! محمد مصطفیٰ ﷺ آپ کی عزت و عظمت پر کہ سب انبیاء کرام اپنے رب کے حضور خود حاضر ہوں...... مقررہ جگہ پر، مقررہ وقت پر معراج کیلئے حاضر ہو رہے ہیں...... لیکن جب میرے رسول ﷺ کی معراج کی باری آئی...... تو وحدہٗ لاشریک خود فرما رہا ہے

سُبْحٰنَ الَّذِیْٓ اَسْرٰی بِعَبْدِہٖ

پاک ہے وہ ذات جس نے سیر کروائی اپنے بندۂ خاص کو

ادھر دوسری طرف جانے والے خود جا رہے ہیں...... لیکن میرے رسول ﷺ کی یہ عظمت اور بے مثلیت والی شان ہے...... کہ اللہ میرے نبی ﷺ کو خود سیر پر لے جا رہا ہے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم

ارے کبھی تو کوئی کہہ رہا ہے:

رَبِّ اَرِنِیْ

اے میرے رب میں تجھے دیکھنا چاہتا ہوں

اور آگے سے پروردگار کا جواب آتا ہے

لَنْ تَرٰنِیْ ...... تو مجھے ہرگز نہیں دیکھ سکے گا

ارے میں نے ابھی کہا تھا کہ آج ملاں میرے نبی ﷺ کی مثلیت کا دعویٰ کر رہا ہے...... میرا کہنا ہے کہ تم کیا ہو؟ مجھے نبیوں اور رسولوں میں کوئی اس کی شان کا دکھا دو؟

قرآن کہہ رہا ہے کہ کبھی کوئی نبی خود دیکھنے کی خواہش کرتا ہے تو جواب ''

لَنْ تَرَانِیْ ‘‘ کی صورت میں نازل ہوتا ہے...... اور میرے نبی ﷺ کو خود لامکاں پر بلوا کر

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰی فَکَانَ قَابَ قَوْسَیْنِ اَوْاَدْنٰی

فرمایا جارہا ہے...... پھر ماننا پڑے گا...... کہ بریلی کی سرزمین پر بیٹھ کر ’’احمد رضا‘‘ نے قرآنی بیانات کی تفسیر کردی ہے اور اچھے عقیدے کی تکمیل قرآن کی روشنی میں ایسے کردی ہے...... کہ:

تبارک اللہ شان تیری تجھی کو زیبا ہے بے نیازی
کہیں تو وہ جوش لن ترانی کہیں تقاضے وصال کے تھے

سُبْحٰنَ الَّذِیْ اَسْرٰی بِعَبْدِہٖ لَیْلاً مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَی الْمَسْجِدِ الْاَقْصٰی

## لِنُرِیَہٗ مِنْ اٰیٰتِنَا کی حکمتیں:

عزیزان گرامی!

اللہ تعالیٰ نے جب قرآن کی سورۂ بنی اسرائیل کی ابتدا میں معراج مصطفیٰ ﷺ کا ذکر پاک فرمایا تو...... اس مختصر سی آیت مقدسہ میں لاتعداد حکمتوں کو یکجا کردیا...... جب آپ اس ایک آیت مقدسہ کے ایک ایک گوشے...... ایک ایک حصے...... ایک ایک پہلو

کو باریک بینی سے مطالعہ کرو گے تو ایک ایک حرف سے حسن مطلب کی خوشبو آئے گی...... میرے رسول ﷺ کی بے مثلیت کی ایک ایک انوکھی دلیل آپکو میسر آئے گی۔

## 4- نکتہ!

اللہ تعالیٰ نے اس آیت معراج میں محبوب ﷺ کے مسجد حرام سے لیکر مسجد

اقصیٰ تک کے سفر کا ذکر فرما کر اس معراج مصطفیٰ ﷺ کا ایک معتبر مقصد بیان فرمایا...... قرآن میں ارشاد ہوا

لِنُرِیَہٗ مِنْ اٰیٰتِنَا

تا کہ ہم اسے اپنی نشانیاں دکھائیں

ہاں! ایسی نشانیاں کہ جو پہلوں میں سے بھی کسی نے نہ دیکھی ہوں اور نہ بعد والوں میں سے کسی کے لئے ان نشانیوں کا تصور کیا جا سکے...... اور لطف کی بات یہ ہے کہ اس میں بھی میرے رسول ﷺ کی بے مثیلت ظاہر ہو رہی ہے...... نبی پاک ﷺ کی کمال عظمت کے پھول کھل رہے ہیں اور یہاں ایک جو عظیم نکتہ مجھے آپ کے سامنے پیش کرنا ہے وہ یہ...... کہ اللہ تعالیٰ نے اس زمین و آسمان میں موجود نشانیاں تو پہلے انبیاء کرام علیہم السلام کو بھی دکھائی ہیں...... آیئے قرآن کی آیت پیش کی جاتی ہے...... اللہ تعالیٰ ارشاد فرماتا ہے

وَكَذٰلِكَ نُرِیْٓ اِبْرٰهِیْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

اور ہم نے ابراہیم کو زمین و آسمان کی بادشاہی دکھا دی

یعنی حضرت ابراہیم علیہ السلام نے زمین و آسمان کی نشانیان دیکھی ہیں...... اللہ کا ملکوت دیکھا ہے...... جب اس ملکوت کا ذکر اللہ نے فرمایا تو واضح لفظوں کے ساتھ بیان فرمایا...... کہ

نُرِیْٓ اِبْرٰهِیْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

ہم نے ابراہیم کو دکھائی زمین و آسمان کی بادشاہی

یعنی اس آیت مقدسہ سے یہ بات ثابت ہوئی...... کہ سیدنا ابراہیم علیہ السلام کو

اللہ تعالیٰ نے زمین و آسمان کی بادشاہی دیکھائی...... زمین و آسمان کی نشانیاں دیکھائیں ...... لیکن قربان اے محمد مصطفیٰ ﷺ آپ کی بے مثلیت پر کہ جب ابراہیم علیہ السلام دیکھیں تو وہ زمین و آسمان کی نشانیاں دیکھیں اور محمد مصطفیٰ ﷺ کی باری آئی تو خالق فرماتا ہے

لِنُرِيَهٗ مِنْ اٰيٰتِنَا

تاکہ ہم انہیں اپنی نشانیاں دیکھائیں

ابراہیم علیہ السلام مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ دیکھیں

اور حبیب اللہ ﷺ لِنُرِيَهٗ مِنْ اٰيٰتِنَا دیکھیں

یعنی میرے حبیب ﷺ نے اللہ کی ذات کی نشانیاں دیکھیں ہیں ارے غور تو کرو...... ارض و سماوات کی نشانیاں اور ہوتی ہیں...... خالق کی ذات کی نشانیاں اور ہوتی ہیں

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

امام فخر الدین رحمۃ اللہ علیہ نے اس مقام پر بڑی ایک لطیف بات کی ہے وہ فرماتے ہیں:

وَالَّذِیْ رَاٰهُ اِبْرَاهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

ابراہیم علیہ السلام وہ ہیں کہ جنہوں نے زمین و آسمان کی بادشاہی دیکھی......

لیکن

وَالَّذِیْ رَاٰهُ مُحَمَّدٌ ﷺ بَعْضَ آيَاتِ اللّٰهِ تَعَالٰى وَلَاشَكَّ اَنَّ آيَاتِ اللّٰهِ اَفْضَلُ

اور جن کو محمد مصطفیٰ ﷺ نے دیکھا وہ اللہ کی نشانیاں تھیں اور اس میں کوئی

شک نہیں کہ اللہ کی نشانیاں (مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ) سے افضل ہیں

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰه
وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰه

یعنی...... جب میرے رسول نے خدا کو ہی دیکھ لیا تو پھر اس کی ذات کی نشانیاں دیکھنا تو کوئی عجب نہیں!

ابراہیم علیہ السلام نے مخلوق کو دیکھا ...... محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم نے خالق کو دیکھا
ابراہیم علیہ السلام نے ملکوت کو دیکھا ...... محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم نے مالک کو دیکھا
ابراہیم علیہ السلام نے ارض وسما کو دیکھا ...... محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم نے خدا کو دیکھا

ارے......:

ملکوت کو دیکھنا اور ہوتا ہے
حسنِ ذات کو دیکھنا اور ہوتا ہے

## ساری بھلائی اللہ کے ہاتھ میں ہے:

عزیزانِ گرامی!

جو رب سبحان ہے...... منان ہے...... وہی دن کے سویرے کو رات کے اندھیرے سے جدا کر رہا ہے...... وہی رب ایک منظم طریقے سے نظام کائنات کو چلا رہا ہے...... وہی رب مردہ سے زندہ کو نکالتا ہے اور زندہ سے مردہ کو نکالتا ہے...... اس میں شک نہیں...... کہ اس کا کوئی شریک نہیں......

حکمرانیاں اس کے ہاتھ میں
حکمتیں اس کے ہاتھ میں
عالم اس کے ہاتھ میں

نظام اس کے ہاتھ میں
تمام مخلوقات اس کے ہاتھ میں
جنات اس کے ہاتھ میں
انسان اس کے ہاتھ میں

قرآن کی ایک آیت مقدسہ میں اللہ تعالیٰ نے فرمایا:

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِی الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ط بِیَدِكَ الْخَیْرُ ط اِنَّكَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

یوں عرض کرے اللہ ملک کے مالک تو جسے چاہے سلطنت دے اور جس سے چاہے سلطنت چھین لے اور جسے چاہے عزت دے اور جسے چاہے ذلت دے ساری بھلائی تیرے ہی ہاتھ ہے بے شک تو سب کچھ کرسکتا ہے

## 5- نکتہ!

قرآن کی یہ آیت مقدسہ آپ سب حضرات نے سنی ہوگی...... اور آپ میں سے بہت سارے تو اس کا وظیفہ بھی کرتے ہوں گے...... لیکن میں نے اس آیت مقدسہ سے ایک نکتہ آپ کو دینا ہے...... اللہ تعالیٰ نے جہاں اپنی بادشاہی اور قدرت کاملہ کا ذکر فرمایا...... وہاں اس آیت مقدسہ میں فرمایا بِیَدِكَ الْخَیْرُ ساری خیر اللہ کے ہاتھ میں ہے

اب دیکھنا یہ ہے کہ قرآن سے ثابت ہوگیا...... کہ:

حکمت اس کے ہاتھ میں ہے
بادشاہی اس کے ہاتھ میں ہے
علم اس کے ہاتھ میں ہے

قدرت اس کے ہاتھ میں ہے
بزرگی اس کے ہاتھ میں ہے
عزت اس کے ہاتھ میں ہے
عظمت اس کے ہاتھ میں ہے
حکومت اس کے ہاتھ میں ہے

چلو یہاں پر علم غیب کو ہی لے لیتے ہیں...... کہ علم غیب تمام کا تمام اس کے ہاتھ میں ہے...... اس کے اختیار میں ہے...... اس کے قبضے میں ہے

بس میں نے یہاں ایک جملہ کہنا ہے خدا کے لئے سنبھال لینا...... کہ یہ بات قرآن سے ثابت ہو گئی...... کہ ساری بھلائی...... ساری خیر...... اللہ کے ہاتھ میں ہے

اب جہاں اس کا ہاتھ ہوگا...... وہاں علم غیب ہوگا
جہاں اس کا ہاتھ ہوگا...... وہاں بادشاہی ہوگی
جہاں اس کا ہاتھ ہوگا...... وہاں حکمرانی ہو گی
جہاں اس کا ہاتھ ہوگا...... وہاں حکمت ہوگی
جہاں اس کا ہاتھ ہوگا...... وہاں اختیار ہوگا
جہاں اس کا ہاتھ ہوگا...... وہاں عزت ہو گی
جہاں اس کا ہاتھ ہوگا...... وہاں عظمت ہو گی

قربان جاؤں! ابھی ہم بِیَدِکَ الْخَیْرُ کی حکمتوں کے بارے میں سوچ ہی رہے تھے کہ مدینے والے نے بتا دیا کہ معراج کی شب اللہ کا ہاتھ کہاں تھا

میرے رسول ﷺ جب شب معراج لامکاں کی خلوتوں میں پہنچے......

جب میرے نبی ﷺ معراج کی رات لامکاں والے کی جلوتوں میں پہنچے......تو فرماتے ہیں

فَرَاَیْتُہٗ عزوجل وضعَ کَفَّہٗ بَیْنَ کَتِفَیَّ

میں نے رب کو دیکھا اور اس نے اپنا دستِ قدرت میرے کندھوں کے درمیان رکھ دیا

ارے اسی بات کو مان لو کہ تمام کا تمام غیب اللہ کے ہاتھ میں ہے......اور پھر دیکھو کہ اللہ کا ہاتھ میرے نبی کے کندھوں کے درمیان ہے......اور میرے نبی ﷺ فرما رہے ہیں

فَعَلِمْتُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ

میں نے جان لیا جو کچھ زمین میں ہے جو کچھ آسمانوں میں ہے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

اب کوئی بھی نہیں کہہ سکتا کہ اللہ کا ہاتھ ایسا ہے......

اس لئے کہ وہ مثل سے پاک
اس لئے کہ وہ مثال سے پاک
اس لئے کہ وہ حدود قیود سے پاک
اس لئے کہ وہ جسم و جسمانیات سے پاک

لیکن سرکار ﷺ فرما رہے ہیں ...... اللہ نے اپنا دست قدرت اپنی شان کے لائق میرے کندھوں کے درمیان رکھ دیا...... تو میں سوال کرتا ہوں کہ آئے کوئی یہاں اللہ کے ہاتھ کی وسعتیں بتائے؟ ارے جس کے ہاتھ کی وسعت سمجھ میں نہیں آسکتی......تو جس ذات پر اللہ نے

اپنا دستِ قدرت رکھا ہے ...... تو اس ذات کی رفعت سمجھ میں کیسے آ سکتی ہے؟

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## یا شاہِ اُمم ...... کون کرے تیری برابری

میرے رسول ﷺ جب جبرئیل علیہ السلام کے ساتھ ...... اور بے شمار نوری فرشتوں کے ساتھ ...... بصورت بارات ...... آسمان کی تمام تعداد کو پورا کر کے ...... آگے بڑھے تو ایک مقام آ گیا ...... ارے وہ کیسا مقام آیا ...... کہ جس مقام پر جا کر یہ فیصلہ ہونے والا ہے ...... کہ میرے رسول ﷺ کی مثل کوئی نہیں ہے ...... ارے خاکی تو کوئی میرے رسول ﷺ کے ساتھ تھا ہی نہیں ...... بلکہ وہ تو تمام کے تمام نوری تھے ...... لیکن ایک مقام آیا کہ اس مقام پر نوریوں کی انتہا ہو گئی ...... وہ مقام سدرۃ المنتہیٰ کا مقام تھا ...... وہ مقام کہ عالم سفلی سے عالم بالا کی طرف جانے والی ہر چیز جس مقام پر رک جائے ...... وہ مقام ہے ''سدرۃ المنتہیٰ'' غور کرنا ...... کہ وہ مقام جہاں عالم سفلی سے عالم بالا کی طرف جانے والی ہر چیز رک جائے ...... تو میرے نبی ﷺ تو کسی عالم کی طرف نہیں جا رہے ...... ارے وہ تو لامکاں کی طرف جا رہے ہیں ...... اور سدرۃ المنتہیٰ تک تو مکان تھا ...... لیکن اس سے بھی آگے صرف میرے رسول ﷺ تشریف لے گئے ...... ارے نور و بشر کی بحث میں وقت خرچ کرنے والو وہ رسول ﷺ تو لامکاں تک جا چکے ہیں ...... اب ہے کوئی پیمانہ جو لامکاں کی حقیقت کو بیان کر سکے ......؟ ارے تمہیں تو لامکاں کی حقیقت سمجھ نہیں آ سکی ...... تو لامکاں کے مکیں کی

حقیقت کیا بتاؤ گے؟

سیاحِ لامکاں کی ذات کی حقیقت کیا بتاؤ گے

آؤ میں تمہیں مزید بتاؤں کہ سدرۃ المنتہیٰ وہ مقام ہے...... کہ:

لِاَنَّ جِبْرِیْلَ رَسُوْلُ الْمَلٰئِکَۃِ اِذْلَمْ یَتَجَاوَزْھَا

اس لئے کہ جب جبرئیل علیہ السلام فرشتوں کا رسول ہونے کے باوجود بھی اس جگہ سے آگے نہ جا سکا تو پھر اور کسی کی کیا مجال ہے کہ وہاں سے آگے گزر جائے؟

ارے وہاں سے صرف ایک ہی ذات گزرتی ہے...... اور وہ ذات...... ذاتِ خدا کا نور...... ذاتِ محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم ہے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ صلی اللہ علیہ وسلم

## غیب ذات بھی میرے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کے سامنے

عزیزانِ گرامی!

مقام ''سدرہ'' ایسا مقام کہ جہاں کا مکین جبرئیل امین علیہ السلام ہے...... اور اس مقام پر جا کر جبرئیل بھی رک گئے ارے جبرئیل علیہ السلام کیوں رک گئے...... سوچنے کی بات ہے؟

جب جبرئیل علیہ السلام مقام سدرہ پر رک گئے...... تو پھر میرے نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے جبرئیل سے پوچھا کہ جبرئیل علیہ السلام کیا تم آگے نہیں چلو گے؟ تو جبرئیل علیہ السلام عرض کرتے ہیں...... اے شان والے میرا مقام یہی ہے...... یعنی میری حد یہیں ہے...... میں اس سے آگے نہیں بڑھ سکتا اور آپ کو روک بھی نہیں سکتا...... میں آگے اس لئے نہیں بڑھوں گا کہ میں آپ جیسا نہیں

ہوں...... اور آپ ﷺ کو نہیں روکوں گا...... اس لئے کہ آپ ﷺ میرے جیسے نہیں ہو...... ارے دیکھو تو جو نور سے بنا ہے سید الملائکہ ہے...... نوریوں کا سردار ہے...... وہ تو سدرہ پر رکا ہوا ہے...... اور جو نبیوں کا سردار ہے وہ آگے گزر رہے ہیں...... (سبحان اللہ)

### 6- نکتہ:

اب میرے رسول ﷺ سدرہ سے آگے بڑھے ہیں...... سفر جاری ہے...... ادھر

اِدھر کریم کی ذات ہے......اُدھر کریم کی ذات ہے
اِدھر خلیل کی ذات ہے......اُدھر جلیل کی ذات ہے
اِدھر شاہد کی ذات ہے......اُدھر واحد کی ذات ہے
اِدھر بشیر کی ذات ہے......اُدھر بصیر کی ذات ہے
اِدھر بھی لاجواب ہے......اُدھر بھی لاجواب ہے
اِدھر بھی بے مثال ہے......اُدھر بھی بے مثال ہے
اِدھر بھی بے نظیر ذات ہے......اُدھر بھی بے نظیر ذات ہے
اِدھر حبیب ذات ہے......اُدھر مجیب ذات ہے
اِدھر محبوب ذات ہے......اُدھر محب ذات ہے
اِدھر مطلوب ذات ہے...... اُدھر طالب ذات ہے
اِدھر بندہ بے مثال ہے......اُدھر مولیٰ بے مثال ہے
اِدھر مخلوق لاجواب ہے......اُدھر خالق لاجواب ہے
اِدھر بھی رحیم ذات ہے......اُدھر بھی رحیم ذات ہے

ادھر مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ کی ذات ہے ...... اُدھر لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ کی ذات ہے

اب دنیا کا قانون ہے...... محبت کا ایک اصول ہے...... مہمان نوازی کا ایک سلیقہ ہے...... بندہ نوازی کا ایک قرینہ ہے...... کہ جب کوئی کسی کے پاس آتا ہے...... تو اگر آنے والا مہمان بڑا ہی مکرم ہو...... بڑا ہی صاحب عزت ہو...... تو میزبان اس کا استقبال کرتا ہے...... اس کو ملتا ہے اس کے قریب ہوتا ہے......

لیکن ہمیں تو مولویوں نے نور و بشر کی بحث میں پھنسا دیا...... اگر ہم اس بے مثال مہمان کا بے مثال میزبان کے ہاں جانا سمجھ جاتے تو یقیناً ہر کوئی خاموش ہو جاتا...... زبان کھولنے کی جرات کسی کو نہ ہوتی...... بحث چھیڑنے کی جسارت کوئی بھی نہ کرتا...... دیکھئے جب میرا رسول اپنے رب کے قرب خاص میں پہنچا...... جب میرا نبی اللہ کی رحمت خاص میں پہنچا...... تو یہ لفظ آج بھی بخاری کے سینے پر چمک رہے ہیں...... کہ

حَتّٰی جَآءَ سِدْرَۃَ الْمُنْتَھٰی وَدَنَا الْجَبَّارُ رَبُّ الْعِزَّۃِ فَتَدَلّٰی حَتّٰی کَانَ مِنْہُ قَابَ قَوْسَیْنِ اَوْ اَدْنٰی

یہاں تک کہ محبوب ﷺ سدرۃ المنتہٰی پر پہنچے...... جب رب العزت آپ کے قریب ہوا حتیٰ...... کہ وہ آپ سے دو کمانوں کے فاصلے کی مقدار رہ گیا

.قربان جاؤں! اے نبی ﷺ آپ کی عظمت و شان کی رفعتوں پر کہ میرا نبی رب کے قریب ہوا...... ادھر:

وَدَنَا الْجَبَّارُ رَبُّ الْعِزَّۃِ فَتَدَلّٰی

ادھر محبوب قریب ہوا...... ادھر محبت قریب ہوا

ادھر مطلوب قریب ہوا...... ادھر طالب قریب ہوا

ادھر مہمان قریب ہوا ......ادھر میزبان قریب ہوا
ادھر غیب دان قریب ہوا ......ادھر رحمٰن قریب ہوا
اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

ارے نکتہ سمجھو! کہ معراج تو سیدنا موسیٰ علیہ السلام کو بھی ہوا تھا......لیکن موسیٰ علیہ السلام کیلیے یہ قرب کیوں نہیں ہوا؟

تو جواب لو! کہ موسیٰ علیہ السلام صرف کلیم اللہ تھے......صرف نبی اللہ تھے...... صرف رسول اللہ تھے......لیکن میرے کریم کے لئے یہ قربِ خاص کی جلوتیں اس لئے ظاہر فرمائی ہیں......کہ:

یہ صرف نبی اللہ نہیں ہیں
یہ صرف رسول اللہ نہیں ہیں
یہ صرف حبیب اللہ نہیں ہیں
بلکہ! نور اللہ بھی تو ہیں
قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِیْنٌ ۝
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰه
وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰه

## 7- نکتہ!

اس مقام پر میں ایک اور نکتہ پیش کرنا چاہتا ہوں......اس لئے کہ یہ عقیدے کی بات ہے اس کو بھی پیش کر دینا ضروری ہے......کہ آج "مسئلہ علم غیب" پر بھی بہت بحث کی جاتی ہے......اور کچھ لوگوں کو تو دیوار کے پیچھے سے بہت پیار ہے......وہ جب بھی بات کرتے ہیں......کہہ دیتے ہیں کہ بھئی تم نبی کو غیب دان کہتے

ہو نبی ﷺ کو تو دیوار کے پیچھے کا بھی علم نہیں ہے:

دیکھو:

دیوار کے پیچھے کو غیب کس نے بنایا؟...... اللہ نے
پہاڑ کے پیچھے کو غیب کس نے بنایا؟...... اللہ نے
آنے والے کل کو غیب کس نے بنایا؟...... اللہ نے
آنے والے وقت کو غیب کس نے بنایا؟...... اللہ نے

یعنی جس کو بھی غیب بنایا ہے...... اللہ تعالیٰ نے غیب بنایا ہے...... تو جب ہم اس سوچ میں پڑے تو مدینے والے نے تسلی دے دی کہ اے میرے غلاموں گھبراؤ نہیں جو سب کو غیب بنانے والا ہے...... وہ محمد مصطفیٰ ﷺ کے سامنے ہے

رَاَیْتُ رَبِّیْ فِیْ اَحْسَنِ صُوْرَۃٍ
میں نے اپنے رب کو اچھی صورت میں دیکھا ہے

کیا کہنے میرے رسول ﷺ کی شان کے ...... جو سب کو غیب بنانے والا ہے...... وہ خود جس ذات کے سامنے آ گیا پھر اس ذات سے کوئی غیب کیسے رہا...... جبکہ غیب بنانے والا خدا ہی غیب نہ رہا؟

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## 8- نکتہ!

ایک آخری نکتہ یہاں پر اور عرض کیے دیتا ہوں ...... کہ صحیح احادیث کی کتب میں یہ حدیث پاک موجود ہے ...... کہ اللہ تعالیٰ نے اپنا ''دست قدرت'' اپنے رسول کے کندھوں کے درمیان رکھ دیا...... تو سرکار ﷺ

فرماتے ہیں

فَعَلِمْتُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ

میں نے جان لیا جو کچھ آسمان میں اور زمین میں ہے

ارے میں سوال کرتا ہوں کہ جب ''دست قدرت'' کی برکت یہ تھی کہ نبی ﷺ نے زمین و آسمان کی ہر چیز کو جان لیا...... تو پھر جب اس بے مثال دست قدرت والی ذات کو دیکھ لیا تو پھر کونسا غیب نبی سے چھپا ہوگا؟

بلکہ قرآن کہتا ہے...... جب محبوب ﷺ اللہ تعالیٰ کے قرب خاص میں پہنچے تو......

فَاَوْحٰی اِلٰی عَبْدِہٖ مَا اَوْحٰی

وحی کی رب نے اپنے بندے کی طرف جو کی

ارے یہ آیت مقدسہ جو ایک غیب کی بات تھی...... رب نے اپنے محبوب ﷺ کے ساتھ کی بذریعہ وحی...... تو اب تم بتاؤ کہ وہ کیا بات تھی؟

ظاہر ہے وہ تم سب کیلئے غیب تھی...... اور اب بھی غیب ہے

لیکن قربان جاؤں...... غیب دان نبی ﷺ پر کہ وہ اس کلام کے غیب کو بھی جانتے ہیں...... وہ ذات کے غیب کو بھی جانتے ہیں...... اور ویسے ایک سوال ہے کہ غیب کا تعلق یا تو زمین کے ساتھ ہے...... یا پھر آسمان کے ساتھ ہے تو میرے نبی ﷺ تو فرما رہے ہیں کہ دست قدرت کی برکت سے:

فَعَلِمْتُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

میں نے جان لیا جو کچھ زمین میں ہے یا آسمان میں ہے

ارے غیب تو یا زمین میں ہے...... یا آسمان میں محفوظ ہے...... اور میرے

نبی تو زمین کے غیب کو بھی جان گے...... اور آسمان کے غیب کو بھی جان گے...... وہ کونسا غیب ہے جس پر تم بحث کر رہے ہو؟

ارے بریلی شریف کے شہر میں ایک مدرسے کی چٹائی پر بیٹھ کر ایک عاشق صادق نے خوب بات کر دی اور عشاق کے عقیدے کی ترجمانی بھی کر دی...... کہ:

اور کوئی غیب کیا تم سے نہاں ہو بھلا
جب نہ خدا ہی چھپا تم پہ کروڑوں درود

سُبْحٰنَ الَّذِیْٓ اَسْرٰی بِعَبْدِہٖ لَیْلاً مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَی الْمَسْجِدِ الْاَقْصٰی

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ

* * *

## موضوع ......سرکار ﷺ کی ذات "سراج منیر"

نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا وَمَنْ يَّهْدِيْهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا مَوْلَانَا وَحَبِيْبَنَا وَسِرَاجَنَا وَاَشْرَفَنَا وَسَيِّدَنَا مُحَمَّدٍ ﷺ

اَمَّا بَعْدُ!

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى فِى الْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ وَالْفُرْقَانِ الْحَمِيْدِ...... اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ○
صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلٰنَا الْعَظِيْمُ
اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ط
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ○

بارگاہ رسالت مآب ﷺ میں ہدیہ درود وسلام پیش کیجئے!

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

میں اکثر اس وقت میں میں تقریر نہیں کیا کرتا ...... اس کی ایک خاص وجہ ہے کہ میں رات کو سونے کا ایک عرصے سے عادی نہیں ہوں ...... ہمیشہ سے فجر کے بعد ہی سونا ہوتا ہے ...... کیوں کہ سونے کیلئے دو ہی لمبے وقت ہیں ...... ایک عشاء کی نماز کے بعد ...... اور دوسرا فجر کی نماز کے بعد ...... لیکن عشا کے بعد تو میں سوتا نہیں ہوں ...... اور آج فجر کے بعد پروگرام آ گیا ہے ...... یہ مہربانی ہے حاجی ابراہیم صاحب کی کہ انہوں نے مجھے آج فجر کے بعد بھی سونے نہیں دیا ...... خیر ہو سکتا ہے کہ کل کی فجر کے بعد سونا نصیب ہو جائے ...... تو خیر کل کا سونا نصیب کیلئے ہے ...... اور آج کا جاگنا حبیب ﷺ کیلئے ہے

## محبوب ﷺ روشن چراغ:

تو محترم حضرات آج میں نے اس محفل کی ابتدا میں جو آیت مقدسہ پڑھ کر خود کو تلاوت قرآن کی سعادت سے مشرف کیا ہے ...... وہ آیت مقدسہ ہے

وَدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ۝

اور بلانے والے ہیں اللہ کی طرف اور اس کے اذن سے روشن چراغ

تو پہلے آپ حضرات اس پوری آیت مقدسہ کو سمجھ لیجئے گا ...... اور پھر اس کے بعد جو مجھے سِرَاجًا مُّنِيْرًا پر کہنا ہے وہ سب ان شاء اللہ کہوں گا

پوری آیت مبارکہ ہے يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا
وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا

اے نبی ...... ہم نے آپ کو:

شاہد بنا کر بھیجا ہے
مبشر بنا کر بھیجا ہے
نذیر بنا کر بھیجا ہے
داعی بنا کر بھیجا ہے
سراج منیر بنا کر بھیجا ہے

لیکن سوچو تو یہ کون کہہ رہا ہے؟...... اللہ کہہ رہا ہے
کس سے کہہ رہا ہے؟...... نبی ﷺ سے کہہ رہا ہے

يَاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّا اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيرًا

اللہ نبی کو پکار رہا ہے کہ نہیں؟ یقیناً پکار رہا ہے اور یاد رہے کہ عربی میں پکارنے کیلئے پانچ لفظ ہیں...... مثلاً "یا" بھی پکارنے کیلئے ہے
اَیُّ...... بھی پکارنے کیلئے ہے

## 1 نکتہ!

اور یہاں پر پہلے میں ایک بات عرض کر دوں کہ ہمارے ہاں پکارنے کیلئے صرف ایک ہی لفظ بولا جاتا ہے...... اے ہاشمی...... اے مولانا...... اے قاری صاحب لیکن عربی میں پانچ لفظوں سے پکارا جاتا ہے...... اور ان میں سے دو لفظ تو بہت ہی مشہور و معروف ہیں...... ایک "یا" اور دوسرا اَیُّ

لفظ "یا" کیساتھ کسی کو پکارنا...... جیسے یا رسول اللہ ﷺ
یا علی...... یا غوث...... وغیرہ
اور دوسرا لفظ "اَیُّ" کیساتھ پکارنا...... جیسے نماز میں پکارتے ہیں

السَّلَامُ عَلَیْكَ اَیُّهَا النَّبِیُّ

لیکن کبھی تو لفظ ''یا'' کیساتھ پکارا جاتا ہے اور کبھی لفظ ''اَیُّ'' کیساتھ پکارا جاتا ہے

لیکن میں جو آیت مقدسہ تلاوت کر چکا ہوں اس میں لفظ ''یا'' بھی ہے اور لفظ ''اَیُّ'' بھی بولا گیا ہے...... جیسے

یٰاَیُّهَا النَّبِیُّ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِیْرًا

یعنی اللہ نے ایک حرف ندا سے نہیں...... بلکہ دو، دو حرف سے پکارا ہے......

میں سوچ میں پڑھ گیا کہ اے اللہ تو دو حرف ندا سے پکار رہا ہے...... اور مولوی اس کو شرک بتا رہا ہے

اور یہ بات بھی ہے کہ اللہ پر تو فتویٰ دے نہیں سکتا:

جس ریاست میں بھی جاؤ
جس قوم میں بھی جاؤ
جس ملک میں بھی جاؤ

آپ کو کوئی بھی ایسا نہیں ملے گا...... کہ جو اپنے مالک پر فتویٰ دے...... لیکن عجیب بات ہے کہ اللہ تو پکار رہا ہے...... اور مولوی فتویٰ دے رہا ہے...... اللہ کی رضا یہ ہے کہ کوئی جو بھی کہے کہتا رہے...... میں تو اپنے نبی ﷺ کو یٰاَیُّهَا الرَّسُوْلُ کہہ کر پکاروں گا

میں تو اپنے نبی ﷺ کو ...... یٰاَیُّهَا النَّبِیُّ کہہ کر پکاروں گا
میں تو اپنے نبی ﷺ کو ...... یٰاَیُّهَا الْمُزَّمِّلُ کہہ کر پکاروں گا
میں تو اپنے نبی ﷺ کو ...... یٰاَیُّهَا الْمُدَّثِّرُ کہہ کر پکاروں گا

میں تو اپنے نبی ﷺ کو ......یٰسین کہہ کر پکاروں گا

ارے......:

وہ رب ہو کر پکار رہا ہے ......یہ بندہ ہو کر نہیں پکار رہا
وہ اللہ ہو کر پکار رہا ہے ......یہ بندہ ہو کر نہیں پکار رہا
وہ خالق ہو کر پکار رہا ہے ......یہ مخلوق ہو کر نہیں پکار رہا
وہ اللہ اکبر ہو کر پکار رہا ہے ......یہ بشر ہو کر نہیں پکار رہا
وہ مسجود ہو کر پکار رہا ہے ......یہ ساجد ہو کر نہیں پکار رہا
وہ معبود ہو کر پکار رہا ہے ......یہ عابد ہو کر نہیں پکار رہا
ارے......وہ بے نیاز ہو کر پکار رہا ہے......یہ عاجز و مجبور ہو کر نہیں پکار رہا

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## یارسول اللہ کہنے پر اعتراض کیوں؟

میں ایک بات پوچھتا ہوں کہ تم یہ بتاؤ کہ کیا سب سے پہلے...... نبی ﷺ کو یا نبی ہم نے کہا ہے؟ کیا نبی ﷺ کو یا رسول سب سے پہلے ہم نے کہا ہے؟

نہیں......نہیں......جواب آئے گا کہ سب سے پہلے یا نبی اللہ......یا رسول اللہ......تو خود خدا نے کہا ہے......تو پھر اگر کسی کو فتویٰ لگانا ہے تو وہ اس پر لگائے کہ جو سب سے پہلے کہہ رہا ہے......ہم پر فتویٰ کیوں لگاتے ہو؟......ارے ہم تو کسی کی ادا کو ادا کر رہے ہیں......ہم تو کسی کے کہنے کو پکڑے ہوئے ہیں......ہم تو کسی کے طریقہ پر چل رہے ہیں......اس پر اعتراض کر کے تو دیکھو جس نے سب سے پہلے پکارا ہے؟

عزیزانِ گرامی!

ایک بات بتائیے کہ میرے رسول ﷺ کے پاس جو کچھ ہے وہ رسول ﷺ کو کس نے دیا ہے؟ جواب یہی ہے نہ کہ اللہ نے دیا ہے؟

تو یہ فیصلہ ہو گیا کہ رسول ﷺ نے نہ ہم سے کچھ لیا...... نہ تم سے کچھ لیا

نہ ان سے کچھ لیا...... نہ ان سے کچھ لیا

رسول ﷺ نے جو کچھ لیا...... اللہ سے لیا...... اور اللہ نے جو کچھ رسول ﷺ کو دیا خود دیا...... یعنی رسول ﷺ کے پاس جو کچھ ہے وہ اللہ کی عطا ہے ...... اور اگر تم نہ مانو تو یہ خطا ہے...... اور اگر پھر بھی کوئی اعتراض کرے تو اس کی جہنم سزا ہے۔

تو اس لئے میرے دوستو! یہ تو سمجھنے کی بات ہے...... اللہ دے رہا ہے...... رسول ﷺ لے رہے ہیں

رسالت اللہ نے دی ...... رسالت رسول ﷺ نے لی
نبوت اللہ نے دی ...... نبوت رسول ﷺ نے لی
قیادت اللہ نے دی ...... قیادت نبی ﷺ نے لی
سیادت اللہ نے دی ...... سیادت نبی ﷺ نے لی
بزرگی اللہ نے دی ...... بزرگی نبی ﷺ نے لی
پاکیزگی اللہ نے دی ...... پاکیزگی رسول ﷺ نے لی

بس آپ حضرات غور کرتے جائیں...... کہ اللہ سب کچھ دے رہا ہے...... رسول ﷺ لے رہے ہیں

قرآن اللہ نے دیا ...... قرآن ...... رسول ﷺ نے لیا

بیان اللہ نے دیا ......بیان ...... رسول ﷺ نے لیا
شریعت اللہ نے دی ......شریعت ...... رسول ﷺ نے لیا
طریقت اللہ نے دی ......طریقت ...... رسول ﷺ نے لیا
معرفت اللہ نے دی ......معرفت ...... رسول ﷺ نے لیا
حقیقت اللہ نے دی ......حقیقت ...... رسول ﷺ نے لیا
نماز و روزہ اللہ نے دیا ......نماز و روزہ ......رسول ﷺ نے لیا
جہاد و زکوٰۃ اللہ نے دیا ......جہاد و زکوٰۃ ......رسول ﷺ نے لیا

غور کرنا کہ ہم نے ......قرآن لیا ......تو رسول اللہ ﷺ سے
بیان لیا ...... تو رسول اللہ ﷺ سے
شریعت لی ......تو رسول اللہ ﷺ سے
طریقت لی ......تو رسول اللہ ﷺ سے
معرفت لی ......تو رسول اللہ ﷺ سے
طہارت لی ......تو رسول اللہ ﷺ سے

ایک جملہ یہاں اللہ کرے آپکو سمجھ میں آجائے ...... کہ اللہ دے رہا ہے ...... اور رسول ﷺ لے رہے ہیں ...... اور ہم اس کے بعد یہ سب کچھ رسول ﷺ سے لے رہے ہیں

اور کیا خیال ہے ...... کہ اللہ اپنے نبی ﷺ کو سب کچھ دے کر پھر بھی یٰاَیُّھَا النَّبِیُّ کہہ کر پکار رہا ہے ...... اور امتی سب کچھ رسول ﷺ سے لے کر بھی یا رسول اللہ ﷺ کیوں نہیں پکار رہا؟

ارے!

Marfat.com
Marfat.com

وہ اللہ ...... وحدہٗ لاشریک ہے ...... مگر نبی کو پکار رہا ہے

وہ اللہ ...... رب العالمین ہے ...... مگر نبی کو پکار رہا ہے

وہ اللہ ...... بے نیاز ہے ...... مگر نبی کو پکار رہا ہے

وہ اللہ ...... بے مثال ہے ...... مگر نبی کو پکار رہا ہے

ارے ...... وہ بڑا ہو کر پکار رہا ہے ...... تو چھوٹا ہو کر کیوں نہیں پکارتا؟

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ

وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

## میرے نبی ﷺ سراج بھی اور منیر بھی:

دوستو!

ہمارا اصل میں موضوع تو آقا ﷺ کے سراج منیر ہونے کے حوالے سے بات کرنا تھا...... لیکن بات حرف ندا سے رسول ﷺ کو پکارنے کی طرف نکل گئی...... تو آیئے اب چند لمحے اس حوالے سے بات کرتے ہیں

قرآن پاک میں ایک جگہ پر ”سراج“ سورج کو کہا گیا ہے اور ”منیر“ چاند کو کہا گیا ہے...... لیکن میرے نبی ﷺ کو اللہ تعالیٰ نے ”سراج“ بھی بنایا ہے...... اور ”منیر“ بھی بنایا ہے

## 2- نکتہ:

قرآن سے یہ ثابت ہے کہ قرآن میں اللہ تعالیٰ نے سورج کو ”سراج“ کہا ہے اور چاند کو ”منیر“ کہا ہے...... لیکن جب اپنے عظمت والے رسول ﷺ کی باری آئی تو اپنے محبوب کو بھی...... سِرَاجًا مُّنِیْرًا فرمادیا

ارے لوگ اس کا ترجمہ کرتے آئے ہیں اور کرتے رہیں گے...... کیونکہ قرآن ایک واحد ایسی کتاب ہے کہ جس میں روز قیامت تک کوئی تحریف نہیں ہوگی

لیکن میں یہاں اس حوالے سے ایک نکتہ آپ لوگوں کو پیش کرنا چاہتا ہوں کہ قرآن میں اَلسِّرَاج ...... سورج کو کہا گیا اور مُّنِیْرًا چاند کو کہا گیا۔

اصل میں اس آیت مقدسہ میں ...... میرے نبی ﷺ کی حاکمیت کی عالمگیری اور جہانگیری کا اعلان ہو رہا ہے...... کہ اے محبوب سورج دن کو پوری:

دنیا کو روشنی دیتا ہے
فیض دیتا ہے
آشنائی دیتا ہے
روشنائی دیتا ہے
اُجالا دیتا ہے

اور پھر اس کے بعد جب رات آتی ہے تو چاند آسمان پر نظر آنے لگتا ہے اور:

چاند پھر رات میں ......روشنی دیتا ہے
چاند پھر رات کو ......اجالے دیتا ہے
چاند پھر رات کو ......فیض دیتا ہے
چاند پھر رات کو ......آشنائی دیتا ہے

اے میرے محبوب ﷺ اللہ نے آپ کو ”سراج منیر“ اس لئے بنایا کہ لوگ دن کو بھی آپ ﷺ سے ”فیض نور“ حاصل کر رہے ہیں اور رات کو بھی

آپ ﷺ غلاموں کے سینوں کو منور فرما رہے ہیں...... اسی لئے تو آپ ﷺ کو فرمایا گیا...... کہ:

وَدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ○

قرآن میں حضور ﷺ کو ''سراج'' بھی کہا گیا اور ''منیر'' بھی کہا گیا...... اس لئے کہ سورج اور چاند بھی ''سراج منیر'' ہیں...... اور رسول ﷺ بھی ''سراج منیر'' ہیں

اس لئے...... کہ:

سورج و چاند بھی روشن چراغ ہیں
آقا ﷺ بھی روشن چراغ ہیں

آپس میں نسبت یہ ہے...... کہ:

وہ چراغ...... آسمان ہیں
رسول ﷺ سراج زمین و آسمان ہیں
وہ چراغ دنیا ہیں
رسول ﷺ چراغ دین اسلام ہیں
وہ چراغ کمال ہیں
رسول ﷺ چراغ حسن و جمال ہیں
وہ چراغ دن و رات ہیں
رسول ﷺ چراغ کائنات ہیں
وہ چراغ سما ہیں
رسول ﷺ چراغ محافل ارض و سما ہیں

وہ چراغ ایام ہیں
رسول ﷺ چراغ دین و ایمان ہیں
وہ چراغ سماوات ہیں
رسول ﷺ چراغ نبوت و رسالت ہیں
اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## سِرَاجًا مُّنِیْرًا کا معنیٰ لغت میں

علامہ راغب اصفہانی رحمۃ اللہ علیہ نے المفردات میں بڑے منصفانہ انداز میں سِرَاجًا مُّنِیْرًا کا معنیٰ بیان کیا ہے...... کہ

يُعَبَّرُ بِهٖ عَنْ كُلِّ مُضِيْءٍ
وہ شے جو خود روشن ہو اور دوسروں کو بھی روشن کر دے

دیکھئے! علماء کرام نے اس سراج منیر کا معنیٰ بیان کیا کہ جو چیز خود بھی روشن ہو اور دوسری اشیاء کو بھی روشن کر دے...... اس کو "سراج منیر" کہا جاتا ہے...... میرے اللہ نے میرے رسول ﷺ کو "سراج منیر" بنا کر بھیجا ہے اور اب قیامت تک نورانیت مصطفیٰ ﷺ کا فیض تقسیم ہوتا رہے گا...... ہر ملک میں اجالا ہوتا رہے گا

ہر ملک میں اُجالا ہوتا رہے گا
ہر شہر میں اُجالا ہوتا رہے گا
ہر قصبے میں اُجالا ہوتا رہے گا
ہر نگر میں اُجالا ہوتا رہے گا
ہر گلی میں اُجالا ہوتا رہے گا

ہر گھر میں اُجالا ہوتا رہے گا
ہر سینے میں اُجالا ہوتا رہے گا

## 3- نکتہ:

اللہ تعالیٰ نے قرآن میں میرے رسول ﷺ کو "سراج منیر" فرمایا...... اور اس ترجمہ پر تمام اپنوں بیگانوں کا اتفاق ہے...... کہ نبی ﷺ کو اللہ نے

چمکتا ہوا سورج فرمایا ہے
یا...... روشن چراغ فرمایا ہے

اب دیکھیے...... سورج آسمان والوں اور زمین والوں کو سب کو ہدایت دیتا ہے...... کس کی ہدایت دیتا ہے......؟

راستے تلاش کرنے کی
رزق کو تلاش کرنے کی
فوائد کو تلاش کرنے کی
منزل کو تلاش کرنے کی

ارے یہ تو آسمان کا سورج ہے کہ جو جب چمکتا ہے...... تو مخلوق کی رہنمائی بھی مخلوق ہی کی طرف کرتا ہے...... لیکن قربان جاؤں اے مدینے والے سراج منیر ﷺ تیری عظمت پر کہ تو نے روشن ہو کر......

مخلوق کو صرف مخلوق کا پتہ نہیں دیا
بلکہ...... مخلوق کو خالق کا راستہ دکھا دیا
اللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

ارے کچھ تو خاص مقصد تھا...... کچھ تو حکمت تھی کہ میرے اللہ نے اپنے

محبوب ﷺ کو سراج منیر فرمایا ہے؟...... ہاں تو ہم نے عرض کیا کہ آسمان کے سورج کو بھی ''سراج'' کہا جاتا ہے...... لیکن وہ سورج تو لوگوں کی رہنمائی کرتا ہے...... منزل کی طرف اور میرے نبی ﷺ مخلوق خدا کی رہنمائی کرتے ہیں...... ان کے رب کی طرف...... یعنی:

سورج مخلوق کا ناطہ مخلوق سے جوڑتا ہے
اور...... مدینے والا بندوں کا تعلق خالق سے جوڑتا ہے

ارے...... جب آسمان پر صبح کو سورج چمکتا ہے...... تو تاریکی دور ہو جاتی ہے...... لیکن ساڑھے چودہ صدیاں پہلے بارہ ربیع الاول کی صبح سیدہ آمنہ رضی اللہ عنہا کی گود میں آنے والے ''سراج منیر'' کی روشنی سے کفر ظلمت کی تاریکی دم توڑ گئی...... مخلوق خدا...... اپنے خالق کو پہچان کر سجدے میں گرگئی۔

آپ دیکھتے ہو کہ جب رات ہو جاتی ہے...... اور رات کی سیاہی ہر طرف چھا جاتی ہے...... پوری دنیا کو اپنی لپیٹ میں لے لیتی ہے...... لیکن جب رات اپنا وقت پورا کرتی ہے...... تو پھر اللہ کے حکم سے سورج نکلتا ہے...... اور تاریکی کا تسلط ختم ہو جاتا ہے...... اسی طرح ایک نظر دیکھو...... عرب کے بدؤں کی زندگی کی طرف کہ...... آمد سرکار ﷺ سے پہلے:

ہر طرف ظلمت کا اندھیرا تھا
ہر طرف جاہلیت کا بسیرا تھا
ہر طرف ظلم و جبر کا راج تھا
ہر طرف زیادتی کی لہر چھائی تھی

ایسے میں خالق نے تسلی دے دی...... اے ظلمت کی تاریکی سے دوچار لوگو! اے ظلم و جبر سے پریشان بندو! گھبراؤ نہیں میں تمہیں ''سراج منیر'' دے رہا ہوں...... اب ہر طرف اُجالا ہو جائے گا۔

اور ایسا اُجالا ہو جائے گا...... کہ تمہیں اپنے خالق کا راستہ معلوم ہو جائے گا۔

## سراج منیر کا فیضان:

اللہ تعالیٰ نے قرآن پاک میں فرمایا

وَدَاعِيًا إِلَى اللّٰهِ بِإِذْنِهِ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ٥

اور آپ اللہ کے اذن سے اللہ کی طرف بلانے والے ہو اور روشن چراغ

اب ذرا غور کیجئے...... کہ میں یہاں صرف ابھی ''سراج منیر'' پر ہی بات کر رہا ہوں...... السراج! یہ ''السراج'' کس کو کہتے ہیں؟

آپ سب کہو گے کہ بھئی خود ہی تو کہہ رہے ہو کہ چراغ کو کہتے ہیں اور خود ہی سوال کرتے ہو...... کہ ''السراج'' کس کو کہتے ہیں

بھئی آپ لوگ بھی صحیح کہہ رہے ہو...... کہ السراج ...... چراغ کو ہی کہتے ہیں لیکن یہاں دیکھنا یہ ہے کہ ''السراج'' میں کیا ایسی خوبی ہے ...... کہ اس کو اپنی اعلیٰ خوبی کی وجہ سے السراج کہا جاتا ہے؟ تو سنیئے کہتے ہیں ...... کہ:

سُمِّيَ السِّرَاجَ لِأَنَّ السِّرَاجَ الْوَاحِدُ يُؤْخَذُ مِنْهُ السِّرَاجُ الْكَثِيْرُ وَلَا يَنْقُصُ مِنْ ضَوْئِهٖ

رسول صلی اللہ علیہ وسلم کو اس لئے ''سراج'' کہا گیا یعنی چراغ کہا گیا کہ چراغ کی خوبی ہے کہ ایک چراغ سے ہزاروں چراغ روشن کئے جا سکتے ہیں لیکن پہلے

## چراغ کی روشنی میں کمی واقع نہیں ہوتی

ہاں! ہاں...... بھئی اب سب سمجھ میں آگیا...... کہ آمنہ کے لال کو سِرَاجًا مُّنِیْرًا بنایا گیا ہے......

اسی سراج منیر سے ......تو نبیوں کی نبوت کے چراغ جلے
اسی سراج منیر سے ......تو رسولوں کی رسالت کے چراغ جلے
اسی سراج منیر سے ......تو صحابہ کی صحابیت کے چراغ جلے
اسی سراج منیر سے ......تو تابعین کے تابعیت کے چراغ جلے
اسی سراج منیر سے ......تو اماموں کی امامت کے چراغ جلے
اسی سراج منیر سے ......تو صدیقین کی صداقت کے چراغ جلے
اسی سراج منیر سے ......تو ولیوں کی ولایت کے چراغ جلے
اسی سراج منیر سے ......تو غوثوں کی غوثیت کے چراغ جلے
اسی سراج منیر سے ......تو فقہا کی فقاہت کے چراغ جلے
اسی سراج منیر سے ......تو مومنین کی ایمانیت کے چراغ جلے

اب سمجھ آگیا مسئلہ...... کہ:

اَنَا مِنْ نُّوْرِ اللّٰہِ وَ کُلُّ خَلَائِقِ مِنْ نُّوْرِیْ

کہ میں اللہ کے نور سے ہوں اور تمام مخلوق میرے نور سے ہے

ارے چراغ تو اس کو کہتے ہیں...... کہ جس سے دوسرے لاکھوں چراغوں کو روشن کیا جائے...... لیکن پھر بھی اس کی اپنی روشنی میں فرق نہ آنے پائے:

تو حقیقت واضح ہے...... کہ وَدَاعِیًا اِلَی اللّٰہِ بِاِذْنِہٖ وَ سِرَاجًا

مُنِیْرًا ...... نے:

ایک چراغ ......سیدنا ابوبکر رضی اللہ عنہ کو روشن کیا
ایک چراغ ......سیدنا عمر فاروق رضی اللہ عنہ کو روشن کیا
ایک چراغ ......سیدنا عثمان غنی رضی اللہ عنہ کو روشن کیا
ایک چراغ ......سیدنا علی المرتضیٰ رضی اللہ عنہ کو روشن کیا
ایک چراغ ......سیدنا امام حسن رضی اللہ عنہ کو روشن کیا
ایک چراغ ......سیدنا امام حسین رضی اللہ عنہ کو روشن کیا
ایک چراغ ......سیدنا بلال حبشی رضی اللہ عنہ کو روشن کیا
ایک چراغ ......سیدنا سلمان فارسی رضی اللہ عنہ کو روشن کیا
ایک چراغ ......سیدنا براابن عازب رضی اللہ عنہ کو روشن کیا
ایک چراغ ......سیدنا عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ کو روشن کیا
ایک چراغ ......سیدنا عبداللہ بن عباس رضی اللہ عنہما کو روشن کیا

ہزاروں کی تعداد میں صحابہ کرام رضی اللہ عنہم نے اپنے سینے جس بارگاہ سے روشن کیے لیکن اصل چراغ نبوت کی روشنی میں فرق نہیں آیا...... اسے ہی تو کہتے ہیں:

وَدَاعِیًا اِلَی اللّٰہِ بِاِذْنِہٖ وَسِرَاجًا مُّنِیْرًا ○

## بجھائے نہ بجھ سکے وہ ایسے چراغ ہیں:

ایک صاحب کہنے لگے...... کہ بھئی تم بہت زور دیکر ''روشن چراغ'' کہہ رہے ہو...... اور چراغ سے تشبیہ دینے سے پہلے ذرا سوچو تو کہ چراغ تو لوگ اکثر استعمال کرتے ہیں...... لیکن جب رات کو چراغ روشن کیا

اور اپنا کام کیا...... تو اس کے بعد جب لوگ سونے لگتے ہیں...... تو چراغ کو بجھا دیتے ہیں

جب لوگ اپنے دن بھر کے کام سے تھک جاتے ہیں تو پھر چراغ کو بجھا کر کے آرام کرتے ہیں...... اس سے خوبی کا کیا پہلو نکلتا ہے؟

ٹھیک ہے یہ اس کے ذہن میں ایک سوال آیا اور اس نے کر دیا...... لیکن اگر وہ اس معنیٰ کو صحیح طریقے سے سمجھتا تو کبھی بھی ایسا سوال نہ کرتا

خیر ہم جواب عرض کرتے ہیں تاکہ کوئی سوال کرنے والا یہ نہ کہے کہ بڑا نعت نبی ﷺ کا نغمہ الاپ رہے تھے...... لیکن میرے ایک سوال نے خاموش کر دیا تو آیئے جواب سنیئے!

میں نے اس صاحب سے کہا...... بھئی دیکھو تم نے کہا ہے کہ لوگ رات کو سوتے وقت اپنا چراغ بجھا دیتے ہیں...... اور جب تھک جاتے ہیں پھر چراغ بجھا دیتے ہیں...... لیکن میں اپنی جماعت کے معتبر علماء کرام کی موجودگی میں یہ بات واضح کرنا چاہتا ہوں کہ وہ تم لوگوں کے چراغ ہیں کہ جو سوتے وقت بجھ جاتے ہیں...... میرے نبی ﷺ کو تو اس ذات نے "روشن چراغ" بنایا ہے جس ذات کی شان ہے...... کہ:

لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ

نہ اسے اونگھ آتی ہے نہ وہ سوتا ہے

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

ارے...... وہ چراغ تو تم روشن کرتے ہو کہ جن کو پھونک مار کر بجھا دیا جاتا ہے اس چراغ کو تو اللہ نے روشن کیا ہے...... اور ساتھ ہی لوگوں کا مغالطہ بھی دور

وَدَاعِيًا إِلَى اللهِ بِإِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ○

اور دوسری طرف...... سِرَاجًا مُّضِيًّا نہیں فرمایا

انتہائی غور کا مقام ہے...... کہ سِرَاجًا مُّضِيًّا کا معنیٰ بھی...... چمکنا اور روشن ہوتا ہے

حالانکہ...... سِرَاجًا مُّنِيْرًا...... اور سِرَاجًا مُّضِيًّا کا معنیٰ ایک ہی ہے...... اس

میں بھی روشنی کا معنیٰ ہے...... اور مضیا میں بھی روشنی کا معنیٰ ہے
اس میں بھی اُجالے کا معنیٰ ہے...... اور مضیا میں بھی اُجالے کا معنیٰ ہے
اس میں بھی چمکنے کا معنیٰ ہے...... اور مضیا میں بھی چمکنے کا معنیٰ ہے

لیکن میرے دوستو!

غور کرنا کہ اللہ نے اپنے محبوب کو "سراجا منیرا" فرمایا ہے روشن چراغ بنایا ہے...... لیکن سراجا مضیا نہیں فرمایا

معنیٰ کے اندر یکسانیت کے باوجود بھی ایک فرق حیثیت کا موجود ہے...... حیثیت کا فرق یہ ہے کہ "سراجا مضیا" اس چراغ کو کہتے ہیں جو پھونک سے بجھ جاتا ہے...... اور سراجا منیرا اس روشن چراغ کو کہتے ہیں:

جس کو...... آندھیاں بجھا نہ سکیں
جس کو...... طوفان بھی بجھا نہ سکیں
جس کو...... ہوائیں بھی بجھا نہ سکیں
جس کو...... پھونکیں بھی بجھا نہ سکیں

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ صلی اللہ علیہ وسلم

## مثال:

دیکھئے میرے رسول کو اللہ نے سِرَاجًا مُّنِیْرًا یعنی روشن چراغ بنایا ہے ......اور اس روشن چراغ نے سارے عالم کو چمکایا ہے...... ارے اس چراغ کو جو بجھانے کی نیت سے آئے وہ بھی آکر قدموں میں جھک گئے...... حضرت عمر فاروق رضی اللہ عنہ کی مثال سامنے ہے لیکن میں اس مقام پر ایک اور مثال عرض کرنے والا ہوں...... کہ یہ بلب روشن ہو رہا ہے...... لیکن اس میں روشن کرنے والی چیز اپنا کام کر رہی ہے اس کو روشن کرنے میں اصل کمال اس بلب کا اپنا نہیں بلکہ اس بجلی کے کرنٹ کا کمال ہے کہ جس کی وجہ سے یہ بلب روشن ہو رہا ہے۔

آخر اس کرنٹ کی قوت کا بھی تو کوئی مرکز ہوگا؟ کہ جہاں سے یہ چلا اور اس بلب تک پہنچ کر اس بلب کو روشن کر دیا؟

اصل میں پاور ہاؤس سے جو فیض آ رہا ہے...... وہ اپنے اُجالے تقسیم کر رہا ہے...... اسی طرح میرے سرکار صلی اللہ علیہ وسلم "سِرَاجًا مُّنِیْرًا" روشن چراغ ہیں...... یعنی مرکز تو مدینہ شریف میں ہے...... لیکن میرے آقا صلی اللہ علیہ وسلم نے ہزاروں کی تعداد میں صحابہ کے چراغ روشن کیے۔

اور صحابہ رضی اللہ عنہم کرام نے ......لاکھوں چراغ تابعین کے نام سے جلا دیئے
اور پھر تابعین رضی اللہ عنہم کرام نے ......لاکھوں چراغ تبع تابعین کے نام سے جلا دیئے
اور پھر تبع تابعین نے لاکھوں چراغ اور جلا دیئے
کوئی چراغ ......امام اعظم رحمۃ اللہ علیہ کی صورت میں جلا دیا

کوئی چراغ ...... غوث اعظم رحمۃ اللہ علیہ کی صورت میں جلا دیا
کسی نے چراغ ...... داتا علی ہجویری رحمۃ اللہ علیہ کی صورت میں جلا دیا
کسی نے چراغ ...... مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ کی صورت میں جلا دیا
کسی نے چراغ ...... شیر ربانی رحمۃ اللہ علیہ کی صورت میں جلا دیا
کسی نے چراغ ...... زکریا ملتانی رحمۃ اللہ علیہ کی صورت میں جلا دیا
کسی نے چراغ ...... شیخ سمنانی رحمۃ اللہ علیہ کی صورت میں جلا دیا
کسی نے چراغ ...... سرکار تونسہ رحمۃ اللہ علیہ کی صورت میں جلا دیا
کسی نے چراغ ...... سرکار نقشبند رحمۃ اللہ علیہ کی صورت میں جلا دیا
کسی نے چراغ ...... پیر مہر علی رحمۃ اللہ علیہ کی صورت میں جلا دیا
کسی نے چراغ ...... سید جماعت علی رحمۃ اللہ علیہ کی صورت میں جلا دیا
کسی نے چراغ ...... نظام الدین اولیا رحمۃ اللہ علیہ کی صورت میں جلا دیا
کسی نے چراغ ...... امام احمد رضا رحمۃ اللہ علیہ کی صورت میں جلا دیا

ارے دیکھو تو ...... کسی نے چراغ کا نام ...... عبد القادر رکھا ہے
کسی نے چراغ کا نام ...... عبد الحق رکھا ہے
کسی نے چراغ کا نام ...... پیر گیلانی رکھا ہے
کسی نے چراغ کا نام ...... پیرِ سنجری رکھا ہے

بس چراغ کا نام بدلتا رہا ...... لیکن سب میں روشنی مدینہ کے پاور ہاؤس سے ہے ...... سب میں روشنی سِرَاجًا مُّنِیْرًا کی نظر آ رہی ہے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ صلی اللہ علیہ وسلم

چشمانِ عقیدت سے دیکھو ...... تو:

جو روشنی ......غوث پاک میں ہے
وہی روشنی ......امام پاک میں ہے
جو روشنی ......غریب نواز میں ہے
وہی روشنی ......سید بندہ نواز میں ہے
جو روشنی ......مہر علی میں ہے
وہی روشنی ......جماعت علی میں ہے
جو روشنی ......مجدد الف ثانی میں ہے
وہی روشنی ......میاں شیر محمد میں ہے
جو روشنی ......قطب الاقطاب میں ہے
وہی روشنی ......غوث الاغیاث میں ہے
جو روشنی ...... کسی ابدال میں ہے
وہی روشنی ......اوتاد میں ہے
جو روشنی ......رقباء میں ہے
وہی روشنی ......نقباء میں ہے
جو روشنی ......نجباء میں ہے
وہی روشنی ......سارے اولیا میں ہے

اصل میں روشنی "سراج منیر" کی ہے......اور اس کائنات کے بے مثال چراغ سے فیض حاصل ہوتا رہے گا......اور قیامت تک چراغ سے چراغ روشن ہوتا رہے گا

مدینہ شریف سے سب کو چمکایا جا رہا ہے:

اللہ نے میرے رسول ﷺ کو ایسا سراج منیر بنایا ہے ...... ایسا روشن چراغ بنایا ہے ...... کہ پوری دنیا میں جہاں بھی روشنی نظر آ رہی ہے ...... وہ سراج منیر کی روشنی کا فیض ہی تو ہے ...... ارے روشنی تو مدینہ شریف کی ہے۔

بغداد میں ......اور لاہور میں کنکشن بول رہا ہے
ارے ......روشنی تو مدینہ شریف کی ہے
موہڑ شریف اور گولڑہ شریف میں ......کنکشن بول رہا ہے
ارے ......روشنی تو مدینہ شریف کی ہے
بریلی اور اجمیر میں تو ......کنکشن بول رہا ہے

## 5- نکتہ:

اب آیئے یہاں پر ایک اور نکتہ پیش کر جاؤں تاکہ میں نے یہ جو بھی موضوع شروع کر رکھا ہے اس کو سمجھنے میں ذرا مزید آسانی پیدا ہو جائے ...... کہ اکثر ہر گھر کی چاردیواری میں روشنی بلب سے لی جاتی ہے ...... یہ میں نے آگے بھی عرض کیا ...... لیکن اب یہاں پر یہ عرض کرنے والا ہوں کہ اکثر ہم دیکھتے ہیں ...... کہ:

کوئی بلب "سبز" رنگ کا ہوتا ہے
کوئی بلب "سفید" رنگ کا ہوتا ہے
کوئی بلب "سرخ" رنگ کا ہوتا ہے
کوئی بلب "پیلے" رنگ کا ہوتا ہے
کوئی بلب "نیلے" رنگ کا ہوتا ہے

لیکن میرے دوستو!

آپ انتہائی غور کرنا کہ جو کرنٹ ان کو روشن کر رہا ہے اس کا رنگ تو کوئی بھی نہیں ہے...... یعنی انسان اس کی حالت کو سمجھنے سے قاصر ہے...... یعنی اس کا اثر تو محسوس ہو رہا ہے...... اس کرنٹ کا فیض تو محسوس ہو رہا ہے...... لیکن اس میں کوئی رنگ نہیں ہے

پاور ہاؤس نے تو صرف حسب ضرورت کرنٹ دے دیا...... لیکن کوئی رنگ نہیں دیا...... اور اب جو ہمیں لائٹوں میں رنگ نظر آ رہے ہیں...... یہ رنگ کرنٹ کے نہیں ہیں...... بلکہ بلب کے اپنے رنگ ہیں...... تو جب سراج منیر...... روشن چراغ...... کا فیض سارے عالم میں تقسیم ہو رہا ہے تو پھر مدینہ شریف سے صرف اثر ملا...... فیض ملا، روحانیت کا کرنٹ ملا...... اب جو رنگ نظر آ رہے ہیں...... یہ ان بلبوں کے اپنے رنگ ہیں

جب مدینہ سے فیض ملا......تو بلب قادری رنگ میں چمکا
جب مدینہ سے فیض ملا......تو بلب نقشبندی رنگ میں چمکا
جب مدینہ سے فیض ملا......تو بلب چشتی رنگ میں چمکا
جب مدینہ سے فیض ملا......تو بلب سہروردی رنگ میں چمکا
جب مدینہ سے فیض ملا......تو بلب اویسی رنگ میں چمکا
جب مدینہ سے فیض ملا......تو بلب نوشاہی رنگ میں چمکا
جب مدینہ سے فیض ملا......تو بلب بریلوی رنگ میں چمکا

ارے مدینہ شریف کے سراج منیر سے آتا ہوا یہ فیض نظر آتا ہے......اور

تمام اولیاء میں چمکتا ہوا یہ رنگ نظر آرہا ہے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

ارے جب آسمان کا سورج چمکتا ہے تو وہ اپنی روشنی سے زمین کے بعض حصوں کو روشن کرتا ہے...... یعنی اگر ایک ملک میں دن ہے اور دوسرے ملک میں اس وقت رات بھی ہوسکتی ہے...... جہاں جہاں ملکوں کا آپس میں ٹائم کا فرق ہے...... یعنی سورج کی تقسیم دیکھئے کہ ایک وقت میں چند ملکوں کو روشن کر رہا ہے...... اور چند ملکوں میں اس وقت بھی اندھیرا چھایا ہوتا ہے...... لیکن میرے کریم نبی ﷺ کو اللہ نے سِرَاجًا مُّنِیْرًا بنایا ہے...... ایک وقت میں تمام دنیا کے ہر خطے میں فیضِ سراج نبوت پہنچ رہا ہے۔

اور دوسری طرف آسمان کا سورج روشن تو ہے...... لیکن وہ:

عمارتوں کے ظاہر کو روشن کرتا ہے
بندوں کے ظاہر کو روشن کرتا ہے
دریاؤں کے ظاہر کو روشن کرتا ہے
سمندروں کے ظاہر کو روشن کرتا ہے

لیکن قربان جاؤں سراج منیر...... روشن چراغ کی روشنی پر کہ جب سے اس زمین پر سراج نبوت طلوع ہوا ہے...... اس دن سے لیکر آج تک انسانیت کا نہ صرف ظاہر بلکہ:

باطن بھی روشن ہو رہا ہے
کردار بھی روشن ہو رہا ہے

اخلاق بھی روشن ہو رہا ہے
عمل بھی روشن ہو رہا ہے
ذات بھی روشن ہو رہی ہے
صفات بھی روشن ہو رہی ہے

آسمان کے سورج نے تو ظاہر کو روشن کیا...... لیکن باطن کو روشن کرنے تک اس کی رسائی نہ تھی...... لیکن قربان جاؤں میرے مدنی مدینے والے پر...... آپ نے لوگوں کے ظاہر کو بھی روشن کیا اور لوگوں کے باطن کو بھی سنوار دیا

رہزنوں...... کو رہبر بنادیا
بدوؤں...... کو امام بنادیا

ارے جنہوں نے سراج منیر کی روشنی کو محسوس کیا...... جنہوں نے ظاہر اور باطن کی چمک حاصل کی...... وہ تو رہتی دنیا تک یہ اعلان سنائیں گے...... عقیدے بتائیں گے...... کہ:

چمک تجھ سے پاتے ہیں سب پانے والے
میرا دل بھی چمکا دے چمکانے والے

وَدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَ سِرَاجًا مُّنِيْرًا○

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

* * *

## موضوع...... بے مثل رسول ﷺ کی بے مثل بشریت

نَحْمَدُہٗ وَ نَسْتَعِیْنُہٗ وَ نَسْتَغْفِرُہٗ وَ نُؤْمِنُ بِہٖ وَ نَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَ نَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَ مِنْ سَیِّاٰتِ اَعْمٰلِنَا وَ مَنْ یَّھْدِیْہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَ مَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَ نَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ وَ نَشْھَدُ اَنَّ سَیِّدَنَا مَوْلَانَا وَ حَبِیْبَنَا وَ سِرَاجَنَا وَ اَشْرَفَنَا وَ سَیِّدَنَا مُحَمَّدٍ ﷺ

اَمَّا بَعْدُ!

قَالَ اللّٰہُ تَبَارَکَ وَ تَعَالٰی فِی الْقُرْاٰنِ الْمَجِیْدِ وَ الْفُرْقَانِ الْحَمِیْدِ...... اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُکُمْ
صَدَقَ اللّٰہُ مَوْلٰنَا الْعَظِیْمُ

اِنَّ اللّٰہَ وَمَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوْنَ عَلَی النَّبِیِّ ط
یٰٓاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْہِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا○

بلند آواز سے محبت سے...... درود و سلام پڑھیے

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ

وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

یَا رَسُوْلَ اللّٰہ ﷺ

جلوہ کیجئے خواہ پردہ کیجئے
مجھے اپنے پاس رکھا کیجئے
دل میں لانا ہے ان کو تو ایسا کیجئے
کہ پہلے کعبۂ دل کو مدینہ کیجئے

میری تمام سنیوں سے گزارش ہے......کہ:

پھر آپ عشق کا دعویٰ کیجئے
پہلے پتھر کا کلیجہ کیجئے

اوران دوسرے لوگوں سے بھی بات کرنا چاہتا ہوں......کہ:

گتھیاں سب تقوے کی کھل جائیں گی
ان کے رندوں سے نہ الجھا کیجئے

یہ شعر میں تمام عاشقوں کی نظر کرتا ہوں......کہ:

ارے......عقل و خرد اور فرزانگی
ان کے منگتوں سے سیکھا کیجئے

ہاں بھئی......یہ عقل وخرد......مدرسے سے نہیں ملتی......یہ کسی کالج و درسگاہ سے نہیں ملتی......آؤ میں ایڈریس بتا کر جا رہا ہوں......کہ

عقل و خرد اور فرزانگی
ان کے منگتوں سے سیکھا کیجئے

ارے یہ دولت حاصل کرنی ہے...... یہ کمال سیکھنا ہے.....تو

غوث جیلانی سے سیکھ ......شاہ گیلانی سے سیکھ
مجدد الف ثانی سے سیکھ ......شیخ سمنانی سے سیکھ
شیر ربانی سے سیکھ ......ثانی لاثانی سے سیکھ
علی ہجویری سے سیکھ ......خواجہ اجمیری سے سیکھ

ارے......

عقل و دانائی و فرزانگی
ان کے دیوانوں سے سیکھا کیجئے

یہ جو تو دیوانہ لوگ ہوتے ہیں......ان کو کبھی اکیلا نہ سمجھا کرو......ویسے بھی صحیح دیوانہ کبھی کبھی...... کہیں کہیں کسی کسی وقت ہوتا ہے...... اور کسی کالج میں دیوانہ بننے کی کوئی ڈگری نہیں دی جاتی......بس دیوانہ تو کچھ سوچ کر دیوانہ ہو جاتا ہے......دیوانہ تو کچھ دیکھ کر دیوانہ ہو جاتا ہے......ارے تم میں اور کسی دیوانے میں فرق یہ ہے......کہ:

اگر زمین کے اوپر ہے تو روزانہ میلہ
اگر زمین کے اندر ہے تو سالانہ میلہ
ارے دیوانہ ...... نہ یہاں اکیلا
نہ وہاں اکیلا

اس لئے تو میں کہتا ہوں......کہ

کسی دیوانے کو تحقیر سے نہ دیکھو
دیوانہ کچھ دیکھ کر دیوانہ ہوا ہے

تو آج ان دیوانوں اور عاشقوں کی محفل میں...... بڑے پیار اور محبت کی باتیں کرنی ہیں......اور آج ان شاء اللہ بہت سے پول بھی کھول دوں گا......تا کہ پردہ نہ رہے اور عقدہ بھی حل ہو جائے

اور آج میں سب سے مقدس ترین کتاب میں سے ایک آیت کا راز کھول رہا ہوں......تا کہ آپکو کوئی بھی دھوکا نہ دے پائے

## قرآن پاک کی آیات کی تقسیم:

میں نے خطبہ میں قرآن کی ایک آیت مقدسہ تلاوت کی ہے......اور ابھی اس کی وضاحت شروع کرنے والا ہوں......لیکن اس سے پہلے آپ تمام حضرات کیلئے ایک علمی وضاحت ضروری ہے......اور وہ وضاحت یہ ہے کہ آپ سب حضرات قرآن کو ماننے والے ہیں......اور قرآن کی تلاوت سے فیوض و برکات حاصل کرنے والے ہیں تو اس لئے آپ حضرات کو بھی یہ پتہ ہونا چاہئے کہ قرآن کی آیات کی ۳ تین قسمیں ہیں ......کتنی قسمیں ہیں ۳ (تین)

اور ان میں سے ایک قسم آیات کی وہ ہے کہ جن کا ترجمہ تم نہیں کر سکتے...... جن کو کما حقہ تم سمجھ نہیں سکتے......اس لئے اگر کسی آیت کا تم ترجمہ نہیں کر سکتے...... وضاحت نہیں کر سکتے تو ان سے عقیدہ کیسے بناؤ گے؟

تو ہم ایسی آیات مبارکہ سے عقیدہ نہیں بناتے......اور جن آیات سے عقیدہ بناتے ہیں وہ آیات بھی قرآن میں ہیں......مثلاً

قرآن پاک کی آیت مقدسہ ہے الٓمّٓ یہ پوری ایک آیت پاک ہے
لیکن ''الف'' کا معنیٰ بھی ہوگا؟......لام کا معنیٰ بھی ہوگا؟......میم کا معنیٰ

بھی ہوگا

لیکن ہم نہیں جانتے...... تو جس کو جانتے نہیں اس سے عقیدہ کیسے بناؤ گے...... ذرا وضاحت کرو؟

یہ تو ہمارا ایمان ہے...... کہ یہ قرآن کی آیت ہے...... کلام خداوندی ہے...... اور اس کا معنیٰ بھی ہوگا...... کیونکہ اللہ تعالیٰ بے مقصد کلام نہیں فرماتا...... لیکن ہم لوگ اس کا معنیٰ و ترجمہ نہیں جانتے:

ارے ہم کیا......

اس الٓمّٓ کا ترجمہ ...... تو مفسرین نہیں جانتے
اس الٓمّٓ کا ترجمہ ...... تو محدثین نہیں جانتے
اس الٓمّٓ کا ترجمہ ...... تو محققین نہیں جانتے
اس الٓمّٓ کا ترجمہ ...... تو علمائے دین نہیں جانتے
اس الٓمّٓ کا ترجمہ ...... تو مجتہدین نہیں جانتے

ایک فائنل بات کہتا ہوں ...... کہ اس آیت مقدسہ کا ترجمہ تو جبرئیل امین علیہ السلام نہیں جانتے

ارے اس طرح حٰمٓ ۔ قٓ ۔ نٓ کٓھٰیٰعٓصٓ کا کرو ترجمہ تو سو جانیں؟

جب جبرئیل علیہ السلام قرآن کی یہ آیت مقدسہ لیکر آئے...... اور بیان کیا

الف...... نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا میں سمجھ گیا

جب فرمایا...... لام...... تو نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا میں سمجھ گیا

جب فرمایا میم...... تو نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا میں سمجھ گیا

تو جب اس کے بعد پڑھا

ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ تو اس وقت نبی ﷺ نے نہیں فرمایا کہ میں سمجھ گیا

غور کرنا جملوں پر کہ جہاں جبرئیل علیہ السلام کو پتہ نہیں تھا...... وہاں رسول ﷺ مطمئن کر رہے ہیں کہ میں سمجھ گیا...... اور جہاں سے جبرئیل علیہ السلام جانتے تھے تو اس وقت حضور ﷺ نے نہیں فرمایا کہ میں سمجھ گیا

ارے...... الف کا معنیٰ بھی ہے...... لیکن وہ خود الف میں چھپا ہے...... اور ''لام'' کا معنیٰ بھی ہے...... لیکن وہ خود لام میں پوشیدہ ہے...... اور ''میم'' کا معنیٰ بھی ہے اور وہ خود ''میم'' میں مخفی ہے...... لیکن حضور ﷺ اس کو بھی جانتے ہیں تو ارے کیا ہو گیا تم کو...... کہ جس نبی ﷺ سے قرآن کا غیب نہیں چھپا تو اس نبی ﷺ سے جہان کا غیب کیسے چھپا ہو گا؟

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## 1- نکتہ!

تو بہت ضروری تھا کہ قرآن میں کچھ ایسی آیات ہوں...... کہ جن کا بڑے سے بڑا مولوی بھی ترجمہ نہ کر سکے...... جن کا بڑے سے بڑا مفسر بھی ترجمہ نہ کر سکے...... بلکہ خود جبرئیل علیہ السلام کو بھی ان کا راز معلوم نہ ہو

تا کہ بندوں کو پتہ چل جائے کہ جبرئیل علیہ السلام کا کام قرآن کو لانا ہے...... قرآن کو پڑھانا جبرئیل کا کام نہیں...... معنیٰ بتانا جبرئیل علیہ السلام کا کام نہیں

ارے...... جبرئیل علیہ السلام مبلغ ہیں...... معلم نہیں

تو جب میرے نبی ﷺ نے فرشتوں کے سردار سے نہیں پڑھا تو پھر سہارنپور کے بے کار سے کیسے پڑھیں گے؟

## قرآن کے پوشیدہ راز:

میرے دوستو!

یہ بات تو آپ کو معلوم ہوگی کہ قرآن میں ایسی آیات بھی ہیں...... کہ جن کا علم جبرئیل علیہ السلام کو بھی معلوم نہیں...... یعنی ان کا ترجمہ اور معنیٰ جبرئیل علیہ السلام نہیں جانتے تو علماء کرام کی اصطلاح میں ایسی آیت کو

یا تو ''مفردات'' کہتے ہیں

یا حروف ''مقطعات'' کہتے ہیں

یہ تو تھی ایک قسم کی آیات مبارکہ...... اور دوسری قسم کی آیات مبارکہ وہ ہیں...... کہ جیسے ''الٓمٓ'' کہ اس کا معنیٰ ہی معلوم نہیں...... تو اس سے عقیدہ کیسے بنایا جائے گا

تو پھر اس کے بعد قرآن میں کچھ ایسی آیات بھی ہیں کہ جن کا ترجمہ تم کر سکتے ہو...... جن کا معنیٰ تو تمہیں معلوم ہے...... لیکن اس میں خدا کی منشا تمہیں معلوم نہیں

اس میں خدا کی مراد تمہیں معلوم نہیں

تو پھر جب ترجمہ کریں گے تو جو باہر ترجمہ آئے گا وہ خدا کی مراد نہیں...... وہ خدا کی منشاء نہیں ہے...... اور

جو خدا کی منشاء ہے وہ تو ترجمہ میں موجود نہیں

جو خدا کی رضا ہے وہ تو ترجمہ میں موجود نہیں

## 2- نکتہ!

یہ بات سب سے پہلے اچھی طرح سے ذہن نشین کر لیجئے...... کہ بہت سی آیات ایسی ہیں کہ ان کا ترجمہ جب آپ کریں گے...... تو جو آپ ترجمہ میں ظاہر کریں گے...... تو یہ پکی بات ہے کہ وہ خدا کی مراد نہیں ہوگا...... وہ خدا کی منشاء نہیں ہوگا...... آیئے یہاں پر ایک نکتہ پیش کرتا ہوں...... کہ بہت آیات ہیں کہ آپ جن کا ترجمہ کر سکتے ہیں...... اور اس میں اصل جو اللہ کی مراد ہے...... اس کو صحیح طریقے سے واضح نہیں کر سکتے...... آؤ قرآن سے ایک آیت کی مثال دے دوں...... قرآن میں اللہ تعالیٰ نے فرمایا...... یَدُ اللّٰہِ فَوْقَ اَیْدِیْھِمْ ...... اور ان پر اللہ کا ہاتھ ہے

اب غور کرنا اس آیت مقدسہ کے اس حصے پر...... کہ ترجمہ کرنیوالا جب بھی ترجمہ کرے گا تو ترجمہ ہوگا...... یَدُ اللّٰہِ...... اللہ کا ہاتھ

غور کرنا کہ ترجمہ تو سب نے یہ کر دیا کہ یَدُ اللّٰہِ اللہ کا ہاتھ...... لیکن میں کہتا ہوں کہ کس مائی کے لال میں یہ ہمت ہے کہ اللہ کا ہاتھ ثابت کرے؟

ارے اس لئے کہ اگر ہاتھ مانے گا تو کندھا بھی ماننا پڑے گا...... ورنہ وہ فٹ کہاں ہوگا؟ اور جب کندھا مان لیا تو پھر سینہ بھی مانے گا...... اور پھر جب سینہ مان لیا تو پھر پیٹ بھی ماننا پڑے گا...... لو اللہ کا ہاتھ ثابت کرنے جو نکلا تھا اس نے تو ایک بت تیار کر لیا۔

ارے یہ ہاتھ اور پاؤں ...... سینہ اور پیٹ والے خدا تو ہندوؤں کے ہوتے ہیں

لیکن میں ڈنکے کی چوٹ پر کہتا ہوں کہ ہمارا خدا ہاتھ اور پاؤں سے پاک

ہے...... بلکہ میرا خدا تو

جسم و جسمانیات سے پاک ہے
حدود و قیود سے پاک ہے
شکل و اشکار سے پاک ہے

تو جب اللہ تمام اعضا سے پاک ہے...... تو پھر ہم اس کا ہاتھ کیسے مانیں گے؟

لیکن قرآن میں تو ہے یَدُ اللہِ...... ''اللہ کا ہاتھ''

اب میں پوچھتا ہوں ان لوگوں سے جو بات بات پر کہتے ہیں کہ یہ تو قرآن میں ہے...... یہ تو قرآن میں ہے...... آؤ ہم قرآن سے دکھا دیتے ہیں...... ان سے سوال ہے کہ اللہ کا ہاتھ کیسے ثابت کرو گے؟ جیسے یہ لوگ اس آیت کو لیکر بیٹھے ہوئے ہیں کہ اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ

ارے ایسے ہی قرآن میں آیا ''یَدٌ''...... قرآن میں ہی آیا ''یَدٌ'' اور قرآن میں ہی آیا ''بشر'' اگر اب کسی میں ہمت ہے تو مانے خدا کا ہاتھ اور چھوڑے اسلام کا ساتھ؟

تو نتیجہ کیا نکلا کہ ''ید'' کا جو ترجمہ ہے وہ ہاتھ ہے...... تو ہم نے بات کی کہ یہ ترجمہ میں تو ہاتھ آیا...... لیکن یقیناً یہ اللہ کی مراد نہیں ہے اور یَدُ اللّٰہِ فرما کر اللہ نے جو مراد کیا وہ ترجمہ میں موجود نہیں

تو علماء جانتے ہیں کہ جس آیت میں مرادِ الٰہی ظاہر نہ ہو تو اس آیت کو آیت ''متشابہ'' کہتے ہیں...... کیونکہ:

اللہ کی مراد معلوم نہیں

اللہ کی منشاء معلوم نہیں
اللہ کی رضا معلوم نہیں

تو یاد رکھو کہ لفظ ''یَدْ'' پر ہمارا ایمان ہے...... اس لئے کہ یہ قرآن ہے ...... اور اللہ ہاتھ اور پاؤں سے پاک ہے...... یہ ہمارا ایمان ہے...... تو اب ہم نہ قرآن کو چھوڑیں گے...... اور نہ ایمان کو چھوڑیں گے

تو پھر ہم یہی کہیں گے ''یَدْ'' کا جو ظاہر ہے وہ خدا کی مراد نہیں ہے اور ''یَدُ اللّٰہِ'' فرما کر اللہ نے جو مراد لیا وہ ترجمہ میں ظاہر نہیں ہے......

تو میرے بھائیو! یہ ساری گفتگو اس انجام کو پہنچی کہ یہ آیت متشابہ ہے اور متشابہ آیت سے عقیدہ بنانا جائز ہی نہیں ہے...... ارے:

جب منشائے الٰہی معلوم نہیں تو ...... پھر حکم کیا لگاؤ گے؟
جب اللہ کی مراد معلوم نہیں تو ...... پھر عقیدہ کیا بناؤ گے؟

تو ثابت ہوا کہ آیات متشابہات کو ہم تلاوت بھی کریں گے...... ان پر ایمان بھی رکھیں گے لیکن ان سے عقیدہ نہیں بنائیں گے...... اس لئے کہ مراد الٰہی ہم پر ظاہر نہیں ہے۔

## اَللّٰہُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ...... اللہ زمین و آسمان کا نور ہے:

آؤ قرآن کی ایک اور آیت مقدسہ پر بات کرتے ہیں...... کہ اللہ تعالیٰ نے قرآن پاک میں ارشاد فرمایا......

اَللّٰہُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
اللہ زمین و آسمان کا نور

اور پھر فرمایا......

مَثَلُ نُوْرِہٖ كَمِشْكٰوةٍ فِیْهَا مِصْبَاحٌ

اس کے نور کی مثال ایسی جیسے ایک طاق کہ اس میں چراغ ہے

یہاں سب سے پہلے ایک بات ہے کہ اللہ نور ہے یا نہیں...... یقیناً ہمارا ایمان ہے کہ اللہ تعالیٰ نور بے مثال ہے...... تو غور کرنا! کہ:

اللہ کا نور بے مثال
اللہ کا نور لاجواب
اللہ کا نور بے نظیر

یعنی جب ہمارا ایمان ہے کہ اللہ نور ہے...... اور اللہ کا ''نور'' ایسا نور ہے...... کہ جس کی کوئی مثال نہیں...... تو پھر بتاؤ کہ قرآن نے مثال کیسے دے دی...... مَثَلُ نُوْرِہٖ كَمِشْكٰوةٍ فِیْهَا مِصْبَاحٌ؟

ارے ہم کہہ رہے ہیں کہ نور بے مثال...... تو مَثَلُ نُوْرِہٖ...... قرآن دے رہا ہے ''مثال'' تو ہم یقیناً یہی کہیں گے...... کہ مَثَلُ میں جو ظاہر ہے وہ خدا کی مراد نہیں...... اور جو خدا کی مراد ہے وہ اس مَثَلُ میں ظاہر نہیں

تو ثابت ہوا کہ یہ آیت بھی...... آیات متشابہات میں سے ہے...... تو جب یہ بھی متشابہات میں سے ہے تو پھر اس سے بھی عقیدہ نہیں بنا سکتے؟

## 3- نکتہ!

عزیز دوستو! یہ تو میں نے صرف دو ایسی آیات آپ کے سامنے پیش کی ہیں کہ جن کے ظاہر میں جو ہے وہ خدا کی مراد نہیں ہے اور جو خدا کی مراد ہے وہ ان میں ظاہر نہیں ہے...... مثلاً

پہلی آیت مبارکہ...... یَدُ اللّٰہِ فَوْقَ اَیْدِیْھِمْ

دوسری آیت...... مَثَلُ نُوْرِہٖ کَمِشْکٰوۃٍ فِیْھَا مِصْبَاحٌ

اور یہ بھی آپ سب کو یاد ہوگا...... کہ یہ آیات متشابہات میں سے ہیں......

اور آیات متشابہات وہ آیات ہیں کہ جن پر ایمان تو ضروری ہے لیکن ان سے عقیدہ بنانا ضروری نہیں ہے......اور ایک آیت ہے قرآن میں

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُکُمْ

آپ فرمادیجئے کہ میں تمہاری طرح کا بشر ہوں

اور اب یہاں بھی انتہائی غور کرنے کی ضرورت ہے کہ مِّثْلُکُمْ پر دھیان دو...... کہ کس کو کہنا ہے؟

ارے بابا دیکھو نہ کہ جو بات میں ہندوؤں سے کہوں گا...... وہ تم سے کیوں کہوں گا؟......اس لئے کہ تم تو پہلے ہی چھوڑے ہوئے ہو؟

میرے بھائیو!

یہاں بہت ضروری ہے...... یہ جاننا کہ بات کرنے والے کا مخاطب کون ہے؟

تو یہی بات ہم جب کسی مستند عالم دین سے پوچھیں گے تو وہ کہیں گے کہ کیا تم ''تفسیر جلالین'' بھول گئے؟ اس لئے کہ جب تک دو جلال اکٹھے نہ ہوں جمال پیدا ہی نہیں ہوتا۔

تو نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا بَشَرٌ مِّثْلُکُمْ تمہاری طرح کا بشر

ارے غور کرنا ہے کہ نبی صلی اللہ علیہ وسلم کن سے کہہ رہے ہیں کہ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُکُمْ؟

یہ کُمْ کے اندر کون سے لوگ ہیں کہ جن کو کہا جارہا ہے کہ تمہاری

طرح ہوں؟ ارے ہر مکتبہ فکر کا عالم دین آپ کو یہ بتائے گا کہ بھئی یہ بات تو رسول ﷺ نے کافروں سے کہی...... ارے یہاں پر میں تمہاری غیرت ایمانی کو للکارتے ہوئے ایک سوال کرتا ہوں کہ یہ بات تو رسول ﷺ نے کافروں کو کہی تھی ...... تو کیا ہم اس درجے تک گر چکے ہیں ...... کہ:

ہم رسول ﷺ کو ابوجہل کی طرح جانیں؟ معاذ اللہ
ہم رسول ﷺ کو ابولہب کی طرح مانیں؟ معاذ اللہ

تو اگر ایسا نہیں ہوسکتا...... اگر یہاں یہ مقصود نہیں ہے...... تو پھر ماننا پڑے گا...... کہ:

بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ کہہ کر جو خدا نے مراد لیا ہے...... وہ ترجمہ میں ظاہر نہیں اور جو ترجمہ میں ظاہر ہے...... وہ خدا کی مراد نہیں ہے

تو ثابت ہوا کہ یہ آیت مقدسہ بھی ''متشابہہ'' ہے...... اور ہم ثابت کر چکے ہیں کہ آیت متشابہہ سے عقیدہ بنانا جائز نہیں

ارے یہی تو ہمیں آج ایسے لوگوں کی سوچ پر افسوس ہوتا ہے کہ بعض آیات سے عقیدہ بنانا نہیں چاہئے...... انہی آیات سے آج لوگ عقیدہ بنا رہے ہیں تو ثابت ہوا کہ نبی ﷺ ''تمہاری مثل ہیں''...... اس آیت قرآن سے عقیدہ نہیں بنایا جائے گا...... اس پر ایمان رکھا جائے گا...... تو جب اس سے عقیدہ بنانا جائز نہیں تو پھر یہ ماننا پڑے گا...... کہ رسول ﷺ ہماری مثل نہیں ہیں

اللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## عقیدہ کونسی آیات سے بنایا جائے؟

ارے بھائیو یہ بات تو سب کو معلوم ہوگی...... کہ ''آیات متشابہات'' سے عقیدہ نہیں بنایا جائے گا...... تو اب یہ بھی ظاہر ہے کہ یہ بھی بتایا جائے گا...... کہ عقیدہ کن آیات سے بنایا جائے؟ تو آیئے میں مختصر وقت میں آسان لفظوں سے ان آیات کی تعریف بھی عرض کر دیتا ہوں کہ جن سے عقیدہ بنایا جائے گا؟

ارے عقیدہ بنانا ہے...... تو پھر آیات ''محکمات'' سے بناؤ ''آیات محکمات'' وہ آیات بینات ہیں...... کہ ان میں جو ترجمہ میں ظاہر ہو...... وہی خدا کی مراد میں ظاہر ہو...... جس طرح سورۃ اخلاص ہے...... یعنی:

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ○ اللّٰهُ الصَّمَدُ ○ لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُوْلَدْ ○ وَلَمْ یَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ○

اس سورۃ مبارکہ میں جتنی آیات ہیں ان کے ترجمہ میں جو ظاہر ہے وہی خدا کی مراد ہے اور اسی طرح

قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِیْنٌ ○

اس آیت مقدسہ میں بھی جو ظاہر ہے...... وہی خدا کی مراد ہے...... اور جو خدا کی مراد ہے وہی ترجمہ میں بھی ظاہر ہے

### 4۔ نکتہ!

یہاں ایک لطیف نکتہ سماعت کیجئے گا...... کہ عقیدہ ہمیشہ ''آیت محکم'' سے بنایا جائے گا یعنی ایسی آیات مقدسہ کہ جن کے ترجمہ میں جو ظاہر ہو رہا ہو وہی خدا کی مراد ہو...... اور جو خدا کی مراد ہو وہ اس آیت کے ظاہری ترجمہ میں بھی ظاہر ہو؟ یہاں تک تو بات فائنل ہوگی...... تو پھر میں نے دو آیات قرآن سے مثال

کے طور پر بھی تلاوت کر دیں ہیں کہ جو آیات محکمات میں شمار ہوتی ہیں لیکن یہاں پر ایک نکتہ جو عرض کرنا چاہتا ہوں وہ یہ ہے...... کہ

اللہ تعالیٰ نے فرمایا: قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ○

یہ آیت متشابہہ ہے اور آج لوگ ’’آیت محکم‘‘ کو چھوڑ کر آیت متشابہہ سے عقیدہ کیوں بنا رہے ہیں؟ ابھی ہم یہ سوچ ہی رہے تھے...... کہ عشق نے جواب دیا...... اے ہاشمی جس کا عقیدہ ہی محکم نہ ہو...... وہ آیت محکم سے کیا لے گا؟

ایک اور بات سمجھ لو کہ آیت متشابہہ میں جو ظاہر ہے...... وہ خدا کی مراد نہیں ہے...... اور جو خدا کی مراد ہے وہ ترجمہ میں ظاہر نہیں

لیکن یہاں ایک بات بہت ضروری ہے کہ جو صرف علماء کیلئے ہے کہ حکم یہی ہے کہ تمہارے سامنے کوئی آیت متشابہہ آئے تو پھر اس میں ’’تاویل‘‘ کرو ’’تاویل حسن‘‘ کرو...... اور تاویل کرنا بھی یاد رکھو کہ ہر کسی کا کام نہیں ہے...... ’’تاویل حسن‘‘ وہی کرے گا کہ جس کو اللہ نے قرآن و حدیث کا علم عطا فرمایا ہے:

ناسخ و منسوخ کو جاننے والا ہے

خیر وہ بھی جب آیت متشابہہ میں تاویل کرے گا...... تو اس کے لئے بھی ایک حکم ہے کہ...... جب تم تاویل کرو تو اس احتیاط کیساتھ تاویل کرو کہ کسی شان والے کی شان کم نہ ہونے پائے! مثلاً ’’تاویل حسن‘‘ کیسے کی جائے

آیت ہے: یَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَیْدِیْهِمْ ...... تو یہاں تاویل کرتے ہوئے دستِ قدرت کہ دو تو تاویل بھی ہوگی اور شبہ بھی نکل گیا اور

اَللّٰہُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ...... یعنی اللہ زمین وآسمان کو منور کرنے والا ہے

تو ایک بات کہنا چاہتا ہوں کہ آپ اپنے گھروں میں رہتے ہو اور جب رات کو اندھیرا ہو جاتا ہے تو آپ سب اپنے گھروں کو روشن کرتے ہو...... یعنی آپ نے جب اپنے مکان کو روشن کرنا ہوتا ہے تو چراغ جلاتے ہو

تو رب نے جب سارے جہان کو روشن کرنا چاہا تو ''چراغ نبوت'' کو روشن فرمادیا

وَدَاعِیًا اِلَی اللّٰہِ بِاِذْنِہٖ وَسِرَاجًا مُّنِیْرًا

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## 5- نکتہ!

اور اب دیکھئے کہ جب قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُکُمْ آیت متشابہ ثابت ہوگئی...... تو پھر حق ہے...... کہ اس میں بھی ''تاویل حسن'' کرو...... میں عرض کردوں کہ الشیخ عبدالحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ علیہ نے اس آیت مبارکہ کو آیات متشابہات میں شمار فرمایا ہے یہ حوالہ میں نے آپ کے حوالے کردیا تاکہ غیر قانونی حوالے سے بچ جاؤ...... تو خیر اب یہ آیت مقدسہ آیات متشابہات میں سے ہے...... تو پھر اس میں بھی تاویل کرو تو ''تاویل حسن'' کا طریقہ بھی میں پہلے عرض کر چکا ہوں...... کہ اس کے اندر انتہائی احتیاط کی ضرورت ہے...... وہ اس لئے کہ دیکھنا یہ ہے کہ جس کی شان نص سے ثابت ہو...... تاویل کرتے ہوئے اس کی شان میں کمی نہ کی جائے...... خیر یہ ایک اصول اور قاعدہ طے ہوگیا...... تو اب آؤ اس آیت میں تاویل کرو جب

تاویل کرنے کا سوچ ہی رہے تھے میرے ذہن میں کیا آیا کہ اے ہاشمی ہم لوگ اس آیت مبارکہ یعنی...... قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ کی تاویل کیا کریں گے...... تم سے پہلے حضرت امام المفسرین سیدنا عبداللہ ابن عباس رضی اللہ عنہما اس آیت کی تاویل فرما چکے ہیں...... تو بہتر ہوگا کہ صحابیِ رسول کی بیان کردہ تاویل ہی آپ حضرات کے سامنے پیش کردی جائے

حضرت سیدنا عبداللہ ابن عباس رضی اللہ عنہما نے تو دو لفظوں میں ہی کامل تاویل پیش فرمادی ہے لیکن میں ان دو لفظوں کو ذرا وضاحت کیساتھ...... اور مثال کے ساتھ واضح کرتا ہوں...... تاکہ مسئلہ فہمی کا ذوق مزید پیدا ہو جائے:

**مثال:**

میں آپ سے کہتا ہوں کہ اے تمام اس جلسے میں آنے والو! آپکو کیا ہو گیا کہ آپ اتنی گرمی میں...... اتنی تنگ جگہ پر...... ایک ان پڑھ، ایک جاہل کی تقریر سننے آگئے ہو؟

ارے بھئی میں ان پڑھ...... جاہل ہوں تم کیوں اپنی رات مجھے سننے میں گزار رہے ہو...... جاؤ جا کر کوئی اور کام کرو...... مجھ جیسے ناکارہ آدمی کی تقریر سننے سے کوئی فائدہ نہیں ہونے والا؟

اب غور کرنا...... کہ:

میں تو جو اپنے بارے میں بول گیا...... وہ آپ نے سن لیا...... کہ میں نے کہا میں جاہل ہوں...... میں ان پڑھ ہوں...... لیکن جب آپ صبح اپنے ساتھیوں کو ملو گے تو وہ آپ سے کہیں بھئی رات کو تم کہاں تھے؟ میں نے تو پتہ کیا تم رات کو گھر پر نہیں تھے

تو آپ کہیں گے کہ بھئی کیا بتاؤں رات کو میں ایک جلسے میں چلا گیا......وہ بندہ آگے سے سوال کرتا ہے کہ پھر آگے کیا ہوا؟

آپ کہیں یار کیا بتاؤں! کہ رات کو ایک جاہل مولانا کی تقریر سن کر آیا ہوں......تو فوراً آپ کا ساتھی آپ سے سوال کرے گا کہ یہ تم کیا کہہ رہے ہو؟ کہ مولانا جاہل......ارے مولانا بھی کہہ رہے ہو اور جاہل بھی کہہ رہے ہو؟......ارے سنی تو اپنے اسٹیج پر کسی جاہل کو تقریر کرنے ہی نہیں دیتے......وہ جاہل آدمی کیسے وہاں پہنچ گیا؟

تو آپ اس بندے کی تسلی کیلئے آڈیو کیسٹ نکال کر ٹیپ میں لگا کر اس کو سنائیں گے اور کہیں گے......ہاں بھئی میں کوئی جھوٹ تو نہیں بول رہا......ارے بابا اس مولانا نے خود ہی تو خود کو ان پڑھ اور جاہل کہا ہے

یہاں ایک بات بتاؤ کہ میں خود کو ہزار بار ان پڑھ کہوں...... جاہل کہوں کیا تم مجھے ''ان پڑھ'' کہو گے؟ کیا آپ مجھے جاہل کہیں گے؟

نہیں اگر تم نے پوری تقریر سن لی تو پھر نہیں کہو گے......اور جب میں خود کو ''ان پڑھ'' کہوں...... یا میں خود کو جاہل کہوں......تو تم کیا کہو گے؟ کہ ہاشمی میاں خاکساری کر رہے ہیں......ہاشمی میاں کسر نفسی کر رہے ہیں؟ عاجزی میں یہ سب کچھ خود کو کہہ رہے ہیں

تو جب آپ نے اپنے دوست کو وہ کیسٹ سنائی کہ دیکھو مولانا نے خود کو جاہل کہا ہے تو وہ کہے گا ارے جاہل تو تم ہو......مولانا جاہل نہیں ہیں وہ تو عاجزی کر رہے ہیں تو جب میرے نبی ﷺ نے فرمایا:

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ

تو ایمان والو:

سمجھ جانا کہ میرا محبوب عاجزی کر رہا ہے
سمجھ جانا کہ میرا نبی تواضع کر رہا ہے
سمجھ جانا کہ میرا رسول خاکساری کر رہا ہے
اصل میں تمہاری مثل نہیں...... یہ تو عاجزی فرما رہے ہیں
اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## زبان رسول ﷺ سے بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ کیوں کہلوایا؟

دیکھو اگر کوئی بڑے عہدے والا خود کو چھوٹا بتائے تو وہ عاجزی کر رہا ہے...... اور اگر کوئی ہو ہی چھوٹا آدمی...... تو وہ خود کو چھوٹا آدمی کہے تو وہ حقیقت کہہ رہا ہے...... اور جب میرے رسول ﷺ خود کو قُلْ اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ کہہ رہے ہیں تو اب منصب دیکھ کر پھر بتاؤ...... کہ کیا نبی ﷺ جو فرما رہے ہیں...... کیا واقع ہی ایسے ہی ہے...... کہ حضور ﷺ ان لوگوں کی مثل ہیں یا پھر آپ ﷺ عاجزی فرما رہے ہیں؟

تو جواب میں ہر صحیح العقیدہ یہی کہے گا کہ بھئی اس مقام پر تاجدار کائنات عاجزی فرما رہے ہیں ورنہ ہم کہاں...... سید الانبیاء ﷺ کہاں؟

## 6- نکتہ!

آؤ یہاں ایک اور نکتہ پیش کروں تاکہ بات اچھی طرح سے ذہنوں میں بیٹھ جائے کہ اگر کوئی عالم جو واقع ہی عالم ہو اور وہ خود کو ان پڑھ کہے تو وہ عاجزی کر رہا ہے...... اور اگر کسی سے کوئی بڑا اس کو جاہل کہہ دے تو وہ سند بن جاتی ہے...... وہ بات پکی ہو جاتی ہے۔

دیکھئے! عرب کی سرزمین......مکہ کے گلی کوچوں میں رہنے والا......اسلام کا دشمن ابوجہل......آپ جانتے ہو کہ کفار اس کو کیا کہتے تھے؟

کفار اس کو ابوالحکم کہتے تھے حکمت جاننے والا کہتے تھے...... دانا و سمجھدار کہتے تھے......لیکن غور کرنا کہ ایک دن جب میرے نبی ﷺ نے اسے ''ابوجہل'' جہالت کا باپ کہہ دیا تو...... پھر یہ نام ہمیشہ کیلئے اس کا حوالہ بن گیا

تو ثابت ہوا کہ جب کوئی کسی سے بڑا ہو......اور اس کو اچھے طریقے سے ہر حوالے سے جانتا بھی ہو تو وہ کوئی بات اس شخص کے بارے میں کہے گا......تو وہ اس کا حوالہ بن جائے گا......تو وہ اس کی سند بن جائے گی

کہ یہ واقع ہی ایسا ہی ہے......تو اب آؤ نکتہ سنو!

کہ اے میرے اللہ اگر محبوب کو بَشَـر کہنا تھا......تو تو نے خود کیوں نہیں کہا

بلکہ یہاں تو فرمادیا ''قُـلْ'' تم فرمادو...... ''صیغۂ امر''! یعنی اللہ کہہ رہا ہے کہ اے محبوب ﷺ آپ کہہ دو......قُلْ اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُکُمْ

دیکھو تو محبوب ﷺ سے کہلوا دیا......لیکن خود نہیں کہا......آخر حکمت کیا تھی؟

تو عزیزان گرامی!

حکمت یہ تھی......کہ:

اے محبوب میں تمہارا مالک ہوں
اے محبوب میں تمہارا خالق ہوں
اے محبوب میں تمہارا رب ہوں

اے محبوب میں تمہارا اللہ ہوں۔

## اللہ اپنے محبوب کو کیسے بلائے گا؟

اگر میں تمہیں ''بشر'' کہوں گا تو یہ سند بن جائے گی...... تو میں نہیں کہوں گا بلکہ

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ

آپ فرمادو کہ میں تمہاری ہی طرح بشر ہوں

اس لئے کہ میں کہوں گا...... تو وہ سند بن جائے گی...... حقیقت بن جائے گی...... تو سند تو بنانی نہیں ہے...... بلکہ تمہاری عاجزی دکھانا مقصود ہے

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

فرمایا...... اے محبوب ﷺ جب میری باری کہنے کی آئے گی:

جب کہوں گا تو میں...... تجھے ...... قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ کہوں گا

جب کہوں گا تو میں...... تجھے ...... يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ کہوں گا

جب کہوں گا تو میں...... تجھے ...... يٰٓاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ کہوں گا

جب کہوں گا تو میں...... تجھے ...... يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا کہوں گا

جب کہوں گا تو میں...... تجھے ...... وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَ سِرَاجًا مُّنِيْرًا کہوں گا

جب کہوں گا تو میں...... تجھے ...... اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ کہوں گا

جب کہوں گا تو میں...... تجھے ...... وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى کہوں گا

جب کہوں گا تو میں...... تجھے ...... يٰسٓ کہوں گا

جب کہوں گا تو میں...... تجھے ...... وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى کہوں گا

جب کہوں گا تو میں...... تجھے ......وَمَا اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ کہوں گا
جب کہوں گا تو میں...... تجھے ......اَلنَّبِیُّ اَوْلٰی بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ کہوں گا
جب کہوں گا تو میں...... تجھے ......وَالضُّحٰی ○ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰی کہوں گا

میرے پیارے محبوب ﷺ

تمہاری نبوت ہو تو میں بیان کروں
تمہاری رسالت ہو تو میں بیان کروں
تمہاری رفعت ہو تو میں بیان کروں
تمہاری نورانیت ہو تو میں بیان کروں
تمہاری صداقت ہو تو میں بیان کروں
تمہاری عظمت ہو تو میں بیان کروں
تمہاری حکومت ہو تو میں بیان کروں
تمہاری محبت ہو تو میں بیان کروں
تمہاری عزت ہو تو میں بیان کروں
تمہاری شفاعت ہو تو میں بیان کروں
تمہاری سخاوت ہو تو میں بیان کروں
تمہاری قربت ہو تو میں بیان کروں

اے محبوب ﷺ تمہاری......

امامت و خلافت کو
صداقت و شرافت کو

نبوت و رسالت کو
سخاوت و شجاعت کو
عظمت و عصمت کو
اطاعت و شفاعت کو

میں تمہارا رب بیان کروں گا۔

ارے محبوب ﷺ!

یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ میں کہوں گا ..... تا کہ تیری نبوت پر سند رہے
یٰۤاَیُّهَا الرَّسُوْلُ میں کہوں گا ..... تا کہ تیری رسالت پر سند رہے
وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ میں کہوں گا ..... تا کہ تیری رحمت پر سند رہے
وَبِالْمُؤْمِنِیْنَ لَرَءُوْفٌ الرَّحِیْمٌ ..... تا کہ تیرے روف و رحیم ہونے پر سند رہے میں کہوں گا

اے محبوب ﷺ!

تمہیں بلند بتاؤں گا تو میں بتاؤں گا
تمہیں رحیم بتاؤں گا تو میں بتاؤں گا
تمہیں نبی بتاؤں گا تو میں بتاؤں گا
تمہیں رسول بتاؤں گا تو میں بتاؤں گا

لیکن محبوب ﷺ یہاں قُلْ اِنَّمَاۤ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ میں بشریت کے ساتھ مثلیت ہے ..... اس لئے یہاں صرف تم خود ہی بیان کرو گے ..... اپنی بشریت و مثلیت کا ذکر کرو تو تم خود کرو ..... تا کہ لوگوں کو پتہ چل جائے ..... کہ:

مدینے والا...... عاجزی فرما رہا ہے

مدینے والا...... انکساری فرما رہا ہے

مدینے والا...... تواضع فرما رہا ہے

## اَیُّکُمْ مِثْلِیْ ......بھی سرکار ﷺ نے فرمایا ہے:

عزیزانِ گرامی

ابھی تک تو آپ حضرات نے قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُکُمْ تک گفتگو سنی......اب یہاں ایک اور لطیف بات عرض کرنا چاہتا ہوں...... اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُکُمْ

قرآن میں ہے......اور اَیُّکُمْ مِثْلِیْ......تم میں سے میری مثل کون ہے؟

یہ فرمانِ مصطفیٰ ﷺ ہے

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُکُمْ......بھی زبانِ مصطفیٰ ﷺ سے نکلا

اَیُّکُمْ مِثْلِیْ......بھی زبانِ سرکار ﷺ سے نکلا

آیئے تھوڑی وضاحت بھی بیان کردوں

کہ سرکار ﷺ نے صوم وصال...... یعنی وصال کے روزے رکھنے شروع کیے

صوم وصال: یعنی روزہ رکھو......لیکن افطار نہ کرو روزہ رکھو لیکن سحری نہ کھاؤ تو ایسے روز کا آپ کے راولپنڈی میں تو کوئی تصور نہیں ہے

لیکن میرے رسول ﷺ نے اپنے وصال پاک سے پہلے ''صوم وصال'' رکھنے شروع کیے......اب:

نبی ﷺ کی اداؤں پر جان قربان کرنے والے

نبی ﷺ کے اشاروں پر مال قربان کرنے والے
نبی ﷺ کے حکم پر گھر بار قربان کرنے والے

صحابہ کرام رضی اللہ عنہم نے اپنے کریم آقا ﷺ کو جب ''صوم صال'' رکھتے ہوئے دیکھا تو انہوں نے بھی روزے رکھنا شروع کر دیئے ...... تو اب کیا ہوا؟

اٹھتے ہیں ...... تو ......روزوں کا اثر ظاہر ہوتا ہے
بیٹھتے ہیں ...... تو ......روزوں کا اثر ظاہر ہوتا ہے
بولتے ہیں ...... تو ......روزوں کا اثر ظاہر ہوتا ہے
چلتے ہیں ...... تو ......روزوں کا اثر ظاہر ہوتا ہے

تو اب جب سرکار ﷺ نے اپنے غلاموں کی اس کمزوری کو دیکھا تو فرمایا ...... کہ تمہیں کیا ہوا ...... اے مردانِ عرب تم کمزور کیوں نظر آ رہے ہو؟

آگے سے صحابہ کرام رضی اللہ عنہم نے عرض کیا کہ سرکار ﷺ ہم نے آپ ﷺ کی روزوں والی ادا کو اپنایا ہے ...... ہم نے ''صوم وصال'' رکھنا شروع کیئے ہیں

جب کریم آقا ﷺ نے اپنے وفاداروں اور جانثاروں کا جواب سنا ...... کہ یہ تو مجھے دیکھ کر ''صوم وصال'' کے روزوں کی طرح کے روزے رکھ رہے ہیں تو فرمایا:

أَيُّكُمْ مِثْلِي أَبِيتُ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِي۔
تم میں میری مثل کون ہے؟ مجھے میرا رب کھلاتا بھی ہے اور پلاتا بھی ہے

## 7- نکتہ!

یہاں ایک انتہائی اہم بات کہ جس کو میں ''محلِ استدلال'' میں لانا چاہتا ہوں اس پر آپ سب حضرات کی انتہائی توجہ چاہتا ہوں کہ سرکار ﷺ نے فرمایا

مجھے میرا رب کھلاتا بھی ہے اور پلاتا بھی ہے

اور......ہم ہیں کہ!

ہمیں بھی ہمارا رب کھلاتا بھی ہے اور پلاتا بھی ہے

مثال کے طور پر مجھے جب میرا رب کھلاتا اور پلاتا ہے......تو گھر میں میری بیوی دیکھتی ہے......کہ کھا رہا ہے!

گھر میں ہمارا خادم دیکھتا ہے ...... کہ کھا رہا ہے
گھر میں ہمارا بیٹا دیکھتا ہے ...... کہ کھا رہا ہے
گھر میں میری بیٹی دیکھتی ہے ...... کہ کھا رہا ہے
گھر میں میرا مرید دیکھتا ہے ...... کہ کھا رہا ہے

یعنی......کھلاتا اور پلاتا اللہ ہی ہے......لیکن جب میں گھر میں کھاتا اور پیتا ہوں تو......گھر والے دیکھتے ہیں

جب میں گھر سے باہر کھاتا اور پیتا ہوں......تو میرے محلے والے دیکھتے ہیں

لیکن قربان جاؤں ...... کہ میرے آقا ﷺ کو رب اس طرح کھلاتا اور پلاتا ہے

کہ......باہر......صدیق رضی اللہ عنہ نہیں دیکھ سکے!

اور......گھر......صدیقہ رضی اللہ عنہا نہیں دیکھ سکیں!

ارے میں پوچھتا ہوں...... کہ

جس رسول ﷺ...... کا کھانا تم نہیں دیکھ سکے

اس رسول کا...... درجہ تم کیا دیکھو گے؟

ارے...... جس رسول ﷺ کا...... پینا تم نہیں دیکھ سکتے

اس رسول کا...... جینا تم کیا دیکھو گے؟

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

تو نبی ﷺ نے افضل ترین لوگوں کو یعنی صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کو فرمادیا...... کہ:

اَیُّکُمْ مِثْلِیْ...... تم میں سے میری مثل کون ہے؟

صحابہ کرام رضی اللہ عنہم عرض کرتے ہیں...... یا رسول ﷺ ہم نے تو مثلیت کا دعویٰ ہی نہیں کیا...... بات مثلیت کی نہیں ہے بات تو آپ ﷺ سے محبت کی ہے اور ہم نے آپ ﷺ کو روزے رکھتے ہوئے دیکھا تو بس روزے رکھنے شروع کر دیئے...... تو پھر...... سرکار ﷺ نے فرمایا:

مجھے جو کرتا ہوا دیکھتے ہو...... وہ نہ کرو

بلکہ...... جو میں کہتا ہوں...... وہ کیا کرو

اس لئے...... کہ تمہاری انگلی سے...... خون نکلے گا

میری انگلی سے...... پانی نکلے گا

اے صحابہ...... تم فرش زمیں پر چلتے ہو

لیکن میں...... عرش بریں پر چلتا ہوں

اے صحابہ...... تم چاندنی میں رہتے ہو!

لیکن میں...... چاند کے دو ٹکڑے کر دیتا ہوں

تو...... اَیُّکُمْ مِثْلِیْ...... تم میں سے میری مثل کون ہے؟

اب دیکھئے...... میرے رسول ﷺ نے افضل ترین مومنین کی جماعت...... یعنی بعد از انبیاء و رسل سب سے افضل ترین جماعت صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کی جماعت ہے...... اس پر نص قرآن موجود ہے۔

تو افضل ترین مومنین کے سامنے آپ ﷺ نے فرمایا اَیُّکُمْ مِثْلِیْ اور کفار و مشرکین کی جماعت کے سامنے فرمایا...... قُلْ اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُکُمْ

یعنی...... معتبر حدیث صحیح اس پر موجود ہے کہ میرے نبی ﷺ نے مومنین کی افضل ترین جماعت کے سامنے آپ نے اَیُّکُمْ مِثْلِیْ...... فرما کر اپنی مثلیت کا انکار کر دیا ہے...... یعنی

اعلان کر دو مشرکین سے...... اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُکُمْ:

مومنین سے...... اَیُّکُمْ مِثْلِیْ

تو اب مجھے کہنے دیجئے...... کہ:

آج کوئی مومن اپنے نبی ﷺ کو بے مثل مان رہا ہے...... اور کوئی دوسرا نبی ﷺ کی مثل ہونے کا دعویٰ کر رہا ہے...... تو یاد رکھنا کہ اعلان تو دو ہی تھے...... ایک مشرکین سے...... دوسرا مومنین سے

اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُکُمْ کافروں سے...... اَیُّکُمْ مِثْلِیْ غلاموں سے

تو اب جس نے جو سنا ہے...... وہی تو عقیدہ بنا رکھا ہے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## آپ ﷺ نے اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُکُمْ کیوں فرمایا؟

عزیزانِ گرامی

اب یہ بات اس کنارے تک تو آ گی کہ رسول ﷺ نے مشرکین کو فرمایا

اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ

اور پھر بعد از انبیاء افضل ترین مومنین کی جماعت کو فرمایا

اَيُّكُمْ مِثْلِىْ

اب یہاں غور کرنا ہے کہ مشرکین کو مثلیت کا کیوں فرمایا؟

اور مومنین سے...... مثلیت سے انکار کیوں فرمایا

دیکھئے! آج ہم بھی تو امریکہ برطانیہ کو کہہ رہے ہیں کہ ارے ہمارے ملک پر ڈرون حملے بند کرو...... ارے یہ تو سوچو کہ ہم بھی تو تم جیسے ہیں؟

آج ہماری دکانوں کو کیوں جلایا جا رہا ہے؟

آج ہماری جھونپڑی کو کیوں گرایا جا رہا ہے؟

آج ماؤں کی گود کیوں اجاڑی جا رہی ہے؟

آج نوجوان کی جوانی کیوں سلگائی جا رہی ہے؟

آج ہماری جائیداد کیوں چھینی جا رہی ہے؟

آج ہمارے بچوں کو یتیمی کیوں دی جا رہی ہے؟

آج ہماری عبادت گاہوں کو ٹارگٹ کیوں کیا جا رہا ہے؟

آج ہماری درسگاہوں کو بے رونق کیوں کیا جا رہا ہے؟

ارے جس طرح ہم خود پر ظلم کرنے والے اور ناانصافی کرنے والوں کو آج صرف ایک سوال کر رہے ہیں...... کہ:

ہمارے گھروں کو آگ لگانے سے پہلے
سوچو تو...... کہ ہم بھی تو تم جیسے ہیں؟

ہماری دکانوں کو لوٹنے سے پہلے
سوچوتو...... کہ ہم بھی توتم جیسے ہیں؟
ہماری ماؤں کو رولانے والو
سوچوتو...... کہ ہم بھی توتم جیسے ہیں؟
ہماری بیٹیوں کو بیوہ کرنے والو
سوچوتو...... کہ ہم بھی توتم جیسے ہیں؟

## آقا صلی اللہ علیہ وسلم نے حقوقِ انسانی کیلئے آواز اٹھائی:

اسی طرح میرے آقا صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا...... اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُکُمْ
کہ...... مجھے مکہ میں تکالیف دینے والو
انسانیت کے ناطے سوچوتو...... اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُکُمْ
مجھے شعب ابی طالب میں محصور کرنے والو
انسانیت کے ناطے سوچوتو...... اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُکُمْ
مجھ پر نماز کی حالت میں اوجڑی ڈالنے والو
انسانیت کے ناطے سوچوتو...... اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُکُمْ
میرے راہوں میں کوڑا ڈالنے والو
انسانیت کے ناطے سوچوتو...... اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُکُمْ
میرے راستے میں کانٹے بچھانے والو
انسانیت کے ناطے سوچوتو...... اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُکُمْ
مجھے مکہ سے ہجرت پر مجبور کرنے والو
انسانیت کے ناطے سوچوتو...... اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُکُمْ

میرے چاہنے والے بلال و عمار پر ظلم کرنے والو

انسانیت کے ناطے سوچو تو...... اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ

ارے...... مدینے والے نے تو...... مکہ کے کافروں کے ضمیر کو ہلانے کیلئے ان سے انسانیت کے حقوق کے متعلق سوال کیا...... اور اس کیلئے میرے رسول ﷺ نے ان کافروں سے معیارِ انسانیت کے متعلق ان کی سوچ کے متعلق پوچھا...... اور سوال کیا...... کہ اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ...... کہ:

میری راہوں میں کوڑا ڈالنے سے پہلے
میری راہوں میں کانٹے بچھانے سے پہلے
مجھے تکالیف دینے سے پہلے
مجھے بے مقصد کے ستانے سے پہلے

ذرا یہ تو سوچ لو...... کہ:

اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ
میں بھی تو تمہاری طرح بشر ہوں

ارے یہ فرمان رسول ﷺ تو کفار کو لاجواب کرنے کیلئے ہے...... کفار کے ضمیر کو جگانے کیلئے ہے عقیدہ بنانے کیلئے نہیں ہے

اور اگر عقیدہ بنانے والی بات لینی ہے...... تو وہ بھی احادیث کی کتب میں موجود ہے...... اور آقا ﷺ نے ہر وہ بات ارشاد فرمائی ہے...... تا کہ میرے غلام قیامت تک اس کو اپنا عقیدہ بنالیں...... وہ کیا بات ہے؟

یعنی......

صحابہ کرام رضی اللہ عنہم سے فرمایا ...... اَيُّكُمْ مِثْلِي اس سے عقیدہ بناؤ
صحابہ کرام رضی اللہ عنہم سے فرمایا ...... اِنَّكُمْ لَسْتُمْ مِثْلِي اس سے عقیدہ بناؤ
صحابہ کرام رضی اللہ عنہم سے فرمایا ...... لَسْتُ كَاَحَدٍ مِّنْكُمْ اس سے عقیدہ بناؤ
صحابہ کرام رضی اللہ عنہم سے فرمایا ...... اِنِّيْ لَسْتُ مِثْلُكُمْ اس سے عقیدہ بناؤ

ارے یہ وہ فرامین مصطفیٰ ﷺ ہیں جو کہ میرے نبی ﷺ نے اپنے ایمان والے وفادار اور جانثار غلاموں کو ارشاد فرمائے ...... کہ

تم میں سے میرے مثل کوئی نہیں ہے

اب میں یہاں کھلی اجازت دیتا ہوں کہ کوئی بھی ایسی حدیث دکھا دو ...... کہ جس سے یہ ثابت ہو کہ میرے آقا ﷺ کے صحابہ کرام رضی اللہ عنہم نے کبھی بھی آقا ﷺ کو اپنی مثل کہا ہو؟ کبھی آقا ﷺ کی بے مثلیت، کا انکار کیا ہو؟

یقیناً قیامت برپا ہو سکتی ہے ...... سورج مغرب سے طلوع ہو جائے گا ...... لیکن کوئی مولوی ایسی کوئی صحیح حدیث نہیں نکال کر دکھا سکے گا ...... کہ جس میں آقا ﷺ کے غلاموں نے اپنے کریم آقا ﷺ کو اپنی ''مثل'' کہا ہو!

ارے جن کے پاس ایمان نہیں ہے ...... ان کو نبی ﷺ فرما رہے ہیں
اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ
ارے جن کے پاس ایمان ہے ...... ان کو نبی ﷺ فرما رہے ہیں
اَيُّكُمْ مِثْلِيْ

اب بشریت میں مثلیت کا دعویٰ کرنے والے تو نا معلوم کس جماعت

سے تعلق بنا رہے ہیں...... لیکن یہ صاف ظاہر ہے...... کہ نبی ﷺ کو بے مثل ماننے والے!

ابوبکر و عمر رضی اللہ عنہم والا عقیدہ رکھتے ہیں
عثمان و علی رضی اللہ عنہم والا عقیدہ رکھتے ہیں
حسن و حسین رضی اللہ عنہم والا عقیدہ رکھتے ہیں
بلال و سلمان رضی اللہ عنہم والا عقیدہ رکھتے ہیں
حسان وصفوان رضی اللہ عنہم والا عقیدہ رکھتے ہیں
ابن مسعود و ابن عوف رضی اللہ عنہم والا عقیدہ رکھتے ہیں
زید و عبدالرحمٰن رضی اللہ عنہم والا عقیدہ رکھتے ہیں

ارے میرے نبی ﷺ نے خود اعلان فرمادیا

اِنَّکُمْ لَسْتُمْ مِثْلِیْ
تم میرے جیسے نہیں ہو

یعنی......

جس کریم کی اصل تم جیسی نہیں ......وہ تمہاری مثل کیسے؟
جس کریم کی حیات تم جیسی نہیں ......وہ تمہاری مثل کیسے؟
جس کریم کی امامت تم جیسی نہیں ......وہ تمہاری مثل کیسے؟
جس کریم کی حقیقت تم جیسی نہیں ......وہ تمہاری مثل کیسے؟
جس کریم کی طہارت تم جیسی نہیں ......وہ تمہاری مثل کیسے؟
جس کریم کی حکومت تم جیسی نہیں ......وہ تمہاری مثل کیسے؟
اور! جو نبی پاک امام مرسلاں ہو......وہ تمہاری مثل کیسے؟

جو نبی پاک سید سیداں ہو...... وہ تمہاری مثل کیسے؟

فیصلہ تو بریلی شریف کی درسگاہ میں بیٹھے...... معلم عشق و محبت...... امام دین و ملت...... داعی معرفت و سنت...... امام احمد رضا بریلوی رحمۃ اللہ علیہ نے کر دیا ہے...... کہ:

کس کو کہتا ہے بشر ہوش میں آ ذرا ہوش میں آ
میں تو سمجھا کہ اے منکر تیرا ایمان گیا

قُلْ اِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ
وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

* * *

## سرکار صلی اللہ علیہ وسلم کی ذات احسان خداوندی

نَحْمَدُهٗ وَ نَسْتَعِيْنُهٗ وَ نَسْتَغْفِرُهٗ وَ نُؤْمِنُ بِهٖ وَ نَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَ نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَ مِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمٰلِنَا وَ مَنْ يَّهْدِيْهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَ مَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَ نَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَ نَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا مَوْلَانَا وَ حَبِيْبَنَا وَ سِرَاجَنَا وَ اَشْرَفَنَاوَ سَيِّدَنَا مُحَمَّدٍ صلی اللہ علیہ وسلم

اَمَّا بَعْدُ!

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰى فِى الْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ وَ الْفُرْقَانِ الْحَمِيْدِ...... اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا

صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلٰنَا الْعَظِيْمُ

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ط

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ٥

بلند آواز سے ایک مرتبہ اور محمد و آل محمد صلی اللہ علیہ وسلم پر درود پڑھیئے!

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

آپ سب حضرات آئے ہیں...... ماہ ربیع الاول کی صبح صادق بہار کائنات بن کر آنے والے کی باتیں سننے کیلئے......تو میں نے ان کے آنے کے تذکرے چھیڑنے کیلئے قرآن کی آیت مقدسہ تلاوت کی ہے......اور اس آیت مبارکہ کا تعلق بھی میرے رسول ﷺ کے آنے کیساتھ ہے...... اور اگر میں عرش پر جانے کی بات کرتا تو......سُبْحٰنَ الَّذِیْٓ اَسْرٰی بِعَبْدِہٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَی الْمَسْجِدِ الْاَقْصٰی......والی آیت مقدمہ تلاوت کرتا......لیکن آج عرش پر جانے کی بات نہیں کرنی بلکہ آج تو فرش پر آنے کی بات کرنی ہے......تو اللہ تعالیٰ نے قرآن پاک میں ارشاد فرمایا

لَقَدْ مَنَّ اللّٰہُ عَلَی الْمُؤْمِنِیْنَ اِذْ بَعَثَ فِیْهِمْ رَسُوْلًا

تحقیق اللہ نے احسان کیا مومنین پر کہ ان میں اپنا رسول مبعوث کیا

## کسی کو بھیجنے کیلئے تین باتیں ضروری ہیں:

اللہ نے قرآن پاک میں ارشاد فرمایا کہ اللہ نے تمہاری طرف بھیجا......اور ایک آیت مقدسہ میں ارشاد فرمایا......کہ

لَقَدْ مَنَّ اللّٰہُ عَلَی الْمُؤْمِنِیْنَ اِذْ بَعَثَ فِیْهِمْ رَسُوْلًا

اور بھی اس طرح کی دوسری آیات قرآن پاک میں موجود ہیں کہ جن میں اللہ تعالیٰ نے اپنے رسول ﷺ کو بھیجنے کا ذکر فرمایا......تو اب سب سے پہلے یہ بھیجنا جو ہے اس کو سمجھنا ضروری ہے......اور پھر اس کے بعد بات آگے

بڑھائیں گے

دیکھئے! آپ ایک خط کسی جگہ روانہ کرتے ہیں تو اس کے لئے بھی تین باتوں کا ہونا ضروری ہے......

ایک بھیجنے والا

ایک بھیجا ہوا

ایک جس کی طرف بھیجا گیا

یعنی...... یہ تین باتیں اشد ضروری ہوتی ہیں...... کہ اگر بھیجنے والا ہی کوئی نہیں تو کون بھیجے گا؟ اور دوسری طرف اگر بھیجنے کیلئے ہی کچھ نہیں تو کیا بھیجے گا؟ اور تیسری بات بھی بہت اہم ہے کہ جس کی طرف بھیجا گیا ہے وہ ہی نہیں ہے...... تو کس کی طرف بھیجو گے؟

تو اب آیئے اپنے موضوع کی طرف کہ اللہ تعالیٰ نے اپنے رسول ﷺ کو بھیجا...... تو بھیجنے والی اللہ تعالیٰ کی ذات ہوئی...... اور اپنے رسول ﷺ کو بھیجا تو آنے والی رسول ﷺ کی ذات ہوئی...... اور تیسرا مومنوں کی طرف بھیجا

اللہ...... بھیجنے والا ہے

رسول ﷺ...... آنے والے ہیں

اور مومنین کی طرف رسول ﷺ تشریف لائے

تو اب ذرا غور کرنا...... کہ رسول ﷺ کی ذات مبارکہ درمیان میں ہے اُدھر اللہ کی طرف بھی رابطہ ہے اور اِدھر مخلوق کی طرف بھی رابطہ ہے......

آپ اپنی درمیان والے ہاتھ کی تین انگلیوں کی طرف دیکھیں کہ جو انگلی درمیان والی ہے...... اس کا ہر وقت اوپر والی سے بھی رابطہ ہے اور نیچے والی سے بھی رابطہ

ہے تو...... پھر

اللہ نے......

بندوں کو ایمان دینے کیلئے ......درمیان والا بھیجا
بندوں کو مسلمان بنانے کیلئے ......درمیان والا بھیجا
بندوں کو اخلاق سکھانے کیلئے ......درمیان والا بھیجا
بندوں کو اعمال سکھانے کیلئے ......درمیان والا بھیجا
بندوں کو نماز سکھانے کیلئے ......درمیان والا بھیجا
بندوں کو حج سکھانے کیلئے ......درمیان والا بھیجا
بندوں کو روزہ بتانے کیلئے ......درمیان والا بھیجا
کعبہ کو کعبہ بنانے کیلئے...... درمیان والا بھیجا
بندوں کو مولا سے ملانے کیلئے ...... درمیان والا بھیجا

تو اللہ نے سب کچھ اپنے بندوں کو دینا چاہا تو درمیان میں اپنے رسول ﷺ کو رکھا...... کہ اے حبیب ﷺ تمہارا ہر وقت مخلوق سے بھی رابطہ رہے......اور خالق سے بھی رابطہ رہے

تاکہ بندوں کو معلوم ہو جائے...... کہ اللہ تعالیٰ جو کچھ بھی ہمیں دے رہا ہے ......وہ رسول ﷺ کے واسطے سے دے رہا ہے

اللہ نے اپنے حبیب ﷺ کو اس لئے درمیان میں رکھا...... کہ اے حبیب ﷺ

آپ خدا سے لو......اور بندوں کو دو
آپ خدا سے سیکھو......اور بندوں کو سکھاؤ

آپ خدا سے پڑھو ......اور بندوں کو پڑھاؤ

آپ خدا سے لیتے رہو ......اور بندوں کو دیتے رہو

آپ خدا سے قرآن لو ......اور بندوں کو قرآن دو

آپ خدا سے شریعت لو ......اور بندوں کو شریعت دو

آپ خدا سے طریقت لو ......اور بندوں کو طریقت دو

آپ خدا سے معرفت لو ......اور بندوں کو معرفت دو

آپ خدا سے قانون لو ......اور بندوں کو قانون دو

آپ خدا سے اصول لو ......اور بندوں کو اصول دو

آپ خدا سے دستور حیات لو ......اور بندوں کو دستور حیات دو

آپ خدا سے نظام زندگی لو ......اور بندوں کو نظام زندگی دو

آپ خدا سے نظام معاشرت لو ......اور بندوں کو نظام معاشرت دو

اللہ نے نبی ﷺ کو اپنے اور اپنی مخلوق کے درمیان واسطہ بنا کر...... یہ بتا دیا کہ اے مصطفی ﷺ آپ کو جو چاہئے...... وہ خدا سے لیتے رہو

اور اے میرے بندو! تمہیں جو چاہئے وہ اس رسول سے لیتے رہو؟

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## جو درمیان میں ہوتا ہے...... منفرد ہوتا ہے:

یہ بات تو ثابت ہو گی کہ اللہ تعالیٰ نے کچھ بھی بغیر واسطے کے نہیں دیا...... جو کچھ بھی دیا ہے وہ درمیان والے کے واسطے اور وسیلے کے ذریعے سے دیا ہے

اور ایک بات یہاں پر عرض کرنا چاہتا ہوں...... کہ جو کوئی درمیان میں ہوتا

ہے اس میں ایک اعلیٰ کوالٹی ہوتی ہے...... اس کی حیثیت میں ایک انفرادیت ہوتی ہے...... یعنی

جو درمیان میں ہوتا ہے
وہ اوپر والے جیسا بھی نہیں ہوتا
اور ...... نیچے والوں جیسا بھی نہیں ہوتا

یعنی...... آقا ﷺ کی ذات پاک خالق اور اس کی مخلوق کے درمیان میں وسیلہ ہے...... اب جو مصطفیٰ ﷺ کو خدا کے برابر سمجھے وہ بھی گمراہ ہے

جو مصطفیٰ ﷺ کو بندوں کے برابر سمجھے...... وہ بھی گمراہ ہے

اور پھر ایک اور مزے کی بات بتاؤں؟ کہ

یہ جو آپ کے ہاتھ کی سامنے والی تین انگلیاں ہیں ان میں جو درمیان والی ہے اس کا اوپر بھی رابطہ ہے اور نیچے بھی رابطہ ہے...... میں یہاں ایک بات عرض کرنا چاہتا ہوں...... کہ

درمیان والی انگلی اوپر والی انگلی سے جب چاہے مل جائے...... کوئی رکاوٹ نہیں ہے...... لیکن نیچے والی انگلی ڈائریکٹ اوپر والی سے ملنا چاہے...... تو وہ نیچے سے اوپر والی سے نہیں مل سکتی...... تو اللہ تعالیٰ نے اپنے رسول ﷺ کو اپنی ذات اور اپنے بندوں کے درمیان واسطہ بنایا تاکہ اے حبیب ﷺ تم جب چاہو مجھ سے مل لو...... لیکن میری مخلوق اگر میرا قرب حاصل کرنا چاہے تو وہ اس وقت تک میرا قرب وصول نہیں کر سکتی...... کہ:

جب تک تم سے رابطہ نہ بنا لے
جب تک تم سے واسطہ نہ بنا لے

جب تک تم سے وسیلہ نہ بنا لے

اگر خدا کا قرب چاہتے ہو تو...... تو پھر مصطفیٰ ﷺ کا قرب پہلے ضروری ہے

## اللہ کا مومنوں پر احسان:

اللہ نے اپنے رسول کو ایسا قرب دیا...... کہ اب جو اس رسول ﷺ کی تابعداری کرے گا...... محبوب ﷺ کی غلامی اختیار کرے گا...... وہ بھی اللہ کے قرب کی لذتیں پائے گا...... وہ بھی عنایت خداوندی کی لطافتیں حاصل کرے گا

اب اسی ذات پاک کو اللہ تعالیٰ نے مومنوں پر احسان قرار دیا ہے ...... دیکھئے!

اللہ کا احسان ...... تو یہ ہماری آنکھیں بھی ہیں
اللہ کا احسان ...... تو یہ ہمارے ہاتھ بھی ہیں
اللہ کا احسان ...... تو یہ ہماری روح بھی ہے
اللہ کا احسان ...... تو یہ ہماری جان بھی ہے
اللہ کا احسان ...... تو یہ اسلام بھی ہے
اللہ کا احسان ...... تو یہ قرآن بھی ہے
اللہ کا احسان ...... تو یہ آسمان بھی ہے
اللہ کا احسان ...... تو یہ زمین بھی ہے
اللہ کا احسان ...... تو یہ پانی بھی ہے
اللہ کا احسان تو یہ حلال روزی بھی ہے
اللہ کا احسان تو یہ ہماری بندگی بھی ہے

لیکن قربان جاؤں ...... اللہ کی حکمتوں پر کہ جب یہ ہمیں سب کچھ عطا

کیا تو کسی ایک پر بھی احسان کا لفظ نہیں بولتا...... یعنی اللہ نے ہمیں سب کچھ عطا کیا لیکن احسان نہیں جتایا...... لیکن جب ہم میں اپنا رسول مبعوث کیا تو پھر فرما رہا ہے

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا

تو ثابت ہوا...... کہ اللہ کی نظر میں یہ ہماری روح اور ہماری جان احسان نہیں ہے...... اللہ کی نظر میں

جان کائنات کی ذات احسان الٰہی ہے
بہار کائنات کی ذات احسان الٰہی ہے
حسن کائنات کی ذات احسان الٰہی ہے
روح کائنات کی ذات احسان الٰہی ہے

ہماری روح کو احسان قرار نہیں دیا...... ہماری جان کو احسان قرار نہیں دیا...... اس لئے کہ ہماری روح کی روح بھی ذات مصطفیٰ ﷺ ہیں...... اور ہماری جان کی جان بھی رسول ﷺ کی ذات پاک ہے...... تو اس لئے فرمایا

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا

## میلاد النبی ﷺ کی برکات:

دیکھو اللہ تعالیٰ نے ہمیں ہر طرح کی نعمتیں عطا فرمائی ہیں...... لیکن کسی ایک نعمت پر بھی یہ نہیں فرمایا...... کہ لو:

اب تم مومن بن گے ...... یہ تم پر احسان ہوا
اب تم مسلمان بن گئے ...... یہ تم پر احسان ہوا

اس کے بعد دنیاوی عہدوں کی طرف دیکھ لو!

یہ نہیں فرمایا...... کہ:

اب تم نمازی بن گئے ...... یہ تم پر میرا احسان ہوا
اب تم حاجی بن گئے ...... یہ تم پر میرا احسان ہوا
اب تم غازی بن گئے ...... یہ تم پر میرا احسان ہوا
اب تم مجاہد بن گئے ...... یہ تم پر میرا احسان ہوا
اب تم سپہ سالار بن گئے ...... یہ تم پر میرا احسان ہوا
اب تم باکردار بن گئے ...... یہ تم پر میرا احسان ہوا

لیکن آؤ دیکھو...... جب اللہ نے...... آمد مصطفیٰ ﷺ کا ذکر فرمایا

تو پھر فرمایا...... لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ

جب اللہ نے...... بعثت مصطفیٰ ﷺ کا ذکر فرمایا

تو پھر فرمایا...... لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا

یعنی اللہ تعالیٰ نے ذات مصطفیٰ ﷺ کو احسان قرار دیا ...... اور آمد مصطفیٰ ﷺ کو احسان قرار دیا...... یعنی میلاد مصطفیٰ ﷺ کو احسان قرار دیا۔

## 1- نکتہ!

اب جب اس آیت مقدسہ کے مبارک الفاظ پر غور کیا تو معلوم ہوا کہ اللہ تعالیٰ نے تو اس احسان والی آیت مقدسہ میں میلاد مصطفیٰ ﷺ کا ذکر کیا ہے......

ارے بعثت کا ذکر ہے تو یہی تو میلاد شریف ہے۔

تو اب پھر ایک مرتبہ اس آیت مقدسہ کے الفاظ پر غور کرنا ہوگا...... کہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا

کہ..... اللہ تعالیٰ نے مومنین پر احسان فرمایا ہے:

تو اللہ تعالیٰ فرماتا ہے کہ میں نے مومنین پر یہ احسان کیا ہے..... بھئی دیکھو تو آج جب ہم دیکھتے ہیں کہ لوگ میلاد مصطفیٰ ﷺ پر اعتراض بھی کر رہے ہیں..... اور اس کو بدعت بھی بتا رہے ہیں..... اور کھل کھلا کر اس کی مخالفت بھی کر رہے ہیں تو پھر..... مجھے یہ نکتہ سمجھ میں آیا..... کہ:

جن میں رسول آئے ہیں
جن پر احسان ہوا ہے

وہ تو مومنین ہیں..... یہ شرط ہم نے نہیں لگائی بلکہ یہ مومنین کا خاص طور پر ذکر اللہ تعالیٰ نے خود قرآن میں کیا ہے..... کہ

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا
تحقیق اللہ نے احسان فرمایا مومنین پر

غور کرنا کہ یہ نہیں فرمایا!

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى النَّاسِ
کہ..... تحقیق اللہ نے احسان کیا لوگوں پر

نہیں..... النّاس نہیں فرمایا بلکہ ''مومنین'' کا ذکر کیا ہے..... کہ یہ آمد مصطفیٰ ﷺ کا ذکر مومنین سے کیا جا رہا ہے..... ارے آج مومنین ہی تو میلاد مصطفیٰ ﷺ کو مان رہے ہیں؟..... اب جو انکار کرتا ہے تو وہ کرتا رہے..... اللہ نے ان کو کب کہا ہے..... اللہ نے تو مومنین کو کہا ہے

آج مومنین ..... ہی میلاد مصطفیٰ ﷺ مناتے ہوئے نظر آ رہے ہیں
آج مومنین ..... ہی میلاد مصطفیٰ ﷺ کی محفل کرواتے ہوئے نظر آ رہے ہیں

آج مومنین ......ہی بارہ ربیع الاول کو بازار سجا رہے ہیں

آج مومنین ......ہی بارہ ربیع الاول کو جلوس نکال رہے ہیں

آج مومنین ......ہی گلی گلی یا رسول یا رسول کے نعرے لگا رہے ہیں

آج مومنین ......ہی نگر نگر آمد سرکار ﷺ کی دھوم مچا رہے ہیں

ارے حق بھی تو ان کا ہی بنتا ہے......اس لئے کہ قرآن نے بھی تو مومنین سے فرمایا ہے......کہ

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## اللہ نے احسان کیوں جتایا؟

جب ہم دیکھتے ہیں کہ قرآن پاک میں ہمیں اپنے آقا ﷺ کی آمد پاک اور بعثت مبارکہ کے متعلق ہی یہ الفاظ ملتے ہیں

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا

تحقیق اللہ نے مومنین پر احسان کیا کہ ان میں اپنا رسول بھیجا

تو رسول ﷺ سے پہلے بھی تو انبیاء کرام علیہم السلام تشریف لاتے رہے ہیں

......پہلے بھی تو بہت سارے مرسلین علیہم السلام اس دنیا پر انسانیت کی ہدایت و رہنمائی کیلئے تشریف لائے ہیں! ......لیکن کسی کی آمد پر احسان نہیں فرمایا:

حضرت آدم علیہ السلام کے بعد ...... شیث علیہ السلام آئے
لیکن احسان نہیں فرمایا

حضرت ابراہیم علیہ السلام کے بعد ...... اسحاق و اسماعیل علیہ السلام آئے
لیکن احسان نہیں فرمایا

حضرت یعقوب علیہ السلام کے بعد ...... یوسف علیہ السلام آئے
لیکن احسان نہیں فرمایا
حضرت ذکریا علیہ السلام کے بعد ...... یحییٰ علیہ السلام آئے
لیکن احسان نہیں فرمایا

یہ تو ان نبیوں کی بات تھی کہ جن کو اللہ تعالیٰ نے بے مثال اولاد بصورت انبیاء عطا فرمائی...... لیکن ان میں سے کسی کے لئے احسان نہیں فرمایا اور پھر اقوام عالم کے پاس بھی ہدایت کے لئے انبیاء علیہم السلام آئے...... یعنی

قوم عاد کے پاس بھی نبی آئے ...... لیکن احسان نہیں فرمایا
قوم ثمود کے پاس بھی نبی آئے ...... لیکن احسان نہیں فرمایا
قوم ہود کے پاس بھی نبی آئے ...... لیکن احسان نہیں فرمایا
قوم صالح کے پاس بھی نبی آئے ...... لیکن احسان نہیں فرمایا
قوم یونس کے پاس بھی نبی آئے ...... لیکن احسان نہیں فرمایا
قوم لوط کے پاس بھی نبی آئے ...... لیکن احسان نہیں فرمایا
قوم نوح کے پاس بھی نبی آئے ...... لیکن احسان نہیں فرمایا

یعنی پہلے کسی کے لئے بھی احسان کا لفظ استعمال نہیں فرمایا...... خوشخبریاں دی جاتی رہی ہیں...... بشارتیں ملتی رہی ہیں...... ہدایت و رہنمائی کے تذکرے ہوتے رہے ہیں...... لیکن تاریخ گواہ ہے کہ پہلے کسی کے لئے احسان کا ذکر نہیں فرمایا

لیکن امت محمدی کے لئے جب محمد مصطفی ﷺ کی آمد کا ذکر فرمایا تو مومنین پر احسان خداوندی کا ذکر ساتھ فرمایا...... آخر کیوں؟

## 2- نکتہ!

دیکھئے...... اگر کوئی کسی ضرورت مند کو کپڑا دے...... یا روٹی دے تو یہ عنایت ضرور ہے...... لیکن اگر کوئی کسی کیلئے جان دے تو کہا جاتا ہے کہ فلاں نے اس کو بچانے کیلئے اپنی جان دے دی ہے...... اس جان کے دینے کو احسان مانا جاتا ہے

یعنی روٹی باہر کی چیز ہے...... کپڑا باہر کی چیز ہے...... لیکن جان ایک انسان کیلئے بہت قیمتی چیز ہے...... اس لئے کہ یہ اندر کی چیز ہے اور اگر یہ اندر کی چیز چلی گی تو پھر اس کے پاس اور کوئی چیز ایسی قیمتی نہیں رہے گی اس لئے اس جان کے دینے کو احسان کہا جاتا ہے...... بلاتشبیہ و بلا تمثیل!

دوسرے انبیاء و مرسل بھی تو اللہ تعالیٰ نے مبعوث فرمائے...... لیکن احسان نہیں جتایا...... لیکن جب وہ نبے مثال دیا:

جو اس کا نور ہے
جو اس کی پہچان ہے
جو اس کا مقرب ہے
جو اس کا خاص ہے
جو اس کا پیارا ہے
جو اس کا محبوب ہے
جس کو اللہ نے قربِ خاص میں رکھا تھا
جس کو اللہ نے بنا کر دیکھنے کیلئے رکھا تھا
جس کو بنا کر اللہ نے قدرت کے حجاب میں رکھا تھا

جس کو بنا کر اللہ نے رحمت کے حجاب میں رکھا تھا

اب اس سے زیادہ معتبر اور قیمتی چیز اور کوئی نہیں تھی تو جب خالق نے اپنے مومنین بندوں کو:

وہ اپنا پیارا عطا کر دیا
وہ اپنا مقرب عطا کر دیا
وہ اپنا خاص عطا کر دیا
وہ اپنا محبوب عطا کر دیا

تو پھر فرمایا...... کہ:

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## کائنات سجائی گئی...... حضور ﷺ کیلئے:

اب دیکھئے جس طرح سے ایک مکان بنانے والا بڑی محبت و لگن سے ایک مکان تیار کرے...... لیکن پھر اس کو خیال آئے گا کہ ابھی تو ڈھانچہ کھڑا ہوا ہے ابھی اس کو مزید سجانے کی ضرورت ہے...... پھر اس مکان کی خوبصورتی میں اضافے کیلئے اس کو طرح طرح کے کلروں سے سجایا جاتا ہے...... اس کے اندر کو لائٹوں سے روشن کیا جاتا ہے...... اس کے صحن کو دلکش پودوں سے زیبائی دی جاتی ہے...... تو پھر جب کسی کو کہا جاتا ہے کہ آؤ اب اس میں یہ سب تمہارے لئے بنایا گیا ہے تو پھر اس میں مکان بنانے والے کا خلوص بھی نظر آ رہا ہوتا ہے ...... اس کی محبت بھی ثابت ہو رہی ہوتی ہے

لیکن قربان جاؤں

جب اس زمین کے سینے کو سنوار دیا گیا...... جب زمین کو پہاڑوں سے مضبوط بنا دیا گیا

جب غاروں کو محفوظ بنا دیا گیا
جب دریاؤں کو روانی دے دی گئی
جب سمندروں کو طغیانی دے دی گئی
جب درختوں کو بلند قامتی دے دی گئی
جب پودوں کو جوانی دے دی گئی
جب پھولوں کو خوشبو کا حسن دے دیا
جب پھلوں کو ذائقہ ومٹھاس دے دیا
جب کلیوں کو شبنم دے دیا گیا
جب کھیتوں کو ہریالی دے دی گئی
جب باغات کو خوبصورتی دے دی گئی

تو پھر اللہ نے فرمایا کہ اے محبوب آؤ اب اس مکان کو بھی آ کر دیکھو...... جس کو ہم نے تیری خاطر سجایا ہے...... اور اب اس زمین پر آ کر اس کو اَوَّلُ مَا خَلَقَ اللّٰہُ نُوْرِیْ...... کے نور سے منور کر دو!

اور جن کی طرف آپ تشریف لائے...... ان تمام میں سے ایک جماعت کا ذکر فرما دیا...... کہ محبوب ﷺ کا استقبال صرف مومنین ہی کریں...... تو فرمایا: کہ

لَقَدْ مَنَّ اللّٰہُ عَلَی الْمُؤْمِنِیْنَ اِذْ بَعَثَ فِیْهِمْ رَسُوْلًا

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

## نُوْرَ نَبِیِّكَ مِنْ نُّوْرِہٖ کی وضاحت:

رسول اللہ ﷺ نے اپنا سب سے پہلا جو تعارف کروایا...... وہ نور خدا ہونے کے حوالے سے کروایا جبکہ کوئی بھی اس دنیا ارض وسما میں نہیں تھا...... بلکہ ارض وسما کا وجود بھی نہیں تھا...... سرکار ﷺ سے سوال کیا گیا...... کہ یا رسول اللہ ﷺ سب سے پہلے کس کو پیدا کیا گیا...... تو جواب میرے رسول ﷺ کی زبان اقدس سے سنیئے...... آپ ﷺ نے فرمایا

اِنَّ اللّٰہَ تَعَالٰی خَلَقَ قَبْلَ الْاَشْیَاءِ نُوْرَ نَبِیِّكَ مِنْ نُّوْرِہٖ

اللہ تعالیٰ نے سب سے پہلے تیرے نبی کے نور کو اپنے نور سے پیدا فرمایا

معلوم ہوا کہ جب اللہ کے سوا کسی کا بھی حوالہ موجود نہیں ملتا...... اس وقت بھی میرے رسول ﷺ کے نور کا حوالہ موجود تھا۔

## 3- نکتہ!

اب ایک بات یہاں بہت ضروری ہے...... وہ یہ بات ہے کہ جو لوگ رسول ﷺ کو اللہ کا نور مان رہے ہیں وہ کیسے مان رہے ہیں؟ اور جو لوگ انکار کر رہے ہیں وہ کس دلیل سے انکار کر رہے ہیں؟...... یہاں پر یہ دونوں باتیں وضاحت سے بیان کرنا انتہائی ضروری ہیں۔

سب سے پہلے ان لوگوں کی بات کرتا ہوں کہ جو رسول ﷺ کو نور خدا نہیں مانتے...... کیا وجہ؟

یعنی آقا ﷺ کے نور خدا ہونے پر اعتراض کرنے والے اور

اس صفت نوری کا انکار کرنے والے کہتے ہیں کہ جب آقا ﷺ کو اللہ کا نور تسلیم کرلیا تو پھر اس پر ثابت ہوا کہ، اللہ کا نور کم ہو گیا...... یعنی نور کوئی میٹریل نہیں ہے کہ اس سے کوئی دوسری چیز بن سکے!......

لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه

## اعتراض کا جواب:

دیکھئے یہ بات تو تب کی جائے کہ جب اللہ کے نور کو کوئی چیز مانا جائے...... یعنی مجھے یہاں یہ کہنا ہے کہ میرا رب کوئی چیز نہیں ہے...... اور نہ ہی اس کی تمام صفات میں سے کوئی صفت جز ہے...... بلکہ وہ تو کل سے بھی پاک ہے

ہاں! ہاں اللہ کے نور کو نہ جز کہہ سکتے ہو...... اور نہ ہی کل کہہ سکتے ہو!...... وہ اس لئے کہ وہ خلاق عالم تو جز کا بھی خالق ہے...... اور کل کا بھی خالق ہے...... اور خود نہ کوئی جز ہے اور نہ کل ہے...... اور جز اس لئے نہیں ہے کہ اگر اس کو جز مان لیں تو جز کی ترکیب ہوگی اور جس کی ترکیب ہو وہاں حدوث بھی ہوگا...... اور اگر حدوث مان لیا جائے تو یہ اللہ کی لازوال ذاتی صفت کے خلاف ہوگا...... اور اسی طرح کل کا بھی حکم ہے!

تو اس لئے میرا خدا جز سے بھی پاک ہے اور کل سے بھی پاک ہے!
اور جز کی تقسیم بھی تم بنا رہے ہو اور کل کی حد بھی تم مقرر کر رہے ہو؟
آؤ دیکھو!

اب کل کس کو کہتے ہیں؟ یعنی بہت سارے اجزا کو یکجا کیا جائے...... بہت سارے جزوں کو اکٹھا کیا جائے تو پھر کل بنتا ہے...... یعنی اگر خدا کی ذات کو یا

اس کی کسی صفت کو کل مانو گے تو پھر اس سے پہلے اس کے جز بھی مانو گے...... تو تم بتاؤ کہ کیا خدا کی جز ہو سکتی ہے؟

تو اس لئے ہم کہتے ہیں کہ اللہ کی ذات کیلئے جز کا لفظ نہیں بولا جائے گا...... اس لئے کہ وہ تو جز کا بھی خالق ہے...... اور کل کا بھی خالق ہے

جب یہ بات ثابت ہو گی تو اب یہ عقیدہ غلط ثابت ہوا کہ اگر کوئی یہ کہے کہ نور محمدی ﷺ کا جز ہے تو یہ صحیح نہیں ہے ...... بلکہ صرف گمراہی ہی گمراہی ہے

آیئے اب اس کی وضاحت بھی کر دوں کہ ہم اہلسنت و جماعت والے سنی آقا ﷺ کو اللہ کا نور کیسے مانتے ہیں؟

ہمارا عقیدہ یہ ہرگز نہیں کہ اللہ کے نور سے نور جدا ہو کر پھر نور مصطفیٰ ﷺ وجود میں آیا...... نہیں نہیں ہمارا یہ عقیدہ ہرگز ہرگز نہیں ہے...... بلکہ ہمارا عقیدہ یہ ہے!

کہ اللہ تعالیٰ کے نور ذاتی کی تجلی سے نور مصطفیٰ ﷺ وجود میں آیا اللہ کے نور کے فیض سے نور مصطفیٰ ﷺ وجود میں آیا

**بلاتشبیہ**

اب دیکھئے کہ جس طرح آسمان پر سورج دن کو روشن ہوتا ہے اور آپ زمین پر اپنے گھر کی چھت پر ایک شیشہ یعنی آئینہ رکھیں...... تو آپ کو آسمان والا سورج مکمل اس شیشے میں نظر آئے گا...... اور اسی طرح ایک شیشے سے زیادہ اگر آپ ہزاروں شیشے بھی چھت پر رکھ دیں اور علیحدہ علیحدہ سب کو دیکھیں تو آپ کو سب میں سورج کا عکس نظر آئے گا۔

اب بتاؤ کہ

اب بتاؤ کہ...... وہ شیشہ جو ہے ...... کیا سورج کا جز بن گیا ہے؟

〃 وہ شیشہ جو ہے ...... کیا سورج کا حصہ بن گیا ہے؟

وہ شیشہ جو ہے ...... کیا سورج بن گیا ہے؟

نہیں کوئی بھی صاحب عقل یہ نہیں کہے گا ...... کہ وہ شیشہ سورج کا حصہ بن گیا ہے
یا کوئی شعور اور علم رکھنے والا یہ نہیں کہے گا ...... کہ وہ سورج کی روشنی اب کم ہوگئی ہے

بلکہ یہ کہا جائے گا کہ یہ شیشہ سورج کی روشنی کا مظہر بن گیا ہے...... یہ اس کی روشنی کے فیض سے اس کا عکس بن گیا ہے۔

دیکھئے!

نہ ہی تو شیشہ سورج کا جز بنا ہے
نہ ہی تو شیشہ سورج کا حصہ بنا ہے
نہ ہی تو شیشہ سورج کی روشنی میں کمی کرنے والا بنا ہے

بلکہ سورج کی روشنی اس کو اپنے فیض سے روشن کر رہی ہے...... اس کو چمکا رہی ہے اور اس میں سورج نظر آرہا ہے...... وہ شیشہ خود سورج نہیں بنا...... اور آقا ﷺ کو ہم جو اللہ کے نور سے مانتے ہیں یہ عقیدہ حدیث سے بنایا ہے...... اور بلاتشبیہ عرض کر رہا ہوں...... کہ:

آقا ﷺ نے فرمایا

اِنَّ اللّٰہ تعَالٰی خلَقَ قبْلَ الْاَشْیاءِ نُوْرَنَبِیّكَ مِنْ نُوْرِہٖ

بے شک اللہ نے تیرے نبی کے نور کو اپنے نور سے خلق کیا

یعنی...... رسول اللہ ﷺ کی ذات پاک صفات الٰہی کی مظہر ہے...... اللہ

نے اپنے نور کے فیض سے نور محمدی کو پیدا فرمایا...... اپنے نور کے عکس سے نور مصطفیٰ ﷺ کو وجود بخشا

اب اللہ کا نور کوئی جز نہیں بنا...... کوئی کم نہیں ہوا...... کوئی مخلوق نہیں بنا...... کوئی میٹریل نہیں بنا...... بلکہ اللہ کا نور اپنی شان کے لائق جتنا ہے وہ اللہ ہی جانتا ہے...... اور وہ پورے کا پورا ہے ..... لیکن آقا ﷺ کی ذات پاک اس نور کا مظہر ہے...... اسی لئے ہم آقا ﷺ کو نور خدا کہتے ہیں یعنی ...... رسول ﷺ کی ذات پاک جمال حق کا ایسا بے مثال اور لاجواب آئینہ ہے...... کہ ایک آئینے میں جو سورج کا نور نظر آئے گا وہ شیشے کا نہیں بلکہ سورج کا نور ہوگا ...... اس لئے کہ اصل نور سورج کا ہے...... اصل روشنی سورج کی ہے آئینہ تو اس نور کا مظہر ہے۔

اب رسول اللہ ﷺ میں جو نور نظر آرہا ہے...... وہ نور خدا کا ہے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## نور مصطفیٰ ﷺ سب سے پہلے خلق کرنے میں حکمت:

ابھی کوئی مکان بنا نہیں ہے ...... لیکن مکان والے کو پہلے پیدا کیا گیا
ابھی کوئی رسول آیا نہیں ہے ...... لیکن امام مرسلاں کو پہلے پیدا کیا گیا
ابھی کوئی نبی آیا نہیں ہے ...... لیکن امام الانبیاء کو پہلے پیدا کیا گیا

اس دنیا میں ہم دیکھتے ہیں...... کہ جب کسی کیلئے کوئی مکان تیار کیا جاتا ہے تو پہلے وہ مکان والا موجود ہوتا ہے...... مکان بعد میں بنتا ہے...... تو جس کے صدقے سے پوری کائنات وجود میں آنے والی ہے:

جس کے صدقے میں ......نبیوں کو نبوت ملنے والی ہے
جس کے صدقے میں ......رسولوں کو رسالت ملنے والی ہے
جس کے صدقے میں ......اماموں کو امامت ملنے والی ہے
جس کے صدقے میں ......صدیقوں کو صداقت ملنے والی ہے
جس کے صدقے میں ......شہیدوں کو شہادت ملنے والی ہے
جس کے صدقے میں ......حکیموں کو حکمت ملنے والی ہے
جس کے صدقے میں ...... فصیح کو فصاحت ملنے والی ہے
جس کے صدقے میں ......بلیغ کو بلاغت ملنے والی ہے
جس کے صدقے میں ......خیرامت کو خیرات ملنے والی ہے

سب سے پہلے اس ہستی پاک کو وجود بخشا گیا...... باقی پوری کائنات کو آپ ﷺ کے صدقے سے:

وجود بخشا گیا ...... حسن بخشا گیا
دم بخشا گیا ...... حیات بخشی گئی

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

## 4- نکتہ!

اب نور مصطفیٰ ﷺ کے اس زمین پر ظہور فرمانے میں کیا حکمت تھی ...... وہ تو میں نے ابھی عرض کر دیا...... کہ بھئی جس کے لئے یہ بارات سجائی تھی تو اب اگر دولہا ہی نہ آتا تو وہ بارات کس کام کی تھی؟...... ارے جس کے صدقے یہ پوری کائنات سجائی تھی...... اگر وہ "باعث وجود کائنات" ہستی ہی تشریف نہ لاتی تو پھر

اس کائنات کا حسن کس کام کا تھا؟

لَوْلَاكَ لَمَا خَلَقْتُ الْاَفْلَاك
لَوْلَاكَ لَمَا خَلَقْتُ الدُّنْيَا

اسی ذات کے بارے ہی تو فرمایا تھا...... لیکن اب یہاں ابھی ایک اور نکتہ آپ کو دے رہا ہوں...... تا کہ یہ معلوم ہو جائے کہ اس ''نورِ محمدی'' ﷺ کو سب سے پہلے پیدا کرنے میں کیا حکمت تھی؟

دیکھئے! ایک مثال سے مسئلہ عرض کرنے کی کوشش کرتا ہوں تا کہ بات کو سمجھنے میں آسانی ہو جائے...... کہ ایک حاجی صاحب بس اللہ نے کرم کیا اور اپنے گھر کی زیارت کے لئے منظوری ہو گئی...... تو حاجی صاحب! بس حج پر روانگی کی تیاری میں لگے ہوئے ہیں...... اپنی گلی کے کونے پر واقع جامع مسجد میں نماز پڑھنے کی نیت سے تشریف لے گئے اور جب وہاں نماز پڑھ کر فارغ ہوئے تو باہر ایک طرف ایک ریڑھی پر...... ایک شخص چھوٹے چھوٹے پودے...... ننھے منھے پودے بیچ رہا ہے...... کچھ نمازی حضرات وہاں کھڑے ہو گے...... تو ایسے میں حاجی صاحب بھی ان کے قریب آئے اور پودوں کو دیکھنا شروع ہو گئے اور جب دیکھا تو ان سارے بلکہ بہت سارے حسیں پودوں میں ایک گلاب کا پودا بڑا مسکرا رہا تھا...... جو کہ

دوسروں سے سب سے زیادہ حسین لگ رہا تھا
دوسروں سے سب سے زیادہ منفرد لگ رہا تھا
دوسروں سے سب سے زیادہ دلکش لگ رہا تھا

دوسروں سے سب سے زیادہ پرکشش لگ رہا تھا

تو حاجی صاحب نے بھی محبت کی نظروں سے اسے اٹھایا......اور ہاتھ میں لیا اور اس ریڑھی والے سے اس کے دام پوچھے......تو وہ کہنے لگا کہ جناب یہ ایک ''سو روپے'' میں ملے گا

اب وہ پودا جو گلاب کا پودا تھا......اور دوسرے سب سے منفرد اور دلکش لگ رہا تھا......حاجی صاحب نے فوراً جیب میں ہاتھ ڈالا اور ایک سو روپیہ نکال کر اس ریڑھی والے کو دیا اور اس سے گلاب کا ننھا سا پودا ہاتھ میں لیا اور چل پڑے۔

گھر میں لاکر اپنے سفر کی باقی تیاری میں لگ گئے......اور اپنے بیٹے کو بلا کر کہا کہ دیکھو یہ بہت خوبصورت گلاب کا ایک پیارا سا پودا ہے اس کو گھر کی کیاری میں مٹی میں جگہ بنا کر لگا دو۔

خیر بیٹے نے والد گرامی کے حکم کی تعمیل کرتے ہوئے پودا گھر میں موجود کیاری کے سینے میں جگہ بنا کر وہاں لگا دیا...... اب حاجی صاحب کی توجہ کیلئے روانگی تھی...... حاجی صاحب اپنے شیڈول کے مطابق زیارت بیت اللہ کے لئے روانہ ہو گئے...... حاجی صاحب ایک ماہ سے زیادہ کا عرصہ سعودیہ میں گزار کر...... اپنے گھر واپس تشریف لائے گھر والوں کو ملے...... رشتہ داروں کو ملے...... محلے والوں سے ملے...... مبارکباد وصول کیں ایک دن تو اسی مصروفیت میں گزر گیا...... اور دوسرے دن صبح جب نماز فجر سے اور تلاوت قرآن سے فارغ ہو کر حاجی صاحب اپنے گھر کے صحن میں چہل قدمی کر رہے تھے

......تو فوراً سوا مہینہ پہلے خریدے ہوئے ننھے گلاب کے پودے کا خیال آیا...... تو حاجی صاحب فوراً گھر کے اس حصے میں گے جہاں کہ پودے لگائے ہوئے تھے۔

تو اس وقت حاجی صاحب کی خوشی کی انتہا نہ رہی...... کہ جب انہوں نے اس پیارے گلاب کے پودے کو دیکھا کہ وہ تو سرخ گلاب کے پھولوں سے مزین...... جھوم جھوم کر دیکھنے والوں کو دعوت نظارہ دے رہا تھا...... تو حاجی صاحب کے منہ سے فوراً پیار کے ساتھ نکلا...... کہ واہ میرا گلاب! تو ابھی یہ بات حاجی صاحب کے منہ سے نکلی ہی تھی...... کہ زمین بول اٹھی! کہ محترم یہ آپ کا گلاب نہیں اس لئے کہ آپ نے تو صرف 100 روپیہ خرچ کیا تھا...... اصل میں اس پر میرا احسان ہے کہ جس نے اس کو اپنا سینہ چیر کر جگہ دی...... اس کو پناہ دی...... اس کو رہنے کو مسکن دیا...... اپنی سختی اس پر محسوس ہونے نہیں دی میں نے اپنی نرمی کو اس کی راحت وسکون کیلئے...... اور پروان چڑھنے کیلئے وقف کیئے رکھا...... اس لئے مٹی بولی...... کہ اس گلاب پر تو میرا احسان ہے

اور ایسے میں ہی ایک اور آواز بلند ہوئی...... کہ اے حاجی صاحب اس گلاب کے تم مالک کیسے بن گئے؟ ارے اس پر تو میرا احسان ہے...... اور وہ احسان جتانے والی ''ہوا'' تھی...... وہ ہوا کہنے لگی کہ حاجی صاحب اس مٹی نے تو صرف اس کو اپنے سینے میں جمائے رکھا...... لیکن انصاف کرو کہ احسان تو میرا ہے کہ میں نے گرمی کی شدت میں بھی اس کو جھولے دیئے...... میں نے ٹھنڈک کے جھونکوں کو اکٹھا کر کے آپ کے گلاب کی جھولی میں ڈال دیا......

جب یہ مرجھانے لگتا تو میں اس کو لوریاں دینے لگ جاتی ...... اور اس طرح سے دن گزرتے گئے ...... یہ گلاب پروان چڑھتا گیا اور اب جب یہ جوان ہوگیا...... تو آپ میرا احسان ہی نہیں مان رہے؟...... بلکہ کہہ رہے ہیں کہ یہ تو میرا گلاب ہے ...... ذرا تو انصاف کرو! خیر ''مٹی'' کے بعد ''ہوا'' نے بھی کہہ دیا کہ اس پر میرا بڑا احسان ہے ...... کہ آج یہ جوان ہے تو پھر حاجی صاحب ابھی مٹی اور ہوا کے دعویٰ کی سوچ میں ہی تھے کہ صبح کی ''شبنم'' بھی بول اٹھی اور کہنے لگی...... ارے حاجی صاحب مجھے کس طرح بھول گئے اس گلاب پر تو سب سے زیادہ میرا احسان ہے...... میں صبح کے وقت اس کے منہ کو دھلاتی رہی ہوں ...... میں اس کو تازگی دیتی رہی ہوں ...... میں اس کو دلکشی اور شگفتگی دیتی رہی ہوں

ارے یہ مٹی جو اس پر احسان کا دعویٰ کر رہی ہے...... یہ تو کبھی گرم ہوتی تھی اور کبھی حد سے زیادہ ٹھنڈی ہوتی تھی ...... اور یہ ''ہوا'' جو اس گلاب پر احسان کا دعویٰ کر رہی ہے...... یہ بھی کبھی آہستہ ہوتی تھی...... اور کبھی تیز چلتی تھی...... اصل میں اس گلاب پر تو میرا احسان ہے...... کہ میں نے بلاناغہ اس کو طراوت دی ہے ...... اس پر تازگی کے نقش چھوڑے ہیں اس کے حسن میں اضافہ کیا ہے...... تو دلکشی اور صفائی دی ہے...... اس لئے اس پر تو احسان میرا ہے؟

غور کیجئے! کہ ایک گلاب ہے اور اس پر احسان کرنے کے دعویدار کتنے کھڑے ہوگئے ہیں؟

اس لئے...... کہ:

مٹی پہلے تھی ...... گلاب بعد میں تھا

ہوا پہلے تھی ...... گلاب بعد میں تھا
شبنم پہلے تھی ...... گلاب بعد میں تھا

تو اللہ تعالیٰ نے بھی سب سے پہلے اپنے محبوب ﷺ کے نور بے مثال کو بنایا ...... تاکہ بعد میں آنے والوں میں سے کوئی یہ نہ کہہ سکے ...... کہ نور مصطفیٰ ﷺ پر تو میرا احسان ہے ...... اسی لئے ...... تو!

سرکار ﷺ فرماتے ہیں

اَوَّلُ مَا خَلَقَ اللّٰهُ نُوْرِیْ

سب سے پہلے اللہ نے میرے نور کو پیدا کیا ہے
آپ ﷺ پر ''مٹی'' کا احسان ہو نہیں سکتا
اس لئے کہ آپ مٹی سے پہلے ہیں
آپ ﷺ پر ''ہوا'' کا احسان ہو نہیں سکتا
اس لئے کہ آپ ہوا سے پہلے ہیں
آپ ﷺ پر ''روح'' کا احسان ہو نہیں سکتا
اس لئے کہ آپ روح سے پہلے ہیں
آپ ﷺ پر ''آسمان'' کا احسان ہو نہیں سکتا
اس لئے کہ آپ آسمان سے پہلے ہیں
آپ ﷺ پر ''جہان'' کا احسان ہو نہیں سکتا
اس لئے کہ آپ جہان سے پہلے ہیں
آپ ﷺ پر ''فرشتوں'' کا احسان ہو نہیں سکتا
اس لئے کہ آپ فرشتوں سے پہلے ہیں

آپ ﷺ پر سانسوں کا احسان ہو نہیں سکتا
اس لئے کہ آپ سانسوں سے پہلے ہیں
آپ ﷺ پر ''انسانوں'' کا احسان ہو نہیں سکتا
اس لئے کہ آپ انسانوں سے پہلے ہیں
آپ ﷺ پر ''نبیوں'' کا احسان ہو نہیں سکتا
اس لئے کہ آپ نبیوں سے پہلے ہیں
آپ ﷺ پر ''رسولوں'' کا احسان ہو نہیں سکتا
اس لئے کہ آپ رسولوں سے پہلے ہیں

اسی لئے تو رب نے اپنے محبوب کے نور کو سب سے اول تخلیق فرمایا......
تاکہ کوئی میرے محبوب پر احسان کا دعویٰ نہ کرے...... بلکہ یہ تو خود احسان خداوندی بنکر آئے ہیں

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

……

# موضوع......قرآن اور اہلبیت

نَحْمَدُهٗ وَ نَسْتَعِيْنُهٗ وَ نَسْتَغْفِرُهٗ وَ نُؤْمِنُ بِهٖ وَ نَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَ نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَ مِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمٰلِنَا وَ مَنْ يَّهْدِيْهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَ مَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِىَ لَهٗ وَ نَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَ نَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا مَوْلَانَا وَ حَبِيْبَنَا وَ سِرَاجَنَا وَ اَشْرَفَنَا وَ سَيِّدَنَا مُحَمَّدٍ صلی اللہ علیہ وسلم

اَمَّا بَعْدُ!

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰى فِى الْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ وَ الْفُرْقَانِ الْحَمِيْدِ...... اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ

صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلٰنَا الْعَظِيْمُ

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِىِّ ط

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ٥

بارگاہ رسالت مآب صلی اللہ علیہ وسلم میں ہدیہ درود و سلام پیش کیجئے

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِىِّ الْاُمِّىِّ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ

وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

عزیز علماء کرام...... سادات کرام...... اور معزز سامعین وحضرات...... میں عرس پاک کی اس عظیم محفل پاک میں شرکت پر آپ حضرات کو مبارکباد پیش کرتا ہوں۔

رات کا کافی وقت بیت چکا ہے اور میں یہ بخوبی جانتا ہوں...... کہ اب لوگ سننا چاہتے ہیں اور کچھ سونا ہی چاہتے ہیں...... تو محفل سے اگر کسی کو اٹھنا بھی ہو تو صرف ضرور تا ہی اٹھا جائے...... ورنہ کوشش کی جائے کہ میں جتنی دیر بھی بات کروں اس کو ہمہ تن گوش ہو کر سماعت کیا جائے۔

حضرت علامہ محمد اشرف کانپوری نے اپنی تقریر میں اس مسئلے کو چھیڑ کر چھوڑ دیا...... اب میں پھر اس مسئلہ کو چھیڑنے جا رہا ہوں۔

## محنت کرنے والے کی ایک سوچ:

یہ تو ایک حقیقی بات ہے...... کہ جب کوئی آدمی محنت شاقہ کے بعد انتہائی لگن اور جدوجہد کے بعد کوئی چیز بناتا ہے...... تو پھر اس کو بنانے کے بعد...... اس بنی ہوئی چیز کو بچانے کی فکر زیادہ پیدا ہو جاتی ہے۔

مثلاً ایک کاروباری نے اپنی دکان بنانے کیلئے انتھک محنت کی...... چاہے جتنی بھی کرنی پڑی ہو...... اور ایک تاجر نے اپنے کاروبار کو عروج دینے کیلئے بہت محنت کی...... اور کاروبار کو شروع کر لیا...... اس کے لئے چاہے اسے جتنی بھی محنت کرنی پڑی ہو...... لیکن جب کارخانہ بن گیا۔

جب دکان بن گئی

جب کاروبار شروع ہو گیا...... اب یہ فکر لاحق ہوتی ہے کہ آگے کام کیسے چلے گا؟

اب مارکیٹ میں مال کیسے فروخت ہو گا؟

تو وہ اس کا بھی مکمل طور پر انتظام کرتا ہے...... لیکن ایک فکر پھر تھوڑے عرصے کے بعد آ گھیرتی ہے...... کہ اب میری اولاد جوان ہو چکی ہے...... وہ میرے اس کاروبار کو...... میرے اس کارخانے کو میری اس انڈسٹری کو قائم رکھ سکے گی کہ نہیں؟

ارے دور کیوں جاتے ہو...... یہاں شیخ اعظم سے ہی پوچھ لو...... کہ انہوں نے ''جامعہ شیخ اشرف'' بنایا ہے...... اب ان کو بھی مستقبل کے بارے میں یہ فکر ہے کہ آگے چلے گا کہ نہیں؟ میری زندگی کے بعد یہ چلے گا بھی کہ نہیں؟

## رسول اللہ ﷺ کو امت کے متعلق فکر:

عزیز دوستو!

یہ بات تو آپ کے ذہن میں بیٹھ گئی...... اور آپ حضرات کے تجربے میں بھی یہ بات ہے کہ جو بھی چیز تیار کر کے رکھی جائے...... اس کے متعلق فکر ضرور ہوتی ہے...... کس کی فکر ہوتی ہے؟ کیسی فکر ہوتی ہے؟

فکر ...... اس قیمتی چیز کی بقا کی ہوتی ہے
فکر ...... اس قیمتی اثاثے کی حفاظت کی ہوتی ہے
فکر ...... اس سرمائے کو بچانے کی ہوتی ہے
فکر ...... اس عزیز چیز کی نگہداشت کی ہوتی ہے

یقیناً یہی فکر میرے رسول ﷺ کو بھی اپنی امت کے متعلق پیدا ہوئی...... کہ:

پیٹ پر پتھر باندھ کر امت بنائی
مکہ سے ہجرت کر کے امت بنائی
شعب ابی طالب میں محصور رہ کر امت بنائی
راستوں میں کانٹے برداشت کر کے امت بنائی
دشمنوں سے پتھر کھا کر امت بنائی
بدر و اُحد میں خون بہا کر امت بنائی
فاقے برداشت کیے اور امت بنائی

تو پھر میرے نبی ﷺ کو بھی یہ فکر لاحق ہوئی...... کہ:

اسلام آ گیا...... دین چھا گیا
معرفت پہنچ گئی...... شریعت پھیل گئی
دین بیان ہو گیا...... رب کا قرآن آ گیا

اور اب فکر یہ ہے کہ آگے یہ سب کچھ بچانا کیسے ہے...... آگے اس سب کچھ کو قائم رکھنا کیسے ہے؟ یعنی میرے نبی ﷺ نے انتہائی محنت اور رب کے حکم سے یہ امت بنائی اب اس امت کے متعلق فکر تھی...... کہ:

کہیں...... بھٹک تو نہیں جائے گی
کہیں...... بہک تو نہیں جائے گی

تو اس لئے میرے پیغمبر ﷺ نے اپنی امت کو اس کی ''بقا'' کا دائمی نسخہ بتا دیا...... کہ اے میرے امتیو! میں تمہیں دو چیزیں دے رہا ہوں! ان دونوں کو تھامے رکھنا:

تمہیں کبھی آنچ نہیں گی

تمہیں کبھی گمراہی نہیں آئے گی
تمہیں کبھی الجھن نہیں آئے گی

اور ان دو چیزوں میں سے!

ایک قرآن ہے......دوسری اہلبیت ہے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## 1- نکتہ:

عزیزانِ گرامی!

اب یہاں بھی انتہائی توجہ کی بات ہے......کہ میرے نبی ﷺ نے فرمایا

اِنِّیْ تَارِکٌ فِیْکُمُ الثَّقَلَیْنِ

میں تم میں دو چیزیں چھوڑ رہا ہوں

اب توجہ کرنا اس حدیث پاک کے مبارک الفاظ پر کہ میرے نبی ﷺ نے یہ نہیں فرمایا......کہ میں تم میں دو بھاری چیزیں چھوڑ رہا ہوں

میرے نبی ﷺ نے قیمتی نہیں فرمایا...... بھاری چیزیں فرمایا ہے!

اس لئے کہ کچھ چیزیں قیمتی تو ہوتی ہیں......لیکن بھاری نہیں ہوتی

مثلاً......امریکن ڈالر کو دیکھ لیں......وہ قیمتی تو ہے......لیکن بھاری نہیں ہے

امریکن ڈالر......ہاتھ میں رکھو پھونک مارو، اڑ جائے گا۔

پاکستانی سو کا نوٹ......ہاتھ میں رکھو پھونک مارو اڑ جائے گا۔

تو میرے رسول ﷺ نے قرآن اور اہلبیت کو بھاری قرار دیا......وہ اس لئے کہ رسول ﷺ نے اپنے فرامینِ مطہرہ سے واضح فرما دیا کہ تم ان دونوں کی قیمت کا اندازہ تو کر نہیں سکتے......اس لئے......کہ:

اہلبیت اور قرآن کی قیمت کا اندازہ کرنا تمہارے بس کی بات نہیں

اب تم یہ ذہن میں رکھو کہ تمہیں دو بھاری چیزیں دے رہا ہوں

قرآن بھاری اس لئے ہے...... کہ اگر کوئی غلط تفاسیر بھی کرتا رہے...... تو تفسیر کرنا تو اس بندے کے اپنے بس میں ہے...... لیکن قرآن کا ایک حرف بھی اپنی جگہ سے کوئی ہلا نہیں سکتا...... اہلبیت بھاری اس لئے ہیں...... کہ اگر کوئی یزید جیسا فاسق و فاجر فوج لیکر بھی چڑھ جائے تو نبی ﷺ کے اہلبیت کو اپنے ''مقاصد صالحہ'' سے ایک انچ بھی ہلا نہ سکے۔

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ.

## ''امت کی کامیابی کا نسخہ''

اب جس طرح سے ایک کام شروع کرنے والے کو پھر اس کام کو بچانے کی فکر ہوتی ہے...... اسی طرح جب سید کائنات ﷺ نے اپنے رب سے دین حاصل کر کے اپنی امت کے سامنے پیش کیا...... تو پھر وہ ایمان والے امتی جن کے متعلق آقا ﷺ کو فکر ہوئی کہ میرے وصال ظاہری کے بعد میری امت، ''صراط مستقیم'' پر کیسے رہے گی...... میری امت راہ ہدایت پر کیسے رہے گی؟ تو اس کے لئے رسول ﷺ نے امت کی بقاء کا کامل اور جامع بے مثال نسخہ اپنی امت کو عطا فرمایا...... اور بھاری نسخہ عطا فرمایا...... ایسا بھاری نسخہ کامل

ایک قرآن کی صورت میں...... دوسر اہلبیت ذی شان کی صورت میں

چاہے کوئی لاکھ تراجم بدلے ...... قرآن کی جامعیت میں فرق نہیں آئے گا

چاہے کوئی لاکھ آندھیاں چلیں ...... اہلبیت کی استقامت میں فرق نہیں آئے گا

اور پھر یہ بھی فرما دیا کہ اگر ان کو تھامے رکھو گے...... تو کبھی بھی گمراہ نہیں ہو گے:

## 2- نکتہ:

اب یہاں میں ایک نکتہ اور عرض کرتا ہوں...... کہ عبادات کو لیجئے کہ بہت سی عبادات ہیں...... کہ:

جو باعث راحت ہیں
جو باعث رحمت ہیں
جو باعث عزت ہیں
جو باعث عظمت ہیں

لیکن...... آقا ﷺ نے ان عبادات کو ہدایت کا ذریعہ قرار نہیں دیا!

جیسے...... کہ:

نماز ایک عبادت ہے ...... لیکن اس کو بھی مکمل راہ ہدایت قرار نہیں دیا گیا
حج ایک عبادت ہے ...... لیکن اس کو بھی مکمل راہ ہدایت قرار نہیں دیا گیا
جہاد ایک عبادت ہے ...... لیکن اس کو بھی مکمل راہ ہدایت قرار نہیں دیا گیا
زکوٰۃ ایک عبادت ہے ...... لیکن اس کو بھی مکمل راہ ہدایت قرار نہیں دیا گیا
روزہ ایک عبادت ہے ...... لیکن اس کو بھی مکمل راہ ہدایت قرار نہیں دیا گیا

وہ اس لئے کہ ہم نے تاریخ پڑھی ہے...... اور یہ بات معلوم ہوئی ہے......
اور اگر تم گھر میں پڑے قرآن پاک ہی پڑھ لو...... تو پھر بھی تمہیں یہ بات معلوم ہو جائے گی...... کہ

سرکار ﷺ کی حیاتِ ظاہری میں!

بہت سے نماز پڑھنے والے ایسے تھے ......کہ جنہیں قرآن نے منافق کہا
بہت سے جہاد کرنے والے ایسے تھے ......کہ جنہیں قرآن نے منافق کہا
بہت سے روزہ رکھنے والے ایسے تھے ......کہ جنہیں قرآن نے منافق کہا

اور قرآن پڑھ کر دیکھئے......اللہ تعالیٰ نے قرآن میں ایک آیت نہیں
دو آیات نہیں
تین آیات نہیں

بلکہ پوری ایک ''سورۂ منافقون'' نازل فرمائی ہے......کہ جو ان لوگوں کی گمراہی اور منافقت کا پول کھولتی ہے!......تو معلوم ہوا......کہ

بہت سارے لوگ بظاہر نماز پڑھتے ہیں ......لیکن گمراہ ہیں
بہت سارے لوگ بظاہر حج کرتے ہیں ......لیکن گمراہ ہیں
بہت سارے لوگ بظاہر روزہ رکھتے ہیں ......لیکن گمراہ ہیں
بہت سارے لوگ بظاہر جہاد کرتے ہیں ......لیکن گمراہ ہیں

تو قربان جاؤں!

تاجدار مدینہ ﷺ کے قول کی حقانیت پر......کہ آپ نے فرمایا
قرآن اور اہلبیت کو تھام لو......کبھی گمراہ نہیں ہو گے!

یعنی......

نماز عبادت تو ہے ......لیکن مکمل ہدایت کی ضمانت نہیں
روزہ عبادت تو ہے ......لیکن مکمل ہدایت کی ضمانت نہیں
حج عبادت تو ہے ......لیکن مکمل ہدایت کی ضمانت نہیں
زکوۃ عبادت تو ہے ......لیکن مکمل ہدایت کی ضمانت نہیں

جہاد عبادت تو ہے ...... لیکن مکمل ہدایت کی ضمانت نہیں

لیکن ...... میرے رسول ﷺ نے "قرآن اور اہلبیت" کو تھامنے والے کو ہدایت کی ضمانت دی ہے ...... ہاں! یہ میرے نبی ﷺ کی ضمانت ہے کہ وہ ہدایت پر ہوگا ...... کہ جس کا تعلق ...... قرآن سے بھی ہو! اور اہلبیت اطہار سے بھی ہو!

قربان جاؤں!

اپنے نبی ﷺ کی فصاحت و بلاغت پر ...... کہ آپ نے اپنی امت کو ہدایت کا ایک بے مثال اور لاجواب نسخہ ہدایت عنایت فرما دیا ...... تو اب اگر کوئی دنیا کے کسی بھی خطے میں آپ کو کوئی بھی گمراہ نظر آئے تو پہچان لینا ...... کہ:

اس نے ...... یا تو قرآن کو چھوڑا ہوگا

اس نے ...... یا پھر اہلبیت سے لڑا ہوگا

کیونکہ یہ تو ہو ہی نہیں سکتا ...... کہ کسی نے قرآن کو مضبوطی سے تھاما ہو ...... قرآن پر مکمل طور پر عمل کرتا ہو ...... اور اہلبیت کا دامن بھی تھاما ہو ...... اور وہ گمراہ ہو جائے ...... نہیں نہیں ...... ایسا ہو نہیں سکتا ...... اس لئے کہ اس کی ہدایت کی گارنٹی میرے رسول اللہ ﷺ نے دی ہے۔

## قرآن کیساتھ اہلبیت کیوں؟

اب دیکھو ایک کارخانے والا اگر اپنے کارخانے میں کوئی تبدیلی کرے گا تو وہ اپنی مرضی سے ہی کرے گا ...... موجودہ حالات کے مطابق کرے گا

یا ...... آنے والے حالات کے مطابق کرے گا

یعنی جس کو اس نے محنت سے تشکیل دیا ہے ...... اب وہ مناسب حالات میں اس میں مناسب تبدیلی بھی کر رہا ہے ...... اور آئندہ حالات

میں بھی فائدے کا نسخۂ عمل میں لا رہا ہے...... تو ایک نبی سے زیادہ اپنی امت کے متعلق بعد از خدا کون مختار ہوگا؟...... تو اللہ کے حبیب ﷺ نے اپنی امت کیلئے جو بہتر جانا سو وہ مقرر کر دیا...... جس کا فائدہ امت کو تا دیر تک نصیب ہونے والا تھا...... اس نسخۂ کامل کو اپنی امت کی جھولی میں ڈال دیا...... اور فرمایا!

لَنْ تَضِلُّوْا...... تم ہرگز گمراہ نہیں ہوگے۔

ارے ادھر تو ہر کوئی چاہ رہا ہے...... کہ:

ہمیں کوئی ایسا طریقۂ حیات مل جائے
ہمیں کوئی ایسا قرینۂ زندگی مل جائے
ہمیں کوئی ایسا سنہری اصول مل جائے
ہمیں کوئی ایسا لاجواب عمل مل جائے

کہ ہم ہدایت کی راہ سے ہٹ نہ سکیں! تو دینے والے نے اپنی امت کو

اِنِّیْ تَارِکٌ فِیْکُمُ الثَّقَلَیْنِ

فرما کر وہ نسخہ اپنی امت کے سپرد کر دیا...... کہ میں تم میں دو چیزیں چھوڑ کر جا رہا ہوں

ایک کتاب اللہ...... اللہ کی کتاب

دوسری وَعِتْرَتِیْ ...... اور میری اہلبیت

اور پھر قیامت تک کے آنے والی انسانیت میں سے ہدایت کی راہ تلاش کرنے والوں کیلئے میرے پیغمبر ﷺ کا جامع اور کامل اعلان ہے...... کہ:

ان دونوں کو مضبوطی سے تھام لو...... لَنْ تَضِلُّوْا

## تم کبھی گمراہ نہیں ہو گے

### 3- نکتہ!

جب ان دو چیزوں کو تھامے رکھنے سے ہدایت پانے کی گارنٹی میرے نبی ﷺ نے دے دی...... تو پھر یاد رکھنا...... کہ تمہیں جو بھی:

ہدایت یافتہ ملے گا ...... قرآن اور اہلبیت کا تابعدار ملے گا

اور

جو بھی گمراہ ملے گا ...... قرآن اور اہلبیت کا غدار ملے گا

اب یہاں بھی ایک پہلو بہت توجہ طلب ہے ...... کہ آقا ﷺ نے اپنی اہلبیت کیساتھ...... قرآن کا ذکر کیوں کیا؟

اور قرآن کیساتھ اپنی اہلبیت کو لازم کیوں قرار دیا؟ تو آیئے سنیئے !...... کہ:

قرآن اللہ کی لاریب کتاب ہے...... اور اللہ کا ذاتی کلام ہے:

جس طرح اللہ کی ذات قدیم ہے ...... ایسے ہی کلام بھی قدیم ہے
جس طرح اللہ بے نیاز ذات ہے ...... ایسے ہی کلام اللہ بھی بے نیاز ہے

اس لئے کہ قرآن اللہ کا ذاتی کلام ہے...... اور اللہ کی ہر صفت قدیم اور لامتناہی ہے...... اور حدوث سے پاک ہے

یعنی:

جب اللہ بے مثال ...... تو اس کا کلام بھی بے مثال
جب اللہ لاجواب ...... تو اس کا کلام بھی لاجواب
جب اللہ لامتناہی ...... تو اس کا کلام بھی لامتناہی
جب اللہ لامحدود ...... تو اس کا کلام بھی لامحدود

جب اللہ بے نیاز ......تو اس کا کلام بھی بے نیاز
جب اللہ قدیم ......تو اس کا کلام بھی قدیم
جب اللہ حدوث سے پاک ......تو اس کا کلام بھی حدوث سے پاک

تو ثابت ہوا کہ اللہ تعالیٰ بے نیاز ہے اور اس کا کلام بھی بے نیاز ہے...... یعنی اگر کوئی شاہانِ دنیا سے مانگے یا پھر خدا سے مانگے تو وہ اتنا بے نیاز ہے.... کہ اس کو کوئی فرق نہیں پڑتا......اور ''دوسرالقرآن'' جو اللہ کا ذاتی کلام ہے...... یہ بھی بے نیاز اور یہ قرآن اتنا بے نیاز ہے...... کہ اگر کوئی اس قرآن کے الفاظ کا غلط ترجمہ کرے......غلط تفسیر کرے تو یہ قرآن اس کے ہاتھ کو نہیں روکتا......اس لئے کہ کوئی اس کی غلط تفسیر کرے یا صحیح تفسیر کرے اس سے قرآن کو کوئی فرق نہیں پڑتا......فرق مفاہیم بدلنے والے کو پڑے گا اور اسی طرح کوئی مانگنے والا اگر کسی سے بھی مانگتا پھرے تو اس سے اللہ کو کوئی فرق نہیں پڑے گا...... بلکہ فرق تو مانگنے والے کو پڑے گا۔

ارے میں کہہ رہا ہوں......کہ:

قرآن بے نیاز کا کلامِ......بے نیاز ہے......جبھی تو غلط تراجم چھپ گے
جبھی تو غلط تفاسیر چھپ گئیں
جبھی تو غلط مفاہیم چھپ گئے
جبھی تو غلط تحقیقات چھپ گئیں

اس لئے کہ یہ قرآن تو خود بولے گا ہی نہیں......تو اس لئے ضروری تھا کہ اس قرآن کیساتھ کچھ قرآن بولتے ہوئے بھی ہوں......تاکہ اگر ظلم وجبر کا طوفان آئے......تو یہ خاموش بے نیاز کلام تو مدینہ شریف میں پڑا ہوا اور دوسرے قرآن

ظلم کے طوفان کو کربلا میں ہی روک دیں...... اور فرزندانِ اہلبیت:

کربلا میں ......ہی ظلم کو بے نقاب کر دیں
کربلا میں ......ہی بغاوت کو بے نقاب کر دیں
کربلا میں ......ہی جبر کو بے نقاب کر دیں
کربلا میں ......ہی گمراہوں کو بے نقاب کر دیں

اس لئے کہ سب پر ثابت ہو جائے کہ...... جب تک حسن رضی اللہ عنہ ہیں...... کوئی قرآن کو بدل نہیں سکتا...... جب تک حسین رضی اللہ عنہ ہیں...... کوئی قرآن کو بدل نہیں سکتا تو قربان جاؤں! اپنے نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے بیان کردہ فرامین پاکیزہ کی حکمتوں پر کہ قرآن اور اہلبیت کا ذکر ساتھ ساتھ کر دیا...... تا کہ

لوگوں کو پتہ چل جائے...... کہ قرآن اور اہلبیت ساتھ ساتھ ہیں
تو اس لئے کہ یہ خاموش قرآن ہے...... اور اہلبیت بولتے قرآن ہیں

اور!

قرآن اللہ کا فرمان ہے...... اہلبیت رسول صلی اللہ علیہ وسلم کا خاندان ہے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ صلی اللہ علیہ وسلم

## قرآن اور جماعت صحابہ کرام رضی اللہ عنہم

حضرات گرامی!

اللہ تعالیٰ نے اپنے حبیب صلی اللہ علیہ وسلم کو آخری رسول بنا کر کے بھیجا اور آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی امت کو آخری امت اور خیر الامم بنایا...... تو پھر رسول صلی اللہ علیہ وسلم نے اپنی امت کو ہدایت پر قائم رہنے کا ایک بے مثال نسخہ عطا فرمایا

اور وہ ہے ''قرآن اور اہلبیت اطہار''

## 4- نکتہ:

ایک انتہائی توجہ والی بات یہ بھی ہے کہ جب قرآن نازل ہو رہا تھا...... یا قرآن نازل ہو چکا تو اس وقت قرآن کو بھی ایک جماعت کی ضرورت تھی

جو جماعت ......اس سے ہدایت حاصل کرتی
جو جماعت ......قرآن سے معرفت حاصل کرتی
جو جماعت ......قرآن سے رہنمائی حاصل کرتی
جو جماعت ......قرآن سے پاکیزگی حاصل کرتی
جو جماعت ......قرآن سے احکام حاصل کرتی
جو جماعت ......قرآن سے نظام حاصل کرتی

تو وہ جماعت......بھی صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کی صورت میں سامنے آئی! اور

ان میں سے ......کوئی صداقت کا تاجدار بنا
ان میں سے ......کوئی عدالت کا راز دار بنا
ان میں سے ......کوئی شرافت کا پیکر بنا
ان میں سے ......کوئی شجاعت کا پیکر بنا
ان میں سے ......کوئی شریعت کا پہرہ دار بنا
ان میں سے ......کوئی فقاہت کا علمبردار بنا

لیکن سوچنے کی بات ہے......

کہ صداقت اور عدالت کے تاجداروں کے ہوتے ہوئے
شرافت اور فقاہت کے علمبرداروں کے ہوتے ہوئے
رسول اللہ ﷺ نے یہ کیوں نہیں فرمایا...... کہ

میں تم میں قرآن اور جماعت صحابہ کو چھوڑ کر جا رہا ہوں؟

بلکہ فرمان رسالت صلی اللہ علیہ وسلم گواہ ہے...... کہ فرمایا

میں تم میں قرآن اور اہلبیت کو چھوڑ کر جا رہا ہوں

ارے کون صحابہ رضی اللہ عنہم؟

اَصْحَابِی کَالنُّجُوْمِ ......وہ صحابہ
ہدایت کا مینارہ ......وہ صحابہ
رسول کے راز دار ......وہ صحابہ
نبی کے وفادار ......وہ صحابہ
ارے...... دشت تو دشت دریا بھی نہ چھوڑے ہم نے ......وہ صحابہ
جنہوں...... بحر ظلمت میں دوڑا دیئے گھوڑے وہ ......وہ صحابہ
ارے...... جنہوں نے کلیسا میں اذان حق بلند کر دی ......وہ صحابہ
ارے...... جنہوں نے جابروں کی نظریں زیر کر دیں ......وہ صحابہ
ارے...... جو دریاؤں کو خط لکھ کر ان کے مزاج بدل دیں ......وہ صحابہ
جو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے پہلو میں آرام کریں ......وہ صحابہ
جو اللہ رسول کے دین پر قربان ہو جائیں ......وہ صحابہ
جو بدر واحد میں اذان حق بلند کریں ......وہ صحابہ
جو صنم کروں کی اینٹ سے اینٹ بجا دیں ......وہ صحابہ
جو گرجا گھروں میں توحید کا رنگ ڈال دیں ......وہ صحابہ

ارے...... ایسی بے مثال اور لاجواب جماعت کو قرآن کے ساتھ کیوں نہیں چھوڑا؟

بے شک یہ ہمارا ایمان ہے کہ صحابہ کا راستہ بھی ہدایت کا راستہ ہے...... لیکن ہم بات کر رہے ہیں...... کہ رسول اللہ ﷺ نے یہ نہیں فرمایا...... کہ:

میں تم میں قرآن اور جماعت صحابہ چھوڑ کر جا رہا ہوں

تو اس مسئلے کو حل کرنے کیلئے ضروری ہے کہ پہلے ہی جان لیا جائے کہ صحابی کسے کہتے ہیں؟ جس نے ایمان کی حالت میں رسول ﷺ کو دیکھا ہو اور مَاتَ عَلَی الْاِسْلَام اس کی موت بھی اسلام پر ہوئی ہو...... اسے صحابی کہتے ہیں۔

ابو جہل نے رسول ﷺ کو دیکھا...... لیکن...... اسلام قبول کیا نہیں...... اسلام پر مرا نہیں...... اس لئے وہ صحابی نہیں

اویس قرنی رضی اللہ عنہ اسلام پر مرے...... لیکن رسول ﷺ کو دیکھا نہیں اس لئے وہ بھی صحابی نہیں

اس لئے ثابت ہوا...... کہ صحابی بننے کیلئے قبول اسلام اور پھر اس کے بعد زیارت رسول ﷺ کی سعادت بھی ضروری ہے...... اور اسلام پر موت بھی ضروری ہے۔

یعنی...... جب تک رسول ﷺ ظاہری طور پر موجود ہیں
اس وقت تک صحابی بنتے رہے

اور رسول اللہ ﷺ جانتے ہیں کہ ایک دن مجھے حکم خداوندی سے ظاہری پردہ کرنا ہے تو...... یہاں سے رسول اللہ ﷺ کا علم غیب بھی ثابت ہو رہا ہے...... کہ میرے رسول ﷺ جانتے تھے کہ میرے بعد ایک سو سال...... یا دو سو سال کے بعد صحابی نہیں رہیں گے...... تو اس لئے میرے نبی ﷺ نے قرآن کو صحابہ کا ساتھی بنا کر امت کو نہیں دیا...... اس لئے کہ جب دو سو سال بعد کوئی صحابی اس دنیا میں

نہیں رہے گا...... تو پھر دو سو سال بعد قرآن اکیلا ہو جائے گا...... اور جو اکیلا چھوڑ جائے وہ ساتھی نہیں ہوا کرتا۔

واہ مدینے والے تیری وسعت علمی پر ہم قربان کہ آپ ﷺ نے انتہائی حکمت کے پیش نظر صحابہ کو قرآن کا ساتھی نہیں بنایا...... بلکہ اہلبیت کو قرآن کا ساتھی بنایا اس لئے کہ صحابہ تو دو سو سال کے بعد ظاہری پردہ کر جائیں گے

اور رسول ﷺ نے اپنی امت کو ہدایت کا جو نسخہ دیا...... وہ قرآن اور اہلبیت کا ساتھ دیا...... اس لئے...... کہ:

قیامت تک نہ کوئی...... قرآن کو مٹا سکے گا...... اور نہ ہی کوئی اہلبیت کو مٹا سکے گا

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## قرآن اور اہلبیت کی لاجواب نسبت:

اللہ کے حبیب ﷺ نے اپنی امت کی ہدایت کیلئے دو چیزوں کا انتخاب کر لیا...... اور رسول اللہ ﷺ کا وہ لاجواب انتخاب آج بھی موجود ہے...... اور جب تک یہ دنیا قائم ہے...... اور دو چیزیں ایسی معیاری عطا کیں...... کہ قیامت تک:

نہ کوئی...... قرآن کو بدل سکے ...... نہ کوئی اہلبیت کو بدل سکے
نہ کوئی ...... قرآن کی مثال لا سکے ...... نہ کوئی اہلبیت کی مثال لا سکے

دیکھئے...... کہ:

قرآن اگر نظریہ ہے ...... تو ...... اہلبیت اس کے مبلغ ہیں
قرآن اگر قانون ہے ...... تو ...... اہلبیت اس کا نمونہ ہے
قرآن اگر خدا کا ہے ...... تو ...... اہلبیت مصطفیٰ ﷺ کے ہیں

قرآن اگر کلام ہے ...... تو ......اہلبیت اس کے متکلم ہیں
قرآن اگر ذکر ہے ...... تو ......اہلبیت اس کے ذاکر ہیں
قرآن اگر ارشاد ہے ...... تو ......اہلبیت اس کے معلم ہیں
قرآن اگر بیان ہے ...... تو ......اہلبیت اس کی تفسیر ہیں
قرآن اگر ساکت ہے ...... تو ......اہلبیت ناطق ہیں

اصل میں یہ دونوں ہی لاجواب ہیں......وہ اس لئے کہ لاجواب پیغمبر ﷺ سے ان دونوں کو نسبت ہے......اور گہری نسبت ہے...... خاصی نسبت ہے

تو جس کی نسبت میرے رسول ﷺ سے ہو جائے......تو یہ یقینی بات ہے کہ وہ رہتی دنیا تک لاجواب ہو جاتا ہے! ارے تم تو نبی ﷺ کی بات کرتے ہو...... ہمارا تو عقیدہ یہ ہے......کہ جو میرے نبی ﷺ سے منسوب ہو جائے......اس کا بھی جواب نہیں! اس لئے......کہ:

ہر نبی کے پاس امت ہے ......لیکن میرے نبی ﷺ کی امت کا جواب نہیں
ہر رسول کے پاس بھی کتاب آئی ......لیکن میرے نبی ﷺ پر آنے والی کتاب کا جواب نہیں
اور شہروں میں بھی نبی آئے ......لیکن میرے نبی ﷺ جس شہر میں آئے اس کا جواب نہیں
ارے......جس جانور پر نبی ﷺ سوار ہو جائیں
اس جانور کا جانوروں میں جواب نہیں!
سابقہ انبیاء کرام کی بھی بیویاں ہیں
لیکن میرے نبی ﷺ کی بیویوں کا جواب نہیں
تقریباً ہر گھر میں بیٹی ہے......!
لیکن مصطفیٰ ﷺ کی بیٹی کا جواب نہیں

تقریباً ہر گھر میں داماد ہیں

لیکن میرے رسول ﷺ کے دامادوں کا جواب نہیں

تقریباً ہر گھر میں نواسے ہیں!

لیکن میرے نبی ﷺ کے نواسوں کا جواب نہیں

تقریباً ہر نبی کے غلام ہوئے ہیں

لیکن میرے رسول ﷺ کے غلاموں کا جواب نہیں

تو میرے نبی ﷺ نے قرآن اور اہلبیت کی ایسی نسبت بنا دی...... تاکہ قرآن کسی دور میں اکیلا نہ ہونے پائے...... پیغمبر ﷺ ظاہری طور پر موجود تھے...... تو قرآن بھی موجود تھا...... لیکن جب پیغمبر نے ظاہری پردہ فرمانا چاہا تو پھر قرآن کو اہلبیت کا ساتھ دے دیا...... تاکہ

رہتی دنیا تک لوگ قرآن پڑھتے رہیں...... اور اہلبیت اطہار سے سمجھتے رہیں دیکھئے قرآن کبھی بھی اکیلا نہیں رہا!

قرآن موجود تھا ...... تو سمجھانے کیلئے پیغمبر تشریف لائے

قرآن موجود تھا ...... تو سمجھانے کیلئے مولا علی تشریف لائے

قرآن موجود تھا ...... تو سمجھانے کیلئے مولا حسن تشریف لائے

قرآن موجود تھا ...... تو سمجھانے کیلئے امام حسین تشریف لائے

قرآن موجود تھا ...... تو سمجھانے کیلئے امام زین العابدین تشریف لائے

قرآن موجود تھا ...... تو سمجھانے کیلئے امام باقر تشریف لائے

قرآن موجود تھا ...... تو سمجھانے کیلئے امام جعفر صادق تشریف لائے

قرآن موجود تھا ...... تو سمجھانے کیلئے امام موسیٰ کاظم تشریف لائے

قرآن موجود تھا ...... تو سمجھانے کیلئے امام علی نقی تشریف لائے

قرآن موجود تھا ...... تو سمجھانے کیلئے امام علی رضا تشریف لائے

قرآن موجود تھا ...... تو سمجھانے کیلئے امام تقی تشریف لائے

قرآن موجود تھا ...... تو سمجھانے کیلئے امام حسن عسکری تشریف لائے

ارے ...... قیامت تک قرآن موجود رہے گا ...... اور پھر قرب قیامت میں بھی قرآن سمجھانے کیلئے ...... میرے پیغمبر ﷺ کے اہلبیت میں سے ہی امام مہدی رضی اللہ عنہ تشریف لائیں گے

ارے ...... اس دوران بھی اگر قرآن کے حقائق جاننا ہوں

اس دوران بھی اگر قرآن کے معارف جاننا ہوں

اس دوران بھی اگر قرآن کے علوم جاننا ہوں

اس دوران بھی اگر قرآن کے اصول جاننا ہوں

تو پھر بھی میرے پیغمبر کے اہلبیت میں سے!

غوث جیلانی رحمۃ اللہ علیہ ...... سے قرآن سیکھ لینا

داتا علی ہجویری رحمۃ اللہ علیہ ...... سے قرآن سیکھ لینا

سید مہر علی رحمۃ اللہ علیہ ...... سے قرآن سیکھ لینا

سید جماعت علی رحمۃ اللہ علیہ ...... سے قرآن سیکھ لینا

سید معین الدین رحمۃ اللہ علیہ ...... سے قرآن سیکھ لینا

سید نظام الدین رحمۃ اللہ علیہ ...... سے قرآن سیکھ لینا

یعنی ...... یہ قرآن اور اہلبیت کی نسبت میرے نبی ﷺ نے قائم فرمائی ہے ...... یہ کبھی ختم نہیں ہو سکتی

قرآن موجود رہے گا......اور رسول ﷺ کا گھرانہ قرآن سمجھاتا رہے گا

اسی لئے تو میرے پیغمبر ﷺ نے فرمایا۔

إِنِّيْ تَارِكٌ فِيْكُمُ الثَّقَلَيْنِ كِتَابُ اللهِ وَ عِتْرَتِيْ

## قرآن کی حقانیت اور اہلبیت کی صداقت:

حضرات گرامی!

یہ قرآن ہر دور میں اپنی پوری حقانیت کیساتھ موجود رہا ہے......اور یہ اللہ کا ذاتی کلام ہے......اور ظاہر ہے حق کا کلام بھی حقانیت والا ہی ہوگا؟ یعنی یہ بات تو پہلے سے ہی طے ہے کہ یہ قرآن اپنی حقانیت بھی خود ہی بیان کرتا ہے......اور تحقیق کرنے والوں نے بھی زندگیاں صرف کر کے یہی فیصلہ دیا کہ قرآن کی حقانیت میں ذرہ برابر بھی شک کی گنجائش نہیں۔

قرآن کا ایک ایک حرف بھی حقانیت سے لبریز
قرآن کا ایک ایک لفظ بھی حقانیت سے لبریز
قرآن کا ایک ایک گوشہ بھی حقانیت سے لبریز
قرآن کا ایک ایک پارہ بھی حقانیت سے لبریز

بلکہ......قرآن سارا ہی حقانیت سے لبریز ہے

## 5- نکتہ:

اور قرآن کی حقانیت کے بعد دیکھئے کہ رسول ﷺ نے قرآن کیساتھ تو وَعِتْرَتِیْ بھی ارشاد فرمایا ہے......یعنی:

قرآن حقانیت کا پیکر ......اہلبیت صداقت کے پیکر
قرآن بھی لاجواب ......اہلبیت بھی لاجواب

## قرآن بھی بے مثال ......اہلبیت بھی بے مثال

ارے صداقت کا مرکز تھے...... میرے پیغمبر صلی اللہ علیہ وسلم کے اہلبیت ...... جب ہی تو میرے پیغمبر نے قرآن کو اہلبیت کا ساتھ دیا...... اور ان دونوں کو ہدایت کا مرکز قرار دیا تو ثابت ہوا...... کہ:

قرآن اہلبیت سے جدا نہیں رہے گا...... اور اہلبیت قرآن سے جدا نہیں رہیں گے...... اور پھر اس کے بعد آیئے ...... یہاں قرآن اور اہلبیت کا تعلق سمجھانے کیلئے ایک ''نکتہ'' پیش کرتا ہوں...... یعنی محققین کا قول صادق اس بات پر گواہ ہے...... کہ قرآن سارے کے حقائق و معارف کو اکٹھا کیا جائے تو سب کچھ ''سورۃ فاتحہ'' میں موجود ہے

جبھی تو بزرگان دین فرماتے ہیں کہ ''سورۂ فاتحہ'' پڑھنے سے پورا قرآن پڑھنے کا ثواب ملتا ہے...... اور وہ بھی اس لئے کہ پورا قرآن ''سورۂ فاتحہ'' میں موجود ہے...... یعنی قرآن کو اگر مختصر کیا...... تو سارا قرآن سورہ فاتحہ میں موجود ہے...... اور اس کے بعد ایک اور اندر کی بات بھی علماء کرام نے بیان فرمائی ہے ...... کہ تمام سورۂ فاتحہ کے ''حقائق و معارف'' کو اکٹھا کیا جائے تو وہ سب بسم اللہ الرحمٰن الرحیم میں موجود ہیں

یعنی...... جو حکمتیں پورے قرآن میں تھیں...... انہیں اللہ نے سورۂ فاتحہ میں رکھ دیا اور جتنی حکمتیں سورۃ فاتحہ میں تھیں...... انہیں اللہ نے بسم اللہ شریف میں رکھ دیا

اور پھر اس کے بعد صوفیا کرام نے تو اور کمال کی بات کہہ دی کہ ساری بسم اللہ الرحمٰن الرحیم کی حکمتیں بسم اللہ کی ''ب'' میں موجود ہیں اور ''عرفا'' تو پھر

اور آگے بڑھے اور فرمایا......کہ: پورے

قرآن کی حکمتیں ......سورہ فاتحہ میں ہیں

سورہ فاتحہ کی حکمتیں ......بسم اللہ شریف میں ہیں

بسم اللہ شریف کی حکمتیں ......''ب'' میں ہیں

اور عرفا کہتے ہیں......کہ ساری حکمتیں......بسم اللہ......کی ''ب'' کے ایک نقطے میں یکجا کردی گی ہیں! تو بس یہاں آکر مسئلہ حل ہوگیا......کہ:

مولا علی......حق کے ولی......خیبر شکن......شاہ مرداں فرماتے ہیں

انا نقطة تحت البا

میں ''ب'' کے نیچے کا نقطہ ہوں

ارے اسی لئے!

اب تک اولاد علی عظمت قرآن کا پرچم اٹھا کر چل رہی ہے......نگر نگر گلی گلی......قریہ قریہ......شہر شہر......بستی بستی......قرآن کا فیض......اولاد ''علی'' پہنچا رہی ہے......اس لئے کہ رسول ﷺ فرما چکے!

اِنِّیْ تَارِکٌ فِیْکُمُ الثَّقَلَیْنِ کِتَابُ اللّٰہِ وَ عِتْرَتِیْ

## قرآن بھی پاک اہلبیت بھی پاک:

یہ بات تو قرآن نے خود بتادی......کہ:

ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ

اس کتاب میں شک وشبہ کی گنجائش نہیں

تو ظاہر ہے جو ریب سے دور ہو......اور عیب سے دور ہو وہ پاک ہوگا......

اور پھر قرآن کے آداب بھی قرآن میں ہی بیان ہوئے ہیں! جیسے

لَا یَمَسُّہٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ

اس کو کوئی نہ چھوئے مگر پاک لوگ

ظاہر ہے جس کو ہاتھ لگانے والے...... کا ہاتھ لگانے سے پہلے خود پاک ہونا ضروری ہے تو وہ قرآن خود کس قدر پاک ہوگا؟

تو ثابت ہوا کہ قرآن ہر لحاظ سے پاک ہے ...... اب اس کے بعد اہلبیت وہ جن کو قیامت تک کیلئے قرآن کا ساتھ دیا گیا...... ان کی پاکی بھی یقیناً ضروری ہے

تو قرآن نے اس کا جواب بھی دے دیا ہے...... کہ:

میں پاک ہوں اور پیغمبر ﷺ مجھے جن کے ساتھ ہی چھوڑ کر جا رہے ہیں ان کی پاکی کا معیار یہ ہے...... کہ:

اِنَّمَا یُرِیْدُ اللّٰہُ لِیُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَیْتِ وَ یُطَهِّرَكُمْ تَطْهِیْرًا

یعنی ...... قرآن نے اپنی اور اہلبیت دونوں کی پاکیزگی کا معیاری ہونا ثابت کر دیا...... اور ان دونوں کی پاکی بھی نص قرآن سے ثابت ہوگئی۔

### 6- نکتہ:

اب آئیے اس کے بعد کی بات کرتے ہیں...... پاکی کا معیار تو دونوں کا اللہ نے خود ہی اپنے کلام میں بیان کر دیا...... لیکن میں اس حوالے سے ایک اور نکتہ آپ حضرات کے حوالے کرنا چاہتا ہوں

وہ یہ کہ!

آج پاکستان سے افغانستان تک
ہندوستان سے ایران تک
امریکہ سے برطانیہ تک
سوڈان سے لبنان تک
مصر سے قطر تک
بنگلہ دیش سے ماریش تک

## آل رسول کو اللہ نے پاک بنایا:

بلکہ پوری دنیا میں دیکھئے...... کہ کوئی عورت ایسی نہیں ملے گی...... کہ جو صحت مند ہو...... جوان ہو، غیر حاملہ ہو...... اور وہ پورے مہینے کی نمازیں بغیر شرعی عذر کے پڑھ سکتی ہو؟

یعنی ہر عورت جوان ہو...... تو اس کو مہینے کے کچھ دن ناپاکی میں گزارنا ہوتے ہیں اور مسلمان عورتوں کی ان دنوں میں نمازیں قضا نہیں ہوتیں...... بلکہ نمازیں معاف ہوتی ہیں...... لیکن ایک عورت ہے کہ جو اس ناپاکی سے دور ہے ...... وہ سیدہ فاطمۃ الزہراء رضی اللہ عنہا ہیں

ارے نکتہ یہاں یہ عرض کرنا ہے...... کہ سیدہ فاطمہ رضی اللہ عنہا کی پاکی کا معیار سب سے بڑا یہ ہے کہ پیغمبر صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا

اَلْفَاطِمَۃُ بَضْعَۃٌ مِّنِّیْ
فاطمہ میرے جگر کا ٹکڑا ہے

ارے جو پیغمبر کے جگر کا ٹکڑا ہو...... وہ کتنی پاک ہوگی اس کا اندازہ اس حدیث پاک سے لگالو...... وہ اس لئے کہ ان کو پیغمبر صلی اللہ علیہ وسلم نے ساتھ دیا...... قرآن

کا...... اور پاک قرآن کے ساتھ ضروری تھا کہ ساتھ بھی پاکیزہ نفوس کا ہی ہوتا...... تو میرے رسول ﷺ نے

''علی'' کو بسم اللہ...... کا نقطہ بنا کر پاکی ثابت کروادی

اور فاطمہ کو رسول اللہ...... کا ٹکڑا بنا کر پاکی ثابت کروادی

ارے...... قرآن بھی پاک ثابت ہوا...... اہلبیت کے لوگ بھی پاک ثابت ہوئے۔

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## 7- نکتہ:

آپ حضرات پڑھے لکھے ہیں...... اور سمجھدار ہیں...... آپ جانتے ہیں کہ عورت کو ماہواری کی صورت میں آنے والا خون...... جو کہ ہر مہینے آتا ہے...... لیکن اگر عورت حاملہ ہو تو پھر حمل کے مہینوں میں ''وضع حمل'' تک وہ خون آنا بند ہو جاتا ہے۔

یعنی ہر جوان عورت کو یہ ماہواری کا خون تو آتا ہے...... لیکن اگر وہ عورت شادی شدہ ہو اور حاملہ ہو جائے تو پھر وہ ماہانہ خون آنا بند ہو جاتا ہے...... اور وہ خون پھر اس عورت کے پیٹ میں پلنے والے بچے کی خوراک بن جاتا ہے اسی خون سے انسان شکم مادر میں بن رہا ہے...... خوراک لے رہا ہے...... اور زندہ رہ رہا ہے...... اور جب یہ بات صحیح ہے کہ یہ نظام قدرت ہے...... کہ اللہ شکم مادر میں انسان کی خوراک اس چیز کو بنا رہا ہے کہ بظاہر جو ناپاک ہوتی ہے لیکن میں سوال کرتا ہوں...... کہ سیدہ کائنات...... سیدہ فاطمۃ الزہراء رضی اللہ عنہا تو اس ناپاکی سے پاک تھیں......

اس ماہواری سے پاک تھیں ...... تو پھر ان کے بچے کیسے تخلیقی مراحل سے گزرے ...... ارے بتاؤ تو جو ماں کے شکم میں خوراک خون کی شکل میں ملتی ہے ...... وہ تو اس کائنات کی عظیم سیدہ میں ہے ہی نہیں ...... پھر ان کی اولاد کیسے سے وجود میں آئی؟

ارے ...... اس کا جواب کسی جماعت والے نے مجھے نہیں دیا ...... اس کا جواب مجھے چالیس دن کے چلے والے سے نہیں ملا ...... مجھے تو اس کا جواب اپنے مسلک حق کے غیور امام کی زبان سے ملا ہے ...... میرے امام نے چند لفظوں میں ہی ان تمام سوالوں کا جواب دے دیا ...... کہ:

تیری نسل پاک میں ہے بچہ بچہ نور کا
تو ہے عین نور تیرا سب گھرانہ نور کا

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

اب دیکھئے ...... میرے رسول ﷺ نے پاک قرآن کا ساتھ جن لوگوں کو عطا کیا ...... اور جن لوگوں کو قرآن کے ساتھ بیان فرمایا:

ان کی ...... اصل بھی پاک ہے
ان کی ...... نسل بھی پاک ہے
ان کی ...... طبیعت بھی پاک ہے
ان کی ...... سیرت بھی پاک ہے

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰه
وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰه

## حالت نماز میں حسین ؓ پشت نبی پر

عزیزان گرامی!

ارے بڑا پیار ہوتا ہے...... نانا کو اپنے نواسے سے...... تو میرے نبی ﷺ کو اپنے نواسوں سے کتنا پیارا ہے...... وہ بات کوئی کسی سے ڈھکی چھپی ہوئی نہیں

ادھر......

نانا بھی لاجواب ......اور نواسہ بھی لاجواب
نانا بھی بے مثال ......اور نواسہ بھی بے مثال ہے
نانا بھی اعلیٰ ......اور نواسہ بھی اعلیٰ
نانا بھی افضل ......اور نواسہ بھی افضل
نانا نبی ہے ......اور نواسہ ولی ہے
نانا نبیوں کا امام ہے ......اور نواسہ ولیوں کا امام ہے
نانا بھی رب کے قریب ہے ......اور نواسہ بھی رب کے قریب ہے
نانا نبیوں میں معتبر ہے اور نواسہ ولیوں میں معتبر ہے

بس میرے رسول ﷺ کی مسجد شریف ہے...... نور کی برکھا چھم چھم برس رہی ہے...... اسلامی نظام اپنی خوشبو ہر سو بکھیر رہا ہے...... دلوں پر سکینہ اتر رہا ہے...... اور مسجد نبوی شریف کے بابرکت اور عظیم الشان ماحول میں وقت نماز ہے......

شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيرًا کے تاج بے مثال والے بے مثل امام مصلی امامت کو شرف بخش رہے ہیں...... اور ایسے دلنشیں ماحول میں جہاں بھر سے قیمتی حسین رضی اللہ عنہ اپنے گھر سے نکلتے ہیں...... حسین رضی اللہ عنہ دل میں بے پناہ محبت رسول

ﷺ بسائے ہوئے ...... اپنی معصومانہ اداؤں کیساتھ چلتے چلتے ...... صفوں سے گزرتے گزرتے اپنے امام الانبیاء ﷺ نانا کے قریب آجاتے ہیں ...... میرے رسول ﷺ حالت نماز میں ہیں اور پھر نماز کے اندر بھی نماز کا سب سے اہم رکن ادا فرما رہے ہیں۔

یعنی میرے رسول ﷺ کو جب سخی حسین رضی اللہ عنہ نے حالت نماز میں اور سجدہ کی حالت میں دیکھا ...... تو اظہار محبت کیلئے دریائے رحمت میں آبیٹھے ...... یعنی حسین رضی اللہ عنہ حالت نماز میں اپنے بے مثال نانا کی پشت انور پر سوار ہو گئے ...... نبی ﷺ کی نماز جاری ہے ...... یعنی نبی ﷺ کی نماز ہو رہی ہے ...... اور حسین رضی اللہ عنہ کی پشت نبی

ﷺ پر سواری ہو رہی ہے۔

### 8- نکتہ:

اب یہاں پر غور کرنا میں ایک بہت بھاری جملہ آپ حضرات کو دینے والا ہوں کہ جب میرے حسین رضی اللہ عنہ پشت نبی ﷺ پر سوار ہوئے تو ...... نبی ﷺ جان گئے کہ میری پشت پر حسین رضی اللہ عنہ آگیا ہے ...... اب دیکھو کہ میرے نبی ﷺ نے حسین رضی اللہ عنہ کو پشت انور سے اتارا نہیں ہے ...... اور سجدے سے سر انور اٹھایا بھی نہیں ہے ...... کہ کہیں حسین ﷺ کو تکلیف نہ پہنچے ...... ارے سوچو تو کتنا قیمتی ہے میرا حسین؟

حسین پشت پر سوار ہیں ...... یہ رضائے حسین ہے
نبی ﷺ سجدہ لمبا کر رہے ہیں ...... یہ ادائے محبت ہے

اب یہ عرض کرنے والا ہوں کہ جب حسین رضی اللہ عنہ پشت نبی ﷺ پر سوار

ایک جگر پارے کا خیال تھا

## سرکار کا حالت نماز میں حسین کا خیال کرنا:

کیا میرے نبی ﷺ نے اپنی نماز میں دنیا کو سوچا؟...... کیا میرے نبی ﷺ نے نماز میں اپنے نواسے کی طرف ہی دھیان رکھا؟

ارے...... حالت نماز میں نبی ﷺ کو...... مقام حسین تو یاد آیا

عظمت حسین تو یاد آئی
عزت حسین تو یاد آئی
طہارت حسین تو یاد آئی
قربت حسین تو یاد آئی
رفعت حسین تو یاد آئی

تو اب فیصلہ یہ کرنا ہے...... کہ ہمارے نبی ﷺ کی نماز تو دنیاوی خیالات سے پاک ہے...... اب بتاؤ...... نبی ﷺ نے حالت نماز میں...... دین کو سوچا

یا...... دنیا کو سوچا

ہاں یہ میرا سوال ہے...... آپ سب سے کہ...... حسین کو اب دنیا میں شمار کروں

یا...... دین میں شمار کروں

اگر حسین کو دنیا کہو گے تو اعتراض مصطفیٰ ﷺ کی نماز پر ہوگا...... کہ نبی ﷺ نے حالت نماز میں دنیا کا خیال کیا...... ذرا ہوش میں ذرا سوچ کر جواب دینا ہوگا...... امتی اپنے نبی ﷺ کی نماز پر اعتراض کیسے کرسکتا ہے؟

ارے ایمان کدھر جائے گا؟ ارے ایمان بھی بچانا ہے...... بات کو انجام تک بھی پہنچانا ہے

اس لئے میرے سخی حسین رضی اللہ عنہ

اس لئے میرے قیمتی حسین رضی اللہ عنہ...... کو دنیا نہ کہو...... توجہ کرنا میں بہت بڑا جملہ کہنے جا رہا ہوں

کہ...... میرے حسین رضی اللہ عنہ کو دنیا نہ کہو...... ارے وہ کہو جو خواجہ غریب نواز رحمۃ اللہ علیہ نے کہا تھا۔

ہاں! ہاں! صرف وہی کہو...... جو خواجہ معین الدین چشتی اجمیری رحمۃ اللہ علیہ نے کہا تھا

دین است حسین رضی اللہ عنہ، دین پناہ است حسین

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ صلی اللہ علیہ وسلم

ارے یہ ہیں وہ اہلبیت جن کو میرے نبی صلی اللہ علیہ وسلم نے قرآن کا ساتھی بنایا

ارے اب چاہے کوئی اپنے گھروں میں یزیدیوں کا انبار لگا لے...... لیکن کربلا والے حسین کے خون کا سودا نہ کل کربلا میں ہو سکا تھا...... اور نہ کوئی آج کر سکتا ہے یاد رکھنا...... کہ

کربلا کوئی عراق کی ہی زمین نہیں ہے
بلکہ کربلا تو حق کے فیصلے کی زمین ہے

ارے...... قرآن پڑھ کے دیکھو!

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ

والا اعلان خداوندی بتا رہا ہے...... کہ

جس کو خدا نے اپنی حفاظت میں لے لیا ......وہ قرآن ہے

جس کو مصطفیٰ ﷺ نے اپنی حفاظت میں لے لیا ......وہ اہلبیت ہے

تو یہ دونوں میرے نبی ﷺ نے اپنی امت کو دے دیئے ......

اور فرمایا:

اِنِّیْ تَارِکٌ فِیْکُمُ الثَّقَلَیْنِ کِتَابُ اللّٰہِ وَ عِتْرَتِیْ

دیکھو جہاں بھر میں!

قرآن بھی ......ہدایت بانٹ رہا ہے
اہلبیت بھی ......ہدایت بانٹ رہے ہیں
قرآن بھی ......فیصلہ کر رہا ہے
اہلبیت بھی ......فیصلہ کر رہے ہیں
قرآن بھی ......نور بانٹ رہا ہے
اہلبیت بھی ......نور بانٹ رہے ہیں
قرآن بھی ......انصاف کر رہا ہے
اہلبیت بھی ......انصاف کر رہے ہیں
قرآن بھی ......خلوص دے رہا ہے
اہلبیت بھی ......خلوص دے رہے ہیں
قرآن بھی ......عزت دے رہا ہے
اہلبیت بھی ......عزت دے رہے ہیں
قرآن بھی ......اللہ کی بات بتا رہا ہے
اہلبیت بھی ......اللہ کی بات بتا رہے ہیں

قرآن بھی ......خدا تک پہنچا رہا ہے
اہلبیت بھی ......خدا تک پہنچا رہے ہیں

اس لئے......کہ:

دین است حسین رضی اللہ عنہ دین پناہ است حسین
وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ

……

# موضوع......قبر کے سوالات اور نبی ﷺ کے کمالات

نَحْمَدُهٗ وَ نَسْتَعِيْنُهٗ وَ نَسْتَغْفِرُهٗ وَ نُؤْمِنُ
بِهٖ وَ نَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَ نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ
اَنْفُسِنَا وَ مِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمٰلِنَا وَ مَنْ يَّهْدِيْهِ
اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَ مَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ
لَهٗ وَ نَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ
لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَ نَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَ نَا مَوْلَانَا وَ
حَبِيْبَنَا وَ سِرَاجَنَا وَ اَشْرَفَنَاوَ سَيِّدَ نَا
مُحَمَّدٍ ﷺ

اَمَّا بَعْدُ!

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰى فِی الْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ وَ
الْفُرْقَانِ الْحَمِيْدِ...... اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ
الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً
وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ
صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلٰنَا الْعَظِيْمُ
اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ط
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝

بارگاہ رسالت مآب ﷺ میں ہدیہ درود وسلام پیش کیجئے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

عزیز علماء کرام...... سادات کرام اور دیگر سلاسل کے مشائخ عظام آج تو اللہ نے اپنا خصوصی فضل کر دیا اور ہم سب کو محفل میلاد النبی ﷺ میں اکٹھا کر دیا...... خیر دعاؤں کیساتھ ہی اس محفل کی ابتدا ہو رہی ہے...... اور دعاؤں کیساتھ ہی تکمیل کو پہنچے گی...... ان شاء اللہ

میں آپ کو بتاؤں ایک دعا بذریعہ قرآن ہم تک پہنچی ہے...... وہ میں آپ کو سناتا ہوں...... اور آپ میں سے بہت سارے پہلے ہی یقیناً اس دعا کو ازبر کر چکے ہوں گے...... آج بات بات پر کہا جاتا ہے کہ ارے بھائی کیا حال ہے؟...... جی بس دعا کرو...... ارے کہاں جا رہے ہو؟ ارے بھائی جہاں بھی جا رہا ہوں...... بس تم دعا کرو...... یعنی بات بات پر دعا کی درخواست کی جا رہی ہے...... لیکن اس سے پہلے یہ بات بھی تو حقیقت ہے کہ اگر نبی ﷺ نہ آتے...... تو قرآن بھی نہ آتا...... اور اگر قرآن نہ آتا...... تو یہ دعا بھی نہ آتی۔

## دنیا اور آخرت کی بھلائی:

خیر بہت ہی مشہور دعا ہے...... اور وہ ہم تک پہنچی ہے صدقہ میلاد مصطفیٰ ﷺ کا...... اور وہ یہ دعا ہے

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَۃً وَّ فِی الْاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

جو قرآن کے اندر دعا موجود ہے...... وہ دعا آپ اکثر اوقات مانگتے رہتے ہیں تو ایسا محسوس ہوتا ہے...... کہ

آپ حضرات اس دعا کے ذریعے سے......

دنیا کی بھلائی رب سے مانگ رہے ہیں

آخرت کی بھلائی رب سے مانگ رہے ہیں

اور!

جہنم سے بچنے کی دعا رب سے مانگ رہے ہیں

لیکن اس دعا میں تو کہیں یہ ذکر نہیں ہے...... کہ:

اے اللہ عالم ارواح میں ہمیں اچھا رکھ...... یا ماں کے پیٹ میں ہمیں اچھا رکھ:

## 1- نکتہ!

دیکھئے! ہم یہاں آنے سے پہلے ماں کے پیٹ میں تھے...... اور ماں کے پیٹ میں آنے سے پہلے...... ہم عالم ارواح میں تھے۔

چاہے...... کوئی نبی ہو
چاہے...... کوئی ولی ہو
چاہے...... کوئی عربی ہو
چاہے...... کوئی عجمی ہو

سب کی پہلی دنیا...... عالم ارواح ہے
دوسری دنیا...... شکم مادر
تیسری دنیا...... یہی جہاں وہ رہتے ہیں

یعنی...... اب ہم جس میں رہ رہے ہیں...... وہ ترتیب کے لحاظ سے تیسری دنیا ہے...... اور تیسری دنیا میں...... جب ہم نے آکر دعا

کی! تو پھر کہا

رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَۃً...... یعنی بولتے ہی...... یہ کہا کہ ہم اس دنیا میں اچھے رہیں

لیکن......

ہم عالم ارواح میں اچھے رہیں ...... یہ نہیں کہا
ہم شکم مادر میں اچھے رہیں ...... یہ نہیں کہا

یعنی...... ان دونوں جگہوں کیلئے کوئی دعا نہیں...... دعا ہے تو دنیا اور آخرت کیلئے!

ابھی ہم اسی سوچ میں تھے تو کسی نے مجھے آگے سے کہہ دیا...... اے ہاشمی! کیوں سوچ میں پڑے ہوئے ہو......:

عالم ارواح میں تو ایمان وعمل کا مسئلہ ہی نہیں
شکم مادر میں تو ایمان وعقیدے کا مسئلہ ہی نہیں

یعنی...... عالم ارواح تو ہر لحاظ سے محفوظ جگہ ہے...... وہاں تو کوئی کسی قسم کا مسئلہ ہی نہیں...... اور دوسری دنیا شکم مادر وہ بھی محفوظ جگہ ہے...... نہ ادھر کوئی شریعت کا مکلّف ہے...... نہ ادھر کوئی نمازی یا بے نمازی ہے...... اور نہ ہی شکم مادر میں کوئی صحیح العقیدہ یا بدعقیدہ ہے

ارے یہ سب کچھ تو اس تیسری دنیا میں آکر ہوا

شریعت ...... کا مکلف...... اس دنیا میں آکر ہوا
مذہب ...... کا پابند...... اس دنیا میں آکر ہوا
صحیح العقیدہ ...... یا بدعقیدہ...... اس دنیا میں آکر ہوا

اور جب اس دنیا میں آیا تو پھر یہ دعا شروع ہوگئی

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً

یعنی:

جہاں شر کا خطرہ ہے ......وہیں دعا کی جا رہی ہے
جہاں فساد کا خطرہ ہے ......وہیں دعا کی جا رہی ہے
جہاں بدعملی کا خوف ہے ......وہیں دعا کی جا رہی ہے
جہاں بدعقیدگی کا خوف ہے ......وہیں دعا کی جا رہی ہے

یعنی ...... انسان کو یہ سارے خطرات اس دنیا میں آ کر نظر آئے تو وہ اپنے رب کی پناہ مانگ رہا ہے.. ر جب اس کو پناہ مل گئی ......تو پھر کیا فوائد ملتے ہیں ...... وہ یہ کہ اس کی دنیا بھی بہتر ہو رہی ہے اور آخرت بھی ......:

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## انسان ایک مسافر ہے:

ہاں! بھائی یہ تو بہت بڑی ایک حقیقت ہے کہ انسان مسافر ہے...... ایک بندہ کہتا ہے فلاں صاحب اتنے سالوں سے اسی محلے میں رہ رہے ہیں ...... انہوں نے تو کبھی سفر نہیں کیا؟ ...... تو میں نے کہا ارے وہ سفر ہی تو کر رہا ہے...... دیکھئے!

انسان جب عالم ارواح میں تھا...... تو جتنی دیر رب نے چاہا وہ عالم ارواح میں رکا رہا...... پھر حکم ہوا کہ چلو اب دنیا بدلو...... تو وہاں سے چلا...... اور باپ کے واسطے سے شکم مادر میں آ گیا...... اب یہاں جتنی دیر اللہ کو منظور تھا...... وہ رکا

رہا...... موجود رہا...... پھر اس انسان کو حکم ہوا چلو اب دنیا بدلو...... تو وہ انسان شکم مادر سے اس دنیا میں آ گیا...... یعنی اس دنیا میں آ گیا جہاں میں اور آپ سب رہ رہے ہیں

پھر یہاں پر جتنی دیر اللہ کو منظور ہے:

ایک سال

دو سال

دس سال

پچاس سال

سو سال

جتنی دیر بھی رکا رہا پھر حکم ہوا کہ چلو دنیا بدلو...... اور پھر اس کے بعد موت وسیلہ بنی دنیا بدلنے کا...... اور پھر اس کے بعد والی دنیا میں داخل ہو گے...... یعنی قبر کی دنیا میں پہنچ جائیں گے...... اور پھر اس کے بعد قبر میں بھی جب تک اللہ کو منظور ہے سب رہیں گے...... پھر اس کے بعد حکم ہوگا...... چلو دنیا بدلو...... اور اب قبر کی دنیا سے نکل کر محشر میں سب چلیں جائیں گے...... اور جتنی دیر رضائے خداوندی ہوگی سب محشر کی دنیا میں موجود رہیں گے...... لیکن اس کے بعد پھر حکم ہوگا...... چلو دنیا بدلو...... اور ہم رحمت الٰہی سے جنت میں چلے جائیں گے۔

ارے میں یہاں سوال کرتا ہوں کہ انسان تو سفر کر رہا ہے...... ایک جہاں سے دوسرے جہاں کی طرف جا رہا ہے...... ایک حالت سے دوسری حالت کی طرف جا رہا ہے...... ایک آزمائش سے دوسری آزمائش کی طرف جا رہا ہے......

ایک دنیا سے دوسری دنیا کی طرف سفر کر رہا ہے۔

ارے تم بتاؤ کہ ہم مٹے کہاں ہیں؟ کراچی والو...... تم مجھے یہ بتاؤ...... کہ
ہم ختم کب ہوں گے، ہم تو دنیا ہی بدلتے رہے
اب بتاؤ کہ کیا دنیا بدلنے والے کو مٹا ہوا کہو گے؟
کیا ایک مسافر کو مردہ کہو گے؟

## ہم جس کو مانتے ہیں زندہ سمجھ کے مانتے ہیں:

سامعین حضرات:

اب دیکھئے! میں کل لاہور میں تھا...... اور آج آپ کے سامنے کراچی میں ہوں...... میرا انتقال ہو گیا...... میرا ٹرانسفر ہو گیا...... یعنی میں ایک جگہ سے دوسری جگہ پر نقل مکانی کر گیا ہوں...... تو بتاؤ کہ کیا میں مردہ ہوں؟ اب دیکھو! کہ جب میں اس اسٹیج پر آیا تو دوستوں نے مجھ پر پھول چڑھائے ہیں...... اب بتاؤ کہ انہوں نے مجھ پر یہ پھول مجھے زندہ سمجھ کے چڑھائے ہیں یا پھر مردہ سمجھ کر چڑھائے ہیں؟

تو یقیناً چڑھانے والوں کا جواب ہے کہ ہم نے زندہ سمجھ کر پھول چڑھائے ہیں...... ارے پھول تو ہمیشہ زندوں پر ہی چڑھائے جاتے ہیں تو اس چھوٹی سی بات پر سنیوں کا نظریہ صاف ہو گیا...... کہ ہم پھول صرف زندوں پر ہی چڑھاتے ہیں

بڑی توجہ چاہوں گا...... اشارے کی زبان بول رہا ہوں...... سمجھ سکو تو سمجھ جانا...... کہ ہم پھول ہمیشہ زندوں پر ہی چڑھاتے ہیں

زندہ ...... چاہے زمین پر ہو

یا زندہ ...... چاہے زمین میں ہو

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

انتہائی توجہ کرنا...... کہ:

اگر علما زمین پر زندہ ہیں
اگر عوام اہلسنت زمین پر زندہ ہیں
اگر صالحین زمین پر زندہ ہیں
اگر پارسا زمین پر زندہ ہیں

تو ان پر پھول چڑھائے جا رہے ہیں...... کہ یہ سب زمین پر زندہ ہیں غوث اعظم رحمۃ اللہ علیہ کے مزار پر پھول اس لئے چڑھائے جا رہے ہیں...... کہ:

وہ زمین میں زندہ ہیں

امام اعظم رحمۃ اللہ علیہ کے مزار پر پھول اس لئے چڑھائے جا رہے ہیں...... کہ:

وہ زمین میں زندہ ہیں

خواجہ اجمیری رحمۃ اللہ علیہ کے مزار پر پھول اس لئے چڑھائے جا رہے ہیں...... کہ:

وہ زمین میں زندہ ہیں

داتا علی ہجویری رحمۃ اللہ علیہ کے مزار پر پھول اس لئے چڑھائے جا رہے ہیں...... کہ:

وہ زمین میں زندہ ہیں

حضرت ذکریا ملتانی رحمۃ اللہ علیہ کے مزار پر پھول اس لئے چڑھائے جا رہے ہیں

......کہ:

وہ زمین میں زندہ ہیں

حضرت شیر ربانی رحمۃ اللہ علیہ کے مزار پر پھول اس لئے چڑھائے جا رہے ہیں......کہ:

وہ زمین میں زندہ ہیں

تو اس لئے اعتراض نہ کیا کرو......کہ تم سنی لوگ قبروں پر پھول کیوں چڑھاتے ہو؟......ارے تم پر پھول اس لئے چڑھائے جاتے ہیں کہ تم زمین پر زندہ ہو......اور ان اللہ والوں کی قبروں پر پھول اس لئے چڑھائے جاتے ہیں کہ......یہ سب اللہ والے اپنی قبروں میں زندہ ہیں

## قبر کی زات فیصلے کی رات:

اور جب مرنے والا قبر میں گیا......تو پھر اس کے مستقبل کا فیصلہ اسی قبر میں طے پا گیا......اب قبر میں سوالات کئے جاتے ہیں!

ہاں! بھائی یاد رکھنا......کہ:

وہ سوالات ......نماز کے متعلق نہیں ہوں گے
وہ سوالات ......زکوۃ کے متعلق نہیں ہوں گے
وہ سوالات ......حج کے متعلق نہیں ہوں گے
وہ سوالات ......روزے کے متعلق نہیں ہوں گے
وہ سوالات ......جہاد کے متعلق نہیں ہوں گے
وہ سوالات ......سیاسیات کے متعلق نہیں ہوں گے
وہ سوالات ......معاشیات کے متعلق نہیں ہوں گے

ارے...... وہ تو صرف تین سوال ہوں گے اور تینوں سوال ہی عقیدے کے متعلق ہوں گے...... ارے اللہ بھی یہ چاہتا ہے...... کہ:

نماز کا بعد میں پوچھیں گے ...... پہلے عقیدہ دیکھو
زکوٰۃ کا بعد میں پوچھیں گے ...... پہلے عقیدہ دیکھو
حج کا بعد میں پوچھیں گے ...... پہلے عقیدہ دیکھو
روزے کا بعد میں پوچھیں گے ...... پہلے عقیدہ دیکھو
جہاد کا بعد میں پوچھیں گے ...... پہلے عقیدہ دیکھو

دیکھو تو ذرا کہ مولوی نمازوں پر نمازیں پڑھتے رہے...... لیکن قبر میں نماز کوئی پوچھ ہی نہیں رہا؟

ساری عمر فرضی اور نفلی روزے رکھتے رہے...... لیکن قبر میں روزوں کا کوئی پوچھ ہی نہیں رہا؟

اس لئے کہ...... قبر...... وہ درمیانی دنیا ہے...... کہ جہاں پچھلی عمر کا حساب بھی ہو جائے گا...... اور بندے کا مستقبل بھی طے پا جائے گا

باقی سوالات ہوں گے ضرور...... لیکن محشر کے دن ہوں گے...... قبر میں تو یہ پوچھا جائے گا...... کہ:

یہ نمازیں تو پڑھتا رہا ہے ......اب عقیدہ دیکھو
یہ روزے تو رکھتا رہا ہے ......اب عقیدہ دیکھو
یہ زکوٰۃ تو دیتا رہا ہے ......اب عقیدہ دیکھو
یہ جہاد تو کرتا رہا ہے ......اب عقیدہ دیکھو

ادھر قبر میں اتارا اور ساتھیوں نے مٹی ڈالی...... واپس آئے اور ادھر قبر میں

منکر و نکیر آ گئے اور یہ پوچھ ہی نہیں رہے...... کہ:

نماز پڑھی تھی کہ نہیں
روزہ رکھا تھا کہ نہیں
زکوٰۃ دی تھی کہ نہیں
جہاد کیا تھا کہ نہیں
حج کیا تھا کہ نہیں

ارے میں تو یہ کہوں گا...... کہ اگر تمہیں محشر میں اپنی نمازیں...... اور روزے پیش کرنا ہیں اور پاس ہونا ہے تو پھر قبر میں ہونے والے سوالات کی تیاری کرتے ہوئے

سب سے پہلے عقیدہ سنبھالو
سب سے پہلے عقیدہ سنوارو
سب سے پہلے عقیدہ بناؤ
سب سے پہلے عقیدہ سجاؤ

اور کیا کہا...... کہ:

اولیں پرسش نماز بود
سب سے پہلے نماز کے متعلق سوال ہوگا

لیکن ہونا کہاں ہے...... محشر میں ہونا ہے...... لیکن جو اس سے پہلے ہونا ہے اس سے غافل کیوں ہو؟

**محشر سے پہلے کا حشر زیر قبر:**

دیکھئے!

ہمارا ایمان ہے کہ نماز ایک فرض عبادت ہے
ہمارا ایمان ہے کہ روزہ ایک فرض عبادت ہے
ہمارا ایمان ہے کہ حج ایک فرض عبادت ہے
ہمارا ایمان ہے کہ جہاد ایک فرض عبادت ہے

ہم کسی عبادت کے متعلق انکار نہیں کر رہے...... بلکہ ہمارا تو ایمان ہے......
کہ وہ رب تو ذرے ذرے کا حساب لے گا

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ
وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ

یعنی قرآن کی ان آیات پر ہمارا مکمل ایمان ہے...... لیکن اس وقت بات ہو رہی ہے کہ...... یہ تمام سوالات تو محشر میں ہوں گے...... یہ سوالات قبر کے نہیں ہیں...... ارے محشر کے سوالات سے پہلے:

جو قبر میں سوالات ہونے والے ہیں
جو قبر میں فیصلے ہونے والے ہیں
جو قبر میں امتحان ہونے والا ہے
جو قبر میں حشر ہونے والا ہے

وہ سوالات بھی تو ضروری ہیں...... یاد رکھو!

جس کی قبر اچھی ...... اس کی آخرت اچھی
جس کی قبر بہتر ...... اس کی آخرت بہتر
جو قبر میں کامیاب ...... وہ محشر میں کامیاب
جو قبر میں خوش ...... وہ محشر میں خوش

ارے...... قبر کے سوالات تو صرف تین ہیں...... ابھی سے تیاری کرلو...... اگر ابھی سے تیاری کرلی...... تو پھر قبر کے اچھے ہونے کی وجہ سے...... قبر میں کامیاب ہونے کی وجہ سے

دنیاوی زندگی بھی جو گزاری ہے...... بہترین کہلائے گی...... اور پھر محشر کے معاملات...... حالات...... اور سوالات بھی بہتر طریقے سے انجام کو پہنچیں گے ...... کب پہنچیں گے کہ جب قبر کی زندگی کامیاب ہوگی...... آج ہم دیکھتے ہیں...... کہ:

لوگوں کو......

نماز کی رکعات تو یاد ہیں ...... لیکن قبر کے سوالات یاد نہیں
زکوۃ کا نصاب تو معلوم ہے ...... لیکن قبر کا معیار یاد نہیں
حج کے فرائض تو معلوم ہیں ...... لیکن قبر کے معاملات یاد نہیں
جہاد کی فرضیت تو معلوم ہے ...... لیکن قبر کی اہمیت یاد نہیں

## کامیابی کا انحصار قبر کے سوالات پر ہے:

آج دوڑ لگی ہوئی ہے...... دنیا کو کامیاب بنانے کی...... لیکن اگر غور کیا جاتا تو زیادہ ضرورت تھی...... قبر کی تیاری اور قبر کو کامیاب بنانے کی

اور قبر کی کامیابی کیلئے...... قبر کے سوالات کی تیاری ضروری ہے...... اور قبر میں ہونے والے تین سوال ازحد یاد کرنا ضروری ہیں

پہلا سوال...... مَنْ رَّبُّكَ
جواب...... رَبِّیَ اللّٰهُ
دوسرا سوال...... مَا دِیْنُكَ

جواب...... دِیْنِیَ الْاِسْلَامُ

تیسرا سوال...... مَا کُنْتَ تَقُوْلُ فِیْ ھٰذَا الرَّجُلُ

جواب...... ھٰذَا نَبِیُّنَا مُحَمَّدٌ ﷺ

## 2- نکتہ:

عزیزان گرامی قدر!

یہی وہ تین سوال ہیں کہ جن کے بارے میں...... آپ کو بتانے کیلئے میں قبر پر گفتگو کر رہا تھا...... یہی وہ تین سوال ہیں کہ جو قبر میں کامیابی کا معیار ہیں

اور!

جس کی...... قبر میں بہار ہے اس کیلئے محشر میں بہار ہے
جس کی...... قبر میں نور ہے اس کیلئے محشر میں نور ہے
جس کی...... قبر میں کامیابی ہے اس کیلئے محشر میں کامیابی ہے
جس کی...... قبر میں نجات ہے اس کیلئے محشر میں نجات ہے
جس کی...... قبر میں سکون ہے اس کیلئے محشر میں سکون ہے

تو یہ سکون آپ نے سن لیا کہ کیسے آئے گا...... یقیناً قبر کے سوالات کا صحیح صحیح جواب دے پانے سے ہی آئے گا...... اگر کوئی قبر کے ان سوالوں کا جواب صحیح نہ دے پایا تو پھر محشر میں رسوا ہو جائے گا۔

خیر! یہاں ایک نکتہ پیش کرنا چاہتا ہوں...... کہ قبر کے سوالات کی ترتیب حدیث سے آپ نے سماعت فرمائی

پہلے...... اللہ کے متعلق سوال ہوا

دوسرا...... دین کے متعلق سوال ہوا

تیسرا...... نبی ﷺ کے متعلق سوال ہوا

دیکھئے! کتنی بڑی امتحان گاہ ہے قبر...... لیکن قبر کے سوالات کی ترتیب نے سوچ میں ڈال دیا۔

اگر کوئی اور ہوتا تو ترتیب یوں بناتا...... کہ

پہلے...... اللہ، پھر...... نبی...... بعد میں...... دین ہوتا

ارے بتاؤ تو کہ پہلے ''دین'' آیا تھا...... کہ نبی آئے تھے؟

آپ کہیں گے...... کہ یقیناً پہلے نبی ﷺ آئے ...... اور دین بعد میں آیا

تو پھر سوچنے کی بات ہے...... کہ:

قبر کے سوالات میں دین پہلے بیان ہوا...... نبی کے متعلق سوال بعد میں ہوا...... آخر ایسا کیوں ہوا؟...... تو آیئے سنیئے

ایک دن میں بھی بیٹھے بیٹھے سوچ رہا تھا تو پھر آخر کار میرے ذہن میں بھی جواب آ ہی گیا...... کہ

ایک چادر کے نیچے میں نے ایک آدمی کو لٹایا اور سر سے پاؤں تک ڈھانپ دیا اور لوگوں کو اکٹھا کر لیا...... کہ ارے مسلمانوں ادھر آؤ...... اور پھر میں نے سوال کیا کہ تم سارے مسلمان بتاؤ...... کہ اس چادر کے نیچے جو لیٹا ہوا ہے وہ کون ہے؟

تو لوگوں نے جواب دیا کہ ہاشمی میاں...... جو چادر کے نیچے ڈھانپ دیا گیا ہے...... ہمیں کیسے پتہ چلے کہ کون لیٹا ہوا ہے...... اور اب تو دور ایسا آ گیا ہے کہ چہرہ دیکھ کر بھی انسان کے مذہب کا پتہ تو چلتا نہیں...... اور تم اس شخص کے بارے میں پوچھ رہے ہو کہ جس کو چادر میں اچھے طریقے سے ڈھانپ دیا گیا ہے......

اب ہم کیا جانیں کہ یہ کون ہے؟

یہ کیسا ہے؟

یہ کون سے مذہب والا ہے؟

تو میں نے کہا...... کہ اس چادر کے نیچے لیٹے ہوئے شخص سے پوچھ...... کہ:

مَنْ رَبُّكَ...... تیرا رب کون ہے؟

اور اب اس چادر کے نیچے لیٹے ہوئے نے...... لیٹے لیٹے...... جواب دیا...... کہ

میرا رب؟...... میرا رب تو "اللہ" ہے

تو اب...... اس کے اس جواب سے پتہ چلا...... کہ

یہ شخص دہریہ نہیں ہے
یہ شخص بت پرست نہیں ہے
یہ شخص کیمونسٹ نہیں ہے

یعنی! جب اس چادر کے نیچے چھپے ہوئے...... لیٹے ہوئے شخص نے چھپے چھپے...... ہٹے ہٹے یہ جواب دے دیا کہ میرا رب "اللہ" ہے...... تو یہ ثابت ہو گیا کہ اللہ کو مانتا ہے...... لیکن یہاں پھر ایک شبہ پیدا ہو گیا...... کہ:

اللہ...... کو ماننے والے تو اور بھی مذہب ہیں...... ارے یہ کس مذہب کی بنیاد پر خدا کو مانتا ہے؟

تو پھر اس پیدا ہونے والے شبے کو دور کرنے کیلئے...... اس سے پھر ایک سوال کیا...... کہ تمہارا دین ہے؟ یعنی اس سے سوال کر لیا...... کہ:

مَا دِيْنُكَ...... تیرا دین کیا ہے

تو اس نے فوراً جواب دیا...... کہ:

دِیْنِیَ الْاِسْلَامُ ...... میرا دین اسلام ہے

تو جب اس چادر کے نیچے لیٹے ہوئے شخص نے "اسلام" کو اپنا دین بتایا تو پھر ہم سمجھ گئے...... کہ

یہ ......یہودی نہیں ہے
یہ ......نصرانی نہیں ہے
یہ ......ستارہ پرست نہیں ہے
یہ ......آگ پرست نہیں ہے
یہ ......سکھ بھی نہیں ہے

تو ان دو سوالوں کے بعد...... پھر ایک شبہ اور پیدا ہو گیا...... کہ

یہ اللہ کو اپنا رب مانتا ہے...... واحد یکتا مانتا ہے...... لاشریک، بے نیاز مانتا ہے اور اسلام کو اپنا دین بتا رہا ہے...... یقیناً:

نماز کو مانتا ہوگا
زکوٰۃ کو مانتا ہوگا
روزے کو مانتا ہوگا
حج کو مانتا ہوگا
جہاد کو مانتا ہوگا

لیکن اسلام آباد میں بھی تو بہت سارے فرقے ہیں...... پتہ نہیں ہے کس فرقے سے ہے؟...... تو اب اس مسئلے کو حل کرنے کیلئے...... اس چادر کے نیچے لیٹے شخص سے یہ سوال کر لیا...... یعنی نبی ﷺ کے متعلق سوال سے ہی پتہ چلے

گا..... کہ

یہ کونسے فرقے سے ہے؟

کونسے گروہ سے ہے؟

کونسی جماعت سے ہے؟

تو پھر اس شبے کو دور کرنے کیلئے اس سے سوال کرلیا..... کہ

مَا کُنْتَ تَقُوْلُ فِیْ ھٰذَا الرَّجُلُ

بتا اس شخص کے بارے میں کیا کہا کرتا تھا؟

یہاں پر علماء کی تھوڑی سی توجہ چاہوں گا اس لئے کہ یہاں پر گرائمر کی تھوڑی سی بات آ گئی ہے۔

آپ حضرات پریشان نہ ہونا میں آپ کو درسگاہی گرائمر نہیں پڑھاؤں گا..... صرف یہاں پر اشارہ کر کے گزر جاؤں گا

یہ لفظ..... کَانَ۔ کُنْتَ..... جب مضارع پر داخل ہوتا ہے..... تو ایک منفرد کام کرتا ہے

یعنی..... مَا کُنْتَ تَقُوْلُ..... کیا کہتے ہو..... یہ ترجمہ نہیں ہے

نہیں..... یہاں بلکہ معنیٰ میں ''استمرار'' پایا جائے گا..... یعنی جاری رہنے کا معنی پایا جائے گا..... یہ نہیں کہ..... تم کیا کہتے ہو؟

بلکہ پوچھا جائے گا..... مَا کُنْتَ تَقُوْلُ..... کیا کہا کرتے تھے

توجہ چاہوں گا..... کہ کیا کہا کرتے تھے؟

یعنی نبی ﷺ کے متعلق!

مَا کُنْتَ تَقُوْلُ فِیْ ھٰذَا الرَّجُلُ فرما کر تمہارا صرف نظریہ نہیں..... بلکہ

تمہاری مکمل عادت بھی پوچھی جارہی ہے

عادت سے مراد...... یعنی

نبی کو اپنا بڑا بھائی کہا کرتے تھے...... یا پھر یا رسول اللہ ﷺ کہا کرتے تھے؟

اپنے جیسا بشر کہا کرتے تھے ...... یا پھر یا نبی ﷺ ''سید البشر'' کہا کرتے تھے؟

یعنی صرف نظریہ ہی نہیں...... بلکہ اس قبر والے کی سابقہ عادت بھی پوچھی جا رہی ہے...... کہ مَا کُنْتَ تَقُوْلُ فِیْ ھٰذَا الرَّجُلُ ...... یعنی کیا کہا کرتے تھے؟

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## مسلمان کا معیاری ہونا...... معیاری کامیابی کی نشانی

بہت سے لوگ آپ کے اس اسلامی ملک میں آپ کو ملتے ہیں...... ملاقات کرتے ہیں لیکن کبھی یہ سوال پیدا ہوا ہو کہ بھئی یہ بندہ:

میرے ملک میں رہنے والا ہے!
میرے دین کو ماننے والا ہے!
میرے جیسی شکل صورت والا ہے!

لیکن ہر چیز کا ایک معیار ہوتا ہے...... یعنی ایک چیز معیاری ہوتی ہے

اور...... ایک چیز ناقص ہوتی ہے

لیکن یہ آپ کے ساتھ تعلق والا بندہ مسلمان تو ہے...... لیکن بھئی کس معیار کا مسلمان ہے...... یہ بھی ایک سوچنے والی بات ہے

### 3- نکتہ:

دیکھئے! آپ کسی پارک میں بیٹھے ہیں...... اور ایک شخص آپکو آکر سلام کرتا

ہے اور کہتا ہے...... اسلام علیکم! آپ کہتے ہیں وعلیکم السلام ورحمۃ اللہ وبرکاتہ اور اب آپ کے پاس بیٹھا شخص آپ سے سوال کرے کہ بھئی...... ابھی جو شخص گزرا اس نے آپ کو سلام کیا...... وہ کون تھا...... تو آپ کہیں گے کہ بھئی وہ میرا کوئی مسلمان بھائی تھا...... تو بس اس نے مجھے سلام کر دیا

تو اب آپ نے اس شخص کو اسلام علیکم کہنے سے مسلمان ہونے کی ڈگری تو دے دی...... لیکن اگر آپ سے پوچھا جائے...... کہ وہ کس معیار کا مسلمان ہے تو پھر آپ کے پاس کونسا جواب ہوگا؟

تو پھر بات وہیں آ گئی کہ معیاری مسلمان کی تلاش ضروری ہے...... تو معیاری مسلمان وہی ہوگا کہ جس کا عقیدہ صحیح ہوگا

تو پھر ذات رسول ﷺ ایک ایسی ذات ہے کہ جس سے اس شخص کے مسلمان ہونے کے معیار کو پرکھا جائے گا...... اگر نبی ﷺ کے متعلق عقیدہ درست ہوگا تو پھر مسلمان بھی ہوگا...... اور اگر:

عقیدہ ناقص ہوگا ...... تو وہ خود بھی ناقص ہوگا
عقیدہ صحیح ہو گا ...... تو وہ خود بھی صحیح ہوگا
عقیدہ افضل ہوگا ...... تو وہ خود بھی افضل ہو گا
عقیدہ درست ہوگا ...... تو وہ خود بھی درست ہوگا
عقیدہ اعلیٰ ہوگا ...... تو وہ خود بھی اعلیٰ ہوگا
عقیدہ نفیس ہوگا ...... تو وہ خود بھی نفیس ہوگا

یعنی اگر کسی کو دیکھو کہ...... اللہ کو مان رہا ہے

اسلام کو دین مان رہا ہے

تو پھر اس سے نبی ﷺ کے متعلق سوال کرو...... کہ نبی ﷺ کو کس معیار سے مان رہا ہے...... بس معاملہ حل ہو جائے گا۔

ارے قبر کے سوالات کی ترتیب ہی سے سبق سیکھ لو...... یعنی جب کوئی اللہ کے متعلق سوال پر رَبِّیَ اللّٰہ کہے...... اور مَادِیْنُکَ کا جواب میں دِیْنِیَ الْاِسْلَامُ کہے...... اور پھر یہ دیکھنا ہے کہ یہ مسلمان تو ہے...... لیکن کس معیار کا ہے؟ تو معیاری مسلمان ہونا تب ہی ثابت ہوگا کہ جب نبی ﷺ کے متعلق عقیدہ معیاری ہوگا...... اس لئے تو پوچھا جا رہا ہے...... کہ

مَا كُنْتَ تَقُوْلُ فِيْ هٰذَا الرَّجُلُ

ارے میں یہاں کہتا ہوں کہ...... جب قبر والے نے بتا دیا کہ میرا رب اللہ ہے

جب قبر والے نے بتا دیا کہ میرا دین اسلام ہے
تو اگر دیکھا جائے...... تو یہاں پر ہی سوال ختم ہو جانا چاہئے...... کہ:
وہ...... اللہ کو مان رہا ہے
وہ...... دین کو مان رہا ہے
لیکن قربان جاؤں! کہ اللہ نے اسی پر بات کو ختم نہیں کیا...... کہ
تو...... خدا پرست ہے
تو...... مسلمان ہے

دوستو! غور کرنا کہ اگر اسلامی ہونا ہی کافی ہوتا تو پھر ''اسلام'' کو دین ماننے پر سوال ہی ختم ہو جاتا...... لیکن جب تیسرا سوال بھی ہوا...... تو ثابت یہ ہوا کہ...... اللہ اپنے بندے کی زبان سے یہ اقرار چاہتا ہے

مَا کُنْتَ تَقُوْلُ فِیْ ھٰذَا الرَّجُلُ

اس کے اندر راز یہ ہے کہ اے مسلمان!

تو نے...... مجھے اپنا رب میرے محبوب کے کہنے پر مانا ہے...... یا پھر کسی اور کے کہنے پر مانا ہے؟

تو نے...... اسلام کو اپنا دین میرے رسول ﷺ کے کہنے پر مانا ہے...... یا پھر کسی اور کے کہنے پر مانا ہے؟

تو اس لئے پوچھ لیا...... کہ

مَا کُنْتَ تَقُوْلُ فِیْ ھٰذَا الرَّجُلُ

بتاؤ اس ہستی پاک کے بارے میں کیا کہتے رہے ہو؟

وہ اس لئے...... کہ:

اللہ کو رب ماننا...... یہ دعویٰ ہے

اسلام کو دین ماننا...... یہ دعویٰ ہے

اور ذات مصطفیٰ ﷺ اس کی دلیل ہے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## رب، دین...... اور ہستیٔ پاک کا سوال قبر میں:

عزیزان گرامی قدر!

آقا ﷺ کی ذات پاک کو اللہ تعالیٰ نے دعویٰ توحید کی دلیل بنا کر مبعوث فرمایا ہے...... یعنی جیسے میں نے ابھی عرض کیا...... کہ

اللہ کو ماننا بھی...... دعویٰ ہے

اسلام کو دین ماننا بھی...... دعویٰ ہے

تو تیسرا سوال اس ہستی پاک کے بارے میں ہوا کہ جو اس دعویٰ کی دلیل ہے...... اللہ تعالیٰ نے قرآن میں فرمایا

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ

اے لوگو تمہارے پاس اللہ کی طرف سے روشن دلیل آئی

یعنی...... میرے رسول ﷺ کی ذات پاک کو ''برہان'' کہا گیا...... وہ اس لئے کہ...... آپ ﷺ کی ذات پاک ہر غیب پر دلیل ہے

آیئے ذرا غور کیجئے کہ ''برہان'' کس کو کہتے ہیں؟ عربی لغت والے کہتے ہیں

مَا يُبَرْهَنُ بِهِ الشَّيْءُ
جو کسی شے کو اشکار کر دے

لیکن ادھر تو معاملہ ہی جدا ہے...... اللہ تعالیٰ نے اپنے رسول کو اپنی ''برہان'' بنایا...... یعنی......

دعویٰ توحید کی دلیل...... ذات رسول ﷺ
دعویٰ اسلام کی دلیل...... ذات رسول ﷺ

تبھی تو قبر میں پوچھا جا رہا ہے کہ اس ہستی پاک کے بارے میں کیا کہتے رہے ہو؟

## 4- نکتہ:

ذرا توجہ کرنا یہاں ایک اور قبر کے سوالات کے متعلق بات کر کے آگے بات کو بڑھاتے ہیں کہ انتہائی غور کا مقام ہے کہ جب قبر میں پہلا سوال ہوا تو سوال ہوا...... مَنْ رَّبُّكَ...... تیرا رب کون ہے؟

اور پھر اس سوال کے بعد دوسرا سوال ہوا تو یوں ہوا...... کہ:

مَادِیْنُکَ...... تیرا دین کیا ہے؟

یعنی...... جب توحید کا پوچھنا تھا...... تو ''رب'' کا نام لیکر پوچھا گیا

اور پھر اس کے بعد جب دین کا پوچھنا تھا تو بھی ''دین'' کا نام لیکر پوچھا گیا

لیکن جب تیسرا سوال نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے متعلق پوچھنا تھا تو نام لیکر نہیں پوچھا گیا...... بلکہ فرمایا

مَا كُنْتَ تَقُوْلُ فِیْ هٰذَا الرَّجُلُ

اس تیسرے سوال میں لفظ هٰذَا الرَّجُلُ بتا رہا ہے کہ نبی کے نام سے سوال نہیں کیا گیا...... رَجُلْ کہہ کے پوچھا...... دیکھئے...... کہ:

جب رب کا پوچھنا تھا ...... تو رب کہہ کر پوچھا

جب دین کا پوچھنا تھا ...... تو دین کہہ کر پوچھا

اور جب نبی کے بارے میں پوچھنا ہوا تو رَجُلْ کہہ کر پوچھا......

رَجُلْ...... کا معنی ''مرد'' ...... یعنی نبی کے بارے سوال کرتے ہوئے رَجُلْ یعنی مرد کہہ کر پوچھا...... ارے یہاں کیوں نہیں کہا...... کہ:

مَا كُنْتَ تَقُوْلُ فِیْ هٰذَا النَّبِیُّ ...... یعنی اس نبی کے بارے میں کیا کہتا رہا ہے

ارے...... رب کو رب کہا

دین کو دین کہا

لیکن مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم کو ''مرد'' کہا ''نبی'' کیوں نہیں کہا؟

تو آیئے سنیئے ...... کہ نبی ہونے کیلئے جسم بشریت ضروری نہیں ہے ......

آیئے میں حدیث سے ثابت کرتا ہوں......

كُنْتُ نَبِيًّا وَّ آدَمُ بَيْنَ الْمَآءِ وَ الطِّيْنِ

میں اس وقت بھی نبی تھا جب آدم پانی اور مٹی کے درمیان تھے

ابھی سیدنا آدم علیہ السلام پانی اور مٹی کے درمیان تھے......تو اس وقت بھی میرا نبی......نبی تھا......اب تم بتاؤ......کہ

دنیا کا پہلا آدمی کون ہے؟ ...... آدم علیہ السلام
دنیا کا پہلا بشر کون ہے؟...... آدم علیہ السلام

ارے اسی لئے تو حضرت آدم علیہ السلام کو ''ابوالبشر'' کہتے ہیں کہ آدم علیہ السلام سے پہلے کوئی بشر نہیں......اب دیکھئے!

آدم علیہ السلام سے پہلے ...... بشر نہیں
آدم علیہ السلام سے پہلے ...... آدمی نہیں

تو ثابت ہوا......کہ:

جو آدم سے پہلے ......وہ آدمیت سے پہلے
جو آدم سے پہلے ......وہ بشریت سے پہلے
جو آدم سے پہلے ......وہ انسانیت سے پہلے

اب مجھے بتاؤ......کہ:

جو آدم سے پہلے ......وہ اس وقت آدمی کیسے ہوگا؟
جو آدم سے پہلے ......وہ اس وقت بشر کیسے ہوگا؟

تو اس سے ثابت ہو گیا کہ میرا نبی بغیر ''بشریت'' کے نبی رہ چکا ہے......
انتہائی غور کرنا......ایک جملہ دے رہا ہوں......کہ:

اب یہ بات کھل کر سامنے آ گئی...... کہ:

حکم نبوت کیلئے بشریت ضروری نہیں...... بلکہ اعلان نبوت کیلئے بشریت ضروری ہے

رب کی رضا یہ تھی کہ اے نبی جب تک ''حالت نور'' میں میرے قرب خاص میں رہو گے...... تو تمہیں بشر نہیں کہا جائے گا

لیکن ۱۲ ربیع الاول کو جب آمنہ کی گود میں تم جاؤ گے...... تو پھر تمہیں میرے بندوں کی اصلاح کرنی ہے...... تمہیں میرے بشروں کی اصلاح کرنی ہے...... تو پھر اس لئے:

تم...... لباس آدمیت میں جاؤ
تم...... لباس بشریت میں جاؤ
اے میرے محبوب...... تم بشر بن کر نہیں جاؤ گے
تو...... میرے بندوں کی اصلاح کون کرے گا؟
اے میرے محبوب...... تم بشر بن کر نہیں جاؤ گے؟
تو...... میرے بندوں کو اصول حیات کون دے گا؟
اے میرے محبوب...... تم بشر بن کر نہیں جاؤ گے؟
تو...... میرے بندوں کو شریعت کون سکھائے گا؟
اے میرے محبوب...... تم بشر بن کر نہیں جاؤ گے؟
تو...... میرے بندوں کو طریقہ بندگی کون سکھائے گا؟
اے میرے رسول...... آپ والدین سے پیار کرو
تا کہ...... میرے بندوں کو والدین سے پیار کرنا آ جائے

اے میرے رسول...... آپ پڑوسیوں کا خیال رکھو

تاکہ...... میرے بندوں کو پڑوسیوں کا خیال رکھنا آ جائے

اے میرے رسول...... آپ میدان بدر میں اتر آؤ

تاکہ ...... میرے بندوں کو جہاد کرنا آ جائے

اے میرے رسول...... آپ بندہ نوازی کرو

تاکہ ...... میرے بندوں کو غریب نوازی کرنا آ جائے

ارے...... بشریت پر کوئی جھگڑا نہیں...... بلکہ میرے نبی بھی بشر ہیں...... اور ہم بھی بشر ہیں...... لیکن بہت بڑا فرق ہے...... نبی اور امتی کی بشریت میں کہ ہم اپنی ضرورت کیلئے ''بشر'' ہیں...... نبی ﷺ انسانیت کی ہدایت کیلئے ''بشر'' ہیں

## 5- نکتہ:

تو آیئے یہاں پر ایک اور علمی نکتہ پیش کر جاؤں...... اور اگر اس نکتے کو بیان کرنے میں، میں اگر منطقی اصطلاحات کو بطور دلیل پیش کرنے میں لگ گیا...... تو مسئلہ مشکل ہو جائے گا...... تو ظاہر ہے کہ جو مشکل ہو جائے گا...... اس کو صحیح طرح سے سمجھنا بھی مشکل ہو جائے گا...... تو اس لئے میں آسان سی مثال عرض کروں گا...... تاکہ مسئلہ آسانی سے آپ کے ذہن نشین ہو جائے

دیکھئے! ایک انسان کی صفت ہوتی ہے اور ایک انسان کی حقیقت ہوتی ہے...... جیسے کہ یہ ''سمنانی تاج'' میں نے اپنے سر پر سجایا ہوا ہے...... یہ میری صفت ہے...... میری حقیقت نہیں...... اور اگر میں یہ ''تاج سمنانی'' اتار کر رکھ دوں تو اس تاج کے اتار دینے سے میرا وجود ختم نہیں ہوگا...... اس لئے کہ یہ میری حقیقت نہیں بلکہ میری صفت ہے

## سید البشر صلی اللہ علیہ وسلم کی بے مثلیت:

اور قاعدہ یہ ہے کہ جس کے چلے جانے سے انسان کا وجود ختم نہ ہو...... وہ اس کی صفت ہوتی ہے...... اور جس کے چلے جانے سے انسان ختم ہو جائے...... وہ اس کی حقیقت ہے

مثلاً! اگر کسی شخص کی دونوں آنکھوں کی بینائی چلی جائے تو وہ اندھا کہلائے گا...... لیکن اس کا وجود ختم نہیں ہوا...... اس لئے کہ دیکھنا صفت ہے...... اور صفت کے چلے جانے سے حقیقت ختم نہیں ہوتی۔

اور اسی طرح اگر کوئی شخص زبان سے بول نہ سکے تو اس نے وہ ختم نہیں ہو جائے گا...... وہ اس لئے کہ زبان سے بولنا...... یعنی ”قوت گویائی“ اس کی صفت ہے...... اور صفت کے چلے جانے سے حقیقت ختم نہیں ہوتی...... یعنی

”دیکھنا“ حقیقت نہیں ......صفت ہے
”بولنا“ حقیقت نہیں ......صفت ہے
”پکڑنا“ حقیقت نہیں ......صفت ہے
”چلنا“ حقیقت نہیں ......صفت ہے

یعنی...... جس چیز کے چلے جانے سے ہم باقی رہیں وہ ہماری ”صفت“ ہے
اور جس چیز کے چلے جانے سے ہم باقی نہیں رہیں وہ ہماری ”حقیقت“ ہے

آیئے...... اسی مسئلے کو ایک اور مثال کے ذریعے سے آسان کرنے کی کوشش کرتا ہوں تاکہ آپ کو پتہ چل جائے کہ صفت اور حقیقت میں فرق کیا ہوتا ہے؟ دیکھئے! یہ میں نے تن پر کپڑے اور کپڑوں کے اوپر چشتی جبہ پہنا ہوا ہے اور میں نے سر پر سمنانی تاج پہن رکھا ہے

غور کرنا اس مثال پر...... کہ

اگر کوئی میرا اسمانی تاج اتار لے...... تو میرا وجود پھر بھی باقی ہے...... اس لئے کہ اس نے میری صفت لی ہے...... میری حقیقت نہیں اور اگر کوئی میرا یہ چشتی جبہ بھی چھین لے تو اس چشتی جبے کے چھن جانے کے بعد بھی مجھے کوئی فرق نہیں پڑے گا...... اس لئے کہ اس نے میری صفت لی ہے...... میرا وجود باقی ہے

اور اگر اس صوفے سے میرا بشر ہونا ہی غائب ہو جائے تو پھر میرا وجود ہی نہیں رہے گا...... اس لئے کہ میری بشریت ہی میری حقیقت ہے اور اگر میری حقیقت چھین لی گئی تو میرا وجود ختم ہو جائے گا...... آخر کیوں؟

وہ اس لئے کہ میری بشریت ہی میری حقیقت ہے...... اور اگر میری بشریت ہی غائب ہو گی تو میری اصلیت ہی غائب ہو گی...... میرا وجود ہی ختم ہو گیا تو ثابت ہوا کہ صفت کے چلے جانے سے وجود باقی رہتا ہے...... اور حقیقت کے چلے جانے سے وجود ختم ہو جاتا ہے

تو آؤ اب نتیجہ دے رہا ہوں...... کہ

جس کے چلے جانے سے ہم ختم نہ ہوں وہ ہماری ''صفت'' ہے...... اور جس کے چلے جانے سے ہم ختم ہو جائیں وہ ہماری ''حقیقت'' ہے

تو دیکھئے کہ...... بشر ہم بھی ہیں اور بشر رسول اللہ ﷺ بھی ہیں...... لیکن فرق یہ ہے...... کہ

اگر ہماری بشریت نہ رہے تو پھر اپنے پاس کچھ بھی نہیں...... اور دوسری طرف اگر رسول اللہ ﷺ سے بشریت لے لی جائے تو پھر بھی ان کے وجود پر کوئی اثر نہیں...... کیونکہ!

وہ آدم علیہ اسلام سے پہلے ...... نبی رہ چکے ہیں
وہ آدمیت سے پہلے ...... نبی رہ چکے ہیں
وہ بشریت سے پہلے ...... نبی رہ چکے ہیں

حدیث دیکھ لو...... کہ:

كُنْتُ نَبِيًّا وَّ آدَمُ بَيْنَ الْمَاءِ وَالطِّيْنِ

تو بغیر...... بشریت کے بھی میرا نبی موجود...... لیکن بغیر بشریت کے ہمارا۔ کچھ نہیں وجود...... تو پتہ یہ چلا...... کہ:

ہماری بشریت...... ہماری حقیقت ہے
رسول ﷺ کی بشریت ...... رسول کی صفت ہے

تو پہلے ہم ثابت کر چکے...... کہ:

صفت ...... حقیقت کی طرح نہیں
حقیقت ...... صفت کی طرح نہیں

تو فیصلہ ہوا...... کہ:

ہم ...... نبی ﷺ کی طرح نہیں
رسول ﷺ ...... ہماری طرح نہیں

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## 6- نکتہ:

تو اب آیئے پھر اپنی قبر کے سوالات والی گفتگو پر...... کہ اگر فرشتے قبر سوال کرتے...... کہ

مَا كُنْتَ تَقُوْلُ فِيْ هٰذَا النَّبِيِّ

تو...... کوئی مولوی کہہ سکتا تھا کہ اس نبی کے بارے میں سوال کر رہے ہیں

جو آدمیت سے پہلے ...... بھی نبی رہ چکے ہیں

جو بشریت سے پہلے ...... بھی نبی رہ چکے ہیں

تو پھر بغیر ''جسم'' کے قبر میں آئے ہوں گے...... لیکن قربان جاؤں اللہ تعالیٰ عالم الغیب ہے ان کی سب چالیں جانتا ہے...... تو اس نے سسٹم ہی بدل دیا...... کہ ہم قبر میں

ما کنت تقول فی ھذا النبی...... کہہ کر سوال نہیں کریں گے

ما کنت تقول فی ھذا الرجل...... کہہ کر سوال نہیں کریں گے

یعنی...... اللہ تعالیٰ چاہتا ہے کہ میں قرآن میں رسول ﷺ کو

یٰاَیُّھَا النَّبِیُّ ...... کہوں گا

یٰاَیُّھَا الرَّسُوْلُ ...... کہوں گا

لیکن...... اے فرشتے تم قبر میں...... نبی نہ کہنا تم قبر میں رسول نہ کہنا...... بلکہ رجل کہہ کر سوال کرنا...... اس لئے کہ ہم نے یہ بھی تو دیکھنا ہے کہ ان میں سے مرد کتنے ہیں کہ جو ''سراپائے محبوب'' کو دیکھتے ہی پہچان لیں؟

تو رَجُلٌ تو مرد کو کہتے ہیں اور مرد تو ''جسم اور روح'' کے بغیر ہوتا ہی نہیں...... تو اس حدیث میں لفظ رَجُلٌ سے پتہ چلا کہ میرے نبی ﷺ قبر میں جسم اور روح دونوں کیساتھ تشریف لاتے ہیں

تو جب ذات مصطفیٰ ﷺ قبر میں جلوہ گر ہوگی تو آپ کی موجودگی میں امتی سے پوچھا جا رہا ہے...... کہ:

مَا کُنْتَ تَقُوْلُ...... اب بتاؤ کہ کیا کہا کرتے تھے؟

## امتی کی قبر میں...... ذات مصطفیٰ ﷺ

عزیزان گرامی!

جب یہ بات تو طے ہے کہ ہر قبر میں نبی ﷺ کی ذات پاک کے متعلق سوال کیا جاتا ہے...... اور ہمارا عقیدہ ہے کہ آپ ﷺ اپنے ہر امتی کی قبر میں اپنے پورے سراپائے بے مثال کیساتھ تشریف لاتے ہیں اور امتی سے آپ ﷺ کی ذات بے مثال کے متعلق سوال کیا جاتا ہے...... اور جب ہم یہ کہتے ہیں تو کچھ لوگ کہتے ہیں...... کہ نبی ﷺ قبر میں تشریف نہیں لاتے...... بلکہ امتی کی قبر کی کھڑکی کھل جاتی ہے...... اور ادھر سرکار ﷺ کو اپنے روضۂ اطہر میں موجود ہی امتی آپ ﷺ کو دیکھ لیتا ہے

**7- نکتہ!**

یہ بات بھی آج کے نئے نئے مفکروں نے گڑھ لی ہے کہ امتی اور سرکار ﷺ کے درمیان کھڑکی کھل جاتی ہے جبکہ اس کی کوئی اصل ہمارے مطالعہ میں نہیں آئی ...... اور کچھ لوگ تو یہاں تک بھی کہتے ہیں کہ جب امتی قبر میں جاتا ہے تو سرکار ﷺ کے روضۂ انور تک زمین کو سمیٹ دیا جاتا ہے...... یا زمین سمٹ جاتی ہے اور سرکار ﷺ امتی کو دیکھ لیتے ہیں اور امتی اپنے آقا ﷺ کو دیکھ لیتا ہے

ویسے اگر دیکھا جائے تو یہ صرف نبی ﷺ کو حاضر و ناظر نہ ماننے کی وجہ سے باتیں بنائی جا رہی ہیں

میں کہتا ہوں کہ کبھی کہا جاتا ہے...... کہ:

امتی اور آقا ﷺ کے درمیان کھڑکی کھل جاتی ہے...... اور کبھی کہا جاتا ہے کہ زمین سمٹ جاتی ہے

ارے! کیا ہو گیا تمہیں...... کہ:

مفکرین کہتے ہیں ...... کہ زمین بے جان ہے
محقق کہتے ہیں ...... کہ زمین بے جان ہے
صاحب عقل کہتے ہیں ...... کہ زمین بے جان ہے
صاحب شعور کہتے ہیں ...... کہ زمین بے جان ہے

ارے کچھ تو ہوش کرو...... بے جان زمین میں سمٹ جانے کی طاقت مان رہے ہو...... لیکن صاحب جان بلکہ جان جہان نبی ﷺ میں آنے کی طاقت کیوں نہیں مان رہے؟

ارے حقیقت تو یہ ہے کہ کوئی قبر جلوۂ مصطفیٰ ﷺ سے خالی نہیں...... ہر قبر میں دیدار مصطفیٰ ﷺ ہو رہا ہے...... زمین کا اختیار مان رہے ہو...... لیکن رسول اللہ ﷺ کا اختیار مانتے ہوئے تمہیں کیا ہو رہا ہے؟ بے جان زمین کا سمٹ جانا مان رہے ہو...... تو مصطفیٰ جان رحمت کا تشریف لانا کیوں نہیں مان رہے؟

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ
وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ

* * *

## موضوع...... رحمت مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم

نَحْمَدُہٗ وَ نَسْتَعِیْنُہٗ وَ نَسْتَغْفِرُہٗ وَ نُؤْمِنُ
بِہٖ وَ نَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَ نَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ
اَنْفُسِنَا وَ مِنْ سَیِّاٰتِ اَعْمٰلِنَا وَ مَنْ یَّھْدِہِ
اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَ مَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ
لَہٗ وَ نَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ
لَاشَرِیْکَ لَہٗ وَ نَشْھَدُ اَنَّ سَیِّدَنَا مَوْلَانَا وَ
حَبِیْبَنَا وَ سِرَاجَنَا وَ اَشْرَفَنَا وَ سَیِّدَنَا
مُحَمَّدٍ صلی اللہ علیہ وسلم

اَمَّا بَعْدُ!

قَالَ اللّٰہُ تَبَارَکَ وَ تَعَالٰی فِی الْقُرْآنِ الْمَجِیْدِ وَ
الْفُرْقَانِ الْحَمِیْدِ...... اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ
الرَّجِیْمِ

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
اُدْعُ اِلٰی سَبِیْلِ رَبِّکَ بِالْحِکْمَۃِ وَ الْمَوْعِظَۃِ الْحَسَنَۃِ
صَدَقَ اللّٰہُ مَوْلٰنَا الْعَظِیْمُ

اِنَّ اللّٰہَ وَمَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوْنَ عَلَی النَّبِیِّ ط
یٰٓاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْہِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ۝

بارگاہ رسالت مآب صلی اللہ علیہ وسلم میں ہدیہ درود و سلام پیش کیجیے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِکَ وَرَسُوْلِکَ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ

وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

علمائے ملت اسلامیہ، سامعین وحضرات میں گفتگو کا آغاز تو کر چکا لیکن موضوع کا آغاز یوں کر رہا ہوں

خاموش ہیں تو دین کی پہچان علی ہیں
گر بولیں تو لگتا ہے کہ قرآن علی ہیں

توجہ چاہوں گا......کہ:

قرآن تو دیتا ہے ہمیں دعوت ایماں
ایمان یہ کہتا ہے میری جان علی ہیں
جب قرب الٰہی میں نظر آئے حقائق
جلوؤں کے اس جہان میں حیران علی ہیں
اسلام تو ہر دور میں محفوظ رہے گا
اس دین محمد کے نگہبان علی ہیں
جس نور محمد ﷺ سے ملا سب کو اُجالا
اس نور محمد ﷺ ہی کا فیضان علی ہیں
دارین کی ہر نعمت عظمٰی ہے تمہاری
اے ہاشمی جب تجھ پہ مہربان علی ہیں

اس علی کا وفادار......اس علی کی عنایات کا شاہکار......اسی کی نسل پاک کی عظمتوں کی یادگار...... اہلسنت کا تاجدار...... اعلیٰ حضرت عظیم البرکت......امام عشق ومحبت ومجدد دین وملت......امام احمد رضا خان بریلوی

رحمۃ اللہ علیہ انہی کا بے مثال اور لاجواب نعتیہ کلام حفیظ تائب صاحب پڑھ رہے تھے...... وہ سنا رہے تھے اور آپ سب سن رہے تھے...... بس اسی کلام کے ایک شعر پر آج میری نظر جم گی ہے..... تو آج بس اسی پر ہی گفتگو کر پاؤں گا...... ان شاء اللہ

وہ شعر تھا...... کہ:

وہ محبوب باری تیری شان واہ
قرض لیتی ہے گناہ پرہیز گاری واہ، واہ

## پرہیز گاری کیا ہے؟

ارے اس شعر کو سمجھنا ہو تو پہلے یہ ضروری ہے کہ انسان کو یہ معلوم ہو کہ، پرہیز گاری کس کو کہتے ہیں؟ تو

پرہیز گاری ......اتباع رسول ﷺ کو اپنانے کا نام ہے
پرہیز گاری ......ادائے رسول ﷺ کو اپنانے کا نام ہے
پرہیز گاری ......سنت رسول ﷺ کو اپنانے کا نام ہے
پرہیز گاری ......محبت رسول ﷺ کو اپنانے کا نام ہے
پرہیز گاری ......عنایت خداوندی کو حاصل کرنے کا نام ہے
پرہیز گاری ......قرب خداوندی کو پانے کا نام ہے

تو اس سب سے ہٹ کر...... بہت دور گناہ گاری ہے...... اور یہ بات کسی عام آدمی نے نہیں کی...... یہ بات تو پھر ''اعلیٰ حضرت'' کی ہے...... عام طریقے سے سمجھ میں آنے والی نہیں ہے...... وہ اس لئے کہ...... کسی ادنیٰ حضرت کی بات ہو تو وہ فوراً سمجھ میں آ جائے...... ارے یہ بات تو اعلیٰ حضرت کی بات ہے کہ جن

کی ہر بات کی کیا بات ہے۔

تو اس لئے میں ایک بات کہہ رہا ہوں ...... ہر کوئی کان کھول کر سن لے کہ کوئی بھی سیدوں کو اعلیٰ حضرت سے لڑانے کی کوشش ہرگز نہ کرے ...... وہ اس لئے کہ اعلیٰ حضرت نے جب سیدوں کی بات کی تو یوں کہا...... کہ:

تیری نسل پاک میں ہے بچہ بچہ نور کا
تو ہے عین نور تیرا سب گھرانہ نور کا

میں نے کہا کہ آج صرف سیدی اعلیٰ حضرت کے ایک شعر پر بھی بات کروں گا اور اس شعر میں اعلیٰ حضرت نے یہ کہا...... کہ:

قرض لیتی ہے گناہ پرہیزگاری واہ واہ

تو بس اسی پر بات ہوگی...... لیکن یہ بات بھی بہت جرات مندانداز سے کہہ دینا چاہتا ہوں کہ...... لوگ آج اعتراض کرتے ہیں کہ اعلیٰ حضرت نے یہ بات کیسے کردی ہے...... کہ:

قرض لیتی ہے گناہ پرہیزگاری واہ واہ

لوگ کہتے ہیں کہ یہ بات کچھ سمجھ میں نہیں آتی ...... ارے آؤ میں عرض کیے دیتا ہوں ...... لیکن اس سے پہلے یہ بات بہت ضروری سمجھتا ہوں کہ کوئی بھی سیدوں کو اعلیٰ حضرت سے لڑانے کی جرأت مت کرے! کیونکہ! تاریخ گواہ ہے...... کہ

سیدوں کے وفادار کا نام احمد رضا ہے
سیدوں کے تابعدار کا نام احمد رضا ہے

اب کوئی سیدوں کو اعلیٰ حضرت سے لڑا نہیں سکتا!

## محبّ و محبوب میں لڑائی نہیں ہوتی:

عزیزان گرامی!

دیکھئے! چاہے کوئی جس ملک کا بھی رہنے والا ہو...... جس مذہب سے بھی تعلق رکھنے والا ہو...... وہ اس بات کو تو مانے گا کہ...... ہم نے دیکھا ہے...... کہ:

بھائی...... بھائی کی آپس میں لڑائی ہو سکتی ہے
دوست...... دوست کی آپس میں لڑائی ہو سکتی ہے
آفیسر اور ملازم کی آپس میں لڑائی ہو سکتی ہے

لیکن...... کبھی کسی نے عاشق و معشوق کو آپس میں لڑتے ہوئے نہیں دیکھا
کبھی کسی نے محبّ و محبوب کو ایک دوسرے کے مخالف نہیں دیکھا
بلکہ......

جو ''چاہت'' محبوب کی ہو وہی محبّ کی ہوتی ہے
جو ''وفا'' محبوب کی ہو وہی محبّ کی ہوتی ہے
جو ''رضا'' محبوب کی ہو وہی محبّ کی ہوتی ہے
جو ''ادا'' محبوب کی ہو وہی محبّ کی ہوتی ہے

آیئے ایک مثال پیش کرتا ہوں...... آپ مثال کو نہ دیکھنا کہ کیسی ہے بلکہ یہ دیکھنا کہ اس سے مسئلہ کیسے حل ہو رہا ہے...... وہ مثال یہ کہ تاریخ گواہ ہے کہ پوری دنیا کی سپر پاور بھی مل کر ''مجنوں کو لیلیٰ'' سے لڑا نہیں سکی...... یعنی بات وہی ثابت ہوئی کہ کوئی بھی محبّ کو اس کے محبوب سے لڑا

نہیں سکتا......یعنی

بھائی بھائی ......میں لڑائی ہو جاتی ہے
دوست دوست ......میں لڑائی ہو جاتی ہے

لیکن کبھی ''محب ومحبوب'' میں لڑائی نہیں ہوسکتی...... جیسے کہ میں نے مثال دی کہ دنیا کی کوئی سپر پاور بھی مجنوں کو لیلیٰ سے نہیں لڑاسکی...... وہ اس لئے کہ لیلیٰ کو کوئی مجنوں کی طرح چاہنے والا نہیں ملے گا؟

تو تم سیدوں کو اعلیٰ حضرت سے لڑانے کی کوشش نہ کرو...... وہ اس لئے کہ سیدوں کو اعلیٰ حضرت جیسا کوئی چاہنے والا نہیں ملے گا۔

تو اس لئے کہ سیدی اعلیٰ حضرت رحمۃ اللہ علیہ نے تمام لوگوں کو

بستی، بستی .....وادی ، وادی
قریہ ، قریہ ...... نگر، نگر
شہر، شہر ......قصبہ قصبہ

لوگوں کو یہ بتایا کہ ''سید'' کیا ہیں؟ تو کیا خیال ہے کہ اب سید یہ نہیں بتائیں گے کہ اعلیٰ حضرت کیا ہیں؟ ارے دیکھو تو!

تیری نسل پاک میں ہے بچہ بچہ نور کا

یہ کسی کے باپ نے نہیں کہا...... یہ تو اعلیٰ حضرت نے کہا ہے

ارے دیکھو تو جس نے میرے غوث...... غوث اعظم ......میرے جد امجد کی شان میں یوں کہا ہو...... کہ

تجھ سے در، در سے سگ، سگ سے ہے مجھ کو نسبت
میری گردن میں بھی ہے دور کا ڈورا تیرا

تو آج چار کتابیں پڑھ کر کچھ لوگ چلے ہیں...... سیدوں کو اعلیٰ حضرت سے لڑانے، تو میں ایک "سید" ہوں...... تو آؤ سید کی زبان سے سیدوں کے ثنا خوان کی باتیں سنیئے!

## میدان محشر میں سرکار ﷺ کی بندہ نوازی:

آج اعتراض تو اس شعر پر ہو رہا ہے، جس پر کہ میں نے بات کرنے کا وعدہ کر رکھا ہے...... کہ اس شعر کی وضاحت ضرور کروں گا...... کہ:

قرض لیتی ہے گناہ پرہیزگاری واہ واہ

آیئے سنیئے! کہ اصل معاملہ کیا ہے...... اصل بات کیا ہے...... یہ مصرعہ کونسے منظر کی ترجمانی کر رہا ہے؟ یہ مصرعہ کہاں کا راز بتا رہا ہے؟ کس دن کی فیاضی کی خبر دے رہا ہے؟ تو دیکھئے

محشر کا میدان ہے...... میدان بھرا ہوا ہے...... نامۂ اعمال سب کے ہاتھ میں تھما ہوا ہے...... کچھ پریشان ہیں...... اور کچھ خوشحال ہیں...... کائنات کی ہر شے کے خالق کے دربار میں سب کی حاضری ہے...... اعمال نامہ دیکھ کر بہت ساروں پر غمی کی کیفیت طاری ہے...... کندھوں پر گناہوں کا بوجھ ہے...... اور گناہگاروں کے دل میں ایک بہت بڑی سوچ ہے کہ آج کدھر جائیں؟ کس کو حال دل سنائیں؟ اعمال کا ترازو سامنے نظر آ رہا ہے...... بس مارے خوف کے دل لرزہ جا رہا ہے...... آج میدان محشر میں کوئی مداوا تلاش کیا جا رہا ہے...... کوئی ملجا و ماوی تلاش کیا جا رہا ہے...... ارے کوئی تو سنے...... کوئی تو نبھائے...... کوئی تو آج نظر ملائے...... کوئی تو آج وسیلہ بن جائے...... امتحان آسان ہو جائے...... سکھ کا سانس آ جائے تو ایسے میں خیال آیا کہ چلو......

حضرت سیدنا آدم علیہ السلام کے پاس حاضر ہوتے ہیں...... اس لئے کہ وہ اللہ کی بارگاہ میں دعا کر چکے ہیں...... ان سے کہیں کہ بارگاہ خداوندی میں اپنی اولاد کی سفارش کر دیں...... لیکن معاملہ انسانیت کی سوچ کے برعکس ہو گیا...... کہ جب سب حضرت سیدنا آدم علیہ السلام کے پاس حاضر ہوئے اور عرض کی کہ ہماری شفاعت کرو...... ہماری سفارش کرو ہمیں نجات دلاؤ...... ہمیں سکون دلاؤ...... ہمارے لئے راحت کا راستہ نکالو...... ہمارے مسیحا بن جاؤ!

تو آگے سے حضرت سیدنا آدم علیہ السلام جواب دیتے ہیں

اِذْهَبُوْا اِلٰی غَیْرِیْ...... جاؤ کسی دوسرے کے پاس

ارے جہاں اتنی زیادہ امیدیں لیکر آئے تھے...... وہاں سے تو دو لفظوں میں مکمل جواب مل گیا...... کہ جاؤ کسی دوسرے کے پاس! نفسی نفسی

جاؤ...... کہیں اور شفیع تلاش کرو
جاؤ...... کہیں اور وسیلہ تلاش کرو
جاؤ...... کہیں اور مسیحا تلاش کرو

میں تو آج ایسا کرنے والا نہیں ہوں...... بلکہ نفسی نفسی

پھر اس کے بعد...... اہل محشر کا کارواں چلا...... اور ایک دوسرے نبی کے دروازے پر جا کر رکا...... یعنی پھر اہل محشر سیدنا موسیٰ علیہ السلام کی بارگاہ میں حاضر ہو جائیں گے...... اور کہیں گے آپ اللہ سے ہمکلامی کرتے رہے ہو...... آج ہمارے لئے بھی کلام کرو...... آج ہماری سفارش بھی اللہ کی بارگاہ میں پیش کرو...... کسی طرح سے سکون مل جائے...... یہ سختی کی گھڑیاں ٹل جائیں...... ہو سکتا ہے کہ آپ کا سفارش کرنا سنا جائے...... اور ہم سے سختیاں دور ہو جائیں......

اے حضرت موسیٰ علیہ السلام آپ نے اپنا عصا مبارک مارا تو پانی میں راستے بن گے...... آج ہم تو گناہوں کی دلدل میں ڈوبے جا رہے ہیں...... پسینے بہہ رہے ہیں...... آج بھی کوئی راہ نکالو...... شفاعت ذمہ اٹھالو...... تو سیدنا موسیٰ علیہ السلام بھی وہی سیدنا ابوالبشر والا جواب دہرا دیں گے...... کہ:

اِذْهَبُوْا اِلٰی غَیْرِیْ ...... جاؤ کسی دوسرے کے پاس

آخر بات سنی کیوں نہیں جا رہی؟ تو آگے سے جواب آئے گا کہ نفسی نفسی!

عزیزان گرامی

یہی محشر کا دن ہے کہ جو سخت ترین دن ہوگا...... اور کبھی کسی نبی کے در پر جا کر صدا کی جائے گی اور کبھی کسی نبی سے التجا کی جائے گی...... کہ کوئی ایسا غمگسار ہو کہ جو آج ہمارے حال کی بہتری کا وسیلہ بن جائے...... کوئی ایسا ہو کہ جو ہمارے جنت میں جانے کا حیلہ بن جائے...... بس اہل محشر جب حضرت سیدنا موسیٰ علیہ السلام کی بارگاہ سے واپس آئیں گے...... تو پھر ایک اور دروازے کا خیال آ جائے گا...... کہ:

چلو...... روح اللہ کی خدمت میں حاضر ہوتے ہیں
چلو...... ابن مریم کی خدمت میں چلے جاتے ہیں

وہ تو اللہ کے بہت زیادہ برگزیدہ پیغمبر ہیں...... لیجیے جب اہل محشر حضرت سیدنا عیسیٰ علیہ السلام کی بارگاہ میں حاضر ہوں گے تو یوں عرض کریں گے...... کہ اے روح اللہ علیہ السلام آپکو

اللہ تعالیٰ ...... نے عزتوں سے نوازہ ہے
اللہ تعالیٰ ...... نے عظمتوں سے نوازہ ہے

اللہ تعالیٰ ...... نے پیغمبری سے نوازہ ہے
اللہ تعالیٰ ...... نے مسیحائی سے نوازہ ہے

تو جب اہل محشر سیدنا عیسیٰ علیہ السلام سے اپنے حال کی سنائیں گے...... تو حضرت عیسیٰ علیہ السلام بھی وہی کہیں گے ...... جو دوسرے انبیاء کرام علیہم السلام فرماتے رہے...... یعنی حضرت سیدنا عیسیٰ علیہ السلام اہل محشر کی بات سن کر کسی قسم کی کوئی ذمہ داری نہیں لیں گے...... کوئی وعدہ نہیں کریں گے...... کوئی تسلی نہیں دیں گے...... ہاں آخر میں یہ ضرور کہیں گے...... کہ

اِذْهَبُوْا اِلٰی غَيْرِیْ...... کسی دوسرے کے پاس جاؤ

اور...... پھر اہل محشر میں ایک ہستی کا خیال آئے گا...... تمام کی نظروں میں ایک آخری ہستی پاک کا جمال آئے گا...... ان کی بندہ نوازی والا کمال یاد آیا...... اور دل ہی دل میں یہ بھی تو سوچ آ رہی ہو گی...... کہ آج ہم میدان محشر میں پریشان حال پھر رہے ہیں...... اور کوئی غمگسار تلاش کر رہے ہیں...... لیکن یاد تو کرو! کہ

گر نام محمد را نیا ورد شفیع آدم
نہ آدم یافتے توبہ نہ نوح از غرقِ نجینا

تو بس پھر تمام اہل محشر بارگاہ مصطفیٰ میں آ جائیں گے...... اور عرض کریں گے...... کہ!

اے...... یٰسین و طٰہٰ ...... کی شان والے کریم
اے...... روف الرحیم ...... کی شان والے رحیم

اے...... غمگسار جہاں...... اے دستگیر جہاں...... نظر کرم ہو جائے...... آج

ہماری شفاعت فرمایئے...... آپ کی ایک نظر کا سوال ہے...... اور اہل محشر کی نجات کی بات ہے؟

ارے اہل محشر میں سے جب گناہ گاروں کی آس مٹنے لگی...... کہ ہر کوئی آج نفسی نفسی کہہ رہا ہے...... کوئی بھی آج مدد کرنے کو تیار نہیں ہے...... آج کوئی بھی دوائے دل دینے کو تیار نہیں ہے...... تو ایسے ماحول میں کلیجہ منہ کو آنے لگا...... بربادی سامنے نظر آنے لگی...... کہ

آج خدا جانے ہمارا کیا انجام ہوگا...... بس جب یہ بے قراری حد سے بڑھنے لگی...... تو پھر امید کی ایک کرن فضل خداوندی سے سامنے نظر آنے لگی...... تمام اہل محشر کے گناہگاروں کے کانوں میں ایک آواز...... باعث تسکین جان بن کر سنائی دینے لگی...... کہ

یَا اُمَّتِیْ...... یَا اُمَّتِیْ
یَا اُمَّتِیْ...... یَا اُمَّتِیْ

بس دلوں کو قرار آنے لگا...... بس دیر سے جھکی ہوئی نظریں اوپر اٹھنے لگیں...... آنکھیں چمکنے لگیں کہ آخر یہ کون تسلی دے رہا ہے؟

ارے یہ کون آج حلاوت بھری آواز دے رہا ہے

اور جب گناہ گاروں نے نظریں اٹھا کر دیکھا...... تو وہی کائنات کے آقا ﷺ...... وہی محسن انسانیت...... وہی رحمت عالم...... وہی دستگیر جہان...... وہی غمگسار جہاں...... اپنی رحمت کی چادر کا سایہ کرنے کے لئے تشریف لا رہے ہیں...... اور فرما رہے ہیں

شفاعتی امتی لاهل الکبائر

اے گناہگاروں آؤ میری رحمت کی چادر میں آجاؤ...... اے بے سہارو آؤ میں تمہیں سینے سے لگانے آیا ہوں...... اے بے قرارو آؤ میں تمہیں تسلی دینے آیا ہوں...... ارے دیکھئے تو ادھر غلام پریشانی میں آئے ہیں...... تو دوسری طرف سرکار ﷺ غم سے نجات دلوانے کیلئے اللہ تعالیٰ سے عرض کر رہے ہیں

مجھے اپنے امام کا ایک...... رحمت عالم ﷺ کی رحمت پر ناز والا شعر یاد آرہا ہے...... کہ:

کہ رضا اب پل وجد کرتے گزرو
کہ ہے رب سلم صدائے محمد ﷺ

## محشر میں سرکار ﷺ کا دامن رحمت:

ارے بھائی آج ہم دیکھتے ہیں کہ کسی دنیا کے بڑے عہدے والے تک اپنی بات پہچانی ہو...... تو کوئی ایسا وسیلہ تلاش کیا جاتا ہے کہ جس کی اس تک رسائی ہو...... جو آپ کا صحیح معنوں میں سفارشی بن سکے...... اور دوسری طرف یہ بات بھی ضروری ہے کہ اس بندے کا تعلق اس بڑے سے بھی ہو...... جس کے سامنے آپ کا معاملہ پیش کرنا ہے...... اور پھر اس بات کو بھی دیکھنا ہے کہ ہم جس کو اپنا سفارشی بنا رہے ہیں...... کیا اس کی سنی بھی جائے گی...... یا نہیں؟

لیکن ادھر تو معاملہ ہی جدا ہے...... ادھر تو اللہ...... کی احکم الحاکمین ذات ہے
ادھر تو اللہ...... کی احسن الخالقین ذات ہے

اور ادھر ہم جیسے گناہگار ہیں...... کہ جنہوں نے اپنی بات اپنے رب کے دربار میں پیش کرنی ہے:

عیب بھی ہمارے ہیں

قصور بھی ہمارے ہیں
گناہ بھی ہمارے ہیں

تو ایسے میں ہستی وہ تلاش کی گی...... کہ

جو شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا ...... کی شان والے ہیں
جو حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ رَؤُفٌ الرَّحِيْم ...... کی شان والے ہیں
جو يٰاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ يٰاَيُّهَا الْمُدَّثِّر ...... کی شان والے ہیں
جو وَمَا اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ...... کی شان والے ہیں

تو اب اسی ہستی پاک سے عرض کی جا رہی ہے...... کہ سرکار ﷺ اللہ کے دربار میں ہماری سفارش کیجئے...... ہمیں نجات دلوایئے...... نظر کرم کیجئے اس لئے کہ اللہ نے اپنے محبوب ﷺ سے یہ وعدہ فرمایا ہے...... کہ

وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى

اب سوچنے کی بات ہے...... کہ سرکار راضی کب ہوں گے...... ہاں بھئی جب اللہ اپنے حبیب کو راضی کرنے کا وعدہ کر رہا ہے...... اور کہہ رہا ہے......

وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى

تو اب دیکھنا یہ ہے کہ محبوب راضی کب ہوں گے؟

تو روایت موجود ہے کہ جب سرکار ﷺ کے امتی جنت میں چلے جائیں گے...... محبوب ﷺ اس وقت راضی ہوں گے...... تو ثابت ہوا کہ رب نے اپنے رسول کو...... اپنے حبیب کو راضی کرنا ہے...... اور محبوب ﷺ نے اپنے امتیوں کو نجات دلوا کر ہی خوش ہونا ہے...... تب ہی راضی ہو جانا

ہے کہ جب آپ کے امتیوں نے جہنم سے دور ہو جانا ہے...... اور جنت میں داخل ہو جانا ہے!

## قرض لیتی ہے گناہ پرہیزگاری واہ! واہ

عزیزان گرامی!

جب اہل محشر سہارا تلاش کرتے کرتے...... اس بارگاہ میں پہنچ گے کہ جہاں اپنے تو اپنے غیروں کو بھی رسوا نہیں کیا جاتا...... مایوس نہیں کیا جاتا...... خالی ہاتھ نہیں لٹایا جاتا...... جب اس ذات پاک...... اس شفیع اعظم کی آواز آنے لگی...... کہ

یَا اُمَّتِیْ...... یَا اُمَّتِیْ

تو اب محشر کے حالات سے پریشان لوگ اپنے آقا ﷺ کی چادر رحمت میں پناہ لینے کیلئے حاضر ہو گے...... تو آج سرکار ﷺ خصوصی طور پر گناہگاروں کو نواز رہے ہیں...... سرکار ﷺ خود میدان محشر میں کھڑے ہیں اور گناہ گاروں کو بلا رہے ہیں

تو گناہ گار سرکار ﷺ کے سامنے اکٹھے ہو رہے ہیں

آج سرکار ﷺ

صحابہ کو نہیں دیکھ رہے
اولیا کو نہیں دیکھ رہے
تابعین کو نہیں دیکھ رہے
تبع تابعین کو نہیں دیکھ رہے
صلحا کو نہیں دیکھ رہے

اتقیاء کو نہیں دیکھ رہے
نقباء کو نہیں دیکھ رہے
نجباء کو نہیں دیکھ رہے

یہ سب بزرگ ترین لوگ ایک طرف ہیں اور رحمت عالم ﷺ آج صرف گناہگاروں کی طرف دیکھ رہے ہیں...... اور گناہ گار بھی آج صرف اپنے آقا ﷺ کی طرف دیکھ رہے ہیں

سرکار ﷺ میدان محشر میں گناہ گاروں کو جمع کر رہے ہیں
اے گنہگارو ادھر آؤ!
اے گنہگارو ادھر آؤ!

تو اب سرکار ﷺ کی نظریں گناہ گاروں کی فکر میں...... گنہگاروں کی طرف لگی ہوئی ہیں...... تمام گنہگاروں کو اکٹھا کیا جا رہا ہے...... خود رحمت عالم سامنے تشریف فرما ہیں...... سرکار ﷺ گنہگاروں کو اپنی رحمت والی کریمانہ نظر سے دیکھ رہے ہیں...... گنہگار بھی پریشانی کے عالم میں رحمت مصطفیٰ ﷺ کی منتظر نگاہوں سے اپنے کریم آقا ﷺ کو دیکھ رہے ہیں......

تو ایسے میں سامنے سے...... غوث گزر رہے ہیں
لیکن...... آقا ﷺ نہیں دیکھ رہے
تو ایسے میں سامنے سے...... قطب گزر رہے ہیں
لیکن...... آقا ﷺ نہیں دیکھ رہے
تو ایسے میں سامنے سے...... ابدال گزر رہے ہیں

لیکن...... آقا ﷺ نہیں دیکھ رہے

تو ایسے میں سامنے سے...... اوتاد گزر رہے ہیں

لیکن...... آقا ﷺ نہیں دیکھ رہے

ارے آج تو صرف نظر رحمت سے خصوصی طور پر گنہگاروں کو ہی نوازہ جا رہا ہے:

آج میرے کریم ...... کی اغیاث پر نظر نہیں ہے
آج میرے کریم ...... کی ابدال پر نظر نہیں ہے
آج میرے کریم ...... کی اقطاب پر نظر نہیں ہے
آج میرے کریم ...... کی اوتاد پر نظر نہیں ہے
آج میرے کریم ...... کی اولیاء پر نظر نہیں ہے
آج میرے کریم ...... کی صلحاء پر نظر نہیں ہے
آج میرے کریم ...... کی اغنیاء پر نظر نہیں ہے
آج میرے کریم ...... کی نجباء پر نظر نہیں ہے
آج میرے کریم ...... کی متقین پر نظر نہیں ہے
آج میرے کریم...... کی صالحین پر نظر نہیں ہے

بس آج سرکار ﷺ گنہگاروں کو اپنے پاس اکٹھا کر رہے ہیں

اے گنہگارو ...... تم ادھر آؤ!

اے بے سہارو...... تم ادھر آؤ!

تو جب میدان محشر میں نبی ﷺ صرف گنہگاروں کو دیکھنے لگے...... جب نبی ﷺ گنہگاروں پر نگاہ کرم کرنے لگے...... تو ایسے میں کچھ پرہیزگاروں کے

دل میں یہ خیال آیا...... کہ ہم جنت کا حریص نہیں ہیں

کاش مصطفیٰ ﷺ جان رحمت ہم پر نظر رحمت کر دیں وہ لوگ بھی نظر مصطفیٰ ﷺ کے طالب تھے

تو جب ان پرہیزگاروں نے یہ دیکھا کہ حضور ﷺ کی نظر تو آج صرف گنہگاروں پر ہے...... تو ایسے میں ان پرہیزگاروں کے دل میں یہ خیال آیا...... کہ اگر محشر میں یہ سسٹم ہوتا...... کہ کچھ گناہ مل سکتے ہوتے تو میں قرضے میں چند گناہ لے لیتا...... اور قرضے میں گناہ لیکر میں بھی مرکز نگاہ مصطفیٰ ﷺ بن جاتا

غور کرنا...... کہ ایک پرہیزگار کے دل میں یہ خیال آنا...... بڑی نازک بات ہے

اور چند گناہ مل جانے کا خیال کرنا اور بھی زیادہ نازک بات ہے

لیکن میں کہتا ہوں کہ جب نبی ﷺ نے گنہگاروں کو اپنے پاس بلانا شروع کر دیا...... جب گنہگاروں کو دامن رحمت میں چھپانا شروع کر دیا تو کیا خیال پرہیزگاروں کے دل میں ایسا خیال نہیں آئے گا؟

آج تو سارے صالحین سوچ رہے ہیں...... کہ دنیا کے اندر تو ساری زندگی میں مجھ پر نگاہ مصطفیٰ ﷺ کا فیض رہا...... اور ان کی توجہ سے ہی میں غوث بنا

ان کی توجہ سے ہی میں......ابدال بنا
ان کی توجہ سے ہی میں......اوتاد بنا

ان کی توجہ سے ہی میں ......ولی بنا

ارے یہ تو...... چمکتے سورج کی طرح کا سچ ہے...... کہ

نبی ﷺ کی توجہ سے ہی ...... کوئی اویس قرنی بنا
نبی ﷺ کی توجہ سے ہی ...... کوئی غوث جیلانی بنا
نبی ﷺ کی توجہ سے ہی ...... کوئی داتا ہجویری بنا
نبی ﷺ کی توجہ سے ہی ...... کوئی خواجہ اجمیری بنا
نبی ﷺ کی توجہ سے ہی ...... کوئی فرید الدین بنا
نبی ﷺ کی توجہ سے ہی ...... کوئی نظام الدین بنا
نبی ﷺ کی توجہ سے ہی ...... کوئی جماعت علی بنا
نبی ﷺ کی توجہ سے ہی ...... کوئی مہر علی بنا
نبی ﷺ کی توجہ سے ہی ...... کوئی بہاؤالدین زکریا بنا
نبی ﷺ کی توجہ سے ہی ...... کوئی امام احمد رضا بنا
نبی ﷺ کی توجہ سے ہی ...... کوئی مجدد الف ثانی بنا
نبی ﷺ کی توجہ سے ہی ...... کوئی شیر ربانی بنا

لیکن آج یہ میدان محشر ہے...... یہاں پر صرف گنہگاروں پر توجہ ہے......

تو ہوسکتا ہے کہ ایسے میں کسی گنہگار کے دل میں یہ خیال آجائے...... کہ کاش آج چند گناہ میرے پاس بھی ہوتے کہ آج حضور ﷺ کی توجہ مجھ پر بھی ہو جاتی...... اسی دلی کیفیت کا تذکرہ کرتے ہوئے ...... مجدد دین و ملت امام اہلسنت نے کہا ہے...... کہ:

قرض لیتی ہے گناہ پرہیزگاری واہ! واہ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ صلی اللہ علیہ وسلم

## ان کے کرم سے نعت لکھنا

تو یاد رکھنا کہ نعت لکھی نہیں جاتی ...... بلکہ لکھوائی جاتی ہے ...... جو نعت خود سے ہی لکھ لیتے ہیں وہ اور لوگ ہیں اور جن سے حضور ﷺ خود نعت لکھوائیں وہ اور ہیں ...... ارے جو خود لکھتے ہیں ...... وہ لکھنے والا ...... صرف مسلمان ہوتا ہے ...... جس سے خود نبی ﷺ نعت لکھوائیں وہ وقت کا حسان ہوتا ہے۔

ارے آپ میں سے......

کوئی نعت مصطفیٰ ﷺ کیا لکھے گا؟
حضرت حسان بھی نبی ﷺ کی نعت کیا لکھیں گے؟

اس لئے کہ جس کی حقیقت ہی معلوم نہیں...... اس کی نعت کا حق ادا کون کر سکتا ہے؟

ارے......

جتنا کسی صحابی نے بتایا ہے ......صرف اتنا ہی حضور کو نہ سمجھنا
جتنا کسی تابعی نے بتایا ہے ......صرف اتنا ہی حضور کو نہ سمجھنا
جتنا کسی ولی نے بتایا ہے ......صرف اتنا ہی حضور کو نہ سمجھنا
جتنا کسی مفسر نے بتایا ہے ......صرف اتنا ہی حضور کو نہ سمجھنا
جتنا کسی محدث نے بتایا ہے ......صرف اتنا ہی حضور کو نہ سمجھنا
جتنا کسی مفکر نے بتایا ہے ......صرف اتنا ہی حضور کو نہ سمجھنا
جتنا کسی محقق نے بتایا ہے ......صرف اتنا ہی حضور کو نہ سمجھنا

جتنا کسی مفتی نے بتایا ہے ...... صرف اتنا ہی حضور کو نہ سمجھنا

جتنا کسی مولوی نے بتایا ہے ...... صرف اتنا ہی حضور کو نہ سمجھنا

اس لئے کہ انہوں نے جتنا بتایا ہے ...... وہ ان کی معلومات کی انتہا ہے ......

میرے نبی ﷺ کی انتہا ان کے ذہن میں نہیں ہے۔

یعنی ...... یہ جتنا کچھ بھی بتاتے ہیں ...... وہ اپنی معلومات کی حد بتاتے ہیں ...... نبی ﷺ کی حد نہیں بتاتے ...... اس لئے کہ نبی ﷺ کی حد تو اللہ تعالیٰ ہی جانتا ہے:

## 1- نکتہ:

آؤ یہاں پر ایک لطیف نکتہ پیش کر جاؤں ...... کہ میں نے کہا کہ نبی ﷺ کی حد ان بیان کرنے والوں میں سے کوئی بھی نہیں جانتا ...... اس لئے کہ جب ان کے بیان کرنے کی انتہا ہو جاتی ہے ...... تو وہ اصل میں ان کے مطالعہ کی حد ہے ...... ان کی معلومات کی حد ہے ...... ان کی تحقیق کی حد ہے ...... ان کی تعلیم کی حد ہے ...... ارے تمہیں کس نے کہا کہ یہ رسول ﷺ کی حد ہے؟

آیئے اس حوالے سے ایک حدیث پیش کرتا ہوں ...... سرکار مدینہ ﷺ نے فرمایا:

وَالَّذِیْ بَعَثَنِیْ بِالْحَقِّ لَمْ یَعْلَمْنِیْ حَقِیْقَۃً غَیْرُ رَبِّیْ

میرے رب کے سوا میری حقیقت کوئی نہیں جانتا

اب اس حدیث پاک کے آخری الفاظ پر غور کرو ...... کہ غَیْرُ رَبِّیْ ...... یعنی رب کے سوا کوئی نہیں جانتا ...... تو غَیْرُ رَبِّیْ ...... کے اندر تو خود رسول

صلی اللہ علیہ وسلم بھی ہیں

غَیْرُ رَبِّیْ ......کے اندر صحابہ بھی ہیں
غَیْرُ رَبِّیْ ......کے اندر تابعین بھی ہیں
غَیْرُ رَبِّیْ ......کے اندر تبع تابعین بھی ہیں
غَیْرُ رَبِّیْ ......کے اندر مفسرین بھی ہیں
غَیْرُ رَبِّیْ ......کے اندر مفکرین بھی ہیں
غَیْرُ رَبِّیْ ......کے اندر محققین بھی ہیں
غَیْرُ رَبِّیْ ......کے اندر مجتہدین بھی ہیں
غَیْرُ رَبِّیْ ......کے اندر سالکین بھی ہیں
غَیْرُ رَبِّیْ ......کے اندر صالحین بھی ہیں

تو ثابت ہوا کہ میرے نبی صلی اللہ علیہ وسلم کی حد صرف خدا ہی جانتا ہے...... ہم تو صرف یہی جانتے ہیں...... کہ:

بعد از خدا بزرگ توئی قصہ مختصر

اور یہ بھی ثابت ہوا...... کہ نعت کہنا ہر کسی کے بس کا کام نہیں ہے...... جب نبی صلی اللہ علیہ وسلم کی حقیقت صرف خدا جانتا ہے...... تو پھر نعت مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم کو کما حقہ اللہ ہی بیان کر سکتا ہے...... یا اس کے خصوصی فضل و کرم سے...... اس کی خصوصی عطا سے "محبوب اللہ" بیان کر سکتے ہیں

اور نعت وہی ہے جو مدینے والے کے دربار میں لے جائے...... تو جس کلام کو میرے آقا صلی اللہ علیہ وسلم کی ذات سے نسبت ہو جائے تو پھر اس کا مقام بھی بڑھ جاتا ہے جیسے سیدی اعلیٰ حضرت نے کہا...... کہ:

اے رضا یہ احمد نوری کا فیض نور ہے
ہو گی تیری غزل بڑھ کر قصیدہ نور کا

## 2- نکتہ!

یہاں ایک اور نکتہ ذہن میں آ گیا...... چلو وہ بھی پیش کر دیتا ہوں کہ بات ہو رہی تھی نعت مصطفیٰ ﷺ کے حوالے سے...... تو اکثر لوگ کہتے ہیں کہ نبی کی شان کو حد سے زیادہ نہ بڑھاؤ...... ہمارے بھی کچھ لوگ یہی کہتے ہیں کہ نعت بیان کرتے ہوئے احتیاط کرو...... نعت بیان کرتے ہوئے حد میں رہو...... سرکار ﷺ کی نعت کو حد سے زیادہ نہ بڑھاؤ!

تو میں ایسا کہنے والے تمام حضرات سے معذرت کیساتھ عرض کرتا ہوں کہ نبی ﷺ کی شان بڑھانے کا تو ایک مومن کیلئے گمان بھی نہیں ہے...... اس لئے کہ اگر کوئی نبی ﷺ کی شان بڑھائے گا تو پھر یقیناً ‘‘خدا’’ کہے گا...... اور آپ ﷺ کو ‘‘خدا’’ کہنے سے تو ایمان سے جائے گا...... اب بتاؤ کہ کوئی بھی نعت پڑھنے والا سرکار ﷺ کو ‘‘خدا’’ کہتا ہے؟

ہرگز ہرگز نہیں کہتا...... تو ثابت ہوا کہ بڑھانے کا تو ایک ایمان والا گمان بھی نہیں کر سکتا...... اس لئے کہ اس کو ایمان کی سلامتی عزیز ہے......

اور دوسری بات کہ احتیاط تو اس میں ضروری ہے...... کہ نبی ﷺ کی شان کم نہ کی جائے...... اگر کم کرتا ہے تو پھر بھی ایمان سے جاتا ہے...... اس لئے احتیاط اس میں ضروری ہے کہ شان نبی ﷺ کو کم کرنے کا تصور بھی نہ کرے...... اور بڑھانے کا تو کوئی خیال کر سکتا ہی نہیں...... اس لئے کہ آقا

ﷺ کو ''خدا'' نہیں کہنا......اور جو خوبی ہے وہ اپنے نبی ﷺ کی بیان کرو۔

تو اب دعا ہے کہ اللہ محشر میں بھی دامن مصطفیٰ ﷺ کا سایہ نصیب فرمائے ......اور دنیا میں بھی انہی کا ہو کر جینے کی سعادت عطا فرمائے!......(آمین)

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

◆

## موضوع...... عظمت مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم

نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمٰلِنَا وَمَنْ يَّهْدِيْهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِیَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا مَوْلَانَا وَحَبِيْبَنَا وَسِرَاجَنَا وَاَشْرَفَنَا وَسَيِّدَنَا مُحَمَّدٍ صلی اللہ علیہ وسلم

اَمَّا بَعْدُ!

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى فِى الْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ وَالْفُرْقَانِ الْحَمِيْدِ...... اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ
صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلٰنَا الْعَظِيْمُ

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ط
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ○

بارگاہ رسالت مآب صلی اللہ علیہ وسلم میں ہدیہ درود و سلام پیش کیجیے

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

علمائے ذی وقار...... اور سادات کرام!

آپ سب جو محفل میں آئے بیٹھے ہو یہ بھی اس رفعت والے رسول ﷺ کے ذکر کا حصہ ہیں...... قرآن کہہ رہا ہے...... کہ:

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ

اور ہم نے آپ کے ذکر کو آپ کے لئے بلند کر دیا

اب ہم سے پہلے جو گزر چکے ہیں...... یعنی

صحابہ کرام
تابعین کرام
تبع تابعین کرام
صالحین کرام
مومنین عظام

سب رسول ﷺ کا ذکر کرتے آئے ہیں...... اور اب بھی ہم جس دور میں رہ رہے ہیں...... اس میں بھی:

مفسرین اور محدثین
مفکرین اور محققین
واعظین اور مقررین
مورخین اور کاملین
صالحین اور سالکین

سب ذکر مصطفیٰ ﷺ کر رہے ہیں...... لیکن کیسا ذکر ہے کہ کرنے والوں کو بھی اس ذکر پاک کی انتہا معلوم نہیں ہے؟

## رفعت ذکر مصطفیٰ ﷺ

عزیزان گرامی

ذکر مصطفیٰ ﷺ تو سب ہی کر رہے ہیں ...... لیکن کسی کو بھی ذکر مصطفیٰ ﷺ کی انتہا معلوم نہیں ہے...... وہ اس لئے کہ ہمارے ذہنوں میں رفعت کی بھی ایک انتہا ہوتی ہے...... جیسے کہ کوئی کہے کہ فلاں پہاڑی بہت ''رفیع'' ہے یعنی بلند ہے...... اور اگر کہا جائے کہ فلاں جگہ ''رفیع تر'' ہے یعنی بلند ہے...... بلند ترین ہے لیکن دیکھ لیجئے اس کی رفعت اور بلندی کی بھی کوئی حد ضرور موجود ہوگی...... یعنی بلند سے بلند چیز کی بلندی اور رفعت بھی پیمانہ ماپ سکتا ہے لیکن جب ہم کہتے ہیں کہ ذکر مصطفیٰ ﷺ کو اللہ نے بلند کیا ہے تو اس کی انتہا کوئی بھی بیان نہیں کر سکتا...... اس لئے کہ ذکر مصطفیٰ ﷺ کو رفعت اللہ تعالیٰ نے دی ہے...... اب اللہ ہی اس ذکر کی انتہا جانتا ہے...... اس ذکر کی رفعت جانتا ہے...... اب بشر کے بس کی بات نہیں کہ وہ ''خیر البشر'' کے ذکر کی حد بتائے...... انسان کیسے ''سید البشر'' کے ذکر پاک کی رفعت بتا سکتا ہے...... جبکہ قرآن اعلان کر رہا ہے۔

وَرَفَعۡنَا لَكَ ذِكۡرَكَ

اور ہم نے آپ کے ذکر کو آپ کے لئے بلند کر دیا

ذکر مصطفیٰ ﷺ کی رفعت کا اندازہ اسی سے لگا لو کہ اس ذکر کی رفعت کی انتہا کسی بشر کو معلوم ہی نہیں ہے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## حضور ﷺ کی شان...... مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ :

اب دیکھئے...... قرآن پاک کی ایک آیت مقدسہ کا ایک حصہ ہے...... کہ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ اس کا ترجمہ ہوا...... "محمد اللہ کے رسول ہیں"

یہ اللہ کا قرآن ہے...... اللہ کا کلام ہے...... کہ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

اب یہاں انتہائی توجہ کی ضرورت ہے...... کہ

میں جو بولوں گا ...... وہ میری بولی ہے، میرا کہنا ہے

آپ جو بولیں گے ...... وہ آپکی بولی ہے، آپکا کہنا ہے

جو علماء کرام کہیں گے ...... وہ ان کا فرمان ہے

جو مفتی حضرات کہیں گے ...... وہ ان کا ارشاد، ان کا کلام ہے

یعنی...... پوری دنیا کے تمام افراد میں سے جو کوئی بھی بات کرے گا...... وہ اس کا قول ہوگا...... وہ اس کا کہنا ہوگا

تو مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ...... یہ اللہ کا قول ہے...... قرآن سارا اللہ کا فرمان ہے...... یہ اللہ کا ارشاد ہے...... یعنی مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ...... قرآن کی آیت ہے

اب اگر کوئی پوچھے کہ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ ...... کیا ہیں؟ تو ہم کہیں گے ...... وہ ہستی جانے کہ جو مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ کہہ رہی ہے...... تو اس پر ایک جملہ سن لو...... کہ یہ جو ہم رسول اللہ ﷺ کے مقام کے بارے میں بتاتے ہیں

میرا رسول اتنا ہی نہیں ہے

جو امام احمد رضا خان فاضل بریلوی رحمۃ اللہ علیہ نے بتایا

میرا رسول اتنا ہی نہیں ہے

جو محدث کچھوچھوی رحمۃ اللہ علیہ نے بتایا

مجھے اور بھی ہمت ہے، کہنے کی...... کہ

جو...... خواجہ غریب نواز رحمۃ اللہ علیہ نے کہا ہے

میرا رسول اتنا ہی نہیں ہے

میں اور بھی آگے کی کہنے کی ہمت کر رہا ہوں...... کہ

جو...... غوث جیلانی رحمۃ اللہ علیہ نے بتایا ہے

میرا رسول اتنا ہی نہیں ہے

ارے ...... جو مولا علی رضی اللہ عنہ نے کہا

میرا رسول اتنا ہی نہیں ہے

غور کرنا میرے اس جملے پر...... کہ

رسول ﷺ کی حقیقت اور آپ ﷺ کی حد تو اصل میں صرف خدا ہی جانتا ہے...... ان تمام ہستیوں نے جو کہا...... اتنا ہی رسول ﷺ کو نہ سمجھنا...... اس لئے کہ جو یہ بتا رہے ہیں وہ میرے رسول ﷺ کی عظمت کی حد نہیں ہے

وہ میرے رسول ﷺ کی رفعت کی حد نہیں ہے

وہ میرے رسول ﷺ کی عزت کی حد نہیں ہے

ارے...... یہ تمام جو بتا رہے ہیں...... وہ تو ان کے مطالعہ کی حد ہے...... ان کی تحقیق کی حد ہے...... ان کی معلومات کی حد ہے

تو ثابت ہوا...... کہ نبی ﷺ کی حقیقت...... آپ ﷺ کی عظمت کی حد تو صرف اللہ ہی جانتا ہے...... اور جس کی حقیقت کی حد ہم نہ جانتے ہوں...... اس ہستی پاک کے ذکر کی حد ہم کیا بتا پاویں گے؟

ہم تو اپنے مطالعے کی حد بتا رہے ہیں:

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## رسول ﷺ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ کہتے ہیں

عزیزان گرامی!

اب کسی بشر کے پاس ایسا کوئی پیمانہ نہیں ہے...... ذکر مصطفیٰ ﷺ کی حد بتا سکے...... وہ مقام رسالت کی رفعتوں کی انتہا بتا سکے...... اس لئے کہ جو رب اپنے حبیب ﷺ کا ذکر بلند کر رہا ہے...... وہی جانتا ہے...... کہ اس نے رسول ﷺ کے ذکر کو کتنا بلند کیا ہے...... جو رب اپنے حبیب ﷺ کو عظمت دے رہا ہے...... وہی رب اس کی انتہا جانتا ہے...... کہ اس نے اپنے رسول ﷺ کو کتنی عظمت عطا کی ہے!

### 1- نکتہ!

دوستو! اب اگر کوئی ہم سے یہ پوچھے کہ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ کیا ہیں؟
تو ہم کہیں گے...... کہ:

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ...... اللہ کا فرمان ہیں
مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ...... آیت قرآن ہیں
مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ...... اللہ کا ارشاد ہیں
مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ...... اللہ کا کلام ہیں

تو اب جس بندے نے بھی قرآن پڑھا...... اور قرآن کی یہ آیت مقدسہ پڑھی تو اس کے دل میں ایک امتی ہونے کے ناطے یہ خیال ضرور آئے گا...... کہ اللہ تو اپنے حبیب ﷺ کو مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ کہہ رہا ہے...... لیکن اے مدینے

کے تاجدار......اے بہارِ کائنات:

آپ کیا کہتے ہیں؟
آپ کا فرمان کیا ہے؟
آپ کا ارشاد کیا ہے؟
آپ کی بولی کیا ہے؟
آپ کا اعلان کیا ہے؟

تو پھر آؤ...... میں عالمِ خیال میں تمہیں بارگاہ رسالت ﷺ میں لے چلوں......تم اپنے کانوں سے سنو گے......تم ماتھے کی آنکھوں سے تاریخ دیکھ لینا......کہ رسول ﷺ......اللہ کے بندوں کو توحید کی دعوت دے رہے ہیں اور ساتھ فرما رہے ہیں

يٰاَيُّهَا النَّاسُ قُوْلُوْا لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ تُفْلِحُوْا

اے لوگو لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ کہو تم فلاح پا جاؤ گے!

ارے......دیکھو تو محبت کا کیسا تعلق ہے......کہ:

جب ہم رسول ﷺ کا فرمان دیکھتے ہیں......تو وہ فرماتے ہیں!

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

جب ہم اللہ عزوجل کا فرمان دیکھتے ہیں......تو وہ کہتا ہے

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

دیکھئے کہ......رسول ﷺ......لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ کہیں

اور اللہ تعالیٰ......مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ کہے!

کس قدر حسین تعلق ہے......کیسا محبت کا ثبوت ہے......اصل میں حکمت

یہ ہے کہ...... رضائے الٰہی یہ ہے

منشائے الٰہی یہ ہے...... کہ اے رسول ﷺ

میرا ذکر ...... تم کرتے رہو
تمہارا ذکر ...... میں کرتا ہوں

اس لئے کہ جب لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ تم کہوں گے...... تو لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ تمہارا ذکر ہو جائے گا...... اور مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ...... میں کہوں گا...... تو محمد رسول اللہ میرا ذکر ہو جائے گا...... اے محبوب! اس لئے...... کہ:

جو...... لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ ...... کا دشمن ہو...... وہ تمہارا دشمن ہوگا

جو...... مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ ...... کا دشمن ہو...... وہ میرا دشمن ہوگا

تو ایک بات سب کان کھول کر سن لو...... کہ جو لوگ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ سے اختلاف رکھتے ہیں...... وہ صرف مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ ﷺ سے ہی اختلاف نہیں رکھتے...... وہ تو اصل میں ''قَوْلُ اللّٰہ'' سے اختلاف رکھتے ہیں

## قرآن میں...... مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ

ہم نے اب تک پیچھے یہی گفتگو کی ہے...... کہ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ...... اللہ تعالیٰ نے قرآن میں کہا ہے......

اب جو مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ سے اختلاف کر رہا ہے
وہ فرمان الٰہی سے اختلاف کر رہا ہے
اب جو مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ سے اختلاف کر رہا ہے
وہ رضائے الٰہی سے اختلاف کر رہا ہے
اب جو مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ پر تنقید کر رہا ہے

وہ قول خداوندی پر تنقید کر رہا ہے

اب جو مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ سے انکار کر رہا ہے

وہ فرمان الٰہی سے انکار کر رہا ہے

تو مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ...... میں عیب تلاش کرنے والوں کو سوچ لینا چاہئے کہ...... مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ...... تو قول خدا ہے...... اور آیت قرآن ہے...... اور قرآن تو عیب سے پاک ہے...... قرآن تو ”ریب“ سے دور ہے

ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ

## 2- نکتہ!

اب اسی پر ایک اور نکتہ پیش کرتا ہوں...... کہ آپ تمام حضرات جو کثیر تعداد میں موجود ہو...... آپ اپنے شہر کراچی سے مجھے کوئی دو مولوی ایسے دکھا دو جو لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه...... پر مناظرہ کر رہے ہوں

بتاؤ...... پورے کراچی میں...... لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه...... پر کبھی مناظرہ ہوا؟

پورے کراچی میں...... لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه...... پر کبھی جھگڑا ہوا؟

تو آپ کہہ سکتے ہو...... کہ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه...... پر مناظرہ پورے کراچی میں نہیں ہوا...... بلکہ:

پنجاب میں بھی نہیں ہوا
بلوچستان میں بھی نہیں ہوا
ہندوستان میں بھی نہیں ہوا
ایران میں بھی نہیں ہوا

ارے...... یہ بات تو طے ہے کہ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه...... پر مناظرہ کرنے کو دو

مولوی تیار ہی نہیں ہیں...... اور لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ ...... پر کوئی اختلاف نہیں...... کوئی جھگڑا نہیں...... دیکھئے...... تو!

لَآ اِلٰــہَ اِلَّا اللّٰــہ...... کو ...... کوئی اپنے جیسا نہیں سمجھتا
لَآ اِلٰــہَ اِلَّا اللّٰــہ...... کو ...... کوئی مٹنے والا نہیں کہتا
لَآ اِلٰــہَ اِلَّا اللّٰــہ...... کو ...... کوئی ختم نہیں کہتا

میں دو مولوی حضرات کی بات کر رہا ہوں...... دو کلمہ پڑھنے والوں کی بات کر رہا ہوں...... میں بت پرستوں کی بات نہیں کر رہا...... اس لئے کہ ان کو تو یہ بھی معلوم نہیں کہ خدا زیادہ ہیں...... یا ان کے ماننے والوں کی تعداد زیادہ ہے...... میں تو بات کر رہا ہوں...... ان دو کلمہ پڑھنے والوں کی...... کہ جو اللہ کو وحدہٗ لاشریک مانتے ہیں

تو...... یہ بات طے شدہ ہے...... کہ دو کلمہ گو حضرات میں:

لَآ اِلٰــہَ اِلَّا اللّٰــہ ...... پر کوئی مناظرہ نہیں
لَآ اِلٰــہَ اِلَّا اللّٰــہ ...... پر کوئی مباحثہ نہیں
لَآ اِلٰــہَ اِلَّا اللّٰــہ ...... پر کوئی مجاہدہ نہیں
لَآ اِلٰــہَ اِلَّا اللّٰــہ ...... پر کوئی مکالمہ نہیں

سب کلمہ گو...... لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ...... پر مکمل ایمان رکھنے والے ہیں

تو سنو! کان کھول کر کے سنو...... کہ لَآ اِلٰــہَ اِلَّا اللّٰــہ کہا ہے میرے رسول ﷺ نے...... تو جو میرے رسول ﷺ نے کہا اس پر مناظرہ کرنے کی ہمت کسی مولوی میں نہیں:

تو مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ...... کہا ہے میرے رب نے...... تو آج

اسی پر مناظرہ ہو رہا ہے
اسی پر مباحثہ ہو رہا ہے
اسی پر مکالمہ ہو رہا ہے

تو دیکھو ذرا...... کہ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـه.... فرمان رسول ﷺ سے کوئی اختلاف نہیں کر رہا...... اور فرمان خدا یعنی مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه...... سے ہی آج اختلاف کیا جا رہا ہے...... تو دیکھو تو سہی کہ جس کے قول میں اختلاف کر رہے ہو...... وہ ذات کونسی ہے؟

اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

اسی لئے تو میرے امام اعلیٰ حضرت نے کہا تھا...... کہ:

عقل ہوتی تو خدا سے نہ لڑائی لیتے
اور آج...... یہ گھٹائیں اور اسے منظور بڑھانا تیرا

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## ''رسول'' کا معنیٰ و مفہوم:

محترم حضرات

اب اس حوالے سے بھی بات ہو جائے...... کہ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه قرآن میں اللہ تعالیٰ فرما رہا ہے...... ''محمد'' اللہ کے رسول ہیں...... اب ''رسول'' کس کو کہتے ہیں؟...... آیئے تھوڑی دیر اب اس پر بھی بات کرتے ہیں

''رسول'' کا معنیٰ بھیجا ہوا...... اور اپنے بھیجنے والے کی پیروی کرنے والا اصل معنی یہ ہوا...... کہ ''بھیجا ہوا''

''رسول'' کا معنیٰ اور اس کا شرعی مفہوم محدثین نے عقائد کی کتابوں میں بڑی تفصیل سے ذکر کیا ہے...... جیسے علامہ نسفی نے عقائد نسفی اور دوسری عقائد کی مشہور و معروف کتابوں میں یوں وضاحت کی ہے

اَلرَّسُوْلُ اِنْسَانٌ بَعَثَہُ اللّٰہُ تَعَالٰی اِلَی الْخَلْقِ لِتَبْلِیْغِ الْاَحْکَام

رسول وہ عالی مرتبت ہستی ہے کہ جسے اللہ تعالیٰ مخلوق کی طرف شرعی احکام کی تبلیغ کیلئے بھیجتا ہے

## 3- نکتہ:

یعنی...... ثابت ہوا کہ ''رسول'' اس بلند ترین انسان کو کہتے ہیں کہ جس کے ذریعے سے اللہ تعالیٰ اپنی مخلوق...... اپنے بندوں...... کو احکام دین بتائے...... اور وہ خدا کا بھیجا ہوا ہو...... اگر کوئی خود سے بن جائے تو وہ مردود ہوتا ہے...... اور جس کو خود خدا بھیجے وہ بارگاہ حق میں مقبول ہوتا ہے۔

اب بات رسول کے حوالے سے ہو رہی ہے...... کہ رسول کا معنیٰ و مفہوم ہوا ''بھیجا ہوا''...... تو اب بھیجنے کیلئے بھی تین باتیں ضروری ہیں

1- کوئی بھیجنے والا...... وہ موجود ہو

2- جس کو بھیجا جا رہا ہے...... وہ موجود ہو!

3- جس کی طرف بھیجا جا رہا ہے...... وہ بھی موجود ہو

تو ثابت ہوا...... کہ!

رسول...... کو بھیجنے والا...... اللہ تعالیٰ ہے

اور...... آنے والا یعنی بھیجا ہوا...... خود رسول ہیں

اور جن کی طرف رسول کو بھیجا وہ مخلوق خدا ہے

اب دیکھئے! کہ رسول...... اللہ اور بندوں کے درمیان کی کڑی ہیں

یعنی...... درمیان میں ہیں

اور جو درمیان میں ہوتا ہے...... اس کا تعلق اوپر والے سے بھی ہوتا ہے...... اور اپنے نیچے والوں سے بھی ہوتا ہے

تو...... رسول ﷺ کا رابطہ ادھر خدا سے بھی ہے...... اور اِدھر مخلوق خدا سے بھی ہے!

وہ اس لئے...... کہ اے حبیب ہم نے آپ کو درمیان کی کڑی بنا کر بھیجا ہے...... اس لئے کہ اللہ نے جو دینا ہو وہ آپ کو دیتا رہے...... اور مخلوق کو چاہئے کہ وہ آپ کی ذات پاک سے لیتی رہے!

اور پھر اس کے اندر ایک اور حکمت بھی ہے...... کہ جو درمیان میں ہوتا ہے...... وہ نہ تو اوپر والے کی طرح ہوتا ہے...... اور نہ ہی اپنے سے نیچے والوں کی طرح ہوتا ہے...... یعنی...... میرا رسول...... اوپر والے کی طرح بھی نہیں...... یعنی خدا جیسا نہیں ہے...... اور نیچے والوں کی طرح بھی نہیں ہے...... یعنی ایسا ”بے مثل“ کہ نیچے والوں یعنی مخلوق میں سے بھی کوئی ان کی طرح کا ہونے کا دعویٰ نہیں کرسکتا

میرا رسول......:

ادھر دیکھو تو...... خدا جیسا نہیں ہے
ادھر دیکھو تو...... مخلوق خدا جیسا نہیں ہے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## رسول ﷺ کا وسیلہ:

آج یہ کہا جاتا ہے کہ اللہ سے ڈائریکٹ مانگو...... کسی کے وسیلے کی ضرورت نہیں ہے...... میں کہتا ہوں کہ اللہ تعالیٰ سے توحید تو ڈائریکٹ لے نہیں سکے...... اب توحید والے رب تک بغیر وسیلے کے کیسے جا سکتے ہو؟

ارے آج وسیلے کا انکار کرنے والے یہ بھی تو سوچیں کہ...... اب بغیر وسیلے کے اس دنیا میں آتے نہیں ہیں...... اور بغیر وسیلے کے اس دنیا سے جاتے نہیں ہیں...... تو پھر اس دنیا میں رہتے ہوئے ''وسیلے'' کا انکار کیوں کرتے ہیں؟

ارے ووٹ کا وسیلہ حاصل نہ ہو تو...... کوئی اسمبلی کا منہ نہ دیکھ پائے...... ووٹ کا وسیلہ مانتے ہیں...... ووٹ کو اسمبلی تک لے جانے کا ذریعہ مانتے ہیں...... لیکن اس ذات کے وسیلے کا انکار کر رہیں کہ جو ذات پاک خدا تک لے جا رہی ہے؟

تو ''ووٹ'' ایک ایسا وسیلہ ہوا کہ جس کے بغیر مولوی صاحب...... قومی اسمبلی کا حصہ نہیں بن سکتے...... پارلیمنٹ کے ممبر نہیں بن سکتے...... تو میں کہتا ہوں کہ بھئی ووٹ کے وسیلے کے بغیر تم ''اسلام آباد'' تک پہنچ نہیں سکتے...... تو پھر ذات رسول ﷺ کے وسیلے کے بغیر ''اسلام'' تک کیسے پہنچ سکتے ہو؟

میرا ایک اپنا مزاج ہے...... میں ایک بات کہتا ہوں کہ ''وسیلہ'' ضروری بھی ہے...... اور وسیلہ ضروری بھی نہیں ہے...... یقیناً آپ میری بات سن کر حیران ہوں گے...... کہ ارے ہاشمی میاں کو کیا ہو گیا...... کہ کہتا ہے کہ وسیلہ ضروری

ہے......اور وسیلہ ضروری نہیں بھی ہے!

یہاں پر ایک شعر محدث کچھوچھوی رحمۃ اللہ علیہ کا پیش خدمت ہے......فرماتے ہیں......کہ:

مل نہیں سکتا خدا ان کا وسیلہ چھوڑ کر
غیر ممکن ہے کہ جائیے چھت پر زینہ چھوڑ کر

یعنی......اگر کوئی بندہ چھت پر چڑھنا چاہتا ہے تو اس کے لئے وسیلہ ضروری ہے......یعنی سیڑھی ضروری ہے......زینہ ضروری ہے......ایسا وسیلہ ضروری ہے کہ جو اس کو چھت تک لے جائے......جو اس کو اس کی منزل تک لے جائے......اسی طرح اگر کسی نے کچھ سو فٹ تک اوپر جانا ہو تو......اس کو ہیلی کاپٹر کا وسیلہ لینا ہوگا......اور اگر اس سے بھی اوپر جانا ہو تو جہاز کا وسیلہ پکڑنا ہوگا......اور اگر اس سے بھی اوپر جانا چاہتا ہے تو ''جمبو جہاز'' کا وسیلہ ضروری ہے......لیکن ہم دیکھتے ہیں کہ اگر کسی نے اس سے بھی اوپر جانا ہو تو پھر راکٹ کا وسیلہ ضروری ہے......

دیکھیے!

چھت پر جانا ہے......تو سیڑھی کا وسیلہ ضروری ہے
تھوڑا اوپر جانا ہے......تو ہیلی کاپٹر کا وسیلہ ضروری ہے
اور اوپر جانا ہے......تو ہوائی جہاز کا وسیلہ ضروری ہے
اور اس سے بھی اوپر جانا ہے......تو جمبو طیارے کا وسیلہ ضروری ہے
اور پھر اس سے اوپر جانا ہے......تو راکٹ کا وسیلہ ضروری ہے
لیکن......اگر کوئی چھت سے چھلانگ لگانا چاہے......اوپر رہنے کو دل نہ

کرے اور گیا تو اوپر آہستہ آہستہ سیڑھی کے ذریعے تھا...... لیکن بہت جلد نیچے آنا چاہتا ہے...... تو پھر کسی وسیلے کی ضرورت نہیں

تو وہ بات جو میں نے کہی تھی ...... کہ وسیلہ ضروری بھی ہے ...... اور ضروری نہیں بھی ہے ...... وہی بات آسانی سے آپ کی طرف منتقل کرنا چاہتا ہوں ...... کہ مثال سے ثابت ہوا کہ اگر اوپر جانا ہو تو وسیلہ ضروری ہے

اور اگر نیچے گرنا ہو تو وسیلہ ضروری نہیں ہے

تو اسی طرح سمجھ لو کہ اگر خدا تک پہنچنا ہے...... تو رسول ﷺ کا وسیلہ ضروری ہے...... اور اگر نیچے...... نیچے...... بہت نیچے آنا ہے تو پھر وسیلہ ضروری نہیں...... کہ اگر چھت سے بغیر وسیلے کے نیچے آئے گا...... یعنی چھلانگ لگائے گا...... تو ظاہر ہے...... کہ:

ٹانگوں سے جائے گا
ہاتھوں سے جائے گا
جان سے جائے گا

تو اگر رسول ﷺ کا وسیلہ چھوڑ دے گا...... تو پھر:

قرب خداوندی سے جائے گا
نعمائے خداوندی سے جائے گا
احکام قرآن سے جائے گا

ارے پھر تو!

ایسا شخص ایمان سے جائے گا

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

اگر میرے...... رسول ﷺ کا وسیلہ پکڑلیا ..... تو ابوبکر...... صدیق اکبر رضی اللہ عنہ ہو گے
اگر میرے...... رسول ﷺ کا وسیلہ پکڑلیا ..... تو عمر...... فاروق اعظم رضی اللہ عنہ ہو گے
اگر میرے...... رسول ﷺ کا وسیلہ پکڑلیا ..... تو عثمان...... عثمان ذوالنورین رضی اللہ عنہ ہو گے
اگر میرے...... رسول ﷺ کا وسیلہ پکڑلیا ..... تو علی ...... حیدر کرار رضی اللہ عنہ ہو گے
اگر میرے...... رسول ﷺ کا وسیلہ پکڑلیا ..... تو حسن...... امام المسلمین رضی اللہ عنہ ہو گئے
اگر میرے...... رسول ﷺ کا وسیلہ پکڑلیا ..... تو حسین...... امام الشھداء رضی اللہ عنہ ہو گئے
اگر میرے...... رسول ﷺ کا وسیلہ پکڑلیا ..... تو ابن عباس...... مفسر اعظم رضی اللہ عنہ ہو گے
اگر میرے...... رسول ﷺ کا وسیلہ پکڑلیا ..... تو عبداللہ بن مسعود...... فقیہ اعظم رضی اللہ عنہ ہو گئے

تو اگر کسی نے کہا...... کہ رسول کا وسیلہ ضروری نہیں ہے...... تو ہم سمجھ جائیں گے...... کہ یہ اوپر سے نیچے جا رہا ہے...... اوز اگر کوئی کہے...... کہ رسول کا وسیلہ ضروری ہے...... تو ہم سمجھ جائیں گے...... کہ نیچے سے اوپر جا رہا ہے

## مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ ...... محمد اللہ کے رسول ہیں

محترم حضرات!

دیکھئے قیام قیامت تک وقت کروٹ بدلتا رہے گا...... موسم بدلتا رہے گا...... دن آتے جاتے رہیں گے...... واقعات رونما ہوتے رہیں گے...... سانسیں چلتی اور ختم ہوتی رہیں گی...... شام کے سائے آتے اور ڈھلتے رہیں گے...... چمن میں، گلستان میں پھول مسکراتے اور مرجھاتے رہیں گے...... لوگ آتے اور جاتے رہیں گے...... حکومتیں آتی اور بدلتی رہیں گی...... سائے آتے اور ڈھلتے رہیں گے...... سکے چلتے اور مٹتے رہیں گے...... نام پیدا ہوتے اور

بدلتے رہیں گے...... قانون بنتے اور بدلتے رہیں گے...... لیکن ایک حقیقت آج بھی موجود ہے

اس پر ...... مفسروں کی بصارت اثر انداز نہ ہو سکی
اس پر ...... محدثین کی بحث اثر انداز نہ ہو سکی
اس پر ...... مجتہدین کا اجتہاد اثر انداز نہ ہو سکا
اس پر ...... مفکرین کا فکر اثر انداز نہ ہو سکا
اس پر ...... محققین کی تحقیق اثر انداز نہ ہو سکی
اس پر ...... ناقدین کی تنقید اثر انداز نہ ہو سکی
اس پر ...... ریاستوں کی تبدیلی اثر انداز نہ ہو سکی
اس پر ...... حکومتوں کی پالیسی اثر انداز نہ ہو سکی
کہ ...... مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ ...... محمد اللہ کے رسول ہیں

## 4 نکتہ!

ابھی محفل میں مجھ سے پہلے علماء کرام نے خطابات کیئے...... بڑے ہی اچھے اور نفیس اور پختہ انداز میں گفتگو فرمائی گی...... اور اس میں میرے والد گرامی کا ذکر خیر بھی ہوا...... اور ان کی علمی خدمات کا ذکر بھی ہوا...... پاکستان بنانے میں جو ان کا فرض تھا وہ انہوں نے اپنا فرض نبھایا...... اور محدث اعظم ہند کا ذکر کرتے ہوئے...... پاکستان بنانے میں علماء کو ایک پلیٹ فارم پر اکٹھا کرنے کیلئے ''بنارس کانفرنس'' کا ذکر بھی ہوا...... اور اس وقت محدث اعظم ہند کی قیادت میں سنی علمائے نے جو ہندوستان کے مسلمانوں کی امداد کرنے کا ان کا فرض بنتا تھا انہوں نے نبھایا...... خیر یہ تو ایک علیحدہ اور کافی طویل

موضوع ہے...... اس وقت اس کو نہیں چھیڑنا چاہتا بلکہ جو موضوع میں نے عظمت مصطفیٰ ﷺ کے حوالے سے شروع کر رکھا ہے اس کو ہی پایہ تکمیل تک پہنچانے کی کوشش میں لگا ہوا ہوں

تو خیر بات ہو رہی تھی...... ابھی مجھ سے پہلے جن علماء کرام نے خطاب کیا...... انہوں نے محدث اعظم کی خدمات کا ذکر کیا...... کہ جب محدث اعظم ہند موجود تھے تو انہوں نے فلاں کام کیا...... فلاں کام سرانجام دیا...... کیا بولا؟ محدث اعظم جب تھے...... یعنی کیا بولا؟...... جب تھے...... یعنی اس وقت تھے اب نہیں ہیں...... جس کیلئے تھے کا لفظ بولا جائے یہ لفظ ہی بتا رہا ہے...... کہ وہ کام ہوا تھا...... اور جب ہم کہیں کہ محدث اعظم ہند نے یہ کام کیا تھا...... جب اب وہ خود بھی ''تھے'' ہو گئے...... اور ان کے تمام کارنامے بھی ''تھے'' ہو گے...... یعنی جو اس دنیا سے چلا جائے!

اس کیلئے...... ''تھے'' کا لفظ بولا جاتا ہے...... ''ہیں'' یا ''ہے'' نہیں
آؤ بات کو اور ذرا آسان کر کے سمجھانے کی کوشش کرتا ہوں...... کہ:

ہندوؤں کا ایک لیڈر تھا...... اس کا نام نہرو تھا...... ایک بات بتاؤ کہ جب کوئی اس کا تعارف کروائے گا...... تو وہ کیا کہے گا...... نہرو لیڈر تھا...... یا ''ہے''

یقیناً وہ دنیا سے چلا جا چکا ہے اور اب جب بھی اس کا ذکر ہو گا تو کوئی ہندو بھی یہ نہیں کہہ پائے گا...... کہ چلو ہمارا لیڈر تھا...... اس کو اب ''ہیں'' بولتے ''ہیں''...... ارے جب وہ رہا ہی نہیں تو پھر اس کو ''ہیں'' یا ''ہے'' کہنے کی کوشش

کوئی کیسے کر سکتا ہے؟

خیر چھوڑو ہندوؤں کی بات...... ان کی بات بھی بھلا کوئی بات ہے!

آیئے بانیٔ پاکستان قائداعظم محمد علی جناح رحمۃ اللہ علیہ کو ہی لیجیے...... کہ:

بے شک جب کوئی ان کی قابلیت کے حوالے سے بات کرے گا...... تو بہت خوبیاں بتائے گا...... جب کوئی ان کا کارنامے کے بارے میں بتائے گا تو بہت کچھ بتائے گا...... لیکن جب بھی کوئی ان کے ایک لیڈر کی حیثیت سے تعارف کروائے گا...... تو کہے گا کہ قائداعظم ہمارے لیڈر تھے...... یعنی وہ زندہ ہوں تو پھر "ہیں"...... اور جب وہ دنیا سے چلے گئے تو اب جو بھی تعارف کروائے گا...... وہ کہے گا

قائداعظم رحمۃ اللہ علیہ ...... ہمارے لیڈر تھے
علامہ اقبال رحمۃ اللہ علیہ ...... بڑے شاعر تھے

یعنی جس خوبی کو بھی بتاؤ گے...... چاہے کوئی ان کا جتنا بھی عزیز ہوگا...... وہ کہے گا...... کہ وہ فلاں خوبی والے تھے...... فلاں خوبی والے تھے...... فلاں عادت والے تھے......

قائداعظم رحمۃ اللہ علیہ ...... تھے
علامہ اقبال رحمۃ اللہ علیہ ...... تھے
ظہیر الدین بابر ...... تھا

لیکن اگر میں کہوں...... یا آپ میں سے کوئی کہے جبکہ میں آپ کے سامنے موجود ہوں تو آپ میں سے اٹھ کر کوئی...... بندہ کہے...... کہ "سید محمد ہاشمی میاں" تھا...... تو فوراً آپ سب حیران ہوں گے......

ارے جب پوچھا کہ بھئی حیران ہونے والی کونسی بات ہے؟ تو بولے ارے ہاشمی ...... جو زندہ نہیں ...... ہم میں موجود نہیں ہیں ...... ان سب کو تو ''تھے'' کہا جائے گا لیکن آپ کو ہم ''تھے'' نہیں کہیں گے ...... بلکہ آپ کو ''تو ہیں'' کہا جائے گا ...... آخر کیوں ...... بھائیوں صرف اسی لئے ...... کہ

میں آپ کے سامنے زندہ ہوں
میں آپ میں موجود ہوں
میں آپ کے سامنے ہوں
میں آپ کو دیکھ رہا ہوں

ارے یہی تو اس وقت سے میں سمجھانے کی کوشش کر رہا ہوں ...... کہ جو مر جائے اس کو ''تھے'' ...... یا ''تھا'' کہا کرو ...... اور جو زندہ ہو اس کو ''ہیں'' یا ''ہے'' کہا کرو ...... یہی تقاضا ہے ...... عقل و شعور کا ...... کہ:

جو ...... دنیا سے چلا جائے ...... اسے ''تھے'' کہا کرو
جو ...... بزم سے چلا جائے ...... اسے ''تھے'' کہا کرو
جو ...... آنکھوں سے اوجھل ہو جائے ...... اسے ''تھے'' کہا کرو
جو ...... سوسائٹی سے چلا جائے ...... اسے ''تھے'' کہا کرو

ارے ...... اس سے بھی بڑا جملہ کہنے والا ہوں
کہ ...... جو قبر کی آغوش میں چلا جائے ...... اس کو ''تھے'' کہتے ہیں
لیکن ......:

جو ...... زندہ ہو ...... اسے ''ہیں'' کہتے ہیں

جو...... موجود ہو ......اسے ''ہیں'' کہتے ہیں
جو...... سامنے ہو ......اسے ''ہیں'' کہتے ہیں
جو...... حاضر ہو ......اسے ''ہیں'' کہتے ہیں
جو...... ناظر ہو ......اسے ''ہیں'' کہتے ہیں
جو...... حیات ہو ......اسے ''ہیں'' کہتے ہیں

ارے...... ''تھا'' اور ''تھے'' وہ ہے...... جو مردہ ہو...... اور ''ہیں'' وہ ہے...... جو موجود ہو...... حیات ہو...... حاضر ہو...... زندہ ہو

تو میں نے عالم تخیل میں سوال کر لیا...... کہ اے میرے رب ہم تیرے

رسول ﷺ کو کیا کہیں؟
رسول ﷺ کو کیا جانیں؟
رسول ﷺ کو کیا سمجھیں
رسول ﷺ کو کیا بتائیں؟
رسول ﷺ کو کیا مانیں؟

تو فوراً قرآن کی آیت مقدسہ اور کلمہ طیبہ دونوں ایک زبان میں بولتے ہیں ...... کہ:

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

محمد اللہ کے رسول ''ہیں''

ارے...... یہ نہیں کہ ﷺ کے رسول تھے...... قیامت تک جو بھی قرآن کی اس آیت کا ترجمہ کرے گا تو بھی کہے گا...... کہ:

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ ...... محمد اللہ کے رسول ہیں

تو بس فیصلہ ہو گیا...... کہ!

جب ‘‘ہیں’’ ...... تو حیات ہیں
جب ‘‘ہیں’’ ...... تو زندہ ہیں
جب ‘‘ہیں’’ ...... تو موجود ہیں
جب ‘‘ہیں’’ ...... تو حاضر ہیں
جب ‘‘ہیں’’ ...... تو سامنے ہیں
جب ‘‘ہیں’’ ...... تو ناظر ہیں

ارے!

جب ‘‘ہیں’’ ...... تو بزم میں ہیں
جب ‘‘ہیں’’ ...... تو محفل میں ہیں
جب ‘‘ہیں’’ ...... تو کائنات میں ہیں
جب ‘‘ہیں’’ ...... تو قرب میں ہیں

اَلنَّبِیُّ اَوْلٰی بِالْمُؤْمِنِیْنَ مِنْ اَنْفُسِہِمْ
نبی تمہاری جانوں سے بھی قریب ہیں

اب مومن جو ہیں......

وہ قریب کہہ رہے ہیں
وہ نزدیک کہہ رہے ہیں
وہ زندہ کہہ رہے ہیں
وہ موجود کہہ رہے ہیں

وہ حاضر کہہ رہے ہیں
وہ ناظر کہہ رہے ہیں

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

قرآن کہہ رہا ہے:

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

محمد اللہ کے رسول ہیں

اور ایک بات میں انتہائی ذمہ داری سے کہہ رہا ہوں...... کہ جن لوگوں کو میرے نبی ﷺ کو زندہ کہنے سے...... پیٹ میں درد ہوتا ہو! وہ اب کوئی نیا ’’رسول‘‘ لاویں...... اس لئے کہ ہمیں وہ رسول نہیں چاہئے کہ جو ’’تھا‘‘...... ہم تو اس کو ’’رسول‘‘ مانتے ہیں...... کہ جو:

ہر دور میں ...... ’’ہیں‘‘
اور آج بھی ...... ’’ہیں‘‘
اور قیامت تک ...... ’’ہیں‘‘

ارے ہم یہ کیسے مان لیں...... کہ ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ کو وہ رسول ملے جو ’’ہیں‘‘ اور ہمیں وہ ’’رسول‘‘ ملے جو ’’تھے‘‘؟

اور یاد رکھو...... کہ اگر تم نے رسول ﷺ کو ’’تھے‘‘ کہہ دیا...... تو پھر آج کا نوجوان ہم سے سوال کرے گا...... کہ مولوی صاحب ہمارا ’’رسول‘‘ کون ہے؟ اور کیا کہو گے...... کہ تمہارا ’’رسول‘‘ وہ جو ’’تھے‘‘؟

تو...... آج کی نئی نسل نے اگر کوئی ایسا سوال کر دیا تو یقیناً لاجواب ہو جاؤ گے...... شرمندہ ہو جاؤ گے...... اس لئے قرآن نے قیامت تک کے آنے والے

ہر بندے کو سہارا دے دیا...... کہ ارے تم سب کے وہی رسول ہیں:

جو ابوبکر و عمر رضی اللہ عنہما ...... کے رسول ہیں
جو عثمان و حیدر رضی اللہ عنہما ...... کے رسول ہیں
جو عباس و حمزہ رضی اللہ عنہما ...... کے رسول ہیں
جو بلال و سلمان رضی اللہ عنہما ...... کے رسول ہیں
جو عمار و طلحہ رضی اللہ عنہما ...... کے رسول ہیں

اس لئے ...... کہ یہ دلنشیں عقیدہ خود نہیں بنایا گیا...... بلکہ "کلمہ طیبہ" نے اس کی بنیاد ڈالی ہے...... اور قرآن نے اس کی تصدیق کی ہے...... کہ:

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

محمد اللہ کے رسول ہیں

## رسول ﷺ "موجود" کیسے ہیں؟

چلو آؤ اب میں تمہیں یہ بتاؤں کہ...... رسول ﷺ "موجود" کیسے ہیں!...... حیات کیسے ہیں؟...... "حاضر و ناظر" کیسے ہیں؟...... تو آیئے سنیئے!

کہ...... یہ آج کا جلسہ اس وقت تک ہے کہ جب تک "ہاشمی" ہے...... جو جس کیلئے ہوتا ہے...... وہ اس کے رہنے تک رہتا ہے...... مثلاً:

یہ ...... مائیک ہاشمی کیلئے ہے
یہ ...... کیمرہ ہاشمی کیلئے ہے
یہ ...... اسٹیج ہاشمی کیلئے ہے
یہ ...... بزم ہاشمی کیلئے ہے
یہ ...... انتظام ہاشمی کیلئے ہے

یہ ...... اہتمام ہاشمی کیلئے ہے
یہ ...... دعوت ہاشمی کیلئے ہے

تو!

جب تک ہاشمی ہے ...... مائیک رہے گا
جب تک ہاشمی ہے ...... کیمرہ رہے گا
جب تک ہاشمی ہے ...... اسٹیج رہے گا
جب تک ہاشمی ہے ...... مجمع رہے گا
جب تک ہاشمی ہے ...... انتظام رہے گا
جب تک ہاشمی ہے ...... اہتمام رہے گا
جب تک ہاشمی ہے ...... بزم رہے گی
جب تک ہاشمی ہے ...... محفل رہے گی
جب تک ہاشمی ہے ...... مجلس رہے گی

اور جب ہاشمی تقریر کے بعد ...... محفل سے چلا جائے گا ...... تو سب کچھ بدل جائے گا

یہ ...... قالین کا فرش لپیٹ لیا جائے گا
یہ ...... مائیک اٹھا لیا جائے گا
یہ ...... کیمرہ یہاں سے ہٹا لیا جائے گا
یہ ...... مجمع اٹھ کر یہاں سے چلا جائے گا

یعنی ...... یہ سب کچھ جس کیلئے تھا ...... اس کے رہنے تک تو موجود رہا ...... لیکن اس کے چلے جانے کے بعد ...... سب نظام درہم برہم ہو گیا ...... سب کچھ

بکھر گیا...... سارا مجمع منتشر ہو گیا...... اس لئے کہ یہ سب کچھ جس کے لئے تھا وہی یہاں سے چلا گیا...... تو ثابت یہ ہوا...... کہ:

جو جس کیلئے ہوتا ہے...... اس کے رہنے تک...... باقی رہتا ہے

تو...... آیئے حدیث قدسی سنیئے...... کہ:

لَوْلَاكَ لَمَا خَلَقْتُ الدُّنْيَا

لَوْلَاكَ لَمَا خَلَقْتُ الْاَفْلَاكَ

اے محبوب اگر آپ نہ ہوتے میں دنیا کو پیدا نہ کرتا

اے محبوب اگر آپ نہ ہوتے میں افلاک کو پیدا نہ کرتا

## کائنات سجی ہوئی ہے صدقہ حضور ﷺ کا:

تو حدیث قدسی سے ثابت ہو گیا...... کہ!

زمین کا فرش بچھا ہے ......رسول ﷺ کیلئے
آسمان کا شامیانہ لگا ہے ......رسول ﷺ کیلئے
قمقمے روشن کیے ہیں ......رسول ﷺ کیلئے
چاند و ستارے روشن کیے ہیں ......رسول ﷺ کیلئے
سورج میں کرنیں ہیں ......رسول ﷺ کیلئے
گلستان میں مہکیں ہیں ......رسول ﷺ کیلئے
آبشاروں میں نغمے ہیں ......رسول ﷺ کیلئے
کوئل کے ترانے ہیں ......رسول ﷺ کیلئے
پہاڑوں کی بلندی ہے ......رسول ﷺ کیلئے
گلاب کی شگفتگی ہے ......رسول ﷺ کیلئے

سمندروں میں گہرائی ہے......رسول ﷺ کیلئے
کوہساروں میں گہرائی ہے......رسول ﷺ کیلئے
زمین کو فرش بنایا ہے......رسول ﷺ کیلئے
عرش کو عرش بنایا ہے......رسول ﷺ کیلئے
لوح و قلم کو بنایا ہے......رسول ﷺ کیلئے
باغ ارم کو سجایا ہے......رسول ﷺ کیلئے

ارے!

سورج بنا......رسول ﷺ کیلئے
چاند بنا......رسول ﷺ کیلئے
تارے بنے......رسول ﷺ کیلئے
انسان بنے......رسول ﷺ کیلئے
دنیا بنی......رسول ﷺ کیلئے

ارے......حدیث بتا رہی ہے......کہ:

قطرہ قطرہ......رسول ﷺ کیلئے
صحرا صحرا......رسول ﷺ کیلئے
گل گل......رسول ﷺ کیلئے
گلشن گلشن......رسول ﷺ کیلئے
خوشبو خوشبو......رسول ﷺ کیلئے
مہک مہک......رسول ﷺ کیلئے
اُجالا اُجالا......رسول ﷺ کیلئے

کلی کلی ......رسول ﷺ کیلئے
شہر شہر ......رسول ﷺ کیلئے
وطن وطن ......رسول ﷺ کیلئے
قریہ قریہ ......رسول ﷺ کیلئے

یہ سارا مجمع ہے "ہاشمی میاں" کیلئے......تو جب تک یہاں ہاشمی ہے مجمع رہے گا...... جلسہ رہے گا...... بزم رہے گی...... مجلس رہے گی......تو یہ ساری کائنات میرے رسول ﷺ کیلئے......تو:

جب تک رسول ﷺ ہیں ......کائنات رہے گی
جب تک رسول ﷺ ہیں ......زمین رہے گی
جب تک رسول ﷺ ہیں ......آسمان رہے گا
جب تک رسول ﷺ ہیں ......جہاں رہے گا
جب تک رسول ﷺ ہیں ......ہوا رہے گی
جب تک رسول ﷺ ہیں ......فضا رہے گی
جب تک رسول ﷺ ہیں ......گلستان رہے گا
جب تک رسول ﷺ ہیں ......مسلمان رہے گا

یہ مجمع ہاشمی کیلئے تھا......اور جب ہاشمی یہاں سے چلا جائے گا......قالین کا فرش لپیٹ لیا جائے گا:

ارے...... یہ ساری کائنات میرے رسول ﷺ کیلئے ہے...... جب رسول ﷺ چلے جائیں گے......تو پھر!

زمین کا فرش لپیٹ لیا جائے گا

آسمان کا شامیانہ گرا دیا جائے گا
ستاروں کے قمقمے بجھا دیئے جائیں گے
سمندروں کے بند کھول دیئے جائیں

ارے..... میری بات کو توجہ سے سنو..... یہ نعرے تو تم اطمینان سے بھی لگا سکتے ہو..... لیکن جو جنون میرے سینے میں پل رہا ہے..... اپنے دل میں جو طوفان لئے ہوئے میں جی رہا ہوں..... اس طوفان کو اپنے سینے میں لے لو..... ارے! تم کسی بحر عرب کے محتاج نہ رہو..... کیا جانو کہ اس سے بڑا بحر عرب تمہارے سینے میں موجیں لے رہا ہو!

تم خود اپنے وجود میں ایک طوفان بن جاؤ..... اور ایسا طوفان..... کہ:

دشت تو دشت دریا بھی نہ چھوڑے ہم نے
بحر ظلمات میں دوڑا دیئے گھوڑے ہم نے

جب یہ ساری دنیا رسول ﷺ کیلئے ہیں..... تو جب تک یہ دنیا ہے رسول ﷺ موجود رہیں گے..... اور اسی پر ایک جملہ سن لینا..... کہ:

جب رسول ﷺ نہیں ہوں گے..... تو اسی دن قیامت برپا ہو گی..... یعنی پتہ چلا کہ قیامت کسی کی آمد کا نام نہیں ہے..... رسول ﷺ کی رخصت کا نام ہے:

ارے..... اگر کوئی کہے کہ قیامت آ گئی..... تو یہی کہہ دو..... کہ ''رحمت'' چلی گی..... ارے..... رحمت کے چلے جانے کا نام ہی تو ''قیامت'' ہے

تو یہیں سے ایک درویش نے عقیدہ پکڑ لیا..... کہ آپ ﷺ کے رہنے کا نام ہی وجود ہے..... اور آپ ﷺ کے نہ رہنے کا نام ہی قیامت ہے تو صوفی نے

یہیں سے ایک نکتہ لے لیا...... کہ:

جس دل میں مصطفیٰ ﷺ ہیں اس دل میں نور وجود ہے
جس دل میں رسول ﷺ نہ ہوں، وہاں قیامت مچی ہوئی ہے

## "دیدۂ کور" کو کیا نظر آئے...... کیا دیکھے؟

عزیزانِ گرامی!

اس محفل کے اسٹیج پر بولتے بولتے میرے ذہن میں یہ بات آئی...... کہ آپ کے سامنے میں بول رہا ہوں...... اور آپ ایک ہزار ہو...... یا دو ہزار یا دس ہزار ہو...... خیر جتنے بھی ہوں سبھی مجھے دیکھ بھی رہے ہیں...... اور سن بھی رہے ہیں لیکن...... دوسری طرف پردے کی اوڑھ میں میری مائیں بہنیں بیٹھی ہوئی ہیں...... کہ جو صرف میری آواز تو سن رہی ہیں...... لیکن مجھے دیکھ نہیں رہیں...... تو ایسے میں ان میری بہنوں کی طرف سے ہی ایک بہن نے اٹھ کر پوچھا دوسری عورت سے...... کہ اے بہن یہ کون بول رہا ہے؟ جواب میں اس نے کہا کہ "ہاشمی میاں" بول رہے ہیں...... کون ہاشمی میاں...... ارے وہی انڈیا والے ہاشمی میاں بول رہے ہیں

تو وہ سوال کرنے والی میری بہن پھر بولی اور کہنے لگی کہ تم سب کہہ رہی ہو...... کہ ہاشمی میاں بول رہے ہیں...... بھئی وہ دکھائی تو نہیں دے رہے؟...... تو جس بہن سے سوال کیا جا رہا تھا...... وہ بولی ارے قسم خدا کی...... کہ ہاشمی میاں بول رہے ہیں!

تو وہ سوال کرنے والی عورت کہنے لگی...... کہ بہن تم نے تو بغیر سوچے سمجھے...... بغیر دیکھے قسم اٹھالی کہ ہاشمی میاں بول رہے ہیں...... ہمیں تو دکھائی نہیں دے

رہے...... تم کہہ رہی ہو کہ ہاشمی میاں انڈیا والے بول رہے ہیں؟

تو ایسے میں وہ بہن بولی جس نے قسم اٹھائی تھی کہ اللہ کی قسم ہاشمی میاں بول رہے ہیں...... کہ اے سوال کرنے والی تو بیوقوف ہے اس لئے کہ تم نے اعلان نہیں سنا تھا کہ ہاشمی میاں آخر میں بولیں گے؟ تم نے کیا اشتہار نہیں پڑھا تھا کہ انڈیا والے ہاشمی میاں کا خطاب ہوگا؟

تو سنو! اگر ہاشمی میاں نہ ہوتے...... تو سارا مجمع منتشر ہو چکا ہوتا...... جلسہ ختم ہو چکا ہوتا...... لائٹنگ بند ہو چکی ہوتی...... تو

ہم ...... مجمع دیکھ کر ہاشمی کو مان رہی ہیں
ہم ...... جلسہ دیکھ کر ہاشمی کو مان رہی ہیں
ہم ...... ماحول دیکھ کر ہاشمی کو مان رہی ہیں
ہم ...... ذوق دیکھ کر ہاشمی کو مان رہی ہیں

اس لئے کہ سارا جلسہ ہاشمی میاں کیلئے تھا...... تو اگر ہاشمی میاں نہ ہوتے تو جلسہ نہ ہوتا...... تو اگر جلسہ ہو رہا ہے...... تو اس سے ہمیں یقین ہے کہ ہاشمی میاں موجود ہیں...... اور آواز سنائی دے رہی ہے...... تو معلوم ہو رہا ہے کہ ہاشمی میاں بول رہے ہیں

یعنی...... اس نے جواب دے دیا...... کہ اے بہن سن!

ہاشمی دکھائی دے یا نہ دے ...... میں مجمع دیکھ کر ہاشمی کو مانوں گی
ہاشمی دکھائی دے یا نہ دے ...... میں انتظام دیکھ کر ہاشمی کو مانوں گی
ہاشمی دکھائی دے یا نہ دے ...... میں آواز سن کر ہاشمی کو مانوں گی

یعنی ...... یہ سب ہاشمی کیلئے تھا...... تو پھر ہاشمی دکھائی دے یا نہ

دے......لوگ

ماحول دیکھ کر.....ہاشمی کو مان رہے ہیں
انتظام دیکھ کر.....ہاشمی کو مان رہے ہیں
آواز سن کر.....ہاشمی کو مان رہے ہیں
مجمع دیکھ کر.....ہاشمی کو مان رہے ہیں

تو......اے "حیات النبی" کا انکار کرنے والو! کان کھول کر سن لو کہ اگر رسول ﷺ کو کھائی دیں یا نہ دیں۔

ہم زمین کو دیکھ کر.....رسول ﷺ کو مانیں گے
ہم آسمان کو دیکھ کر.....رسول ﷺ کو مانیں گے
ہم ستاروں کو دیکھ کر.....رسول ﷺ کو مانیں گے
ہم نظام کائنات کو دیکھ کر.....رسول ﷺ کو مانیں گے

اس لئے کہ...... یہ سب کچھ نبی ﷺ کے لئے ہے اور اگر یہ نظام ہستی چل رہا ہے......سورج مشرق سے نکل رہا ہے......تو اصل میں یہ خبر دے رہا ہے کہ میں جس کے صدقے میں ہوں...... یہ کائنات جس ہستی کے صدقے میں قائم ہے......وہ موجود ہیں......تو نظام کائنات چل رہا ہے

تو "مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ"......محمد اللہ کے رسول ہیں

## اسلام......اور بانیٔ اسلام ﷺ

یہ جو کلمہ طیبہ ہے...... یہ نبوت و رسالت...... یہ اسلام کی عزت و عظمت...... رسول پاک کی سنت...... دین متین کے اعلانات...... دین فطرت کے احکامات...... یہ دین اسلام...... یہ نظریہ پیغمبر...... یہ نظام مصطفی ﷺ نبی ﷺ کی

ادائیں...... یہ رسول صلی اللہ علیہ وسلم کی عطائیں...... یہ ہمیں آسانی سے نہیں ملیں...... ایک بات چلتے چلتے کہنا چاہتا ہوں...... کہ جو چیز ہمیں آسانی سے ملے وہ چیز ہم آسانی سے دے سکتے...... لیکن جو چیز مشکل سے حاصل ہوئی ہو...... وہ چیز انسان کبھی نہیں دیتا۔

مثلاً: ایک سگریٹ ہے جو کسی بھی اجنبی کو دیا جا سکتا ہے...... راہ چلتے چلتے اگر کسی شخص نے کہا بھئی یہ تم نے ہاتھ میں سگریٹ لگا رکھا ہے...... اور ایک سگریٹ مجھے بھی دینا تو...... وہ آدمی بغیر سوچے بغیر تحقیق کئے، بغیر نفع ونقصان کے خوف کئے...... فوراً وہ سگریٹ مانگنے والے کو دے دے گا...... اور اسی طرح اگر کوئی کسی چائے کی دکان پر بیٹھ کر چائے پی رہا ہو اور ادھر سے کوئی اجنبی آ کر کہے یار میاں صاحب ایک کپ چائے کا مجھے بھی منگوا دو...... تو آپ فوراً اس کو چائے کا کپ منگوا کر دے دیں گے۔

یعنی بات وہی ہوئی جو میں نے عرض کی کہ جو چیز آسانی سے حاصل ہوتی ہے وہ انسان دوسروں کو بھی دے دیتا ہے...... اور فکر بھی نہیں کرتا......

جیسے...... سگریٹ کا سوال کرنے والے...... کو دے دیا

جیسے...... چائے کا کپ سوال کرنے والے...... کو دے دیا

لیکن غیر تو غیر اگر کوئی اپنا بھی آ کر کہے تو...... کوئی بھی کسی اپنے کے کہنے پر بھی دس لاکھ کی بلڈنگ اس کو نہیں دے گا

انتہائی توجہ کرنا...... میرے اگلے جملوں پر...... کہ

اگر کوئی آپ سے آپ کا ملک...... آپکا وطن عزیز ”پاکستان“ مانگے تو آپ

گردن تو کٹوا سکتے ہیں...... جان تو گنوا سکتے ہیں

لیکن اپنے ملک کا سودا نہیں کر سکتے ...... اس لئے کہ پاکستان تم کو بستر پر لیٹے لیٹے نہیں ملا...... نہ جانے کتنے مسلمانوں نے اپنے خون سے اس کی بنیاد کو پروان چڑھایا ہے؟ نہ جانے کتنی ماؤں بہنوں کی جھولیاں خالی ہو گی ہیں...... اس لئے پاکستان کو وجود دلانے کیلئے نہ جانے کتنی بہنوں کے سہاگ اجڑے ہیں تو پھر یہ پاکستان وجود میں آیا ہے!

یعنی اپنے ملک کی ایک انچ زمین کو بھی آپ کسی قیمت پر دینے کو تیار نہیں ہیں...... یہی تو غیرت کا تقاضا ہے...... یہی تو جذبات کا اظہار ہے

تو یہیں سے بات سمجھ لو کہ...... جو چیز مشکل سے حاصل ہوتی ہے...... وہ دل و جان سے بھی زیادہ عزیز ہوتی ہے

تو پاکستان کی سرزمین پر بسنے والے غیور مسلمانوں کان کھول کر سن لو

کہ...... مسلمانوں کو یہ عقیدہ توحید کے ثمرات...... یہ رسول اللہ ﷺ کی سنتیں...... یہ دین کے احکامات اتنی آسانی سے نہیں مل گے

یہ کوئی پان...... سگریٹ...... یا چائے کا کپ نہیں ہے کہ جو ہم کسی اجنبی مانگنے والے کو دے دیں...... نہیں، نہیں...... ایسا نہیں ہو سکتا

ارے......:

یہ ...... دین ہے "دین"

یہ ...... اسلام ہے "اسلام"

یہ ...... شریعت ہے "شریعت"

ارے یہ مسکراتے ہوئے نہیں پھیلا ہے...... یہ سکون و راحت سے نہیں

پھیلا ہے...... یہ بادشاہوں کے شیش محلوں میں نہیں رہا...... یہ راجا و ماہ راجہ کی گود میں نہیں رہا

میرے نبی ﷺ نے پیٹ پر پتھر باندھا ہے
تب اسلام آگے بڑھا ہے
میرے نبی ﷺ نے آنسو بہائے ہیں
تب اسلام آگے بڑھا ہے
میرے نبی ﷺ نے اپنا وطن چھوڑا ہے
تب اسلام آگے بڑھا ہے

ہاں...... جب امیر حمزہ رضی اللہ عنہ قمر بنو ہاشم...... میرے رسول ﷺ کے سگے چچا...... انہوں نے جب اپنے سینے کو کٹوا کر کلیجہ نکلوا کر...... دانتوں سے چبوایا ہے

تب اسلام آگے بڑھا ہے

ارے آسمان گر کیوں نہیں جاتا...... زمین پھٹ کیوں نہیں جاتی...... کہ جب میرے نبی ﷺ نے اپنے چچا امیر حمزہ رضی اللہ عنہ کے جسم پاک کے ٹکڑوں کو اپنے ہاتھوں سے اکٹھا کیا ہے...... تو

تب اسلام آگے بڑھا ہے

ارے میرے نبی ﷺ نے اس اسلام کی سربلندی کیلئے اپنے خاندان کی قربانیاں پیش کی ہیں

تب اسلام آگے بڑھا ہے

جب فاطمہ رضی اللہ عنہا کی گود میں پلا ہوا...... بھوکا اور پیاسہ رہا ہے

تب اسلام آگے بڑھا ہے

جب سیدہ فاطمہ رضی اللہ عنہا کے پاک دودھ سے پلے کو کربلا میں تڑپایا گیا ہے

تب اسلام آگے بڑھا ہے

ارے...... امام احمد بن حنبل رضی اللہ عنہ کی پیٹھ پر جب کوڑے لگے ہیں

تب اسلام آگے بڑھا ہے

تو آج ہم اس قیمتی اسلام کو کسی بھی دنیاوی سپر پاور کے ارادوں پر کبھی بھی مٹنے نہیں دیں گے...... اس لئے کہ ہم نے اس رسول ﷺ سے یہ اسلام لیا ہے...... کہ

جو...... اللہ کے رسول ہیں

کل ابوبکر رضی اللہ عنہ...... کو یقین تھا ...... کہ رسول ﷺ ہیں

غوث اعظم رضی اللہ عنہ...... کو یقین تھا ...... کہ رسول ﷺ ہیں

تو آج ہمارا بھی ایمان ہے...... کہ:

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ ...... محمد اللہ کے رسول ہیں

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُلِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ

* * *

## موضوع...... تفسیر سورۂ فاتحہ شریف

نَحْمَدُہٗ وَ نَسْتَعِیْنُہٗ وَ نَسْتَغْفِرُہٗ وَ نُؤْمِنُ بِہٖ وَ نَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَ نَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَ مِنْ سَیِّاٰتِ اَعْمٰلِنَا وَ مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَ مَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَ نَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ وَ نَشْھَدُ اَنَّ سَیِّدَ نَا مَوْلَانَا وَ حَبِیْبَنَا وَ سِرَاجَنَا وَ اَشْرَفَنَاوَ سَیِّدَ نَا مُحَمَّدٍ ﷺ

اَمَّا بَعْدُ!

قَالَ اللّٰہُ تَبَارَکَ وَ تَعَالٰی فِی الْقُرْاٰنِ الْمَجِیْدِ وَ الْفُرْقَانِ الْحَمِیْدِ...... اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ
صَدَقَ اللّٰہُ مَوْلٰنَا الْعَظِیْمُ

اِنَّ اللّٰہَ وَمَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوْنَ عَلَی النَّبِیِّ ط
یٰٓاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْہِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ۝

بارگاہ رسالت مآب ﷺ میں ہدیہ درود و سلام پیش کیجیے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِکَ وَرَسُوْلِکَ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

علماء کرام......سادات کرام اور عوام اہلسنت......میں پہلے ہالینڈ گیا پھر اس کے بعد واپس برمنگھم آیا ہوں......اگر کہا جائے تو یہ سفر بھی تھکا دینے والا سفر ہے......خیر اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن......میں بھی اَلْحَمْدُ لِلّٰہ کہہ رہا ہوں......اور آج جو موضوع شروع کیا ہوا ہے......وہ موضوع بھی ایسا موضوع ہے......کہ جو بچہ بچہ جانتا ہے......اور انتہائی سمجھ آنے والا موضوع آپ کو سنانے والا ہوں......ایک مرتبہ سب پڑھ لیجیے......کہ:

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن

## تعارف سورۃ فاتحہ:

محترم حضرات!

قرآن پاک اللہ تعالیٰ کی آخری کتاب ہے......اور اس کتاب لاریب کا ایک ایک حرف متبرک ہے......افضل ہے، اعلیٰ ہے......مقدس و محترم ہے......یہ سورۂ فاتحہ ایک رکوع والی سورۃ مقدسہ جس کی سات آیات ہیں......پچیس کلمات اور ایک سو تیئس حروف رکھنے والی یہ سورۂ مبارکہ......اتنی اہم ہے اتنی اہم ہے......نمازی چاہے......

فرض یا سنت پڑھ رہا ہو
نفل یا وتر پڑھ رہا ہو
نماز فجر یا ظہر پڑھ رہا ہو
نماز عصر یا مغرب پڑھ رہا ہو

نماز عشا یا نماز جمعہ پڑھ رہا ہو

ہاں کسی امام کی اقتداء میں نہ ہو......تو ایسے ہر شخص کیلئے......میرے رسول ﷺ کا فرمان اقدس ہے

لَاصَلَاةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَءْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ

جو شخص (بغیر جماعت کے) نماز میں فاتحۃ الکتاب نہ پڑھے اس کی نماز نہیں ہوگی

سورت فاتحہ وہ سورت ہے کہ جس میں اللہ تعالیٰ نے تمام قرآنی علوم و معارف اور احکام و تعلیمات کا خلاصہ بیان فرما دیا ہے...... خیر یہ سورت فاتحہ اتنی اہم ہے کہ کوئی نمازی......نماز کی ایک رکعت بھی نہیں پڑھ سکتا اگر اس سورت فاتحہ کو نہ پڑھے تو...... حضرت امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ کے نزدیک فرض ہے......اور امام اعظم امام ابو حنیفہ رضی اللہ عنہ کے نزدیک ''واجب'' ہے۔

چلو تم فرض کہو یا واجب......لیکن چھوڑنے سے کام نہیں بنے گا......اس لئے اس کا پڑھنا ضروری ہے۔

فرض بھی ضروری ہے ......واجب بھی ضروری ہے
فرض بھی اہم ہے ......واجب بھی اہم ہے
فرض بھی لازمی ہے ......واجب بھی لازمی ہے

سورۂ فاتحہ رب کو اتنی پسند ہے کہ تمام عبادات میں سے سب سے افضل عبادت نماز ہے......اور نماز میں سب سے افضل اور اہم ''قیام'' ہے......اور قیام میں سب سے اہم ہے......قرأت سورت فاتحہ

دماغ یہاں چکر کھا گیا......کہ ''فاتحہ'' اللہ کو تو اتنی پسند ہے...... خدا جانے

"ملاں" کو پسند کیوں نہیں ہے؟

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

ذہن میں سوال آتا ہے کہ اے اللہ تو نے ہر نماز کی ہر رکعت میں فاتحہ ہی کو لازمی کیوں قرار دے دیا...... جبکہ

قُلْ ھُوَ اللّٰہُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰہُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُوْلَدْ ۝ وَلَمْ یَکُنْ لَّہٗ کُفُوًا اَحَدٌ ۝

یہ تیری توحید کا اعلان ہے...... یہ تیری توحید کا پیغام ہے...... یہ تیری بزرگی کا اعلان ہے...... یہ تیری بے مثلیت اور تیری برگزیدگی کا اعلان ہے اور اس سورہ کا نام ہے "سورۃ الاخلاص" دیکھئے اخلاص کی ضرورت کل بھی تھی...... اخلاص کی ضرورت آج بھی ہے...... اے اللہ

سورۃ الاخلاص میں ...... تیرے یکتا ہونے کا ذکر ہے
سورۃ الاخلاص میں ...... تیرے اعلیٰ ہونے کا ذکر ہے
سورۃ الاخلاص میں ...... تیرے بزرگ ہونے کا ذکر ہے
سورۃ الاخلاص میں ...... تیرے بے مثل ہونے کا ذکر ہے
سورۃ الاخلاص میں ...... تیرے پاک ہونے کا ذکر ہے
سورۃ الاخلاص میں ...... تیری وحدانیت کا ذکر ہے
سورۃ الاخلاص میں ...... تیری حمدیت کا ذکر ہے
سورۃ الاخلاص میں ...... تیری احدیت کا ذکر ہے
سورۃ الاخلاص میں ...... تیری ربوبیت کا ذکر ہے
سورۃ الاخلاص میں ...... تیری الوہیت کا ذکر ہے

تو اس سورۂ اخلاص کو ہر نماز کی ہر رکعت میں لازم قرار کیوں نہیں دیا؟ یعنی ہر رکعت میں فاتحہ شریف ضروری لیکن سورت اخلاص شریف ہر رکعت میں پڑھنا ضروری نہیں...... آخر ایسا کیوں؟

تو...... اللہ عالم الغیب ہے

جو گزر گیا...... وہ بھی جانتا ہے
جو گزرنے والا ہے...... وہ بھی جانتا ہے
جو گزر رہا ہے...... وہ بھی جانتا ہے
جو گزرے گا...... وہ بھی جانتا ہے

تو اللہ عالم الغیب ہے...... وہ جانتا ہے کہ میرے بندوں میں سے کچھ بندے ایسے ہیں...... کہ:

جن کا کوئی چلا جائے تو ''فاتحہ''
''قل شریف'' ہوں تو ''فاتحہ''
''دسواں'' ہو تو ''فاتحہ''
''چالیسواں'' ہو تو ''فاتحہ
محفل ذکر ہو تو ''فاتحہ''
محرم شریف ہو تو ''فاتحہ''
رجب شریف ہو تو ''فاتحہ''

یعنی...... اللہ کو معلوم ہے کہ میرے بندوں میں سے کچھ بندے ایسے ہیں...... جو ''فاتحہ'' کے قائل ہیں...... ''فاتحہ'' کی طرف دل سے مائل ہیں...... اللہ کی بارگاہ میں سراپا ''سائل'' ہیں...... اور قائل

بھی ایسے ہیں ...... کہ:

پاکستان میں رہیں تو ...... فاتحہ
لبنان میں رہیں تو ...... فاتحہ
ایران میں رہیں تو ...... فاتحہ
یونان میں رہیں تو ...... فاتحہ
انگلستان میں رہیں تو ...... فاتحہ
افغانستان میں رہیں تو ...... فاتحہ

اتنے قائل ہیں ...... اتنے مائل ہیں ...... کچھ لوگ فاتحہ شریف کی طرف اور یہ میرے رب کے علم میں ہے ...... اس لئے کہ وہ عالم الغیب ہے ...... اور وہ رب یہ بھی جانتا ہے ...... کہ دوسری طرف بھی میرے بندوں میں سے کچھ بندے ایسے ہیں کہ وہ اگر فاتحہ کا نام سن لیں ...... تو چہرے کا جغرافیہ بدل جاتا ہے ...... اور وہ آگے سے کہیں گے کہ ...... فاتحہ شریف کیوں پڑھ رہے ہو؟ اس لئے کہ یہ نبی ﷺ کے زمانے میں نہیں تھا۔

تو یہاں پر میں ایک ''صوفیانہ'' نکتہ آپ کے گوش گزار کرنا چاہتا ہوں ...... کہ

اگر کوئی کہے کہ فاتحہ شریف کیوں پڑھتے ہو؟ یہ تو نبی ﷺ کے زمانے میں نہیں تھا ...... تو اس سے پوچھو ...... کہ

تم سب سے پہلے یہ بتاؤ کہ یہ زمانہ کس نبی کا ہے؟

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ صلی اللہ علیہ وسلم

بتاؤ......

کیا یہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا زمانہ ہے؟
کیا یہ حضرت موسیٰ علیہ السلام کا زمانہ ہے
کیا یہ حضرت خلیل اللہ علیہ السلام کا زمانہ ہے

تو پھر فوراً آگے سے کہیں کہ نہیں ان سب کے زمانے تو گزر گئے...... اب میرے آقا صلی اللہ علیہ وسلم آخری نبی بن کر تشریف لا چکے ہیں تو اب آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد کوئی نبی آنے والا نہیں ہے

ارے جب کوئی نبی دوسرا آنے والا نہیں ہے...... تو پھر مان جاؤ...... کہ یہ زمانہ میں حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا ہے

تو پھر......

یہ اعتراض کدھر گیا...... کہ ...... "میلاد" نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے زمانے میں نہیں تھا؟
یہ اعتراض کدھر گیا...... کہ ...... "ختم" نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے زمانے میں نہیں تھا؟

خیر......

اگر آج...... میلاد شریف...... ہو رہا ہے ...... تو نبی کے زمانے میں ہو رہا ہے
اگر آج...... درود شریف...... ہو رہا ہے ...... تو نبی کے زمانے میں ہو رہا ہے
اگر آج...... نعت شریف...... ہو رہی ہے ...... تو نبی کے زمانے میں ہو رہی ہے
اگر آج...... فاتحہ شریف...... ہو رہی ہے ...... تو نبی کے زمانے میں ہو رہی ہے

تو اللہ عالم الغیب ہے...... وہ جانتا ہے کہ میرے بندوں میں سے کچھ بندے فاتحہ کا انکار کر دیں گے...... تو اس قادر مطلق نے چاہا...... کہ اے بندوں تم...... اپنے مکان میں فاتحہ نہیں پڑھتے ...... تو نہ پڑھو

تم...... اپنی دکان میں فاتحہ نہیں پڑھتے ......تو نہ پڑھو
تم...... اپنی بزم میں فاتحہ نہیں پڑھتے ......تو نہ پڑھو
تم...... اپنی مجلس میں فاتحہ نہیں پڑھتے ......تو نہ پڑھو
تم...... اپنی جماعت میں فاتحہ نہیں پڑھتے ......تو نہ پڑھو
تم...... اپنے گروپ میں فاتحہ نہیں پڑھتے ......تو نہ پڑھو
تم...... اپنی محافل میں فاتحہ نہیں پڑھتے ......تو نہ پڑھو
تم...... اپنے جلسے میں فاتحہ نہیں پڑھتے ......تو نہ پڑھو

تو ایسے میں...... میں قادر مطلق تمہیں تمہارے گھر سے اٹھاؤں گا اور اپنے گھر میں لاؤں گا......اور

فجر میں ''چار'' مرتبہ فاتحہ پڑھاؤں گا
ظہر میں ''بارہ'' مرتبہ فاتحہ پڑھاؤں گا
عصر میں ''چار'' مرتبہ فاتحہ پڑھاؤں گا
مغرب میں ''سات'' مرتبہ فاتحہ پڑھاؤں گا
عشاء میں ''سترہ'' مرتبہ فاتحہ پڑھاؤں گا

ارے اپنے گھر میں نہ سہی...... میرے گھر میں تو فاتحہ پڑھنی ہی پڑے گی؟

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## فاتحہ پڑھنے میں فرق:

تو اب جو فاتحہ سے ایک مرتبہ انکار کر رہا تھا...... اسے ہم نے پانچ وقت مسجد میں حالت نماز میں دیکھا...... کہ وہ باہر ایک مرتبہ نہیں پڑھتا تھا...... مسجد میں آکر ۳۸ مرتبہ فاتحہ شریف پڑھ رہا ہے

تو ثابت ہوا کہ فاتحہ ہم بھی پڑھتے ہیں...... اور فاتحہ اعتراض کرنے والے بھی پڑھتے ہیں۔

فاتحہ...... فجر میں وہ بھی پڑھتے ہیں ...... ہم بھی پڑھتے ہیں
فاتحہ...... ظہر میں وہ بھی پڑھتے ہیں ...... ہم بھی پڑھتے ہیں
فاتحہ...... عصر میں وہ بھی پڑھتے ہیں ...... ہم بھی پڑھتے ہیں
فاتحہ...... مغرب میں وہ بھی پڑھتے ہیں ...... ہم بھی پڑھتے ہیں
فاتحہ...... عشاء میں وہ بھی پڑھتے ہیں ...... ہم بھی پڑھتے ہیں
فاتحہ...... جمعتہ المبارک میں وہ بھی پڑھتے ہیں ...... ہم بھی پڑھتے ہیں

یہ بات تو آپ کو معلوم ہوگی...... کہ جب دو گروپ ایک کام کریں...... تو اختلاف ختم ہو جاتا ہے...... اعتراض ختم ہو جاتا ہے...... انکار ختم ہو جاتا ہے...... یعنی

جو چیز مشترکہ ہو اس پر مباحثہ نہیں ہوتا
جو چیز یکساں ہو اس پر مناظرہ نہیں ہوتا

مثلاً...... تم نے کہا اسلام ہمارا دین ہے...... میں نے کہا ہاں ہمارا دین ہے...... تو اب اس کے بعد ''دین'' پر بحث نہیں ہوگی...... دین پر اختلاف نہیں ہوگا...... اس لئے کہ دونوں میں ایک ہی چیز کو تسلیم کرنا مشترکہ ہے...... اور دوسری طرف اگر تم کہو کہ دن ہے اور میں کہوں...... کہ نہیں رات ہے...... تو پھر اس پر بحث ہوگی...... پھر اس پر اختلاف ہوگا...... تو پھر اس پر مناظرہ ہوگا

لیکن اگر کسی نے کہا کہ یہ دن ہے اور میں بھی کہوں کہ ہاں دن ہے تو پھر اس

پر بحث نہیں ہوگی...... پھر اس پر مناظرہ نہیں ہوگا...... اس لئے کہ دونوں نے ایک چیز کو مشترکہ مان لیا ہے۔

یعنی جب ایک چیز دونوں میں پائی جائے تو اس پر اختلاف نہیں ہوگا تو......:

فاتحہ ہم بھی پڑھتے ہیں......اور فاتحہ وہ بھی پڑھتے ہیں
فاتحہ وہ بھی مانتے ہیں......اور فاتحہ ہم بھی مانتے ہیں

تو جو چیز مشترکہ ہے اس پر اختلاف نہیں ہے...... جو چیز یکساں ہے اس پر بحث نہیں ہے

لیکن یاد رکھو......کہ

فاتحہ تو ہم بھی پڑھتے ہیں......اور فاتحہ وہ بھی پڑھتے ہیں
لیکن دونوں کے فاتحہ پڑھنے میں فرق ہے......اور وہ فرق یہ ہے......کہ:
ہم...... فاتحہ شریف مسرور ہو کر پڑھتے ہیں
وہ...... فاتحہ مجبور ہو کر پڑھتے ہیں

## 2- نکتہ!

اب یہ بتائیں کہ قرآن کی ایک سورہ مبارکہ یعنی فاتحہ شریف پر ہم بات کر رہے ہیں اور یہ قرآن پاک کا حصہ ہے...... قرآن کی سورت ہے...... یہ ہمارا ایمان ہے...... لیکن قرآن سب سے پہلے کس کے پاس آیا؟

تو جواب یہ ہوگا کہ قرآن جبریل علیہ السلام اللہ کے حکم سے لیکر نبی ﷺ کے پاس آئے......یعنی قرآن پھر نازل ہوا

تو اب یہ بتایئے کہ جب قرآن رسول ﷺ کو ملا تو اس وقت کہاں سے شروع ہوا؟ تو جواب ہوگا...... کہ

اِقْرَأْ...... سے ابتدا ہوئی

یعنی جب قرآن رسول ﷺ کو ملا تو تب ابتدا کہاں سے ہو رہی ہے...... آپ سب کہیں گے...... کہ:

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ...... سے قرآن کی ابتدا ہوئی قرآن کا نزول ہوا..... قرآن آنا شروع ہوا

تو پھر اس بات کے کلیئر ہو جانے کے بعد...... اب ایک بات میں تم سے پوچھتا ہوں کہ تم بتاؤ کہ قرآن جب تمہیں ملا تو ابتدا کہاں سے ہوئی ...... سورۃ فاتحہ سے ...... یعنی ''اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ'' سے ابتدا ہوئی

تو اب سوچتے بھی جاؤ...... اور بولتے بھی جاؤ!

کہ...... رسول ﷺ کو قرآن ملا...... اِقْرَأْ سے

اور تم سب کو قرآن ملا...... ''فاتحہ'' سے

آخر یہ فرق کیوں ہوا؟ یہ ترتیب بدل لی ہی کیوں؟ یہ تقسیم ہوئی ہی کیوں؟

یا اللہ تو...... تو عالم الغیب ہے ...... تو جانتا تھا کہ میں نے قرآن بندوں کو کس طرح سے دینا ہے ...... یعنی ابتدا ''فاتحہ'' سے کروانی ہے

تو اسی ترتیب سے رسول ﷺ کو قرآن کیوں نہیں دے دیا؟

اللہ تعالیٰ نے قرآن......:

نبی ﷺ کو دیا......تو ”ترتیب“ اور ہے
بندوں کو جب دیا......تو ”ترتیب“ اور ہے
نبی ﷺ کو جب دیا......تو ”ابتدا“ اور ہے
بندوں کو جب دیا......تو ”ابتدا“ اور ہے
نبی ﷺ کو جب دیا......تو ”تقسیم“ اور ہے
بندوں کو جب دیا......تو ”تقسیم“ اور ہے
نبی ﷺ کو جب دیا......تو ”ابتدا“ ”اقرا“ ہے
بندوں کو جب دیا......تو ”ابتداء“ فاتحہ ہے

ارے غور تو کرو...... یہ طریقہ بدلا کیوں گیا؟ یہ تقسیم بدلی کیوں جا رہی ہے؟

یہ ترتیب میں فرق کیوں آیا ہے؟

پورا قرآن رسول ﷺ کو ملا ......اور پورا قرآن بندوں کو ملا
مکمل قرآن رسول ﷺ کو ملا ......اور مکمل قرآن بندوں کو ملا

لیکن فرق یہ ہوا...... کہ رسول ﷺ کو جب قرآن ملا تو اِقْـــرَأْ سے......اور

بندوں کو جب قرآن ملا......تو ”فاتحہ“ سے...... یہ فرق کیوں آیا؟

تو عشق نے جواب دیا اے ہاشمی تم سمجھے نہیں ہو...... یہ تبدیلی اس لئے ہوئی

......یہ فرق اس لئے رکھا گیا...... کہ:

کوئی مولوی یہ نہ کہے...... کہ:

میں قرآن پانے میں رسول کی طرح ہوں
میں قرآن لینے میں رسول کی طرح ہوں

میں قرآن حاصل کرنے میں رسول کی طرح ہوں

تو اب ان تمام مولویوں سے پوچھو...... کہ جب تم قرآن پانے میں رسول ﷺ کی مثل نہیں ہو...... قرآن پانے میں رسول ﷺ کی طرح نہیں ہو...... تو پھر قرآن سمجھانے میں نبی ﷺ کی مثل کیسے ہو سکتے ہو؟

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ میں حکمتیں:

عزیزان گرامی

آیئے بات کرتے ہیں سورۃ فاتحہ کی پہلی آیت مبارکہ کے حوالے سے آیت مبارکہ شروع ہو رہی ہے...... اَلْحَمْدُ...... یہاں پر اَلْحَمْدُ اور حمد میں کیا فرق یہاں اور جہاں جو اَلْحَمْدُ آیا ہے...... اس کے متعلق گرائمر کیا کہتی ہے...... میں ابھی اس وضاحت کی طرف نہیں جاؤں گا...... اس لئے کہ یہ گرائمر کا معاملہ ہے اور گرائمر ہر کسی کی سمجھ میں آنے والی چیز نہیں...... لیکن میری کوشش ہے کہ میں بات انتہائی آسان انداز میں کر جاؤں تا کہ سب کا تعلق سماعت بھی بحال رہے...... اور سماعت کی یکسوئی میں بھی خلل نہ آنے پائے۔

تو بات وہی جو آسان ہو جائے...... اور کچھ حاصل ہونے کا سامان بھی ہو جائے تو آیئے میں ایک حکمت بیان کر دیتا ہوں

### 3- نکتہ:

کہ...... اللہ تعالیٰ نے ارشاد فرمایا

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ

اب یہاں پر لفظ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اور ''حمد للہ'' میں کیا فرق ہے؟

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اور ''حمد اللہ'' میں فرق یہ ہے...... کہ

اگر صرف آیت مبارکہ ان الفاظ سے شروع ہوئی...... کہ حمد للہ تو اس پر مطلق ہی معنیٰ مراد ہوتا...... یعنی ہر تعریف صرف اللہ کیلئے ہے...... یعنی معنیٰ یہ خبر دیتا ہے کہ...... تعریف مطلق اللہ تعالیٰ ہی کیلئے ہے...... تو بے شک تعریفیں اللہ ہی کیلئے ہیں...... لیکن یہاں پر آیت کو حمد للہ سے شروع نہیں فرمایا...... بلکہ فرمایا اَلْحَمْدُ لِلّٰہ...... سب تعریفیں اللہ کیلئے ہیں...... تو اب جب یہ معنیٰ کیا...... کہ سب تعریفیں اللہ کیلئے ہیں

## ہر کوئی کسی کی تعریف کر رہا ہے؟

تو...... اعتراض کرنے والے نے اعتراض کر دیا...... کہ

اے ہاشمی میاں جب سب تعریفیں اللہ کیلئے ہیں تو پھر دوسروں کی تعریفیں بند کرو

اگر تعریفیں صرف اللہ ہی کیلئے ہوئیں تو پھر دوسرے لوگوں کی تعریف کا چانس تو ختم ہو گیا؟

## دن رات لوگوں کی تعریف کی جاتی ہے:

تو کوئی کہہ سکتا تھا...... کہ ہاشمی میاں!

نبیین ...... کی تعریف بند کرو
صدیقین ...... کی تعریف بند کرو
شہداء ...... کی تعریف بند کرو
صالحین ...... کی تعریف بند کرو

ذرا اور آگے...... چلے جاؤ!

غوث اعظم رحمۃ اللہ علیہ کی تعریف بند کرو
امام اعظم رحمۃ اللہ علیہ کی تعریف بند کرو
داتا علی ہجویری رحمۃ اللہ علیہ کی تعریف بند کرو
خواجہ اجمیری رحمۃ اللہ علیہ کی تعریف بند کرو
مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ کی تعریف بند کرو
شیخ سمنانی رحمۃ اللہ علیہ کی تعریف بند کرو
بہاؤالدین ذکریا رحمۃ اللہ علیہ کی تعریف بند کرو
امام احمد رضا رحمۃ اللہ علیہ کی تعریف بند کرو

پوچھا کیوں...... بھئی آپ کو کیا اعتراض ہے؟
تو وہ آگے سے بولا...... کہ قرآن نہیں پڑھا...... کہ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
سب تعریفیں اللہ کیلئے ہیں

## تعریف کرنے کے انداز:

تو جب سب کی سب تعریفیں اللہ کیلئے ہیں...... تو پھر کسی اور کی تعریف کا موقعہ کہاں رہا ہے؟...... تو کسی اعتراض کرنے والے نے یہ اعتراض کر دیا...... آیئے اور آسان طریقے سے بات آپ کی طرف منتقل کرتا ہوں...... کہ جب میں کہہ دوں کہ دنیا کا سب روپیہ فلاں شخص کیلئے ہے تو باقی رہا ہی کہاں کہ جس کو دوسروں کیلئے مانو گے؟

تو جب کہہ دیا کہ...... اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

سب کی...... سب تعریفیں اللہ کیلئے ہیں

سب کی...... سب خوبیاں اللہ کیلئے ہیں

تو اب باقی تعریفیں رہی کہاں کہ جن کو دوسروں کیلئے مانو گے...... باقی خوبیاں رہی کہاں کہ جن کو دوسروں کیلئے مانو گے؟

دیکھو...... بھائی جب سب تعریفیں اللہ کیلئے ہیں تو پھر اللہ ہی کیلئے تعریف رہنے دو پھر کسی دوسرے کی کرتے ہی کیوں ہو؟

یعنی...... غیر اللہ کیلئے کوئی چانس نہیں...... پھر غیر اللہ کی تعریف بند کرو

اللہ کے ماسوا تمام غیر اللہ ہیں...... جو اللہ نہیں وہ "غیر اللہ"...... مخلوق ساری کی ساری "غیر اللہ"...... تو جب اللہ ہی کیلئے تعریف ہے تو پھر "غیر اللہ" کیلئے تعریف بند کرو؟

دیکھئے......!

یہ جو ہماری زبان اردو ہے ...... اس میں "غیر اللہ" کی تعریف ہے...... یا نہیں ہے؟

یہ جو ہندی زبان والے ہیں ...... اس میں "غیر اللہ" کی تعریف ہے...... یا نہیں ہے؟

یہ جو انگلش زبان والے ہیں ...... اس میں "غیر اللہ" کی تعریف ہے...... یا نہیں ہے؟

یہ جو بنگالی زبان والے ہیں ...... اس میں "غیر اللہ" کی تعریف ہے...... یا نہیں ہے؟

یہ جو پشتو زبان والے ہیں ...... اس میں "غیر اللہ" کی تعریف ہے...... یا نہیں ہے؟

یہ جو افریقی زبان والے ہیں ...... اس میں "غیر اللہ" کی تعریف ہے...... یا نہیں ہے؟

یہ جو عربی زبان والے ہیں ...... اس میں "غیر اللہ" کی تعریف ہے...... یا نہیں ہے؟

تو کیا خیال ہے...... کہ ان تمام زبانوں میں غیر اللہ کی تعریف کی جاتی ہے...... کہ نہیں؟ تو میرے خیال میں آپ کو کوئی ایسی زبان نہ ملے گی...... کہ جس

میں غیر اللہ کی تعریف کا کوئی پہلو نہ ہو!

کوئی ......”شہداء“ کی تعریف کر رہا ہے
کوئی ......”اولیاء“ کی تعریف کر رہا ہے
کوئی ...... کسی کے ”کمال“ کی تعریف کر رہا ہے
کوئی ...... کسی کے ”حسن وجمال“ کی تعریف کر رہا ہے
کوئی ...... کسی کی ”تحریر“ کی تعریف کر رہا ہے
کوئی ...... کسی کی ”تقریر“ کی تعریف کر رہا ہے
کوئی ...... کسی کی ”آواز“ کی تعریف کر رہا ہے
کوئی ...... کسی کے ”انداز“ کی تعریف کر رہا ہے
کوئی ...... کسی کی ”سیرت“ کی تعریف کر رہا ہے
کوئی ...... کسی کی ”صورت“ کی تعریف کر رہا ہے

تو پھر ان کو بتاؤ...... کہ سب خاموش ہو جاؤ...... کہ تم نے قرآن نہیں پڑھا...... کہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ
تمام تعریفیں اللہ کیلئے ہیں جو عالمین کا رب ہے

## قرآن میں نبی کی تعریف:

تو کیا خیال ہے...... کہ قرآن نے جب کہہ دیا کہ الحمد للہ تمام تعریفیں اللہ کے لئے ہیں...... تو پھر کسی کی تعریف کرنے کا موقعہ تو ختم ہو گیا...... تو پھر اس مسئلے کو بھی تو حل کرنا ہے...... کہ یا اللہ! تو نے فرمایا:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ! سب تعریفیں اللہ کیلئے ہیں

تو کیا یہ فرما کر تو نے ہماری زبانوں کو بند کر دیا ہے؟ کیا اب ہم اپنے آقا ﷺ کی تعریف نہ کریں؟ کیا ہم تابعین تبع تابعین کی تعریف نہ کریں...... کیا ہم داتا وخواجہ کی تعریف نہ کریں...... کیا ہم قرآن وصاحب قرآن کی تعریف نہ کریں؟ اس لئے...... کہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ
سب تعریف تو اللہ کے لئے ہے

یعنی...... سوال یہاں اپنے رب سے کرو...... کہ یا اللہ جب سب تعریفیں تیرے ہی لئے ہیں...... تو پھر تو نے قرآن میں میرے نبی ﷺ کو کیوں کہا؟...... کہ

یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِیْرًا

میرے نبی ﷺ کی تعریف کرتے ہوئے...... تو نے یہ کیوں کہا...... کہ:

وَّ دَاعِیًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَ سِرَاجًا مُّنِیْرًا

میرے نبی ﷺ کی تعریف کرتے ہوئے...... تو نے یہ کیوں کہا...... کہ:

وَالضُّحٰى ۝ وَالَّیْلِ اِذَا سَجٰى مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَ مَا قَلٰى

میرے نبی ﷺ کی تعریف کرتے ہوئے...... تو نے یہ کیوں کہا...... کہ:

وَلَسَوْفَ یُعْطِیْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى

میرے نبی ﷺ کی تعریف کرتے ہوئے...... تو نے یہ کیوں کہا...... کہ:

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ

میرے نبی ﷺ کی تعریف کرتے ہوئے...... تو نے یہ کیوں کہا...... کہ:

قَدْ جَآءَکُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّکُمْ

میرے نبی ﷺ کی تعریف کرتے ہوئے...... تو نے یہ کیوں کہا...... کہ:

قَدْ جَآءَکُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ کِتَابٌ مُّبِيْنٌ

میرے نبی ﷺ کی تعریف کرتے ہوئے...... تو نے یہ کیوں کہا...... کہ:

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا

میرے نبی ﷺ کی تعریف کرتے ہوئے...... تو نے یہ کیوں کہا...... کہ:

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ

میرے نبی ﷺ کی تعریف کرتے ہوئے...... تو نے یہ کیوں کہا...... کہ:

اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ

میرے نبی ﷺ کی تعریف کرتے ہوئے...... تو نے یہ کیوں کہا...... کہ

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ

میرے نبی ﷺ کی تعریف کرتے ہوئے...... تو نے یہ کیوں کہا...... کہ

وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى

میرے نبی ﷺ کی تعریف کرتے ہوئے تو نے یہ کیوں کہا...... کہ

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَ خَاتَمَ النَّبِيّٖنَ

یا اللہ...... تو نے جب بھی پکارا تو...... کتنے پیار سے پکارا

کتنی محبت سے پکارا

کبھی...... يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ ...... کہہ کر پکارا
کبھی...... يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ ...... کہہ کر پکارا
کبھی...... يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ...... کہہ کر پکارا

کبھی ...... یٰٓاَیُّھَا الْمُدَّثِّرُ ...... کہہ کر پکارا

یا اللہ ...... ایک طرف تو فرما رہا ہے ...... کہ:

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ

تمام تعریفیں اللہ کیلئے ہیں جو عالمین کا رب ہے

تو دوسری طرف ...... نبی ﷺ کو!

وَمَآ اَرْسَلْنٰکَ اِلَّا رَحْمَۃً لِّلْعٰلَمِیْنَ ...... کس نے کہا ہے؟
قَدْ جَآءَکُمْ مِّنَ اللّٰہِ نُوْرٌ ...... کس نے کہا ہے؟
اِنَّ اللّٰہَ وَمَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوْنَ عَلَی النَّبِیِّ ...... کس نے کہا ہے؟
وَرَفَعْنَا لَکَ ذِکْرَکَ ...... کس نے کہا ہے؟
وَالنَّجْمِ اِذَا ھَوٰی ...... کس نے کہا ہے؟

جبکہ ہم قرآن پڑھ چکے ہیں ...... کہ

تمام تعریفیں اللہ کیلئے ہیں

تو پھر ......

میرے نبی ﷺ کو ...... یٰٓاَیُّھَا الرَّسُوْلُ کیوں کہا جا رہا ہے؟
میرے نبی ﷺ کو ...... یٰٓاَیُّھَا النَّبِیُّ کیوں کہا جا رہا ہے؟
میرے نبی ﷺ کو ...... یٰٓاَیُّھَا الْمُزَّمِّلُ کیوں کہا جا رہا ہے؟
میرے نبی ﷺ کو ...... یٰٓاَیُّھَا الْمُدَّثِّرُ کیوں کہا جا رہا ہے؟

تو ...... ایسے میں میرے منہ پر کسی نے ہاتھ رکھ دیا ...... کہ گستاخی بند کرو

تمہیں کس نے کہا ...... کہ:

نبی ﷺ کی تعریف اللہ کی تعریف سے جدا ہے

ارے...... نبی ﷺ کی تعریف اللہ کی تعریف ہے...... اور اللہ کی تعریف رسول اللہ کی تعریف ہے

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

## نبی ﷺ کی تعریف اللہ کی تعریف ہے:

تو اب بات ہم اللہ کی مدد سے یہاں تک لے آئے...... کہ نبی ﷺ کی تعریف بھی اللہ ہی کی تعریف ہے!

ارے دیکھو...... کہ

مَنْ یُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰہ

رسول کی اطاعت ہی اللہ کی اطاعت ہے

اور پھر دوسری طرف حدیث یاد کرو!

اِذَا ذُکِرْتُ ذُکِرْتَ مَعِیَ

(اے محبوب ﷺ) جب میرا ذکر ہو تو ساتھ تیرا ذکر ہو

ارے یہی بات تو اس وقت کی ہم کر رہے ہیں...... کہ:

رسول ﷺ کی اطاعت...... اللہ کی اطاعت ہے
رسول ﷺ کی تعریف...... اللہ کی تعریف ہے
رسول ﷺ کی عطا...... اللہ کی عطا ہے
رسول ﷺ کی ثنا...... اللہ کی ثنا ہے
رسول ﷺ کا ذکر...... اللہ کا ذکر ہے

آیئے اسی مسئلے کو آسان مثال سے سمجھتے ہیں:

کبھی ...... یٰۤاَیُّهَا الْمُدَّثِّرُ ...... کہہ کر پکارا

یا اللہ ...... ایک طرف تو فرما رہا ہے ...... کہ:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ

تمام تعریفیں اللہ کیلئے ہیں جو عالمین کا رب ہے

تو دوسری طرف ...... نبی ﷺ کو!

وَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ ...... کس نے کہا ہے؟

قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ ...... کس نے کہا ہے؟

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ یُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِیِّ ...... کس نے کہا ہے؟

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ...... کس نے کہا ہے؟

وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ...... کس نے کہا ہے؟

جبکہ ہم قرآن پڑھ چکے ہیں ...... کہ

تمام تعریفیں اللہ کیلئے ہیں

تو پھر ......

میرے نبی ﷺ کو ...... یٰۤاَیُّهَا الرَّسُوْلُ کیوں کہا جا رہا ہے؟
میرے نبی ﷺ کو ...... یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ کیوں کہا جا رہا ہے؟
میرے نبی ﷺ کو ...... یٰۤاَیُّهَا الْمُزَّمِّلُ کیوں کہا جا رہا ہے؟
میرے نبی ﷺ کو ...... یٰۤاَیُّهَا الْمُدَّثِّرُ کیوں کہا جا رہا ہے؟

تو ...... ایسے میں میرے منہ پر کسی نے ہاتھ رکھ دیا ...... کہ گستاخی بند کرو تمہیں کس نے کہا ...... کہ:

نبی ﷺ کی تعریف اللہ کی تعریف سے جدا ہے

## 4- نکتہ!

ابھی یہاں پر قاسم بھائی اشعار پڑھ رہے تھے...... تو وہ کلام تھا مولانا نوری صاحب کا...... تو مولانا نوری بھی یہاں اسٹیج پر موجود ہیں تو جب قاسم بھائی نے اپنی خوش الحانی...... خوش آوازی کیساتھ اشعار پڑھے تو...... آپ سب نے داد دی...... آپ کو کیا اچھا لگا وہ اشعار اچھے لگے ہیں نہ؟

لیکن جب آپ نے تعریف کی...... تو شعر کو کچھ ہوا؟...... شعر خوش ہوا؟ نہیں بھائی...... کلام بنایا تھا مولانا نوری نے تو وہ خوش ہو رہے تھے...... اس لئے کہ وہ اس کے بنانے والے تھے

تو تعریف شعر کی ہوئی ہے...... لیکن خوش نوری صاحب ہو رہے ہیں...... وہ اس لئے کہ شعر کی تعریف اصل میں شعر بنانے والے کی تعریف ہے...... دیکھیے ادھر ہمارے ہاتھ میں ایک بہترین کتاب ہے...... تحقیقی کتاب ہے...... مستند کتاب ہے...... جامع کتاب ہے...... اور ہم نے اس کی تعریف شروع کر دی ہے اس کی خوبیاں بیان کرنا شروع کر دیں...... لیکن وہ کتاب جس کی ہم اتنی تعریفیں کر رہے ہیں...... تو وہ کتاب تو خوش نہیں ہے...... لیکن اس کتاب کے رائٹر یہاں موجود ہیں...... وہ خوش ہو رہے ہیں

تو ایسا آخر کیوں ہوا؟ کہ ہم نے تعریف تو کتاب کی کی ہے لیکن خوش رائٹر ہو رہا ہے؟...... وہ اس لئے کہ وہ رائٹر ہی اس کتاب کو لکھنے والا ہے...... بنانے والا ہے...... نکھارنے والا ہے...... سجانے والا ہے...... تو کتاب کی تعریف...... اصل میں کتاب بنانے والے کی تعریف ہوئی...... اور کتاب

ارے...... نبی ﷺ کی تعریف اللہ کی تعریف ہے...... اور اللہ کی تعریف رسول اللہ کی تعریف ہے

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

## نبی ﷺ کی تعریف اللہ کی تعریف ہے:

تو اب بات ہم اللہ کی مدد سے یہاں تک لے آئے...... کہ نبی ﷺ کی تعریف بھی اللہ ہی کی تعریف ہے!

ارے دیکھو...... کہ

مَنْ یُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰہ

رسول کی اطاعت ہی اللہ کی اطاعت ہے

اور پھر دوسری طرف حدیث یاد کرو!

اِذَا ذُکِرْتُ ذُکِرْتَ مَعِیَ

(اے محبوب ﷺ) جب میرا ذکر ہو تو ساتھ تیرا ذکر ہو

ارے یہی بات تو اس وقت کی ہم کر رہے ہیں...... کہ:

رسول ﷺ کی اطاعت ...... اللہ کی اطاعت ہے
رسول ﷺ کی تعریف ...... اللہ کی تعریف ہے
رسول ﷺ کی عطا ...... اللہ کی عطا ہے
رسول ﷺ کی ثنا ...... اللہ کی ثنا ہے
رسول ﷺ کا ذکر ...... اللہ کا ذکر ہے

آیئے اسی مسئلے کو آسان مثال سے سمجھتے ہیں:

بنانے والا اس لئے خوش ہو رہا ہے کہ وہ اس کتاب کو تحریر کرنے والا...... اس کو بنانے والا ہے؟

## اللہ نے ہی اپنے نبی کو بنایا ہے:

تو بات پھر وہیں پر آ گئی...... کہ اچھی چیز کی تعریف اصل میں اس کے بنانے والے کی تعریف ہوتی ہے۔

تو پھر میں منبر پر بیٹھا ہوں...... میں نے اس کی تعریف کر دی کہ ماشاء اللہ منبر تو بہت خوبصورت ہے...... بہت اعلیٰ ہے، بہت اچھا ہے...... تو اب جب میں نے اس منبر کی تعریف کی تو ''منبر'' تو خاموش ہے...... لیکن وہ مستری خوش ہو رہا ہے کہ جس نے اس کو بنایا ہے

ارے ہم تو تعریف منبر کی کر رہے ہیں...... اس میں یہ مستری خوش کیوں ہو رہا ہے؟ ...... ارے بھائی وہ منبر کی تعریف اصل میں ''منبر'' بنانے والے کی تعریف ہے...... کہ:

اس نے منبر خوبصورت بنایا ہے
اس نے منبر بہترین بنایا ہے
اس نے منبر مضبوط بنایا ہے
اس نے منبر منفرد بنایا ہے

تو اس منبر کی تعریف...... اصل میں منبر بنانے والے کی تعریف ہے

تو پھر ایک مثال اور لیجئے...... کہ یہ مسجد بڑی خوبصورت ہے...... اس کو بہت اچھے طریقے سے بنایا گیا ہے...... اس کو بڑی محنت سے سجایا گیا ہے اور اس مسجد کی ہر چیز سنوری سنوری ہے...... نکھری نکھری ہے...... ستھری ستھری ہے...... تو

جب ہم نے اس مسجد کی تعریف کرنا شروع کی تو مسجد خاموش ہے...... لیکن ایک طرف بیٹھے ہوئے مسجد کی انتظامیہ کمیٹی کے ارکان خوش ہو رہے ہیں...... وہ خوش کیوں ہو رہے ہیں؟ ارے...... وہ خوش اس لئے ہو رہے ہیں کہ انہوں نے یہ خوبصورت مسجد بنائی ہے...... اور مسجد کی خوبصورتی کی تعریف...... اصل میں مسجد بنانے والوں کی تعریف ہے...... اس لئے وہ خوش ہو رہے ہیں...... کہ ان کی بنائی ہوئی چیز کی تعریف ہو رہی ہے

تو بات پھر وہی ہوئی...... کہ کسی چیز کی تعریف اصل میں وہ چیز بنانے والے کی تعریف ہے

تو پھر ان سب مثالوں سے کیا حقیقت ثابت ہوئی...... کہ:

شعر کی تعریف ...... شعر بنانے والے کی تعریف ہے
کتاب کی تعریف ...... کتاب بنانے والے کی تعریف ہے
مائیک کی تعریف ...... مائیک بنانے والے کی تعریف ہے
منبر کی تعریف ...... منبر بنانے والے کی تعریف ہے
بلب کی تعریف ...... بلب بنانے والے کی تعریف ہے
پنکھے کی تعریف ...... پنکھے بنانے والے کی تعریف ہے
مسجد کی تعریف ...... مسجد بنانے والے کی تعریف ہے
قالین کی تعریف ...... قالین بنانے والے کی تعریف ہے
گھر کی تعریف ...... گھر بنانے والے کی تعریف ہے

تو......!

چلنے کی تعریف ...... چلانے والے کی تعریف

سنورنے کی تعریف ......سنوارنے والے کی تعریف
بننے کی تعریف ......بنانے والے کی تعریف

ارے...... جب یہ دنیا اس بات کو مانتی ہے...... کہ کسی چیز کی تعریف اس کے بنانے والے کی تعریف ہے...... تو پھر یہ حقیقت ہے...... کہ

رسول ﷺ کی تعریف ......رسول ﷺ کو بنانے والے کی تعریف ہے
نبی ﷺ کی تعریف ......نبی ﷺ کو بنانے والے کی تعریف ہے

تو......غوث اعظم رحمۃ اللہ علیہ کی تعریف
غوث...... کو بنانے والے کی تعریف ہے
تو......داتا علی ہجویری رحمۃ اللہ علیہ کی تعریف
داتا...... کو بنانے والے کی تعریف ہے
تو......خواجہ معین الدین رحمۃ اللہ علیہ کی تعریف
خواجہ...... کو بنانے والے کی تعریف ہے
تو......خواجہ نقشبند رحمۃ اللہ علیہ کی تعریف
خواجہ...... کو بنانے والے کی تعریف ہے
تو......مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ کی تعریف
مجدد...... کو بنانے والے کی تعریف ہے

تو جب یہ بات ثابت ہوگی...... کہ کسی چیز کی تعریف اس کے بنانے والے کی تعریف ہوتی ہے۔

تو...... میرے رسول ﷺ کی تعریف......رسول ﷺ کو بنانے والے رب کی تعریف ہے

اس لئے تو سرکار ﷺ کو دیکھنے والوں...... نے جب دیکھا تو حقیقت بول گئے...... کہ

جس کا بنایا ہوا ایسا حسین ہے
وہ بنانے والا کتنا حسین ہوگا؟

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## تعریف کی دو قسمیں:

آیئے یہاں پر اب میں آپ کو تعریف کے حوالے سے بھی کچھ باتیں عرض کر دوں!

تا کہ بات اپنے موضوع میں بھی رہے...... اور مقاصد بھی حل ہو جائیں

تعریف کی دو قسمیں ہیں...... یعنی ایک کوئی میری تعریف کرے...... تو بھی اس کی دو قسمیں ہوں گی

اور میرے علاوہ بھی اگر کسی دوسرے شخص کی تعریف کی جائے تو اس میں بھی دو باتیں ہی ہوں گی...... دو قسمیں ہی ظاہر نظر آتی ہیں

یعنی تعریف دو طرح کی ہوتی ہے...... دیکھئے میرے میں دو طرح کی چیزیں ہیں

...... دو طرح کی خوبیاں ہیں...... اور ان دو چیزوں کی جب کوئی تعریف کرنے والا تعریف کرے گا...... تو ان دونوں کا حکم علیحدہ علیحدہ ہے...... اس لئے سب سے پہلے یہ معلوم کرنا ضروری ہے کہ وہ تعریف کی دو قسمیں کونسی ہیں؟

## تعریف کی پہلی قسم:

دیکھئے! جب میری کوئی تعریف کرنے والا تعریف کرے گا...... تو وہ تعریف

دو قسم کی ہوگی...... ایک اس چیز کی تعریف ہوگی...... کہ جو خوبی میں نے خود حاصل کی ہے...... اور دوسری تعریف کی قسم وہ ہوگی کہ اس چیز کی تعریف کرنا کہ جو اللہ تعالیٰ نے مجھے عطا کی ہے

آئیے...... ایک مثال کے ذریعے سے یہ باتیں آسان کر کے آپ کو سمجھاتا ہوں کہ یہ میں نے اپنے سر پر سمنانی تاج سجا رکھا ہے اور اگر اب کوئی یہ کہے...... کہ ہاشمی میاں

یہ تاج بہت اعلیٰ ہے
یہ تاج بہت اچھا ہے
یہ تاج بہت دلکش ہے

تو دیکھئے وہ تعریف کر رہا ہے اور اس ''تاج'' کی تعریف میری تعریف ہے...... اس لئے کہ یہ تاج میں نے خود بنوایا ہے...... اور خود اپنے سر پر سجایا ہے...... تو ظاہر ہے کہ جب اس کو میں نے خود تیار کیا ہے...... خود اپنی مرضی سے اپنے سر پر سجایا ہے...... تو پھر اس کی تعریف میری تعریف ہے...... اسی طرح میرے ''جبہ'' کی کوئی تعریف کرے...... یا میری لاٹھی کی تعریف کرے...... یا میرے کپڑوں کی تعریف کرے...... تو یہ سب تعریفیں جو کی جا رہی ہیں وہ اصل میں میری تعریف ہیں...... اس لئے کہ ان سب چیزوں کو اپنی زندگی میں لانے والا میں ہوں...... اور اب ان سب چیزوں کی تعریف اصل میں میری ہی تعریف ہے

اور دوسری طرف اگر کوئی شخص:

ان میں برائی تلاش کرے
ان میں عیب تلاش کرے
ان پر اعتراض بلند کرے
ان پر انگشت تنقید بلند کرے

تو ان چیزوں کا انکار میرا انکار ہوگا ...... اس لئے کہ یہ میری ذاتی محنت ہے
تو ان چیزوں پر تنقید مجھ پر تنقید ہوگی ...... اس لئے کہ یہ میری ذاتی محنت ہے
تو ان چیزوں کا اعتراض مجھ پر ہوگا ...... اس لئے کہ یہ میری ذاتی محنت ہے

ایک قسم یہ تو مکمل ہوگی ...... کہ جو چیزیں میں نے اپنی محنت سے حاصل کی ہیں ...... جب کوئی ان کی تعریف کرے گا ...... تو وہ میری تعریف ہوئی ...... اور جب ان پر کوئی اعتراض کرے گا ...... تو ان پر اعتراض میری ذات پر اعتراض ہوگا ...... اس لئے کہ ان کو خود سے وابستہ میں نے کیا ہے:

## تعریف کی دوسری قسم:

تعریف کی دوسری قسم یہ ہے کہ اگر آپ میں سے:

کسی نے میرے چہرے کی تعریف کی
یا کسی نے میری آنکھوں کی تعریف کی
یا کسی نے میرے ہاتھوں کی تعریف کی
یا کسی نے میرے جسم کی تعریف کی

تو یاد رکھئے کہ اس بدن کے تمام اعضائے انسانی کی تعریف میری تعریف نہیں ہے

آخر وہ کیوں...... بھائی اس لئے کہ یہ کوئی میری سلیکشن تھوڑی ہے؟ یہ تو بنانے والے کی مرضی ہے...... جیسے چاہا بنا دیا...... جیسا چاہا سجا دیا

چہرہ تو میرا ہے ...... لیکن یہ میری اپنی سلیکشن نہیں ہے
ہاتھ تو میرا ہے ...... لیکن یہ میری اپنی سلیکشن نہیں ہے
آنکھیں تو میری ہیں ...... لیکن یہ میری اپنی سلیکشن نہیں ہے
جسم تو میرا ہے ...... لیکن یہ میری اپنی سلیکشن نہیں ہے

یعنی...... جو چیز خود سے حاصل نہیں کی گی...... بلکہ کسی عطا کرنے والے نے عطا کی ہے...... کسی سنوارنے والے نے عطا کی ہے...... کسی بنانے والے سے ان کو بنایا ہے...... تو پھر ان کی تعریف اس بنانے والے کی تعریف ہو گی...... اس لئے کہ میں تو بنانے والے کی امانت لیکر پھر رہا ہوں...... ان میں سے تو حقیقتاً کچھ بھی میرا اپنا نہیں ہے...... کچھ بھی میں نے اپنی مرضی سے حاصل نہیں کیا۔

تو...... اب ان پر تنقید ان کے بنانے والے پر تنقید شمار ہو گی...... ان کے اصل مالک پر اعتراض شمار ہو گا...... اس لئے کہ ان میں میری مرضی کا دخل نہیں ہے...... بلکہ بنانے والے کی اپنی مرضی کا دخل ہے...... جیسا چاہا بنا دیا

تو...... ان کی تعریف ...... اصل میں بنانے والے کی تعریف ہے
تو...... ان میں عیب ...... اصل میں بنانے والے پر اعتراض ہے

تو آیئے اس پر حدیث بھی سنا دوں...... کہ:

میرے آقا صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا...... کہ:

کسی گورے کو کالے پر برتری نہیں ہے...... اور کسی کالے کو کسی گورے پر برتری نہیں ہے

سبحان اللہ...... یہ بھی میرے رسول ﷺ نے اس لئے فرمایا تھا کہ اگر کوئی کالا ہے...... تو وہ اپنی مرضی سے کالا نہیں بنا...... اور اگر کوئی گورا ہے تو اس نے گورا رنگ کسی سے خریدا نہیں ہے

بلکہ یہ تو بنانے والے کی مرضی ہے...... کہ اس نے جیسے چاہا بنا دیا...... جیسا چاہا بنا دیا...... تو اب اس کی تعریف بنانے والے کی تعریف کہلائے گی ...... اور اس پر اعتراض اس کے بنانے والے پر اعتراض ہوگا...... اس لئے کہ اس میں سے تو کچھ بھی اپنی مرضی سے نہیں لیا...... کچھ بھی تو اپنی مرضی سے نہیں بنایا

جیسا بنانے والے نے چاہا بنا دیا ہے
اب آپ کو مثال سمجھ آگئی ہے...... کہ
اللہ نے جو بنایا...... اس کی تعریف ...... اللہ کی تعریف کی
اللہ نے جو بنایا...... اس پر تنقید ...... اللہ پر تنقید ہے
اللہ نے جو بنایا...... اس پر اعتراض ...... اللہ پر اعتراض ہے

### 5- نکتہ!

تو اب جب یہ بات سمجھ آگئی...... کہ جو آپ نے خود بنایا ہے...... اس کی تعریف آپ کی تعریف ہے...... اور اس پر اعتراض آپ پر اعتراض ہے

اور جو کچھ اللہ نے بنایا ہے جو کچھ اللہ تعالیٰ نے دیا ہے...... اگر اس کی تعریف کی تو وہ اللہ کی تعریف ہے اور اگر اس پر اعتراض کیا تو وہ اللہ پر

اعتراض ہے تو پھر آیئے بارگاہ رسالت ﷺ میں سوال کیجئے...... کہ یا رسول ﷺ آپ میں جو کچھ ہے...... وہ آپ نے خود پایا ہے...... خود بنایا ہے یا پھر اللہ نے آپ کو دیا ہے؟

## رسول ﷺ کو سب کچھ اللہ نے عطا فرمایا:

یعنی...... جو کچھ بھی رسول ﷺ کے پاس ہے وہ آپ نے خود محنت کر کے لیا ہے...... یا پھر اللہ تعالیٰ نے اپنی مرضی سے عطا کیا ہے؟

تو آیئے اس کا جواب قرآن سے لیتے ہیں...... جب قرآن کھولا اور یہ سارا سوال جب ذہن میں تھا...... کہ رسول ﷺ کو یہ سب کچھ کس نے عطا کیا ہے تو قرآن کہہ رہا ہے...... رسول ﷺ کے پاس جو کچھ ہے وہ سب اللہ نے ہی عطا کیا ہے...... یعنی

رسول ﷺ کے پاس رسالت ہے...... لیکن اللہ نے دی ہے
رسول ﷺ کے پاس نبوت ہے...... لیکن اللہ نے دی ہے
رسول ﷺ کے پاس قیادت ہے...... لیکن اللہ نے دی ہے
رسول ﷺ کے پاس سیادت ہے...... لیکن اللہ نے دی ہے
رسول ﷺ کے پاس معرفت ہے...... لیکن اللہ نے دی ہے
رسول ﷺ کے پاس عظمت ہے...... لیکن اللہ نے دی ہے
رسول ﷺ کے پاس عزت ہے...... لیکن اللہ نے دی ہے
رسول ﷺ کے پاس رفعت ہے...... لیکن اللہ نے دی ہے
رسول ﷺ کے پاس حکمت ہے...... لیکن اللہ نے دی ہے
رسول ﷺ کے پاس عصمت ہے...... لیکن اللہ نے دی ہے

رسول ﷺ کے پاس شریعت ہے ...... لیکن اللہ نے دی ہے

یارسول اللہ ﷺ آپ کا جو علم ہے...... وہ آپ کا ہے یا آپ نے کسی سے لیا ہے؟...... تو قرآن جواب دیتا ہے......

اَلرَّحْمٰنُ ۝ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ

وہ رحمٰن ہے...... جس نے قرآن کا علم دیا ہے

اور کتنا علم دیا ہے؟

وَعَلَّمَكَ مَالَمْ تَكُنْ تَعْلَمْ

وہ سب علم آپ کو دیا جو آپ نہیں جانتے تھے

مَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى

اور رسول ﷺ بتا رہے ہیں...... کہ میں نے چلنا خدا سے لیا ہے! اور کسی سے لیتا تو زمین پر چلتا...... تو جب سب خدا سے لیا ہے تو شب معراج دیکھو...... کہ عرش بریں پر چل رہے ہیں

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

تو......!

میرے نبی ﷺ نے...... علم اللہ سے لیا
میرے نبی ﷺ نے...... حکمت اللہ سے لی
میرے نبی ﷺ نے...... رسالت اللہ سے لی
میرے نبی ﷺ نے...... نبوت اللہ سے لی
میرے نبی ﷺ نے...... صورت اللہ سے لی
میرے نبی ﷺ نے...... سیرت اللہ سے لی

میرے نبی ﷺ نے ...... بزرگی اللہ سے لی
میرے نبی ﷺ نے ...... پاکیزگی اللہ سے لی
تبھی ...... تو اللہ قرآن میں اعلان کر رہا ہے ...... اے محبوب ﷺ

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ...... یہ اللہ کی عطا ہے
اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ ...... یہ اللہ کی عطا ہے
وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ...... یہ اللہ کی عطا ہے
عَسٰٓى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ...... یہ اللہ کی عطا ہے
وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ...... یہ اللہ کی عطا ہے
وبالمؤمنین رؤف الرحیم ...... یہ اللہ کی عطا ہے
يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ...... یہ اللہ کی عطا ہے
يٰٓاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ...... یہ اللہ کی عطا ہے
اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ...... یہ اللہ کی عطا ہے
وَّدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ...... یہ اللہ کی عطا ہے
اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ...... یہ اللہ کی عطا ہے
سُبْحٰنَ الَّذِيْٓ اَسْرٰى بِعَبْدِهٖ ...... یہ اللہ کی عطا ہے
قُلْ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا ...... یہ اللہ کی عطا ہے
وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ...... یہ اللہ کی عطا ہے
لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ...... یہ اللہ کی عطا ہے
مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ ...... یہ اللہ کی عطا ہے
وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ

لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ اِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا ...... یہ اللہ کی عطا ہے

قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ ...... یہ اللہ کی عطا ہے

قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ...... یہ اللہ کی عطا ہے

تو بارگاہ رسالت سے بھی بزبان قرآن جواب مل گیا...... کہ میں جو کچھ بھی ہوں ...... یہ خود نہیں بنا...... بلکہ مجھے سب کچھ میرے اللہ نے عطا کیا ہے ...... میرے بنانے والے نے بنایا ہے ...... میرے سنوارنے والے نے سنوارا ہے...... میرے اللہ نے مجھے نکھارا ہے...... میرے اللہ نے مجھے تم میں مبعوث فرمایا ہے...... میرے اللہ نے مجھے نور بنایا ہے...... میرے اللہ نے مجھے ''برہان'' بنایا ہے...... میرے اللہ نے مجھے ''معلم کل'' بنایا ہے...... میرے اللہ نے مجھے ''ہادی کل'' بنایا ہے ...... میرے اللہ نے مجھے رحمت عالم بنایا ہے

یہاں پر میں آپ کو ایک جملہ دینا چاہتا ہوں...... وہ سن لو...... وہ جملہ ایک ایسی کرن ہوگا...... کہ خود بھی چمتے رہو اور چمکاتے رہو...... دمکتے رہو اور دمکاتے رہو...... مہکتے رہو اور مہکاتے رہو...... کہ:

میرے نبی ﷺ ...... کو کمال دیا ...... اللہ نے دیا
میرے نبی ﷺ ...... کو جمال دیا ...... اللہ نے دیا
میرے نبی ﷺ ...... کو علم دیا ...... اللہ نے دیا
میرے نبی ﷺ ...... کو حلم دیا ...... اللہ نے دیا
میرے نبی ﷺ ...... کو صورت دیا ...... اللہ نے دیا

میرے نبی ﷺ ......کو سیرت دیا ......اللہ نے دیا
میرے نبی ﷺ ......کو رسالت دیا ......اللہ نے دیا
میرے نبی ﷺ ......کو نبوت دیا ......اللہ نے دیا
میرے نبی ﷺ ......کو عظمت دیا ......اللہ نے دیا
میرے نبی ﷺ ......کو عزت دیا ......اللہ نے دیا

اللہ تو نے رسول کو کسی سے کچھ کیوں نہیں لینے دیا؟

جب میں اپنی طرف دیکھتا ہوں......تو

مجھے دارلعلوم سے سند لینے دیا
مجھے یونیورسٹی سے ڈگری لینے دیا
مجھے بازار سے کپڑا لینے دیا
مجھے مرید سے ہدیہ لینے دیا
مجھے دنیا سے دولت لینے دیا
مجھے دنیا سے شہرت لینے دیا

## اللہ نے سب رسول کیلئے بنایا:

جب ہم نے لیا تو بہت کچھ اس دنیا سے ہی لیا......لیکن اللہ نے اپنے رسول ﷺ کو دنیا سے کچھ لینے نہیں دیا......آخر کیوں؟

ابھی یہ ذہن میں سوال ابھر رہا تھا......کہ

عشق نے جواب دیا کہ اللہ نے محبوب کو دنیا سے کچھ لینے نہیں دیا

اس لئے کہ جو کچھ کائنات میں ہے وہ سب میرا ہے......اور جو کچھ میری نعمتیں ہیں......وہاں پر اے محبوب......اختیار تیرا ہے!

لے ......تو وہ جس کے پاس کچھ نہ ہو
پڑھے ......تو وہ جسے آتا کچھ نہ ہو
حاصل ......تو وہ کرے جسے ملا نہ ہو
سیکھے ......تو وہ جسے کچھ سکھایا نہ ہو

اے محبوب ﷺ......آپ کے رب نے آپ کو دنیا سے کچھ لینے نہیں دیا کہ محبوب تمہیں جو چاہئے مجھ سے لیتے رہو......اور اے باقی مخلوق تمہیں جو چاہئے تم رسول سے لیتے رہو

میں رب ہوں ......محبوب سب مجھ سے لو
باقی میرے بندے ہیں ......وہ سب تم سے لیتے رہیں

اس لئے کہ تم اے محبوب ﷺ......رب اور ان سب کے درمیان میں ہو......تو رب سے لو

سب کو دو

تو اے محبوب ﷺ......آپ کا دینا اس وقت کم ہوگا
کہ......جب میرا دینا کم ہوگا
اے محبوب ﷺ......آپ کا عطا کرنا اس لئے بند ہوگا
کہ......جب میرا عطا کرنا آپ کو بند ہوگا
تو......وہ دینا تو بند ہوگا ہی نہیں......پڑھو قرآن
وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى۔ وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى
تو......کسی وقت بھی ہمارا تمہیں دینا ختم نہیں ہوگا؟
تو......پھر تیرا کسی کو دینا کیسے ختم ہوگا؟

غور کرنا...... کہ نکتہ اپنے کمال کو پہنچ رہا ہے!

کہ یہ بات تو ہم کر چکے ...... کہ جو اللہ نے دیا ہے ...... اس کی تعریف اللہ کی تعریف ہے...... تو رسول ﷺ کے پاس تو اپنا کچھ بھی نہیں ...... جو بھی سب اللہ کا دیا ہوا ہے...... تو اب کسی صفت کی تعریف دینے والے کی تعریف

رسول ﷺ کو رسالت اللہ نے دی ہے
تو...... رسالت کی تعریف...... رسالت دینے والے کی تعریف ہے
رسول ﷺ کو امامت اللہ نے دی ہے
تو...... امامت کی تعریف...... امامت دینے والے کی تعریف ہے
رسول ﷺ کو عظمت اللہ نے دی ہے
تو...... عظمت کی تعریف...... عظمت دینے والے کی تعریف ہے
رسول ﷺ کو رفعت اللہ نے دی ہے
تو...... رفعت کی تعریف...... رفعت دینے والے کی تعریف ہے
رسول ﷺ کو حکمت اللہ نے دی ہے
تو...... حکمت کی تعریف...... حکمت دینے والے کی تعریف ہے
رسول ﷺ کو معرفت اللہ نے دی ہے
تو...... معرفت کی تعریف...... معرفت دینے والے کی تعریف ہے
رسول ﷺ کو شریعت اللہ نے دی ہے
تو...... شریعت کی تعریف...... شریعت دینے والے کی تعریف ہے

توجب یہ سب صفات اللہ نے دی ہیں...... تو ان سب کی تعریف اللہ ہی کی

تعریف ہے...... تو جب یہ سب تعریفیں دینے والے کی تعریفیں ہیں!

تو...... پھر قرآن کہتا ہے...... کہ:

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

سب تعریفیں اللہ ہی کیلئے ہیں جو عالمین کا رب ہے

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

* * *

## موضوع ...... موت ایک نعمت ہے

نَحْمَدُہٗ وَ نَسْتَعِیْنُہٗ وَ نَسْتَغْفِرُہٗ وَ نُؤْمِنُ
بِہٖ وَ نَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَ نَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ
اَنْفُسِنَا وَ مِنْ سَیِّاٰتِ اَعْمٰلِنَا وَ مَنْ یَّھْدِیْہِ
اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَ مَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ
لَہٗ وَ نَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰـہُ وَحْدَہٗ
لَاشَرِیْکَ لَہٗ وَ نَشْھَدُ اَنَّ سَیِّدَ نَا مَوْلَانَا وَ
حَبِیْبَنَا وَ سِرَاجَنَا وَ اَشْرَفَنَاوَ سَیِّدَ نَا
مُحَمَّدٍ ﷺ

اَمَّا بَعْدُ !

قَالَ اللّٰہ تَبَارَکَ وَ تَعَالٰی فِی الْقُرْاٰنِ الْمَجِیْدِ وَ
الْفُرْقَانِ الْحَمِیْدِ...... اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ
الرَّجِیْمِ

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
قَالَ اللّٰہ ...... اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّآ اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ
صَدَقَ اللّٰہُ مَوْلٰنَا الْعَظِیْمِ

اِنَّ اللّٰـہَ وَمَلٰٓئِکَتَـہٗ یُصَلُّوْنَ عَلَی النَّبِیِّ ط
یٰٓاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْہِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ٥

بارگاہ رسالت مآب ﷺ میں ہدیہ درود وسلام پیش کیجئے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِکَ وَرَسُوْلِکَ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدِىْ يَا رَسُوْلَ الله

وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ يَا سَيِّدِىْ يَا حَبِيْبَ الله

رسول اور آل رسول ﷺ پر ایک مرتبہ درود پاک پڑھیئے

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

علمائے ملت اسلامیہ...... سادات کرام مشائخ عظام آج میں نے سوچا کوئی ایسی آیت پڑھوں کہ جو کوئی کچھ بھی نہ جانتا ہو...... وہ بھی جانتا ہو...... کہ اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

جب کوئی خبر آئی کہ...... بھئی فلاں شخص فوت ہو گیا...... تو فوراً زبان پر آ گیا

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

اور جب کوئی چیز گم ہو جائے...... تو اس گھڑی دل لگا کر...... مولا سے لو لگا کر پڑھو اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

تو فائدہ یہ ہوگا...... کہ یا تو چیز مل جائے گی...... یا اس کا پتہ مل جائے گا یعنی یہ آیت مبارکہ ہر حوالے سے اہم ہے...... اس کو اہم جانا جاتا ہے...... اس کو اہم مانا جاتا ہے...... اس کو اہم گردانا جاتا ہے...... ادھر کوئی جنازہ جاتا ہوا دکھائی دیا...... تو کوئی اور کچھ نہیں بولا...... بس سب کی زبان پر فوراً آ گیا...... اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

## ہر چیز اللہ کیلئے ہے...... اس کی طرف لوٹ رہی ہے

دیکھئے...... جب بھی آپ نے کوئی جنازہ دیکھا تو فوراً پڑھا...... کہ

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ...... کیا مطلب ہے؟

مطلب یہ کہ...... اللہ ہی کی طرف سے آیا اور اب اس کی طرف واپس

جا رہا ہے اور جو کہیں جا رہا ہو وہ مسافر ہے...... یعنی ایک جگہ سے دوسری جگہ جانے والا...... نقل مکانی کرنے والا...... سفر کرنے والا...... تو مسافر ہوتا ہے یہاں پر میں شروع میں ایک بہت اہم بات سمجھانا چاہتا ہوں...... کہ یہ جو جنازہ جا رہا تھا...... جس کسی کا بھی جنازہ تھا...... آپ سب نے دیکھا تو فوراً پڑھا......

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ

تو اس سے پہلے وہ جنازے والا شخص کہاں تھا؟ تو جواب آئے گا کہ اس سے پہلے وہ اپنے گھر میں تھا...... اور اگر پوچھا جائے کہ اپنے گھر سے پہلے وہ مرنے والا شخص کہاں تھا؟ تو جواب آئے گا کہ اپنی ماں کے پیٹ میں تھا...... اور اگر پھر سوال کیا کہ...... اپنی ماں کے پیٹ میں آنے سے پہلے کہاں تھا؟

تو جواب آئے گا کہ اس سے پہلے وہ عالم ارواح میں تھا...... یعنی روحوں کی دنیا میں تھا

یہی وہ اس کی اصل جگہ تھی...... یعنی عالم ارواح...... اور جب عالم ارواح سے ٹرانسفر ہوا تو پھر ماں کے پیٹ میں آ گیا...... اور پھر جب ماں کے پیٹ سے ٹرانسفر ہوا تو اس دنیا میں آ گیا

تو اس دنیا میں...... دس دن ایک دن

دس سال یا ایک سال

پچاس سال یا سو سال

خیر جتنی دیر بھی رب نے چاہا...... وہ اس دنیا میں رہا...... اور پھر

اس دنیا سے بھی ٹرانسفر ہوا...... اور پھر کہاں گیا؟...... جناب پھر وہ اس دنیا سے ٹرانسفر ہو کر قبر کے پیٹ میں چلا گیا...... اور اب جب تک رب چاہے گا...... وہ قبر میں لیٹا رہے گا...... اور پھر اس کے بعد پھر حکم ہوگا...... تو وہ قبر سے ٹرانسفر ہو کر...... میدان محشر میں پہنچ جائے گا......

اس پر میں ایک بات کہنا چاہتا ہوں...... کہ یہ تو جہاں سے چلا تھا۔ جہاں سے آیا تھا...... وہیں پر چلا گیا...... ارے بتاؤ تو وہ ختم کب ہوا؟ وہ مرا کب؟ وہ مٹا کب؟

بھئی غور کرو...... اور دیکھو کہ ایک انسان...... عالم ارواح سے ماں کے پیٹ میں آیا اور پھر اس کے بعد ماں کے پیٹ سے اس دنیا میں آیا...... اور پھر اس دنیا سے قبر کی آغوش میں چلا گیا...... اور پھر اس کے بعد قبر کی آغوش سے نکلا اور میدان محشر میں پہنچ گیا...... تو:

بتاؤ...... وہ مردہ کب ہوا؟
بتاؤ...... وہ مٹا کب تھا؟
وہ فنا کب ہوا تھا؟

ارے...... اس دنیا کی طرف ہی دیکھ لو...... کہ اگر کوئی شخص یہاں دنیا میں ایک شہر سے سفر کر کے دوسرے شہر میں جائے...... پھر دوسرے شہر سے سفر کر کے...... تیسرے شہر میں جائے تو پھر اس کو کیا تم مردہ کہو گے؟

ارے......:

کیا سفر کرنے والے مردہ کہلاتے ہیں؟
کیا شہر بدلنے والے۔ مردہ کہلاتے ہیں؟

کیا نقل مکانی کرنے والے مردہ کہلاتے ہیں؟
کیا ہجرت کر جانیوالے مردہ کہلاتے ہیں؟
کیا مکان بدلنے والے مردہ کہلاتے ہیں؟

ارے...... تم تو سفر کرنے والے کو مردہ کہے جا رہے ہو...... میں تو مردہ اس کو کہوں گا...... کہ جس کو خدا نے مردہ کہا ہے...... اور زندہ اسے کہوں گا کہ جس کو خدا نے زندہ کہا ہے؟

## خدا نے مردہ کسے کہا؟

عزیزان گرامی!

آپ کہو گے...... کہ آج تک ہم تو مردہ اسی کو کہتے رہے کہ جو مرتا ہے اور اس کو لیکر جنازے کی صورت میں لے جاتے ہیں اور دفنا کر آتے ہیں

لیکن ہاشمی میاں نے آج نئی بات کر دی...... کہ وہ تو مسافر ہے...... وہ تو اپنی اصل منزل کی طرف سفر کر رہا ہے...... وہ تو مسافر ہے

اصل میں مردہ وہ ہے...... کہ جسے اللہ نے مردہ کہا
اصل میں زندہ وہ ہے...... کہ جسے اللہ نے زندہ کہا ہے

تو ہاں بھئی...... میں تو یہ بات کر رہا ہوں کہ تم تو مسافر کو مردہ کہے جا رہے ہو...... اور اس دنیا میں چلنے پھرنے والوں کو زندہ کہہ رہے ہو! لیکن ایک بات یاد رکھو...... کہ:

ملاں کی بولی اور ہے
مولا کی بولی اور ہے

تو آؤ میں عالم خیال میں تمہیں بارگاہ رسالت ﷺ میں لے چلوں اور تم

دیکھو گے...... کہ رسول ﷺ اسلام کی پہلی دعوت دے رہے ہیں اور ان سب آنے والوں کو اسلام پیش کر رہے ہیں...... یعنی اللہ کی وحدانیت کی خبر دے رہے ہیں اور اپنی رسالت کی خبر دے رہے ہیں

اور ابوجہل اور ابولہب لوگ سب کے سب کا انکار کر رہے ہیں...... اس واقع پر چشم فلک گواہ ہے...... کہ میرے رسول ﷺ نے اقرار بڑھا دیا...... تو ابوجہل و ابولہب کمپنی نے انکار بڑھا دیا

## صل میں مردہ کون ہے؟

ابھی یہ بحث چل رہی تھی کہ پیغمبر ﷺ ''اسلام'' پیش کر رہے ہیں...... اور مہ ابوجہل و ابولہب انکار کر رہے ہیں تو ایسے میں جبرئیل علیہ السلام وحیِ الٰہی لیکر ناز وگئے...... کہ

اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى

اے محبوب یہ مردے تمہاری نہیں سنیں گے

[illegible]

مہ رت کیساتھ عرض کرنا چاہتا ہوں...... کہ جب میں نے قرآن کی یہ پ می ہے کہ اللہ تعالیٰ ارشاد فرما رہا ہے...... کہ:

اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى

اے محبوب یہ مردے تمہاری نہیں سنیں گے

تو ہوسکتا ہے...... کہ ہماری اس محفل میں بھی علماء کرام اور مفتیان دین متین یٹھے ہیں۔ ہوسکتا ہے کہ کوئی اعتراض کر دے...... کہ وہ جن کو قرآن نے موتی'' فرمایا ہے...... وہ حقیقی مردے نہیں ہیں بلکہ یہ تشبیہ دی گئی ہے خیر کوئی

اعتراض ایسا کر سکتا ہے

تو اس لئے بہتر ہے کہ پہلے اس کا جواب دیتا چلوں کہ قرآن میں إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى جو آیا ہے اس میں الْمَوْتٰى کا لفظ جو ہے...... وہ مطلق آیا ہے...... اور اصول تو یہ ہے کہ مطلق اپنے اطلاق پر جاری ہوتا ہے...... تو دیکھئے یہاں پر مطلقاً ان کا مردہ ہونا مراد لیا جائے گا...... اس لئے کہ قرآن نے یہاں پر كَالْمَوْتٰى نہیں کہا...... بلکہ مطلقاً ''موتی'' کہا ہے

یاد رکھو...... کہ یہ قرآن ہے قرآن اللہ کا آخر ایسا شہکار جو کہ کتاب کی صورت میں آیا ہے...... یعنی اللہ کے کمال ویسے تو بہت ہیں...... لیکن کتابی شکل میں یہ آخری کمال ہے...... جس کو کتاب اللہ کہتے ہیں اور جب وہ رب نبیوں میں سے کسی کو آخری کمال کا درجہ دیتا ہے یعنی آخری نبی بناتا ہے...... تو اس نبی کو ''حبیب اللہ'' کہتے ہیں تو قرآن کی ایک اور آیت مقدسہ ہے...... کہ جس میں اللہ نے فرمایا

صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ

تو اس میں پہلا لفظ استعمال ہوا صُمٌّ یعنی یہ بہرے ہیں! اب تم بتاؤ کہ بہرا کسے کہتے ہیں؟ تو جواب آئے گا...... جو کان سے نہ سنے اسے صُمٌّ یعنی بہرا کہتے ہیں۔

اور بُكْمٌ...... کا معنی گونگا...... یعنی جو زبان سے بول نہ سکے اس کو گونگا کہتے ہیں

اور پھر ''عُمْيٌ'' کیا مطلب؟ یعنی جو آنکھوں سے دیکھ نہ سکے اس کو عُمْيٌ

کہتے ہیں......یعنی کہ اندھا

اب دیکھئے قرآن نے ابوجہل کو!

صُمٌّ ...... بہرا کہا ......حالانکہ وہ سنتا تھا
بُکْمٌ...... گونگا کہا ......حالانکہ وہ بولتا تھا
عُمْیٌ ......اندھا کہا ......حالانکہ وہ دیکھتا تھا

تو اب دیکھ لیجئے......آپ......کہ:

ایک اچھا اور برا سب سننے والے کو قرآن نے......بہرہ کہا ہے
ایک بول چال والے کو قرآن نے ...... گونگا کہا ہے
ایک دیکھنے والے شخص کو قرآن نے ...... اندھا کہا ہے

تو! جب ہم نے سوال کیا کہ میرے مالک تو بے نیاز ہے......تو قادر مطلق ہے جو چاہے کرسکتا ہے......لیکن ادھر

ن کو تو نے...... بہرہ کہا ......وہ تو سب سننے والے ہیں؟
ن کو تو نے...... گونگا کہا ......وہ تو سب بولنے والے ہیں؟
و تو نے...... اندھا کہا ......وہ تو سب دیکھنے والے ہیں؟

تو قرآن نے جواب دے دیا......اے ہاشمی مجھے پڑھ لو...... جواب مل ے گا......کہ:

جو کان رکھ کر مصطفیٰ ﷺ کی نہ سنے وہ صُمٌّ ......بہرے ہیں
جو زبان رکھ کر مصطفیٰ ﷺ سے نہ بولیں وہ بُکْمٌ ......گونگے ہیں
جو آنکھ رکھ کر مصطفیٰ ﷺ کو نہ دیکھیں وہ عُمْیٌ ......اندھے ہیں
اور جو دل رکھ کر اس دل میں مصطفیٰ ﷺ کو نہ بسائیں...... وہ سب مردہ

ہیں! اس لئے فرمایا:

اِنَّكَ لَاتُسْمِعُ الْمَوْتٰى

اے محبوب یہ مردے آپ کی نہیں سنیں گے

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ صلی اللہ علیہ وسلم

## مردہ شخص قرآن کی نظر میں!

ارے جس کی دھڑکن بند ہو گی...... زبان رک گی...... جسم ٹھنڈا ہو گیا...... جسم کی حرکات وسکنات بند ہو گئیں...... وہ تو مسافر ہے...... ابھی سفر کر رہا ہے...... آخرت میں دیکھو کس انجام کو پہنچتا ہے؟

لیکن اس وقت تو ہم بات کر رہے ہیں...... کہ قرآن میں اللہ تعالیٰ نے

کچھ ...... سننے والوں کو بہرہ کہا ہے
کچھ ...... بولنے والوں کو گونگا کہا ہے
کچھ ...... دیکھنے والوں کو مردہ کہا ہے

اور لوگوں کے سامنے...... صحیح حالت میں زندہ پھرنے والوں کو مردہ کہا ہے...... دیکھئے! ابو جہل لوگوں کے سامنے چلتا پھرتا ہے...... لیکن قرآن نے مردہ کہا ہے...... یعنی:

وہ چلتا پھرتا ہے...... لیکن مردہ ہے
وہ اٹھتا بیٹھتا ہے...... لیکن مردہ ہے
وہ بولتا سنتا ہے...... لیکن مردہ ہے
وہ کھاتا پیتا ہے...... لیکن مردہ ہے
وہ آتا جاتا ہے...... لیکن مردہ ہے

وہ ہنستا مسکراتا ہے ...... لیکن مردہ ہے

ان لوگوں کے مقدر کا فیصلہ قرآن نے کر دیا ...... کہ

بظاہر سنتا ہے ...... لیکن مردہ ہے
بظاہر بولتا ہے ...... لیکن مردہ ہے
بظاہر دیکھتا ہے ...... لیکن مردہ ہے
بظاہر چلتا ہے ...... لیکن مردہ ہے
بظاہر کھاتا ہے ...... لیکن مردہ ہے
بظاہر ہنستا ہے ...... لیکن مردہ ہے

یہی قرآن جو چلتے پھرتے ابوجہل و ابولہب کو مردہ کہہ رہا ہے ......

لیکن یہی قرآن دوسری طرف ...... اس شہید ہونے مومن کو جو راہ خدا میں گردن کٹا دے:

جس کا تن کہیں ہو
جس کا دل کہیں ہو
جس کا کلیجہ کہیں ہو
جس کا ہاتھ کہیں ہو

تو اس سے پہلے کہ کوئی ڈاکٹر اپنی رائے دے کہ یہ تو مردہ ہے ...... لیکن اس سے پہلے قرآن نے آواز دی ...... کہ:

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ

جو اللہ کی راہ میں مارے جائیں ان کو مردہ نہ کہو!

تو دیکھئے ...... کہ

بظاہر گردن کٹ گئی ...... لیکن زندہ ہے
بظاہر خون بہہ گیا ...... لیکن زندہ ہے
بظاہر دھڑکن رک گئی ...... لیکن زندہ ہے
بظاہر سب کٹ گیا ...... لیکن زندہ ہے
بظاہر ٹکڑے ہو گئے ...... لیکن زندہ ہے
بظاہر ہڈیاں ٹوٹ گئیں ...... لیکن زندہ ہے
بظاہر کلیجہ کٹ گیا ...... لیکن زندہ ہے
بظاہر سینہ پھٹ گیا ...... لیکن زندہ ہے
بظاہر سانس بند ہو گئی ...... لیکن زندہ ہے

لیکن دوسری طرف ...... ابوجہل ہے ...... کہ:

کھا پی رہا ہے ...... مگر مردہ
بول رہا ہے ...... مگر مردہ

ارے قربان جاؤں ...... نسبت مصطفیٰ ﷺ کے فیضان پر ...... کہ ابوجہل ...... صحیح سلامت ہو کر بھی مردہ ہو گیا

اور امیر حمزہ رضی اللہ عنہ کلیجہ کٹ کر بھی زندہ ہو گئے!

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ علیہ وسلم صلی اللہ

## نبی ﷺ کے وفادار زندہ ہیں:

دیکھئے کہ ایک شخص لوگوں سے بات چیت کرتا ہے ...... مکہ کی گلیوں میں گھومتا پھرتا ہے ...... کھاتا پیتا ہے ...... اسلام کے خلاف ہونے والی میٹنگ بھی اٹینڈ کرتا ہے ...... لیکن اس کو قرآن نے مردہ ہونے کی ڈگری

دے دی اور ...... ادھر میدان احد میں ...... ایک مرد کامل اللہ کا شیر ...... اسلام کی سربلندی کیلئے ...... نبی ﷺ کی غلامی میں اور تابعداری میں ...... آپ ﷺ کی نظر محبت اور وفاداری میں لڑ رہا ہے...... اور لڑتے لڑتے جام شہادت نوش فرمالیا...... تو چشم فلک گواہ ہے کہ سینہ پھٹ چکا ہے...... گلا کٹ چکا ہے...... کلیجہ چبایا جاچکا ہے...... لیکن پھر بھی زندہ ہونے کی ڈگری قرآن نے دی ہے۔

## 2- نکتہ:

تو یہاں ایک نکتہ بھی دیتا ہوں...... کہ جب یہ بات ثابت ہوگی کہ ایک چلتا پھرتا آدمی ...... ہنستا مسکراتا آدمی ابوجہل ...... مکہ کی گلیوں میں چلتے ہوئے بھی مردہ ہے...... اور دوسری طرف سینہ پھٹ جانے کے بعد...... گلا کٹ جانے کے بعد...... کلیجہ چبائے جانے کے بعد بھی ایک مرد مومن زندہ ہے تو ثابت ہوا...... کہ کسی کو مردہ بنانا یہ فرشتے کا کام نہیں ہے...... فرشتہ تو اللہ کا امر لیکر آتا ہے...... کسی کو مردہ بنانا فرشتے کا کام نہیں...... اس لئے کہ اگر ملک الموت کے آنے سے ہی انسان مردہ ہوتا تو پھر ابوجہل چلتے پھرتے...... کھاتے پیتے ہوئے بھی کبھی مردہ نہ ہوتا...... اور اگر قبض روح سے ہی مردہ ہونا ثابت ہوتا تو پھر میدان احد میں سیدنا امیر حمزہ رضی اللہ عنہ کی روح تو قبض ہوئی...... لیکن وہ مردہ کیوں نہیں؟

دیکھئے...... سیدنا عمر فاروق رضی اللہ عنہ کے پاس...... ملک الموت آیا...... روح بھی قبض ہوئی...... لیکن وہ مردہ نہیں ہیں

سیدنا عثمان غنی رضی اللہ عنہ کے پاس ...... ملک الموت آیا...... روح بھی قبض

ہوئی...... وہ مردہ نہیں ہیں

سیدنا علی المرتضیٰ رضی اللہ عنہ کے پاس...... ملک الموت آیا...... روح قبض بھی ہوئی...... لیکن وہ مردہ نہیں ہیں

سیدنا حسن مجتبیٰ رضی اللہ عنہ کے پاس ...... ملک الموت آیا ...... روح قبض ہوئی...... لیکن وہ مردہ نہیں ہیں

سیدنا امام حسین رضی اللہ عنہ کے پاس ...... ملک الموت آیا...... روح قبض ہوئی...... لیکن وہ مردہ نہیں ہیں

تو اب ان کی روح تو قبض ہوگئی...... لیکن یہ زندہ ہیں اور ادھر ابوجہل وابولہب کی روح ابھی جسم میں ہے...... لیکن قرآن نے ان کو مردہ بتادیا ہے تو ثابت ہوا کہ ''موت وزندگی'' کا تعلق ملک الموت کے آنے جانے سے نہیں ہے......:

وہ روح لے جائیں ...... لیکن شہید پھر بھی زندہ
وہ روح نہ بھی لے جائیں ...... تو ابوجہل وابولہب پھر بھی مردہ

ارے...... اے ابوجہل تو مکہ میں رہتے ہوئے بھی مردہ کیوں؟
جناب سیدنا امیر حمزہ آپ کلیجہ کٹ جانے کے بعد بھی زندہ کیوں؟
ہمیں تو قرآن نے ابوجہل کو زندہ کہنے نہیں دیا!
اور...... سیدنا امیر حمزہ کو قرآن نے مردہ کہنے نہیں دیا!
تو...... کسی عاشق نے جواب دے دیا...... کہ اے ہاشمی سن!

ابوجہل کو نبی ﷺ سے غداری نے جینے نہیں دیا...... اور امیر حمزہ کو نبی ﷺ کی وفاداری نے مرنے نہیں دیا۔

وہ اقبال کا شعر اب سمجھ آیا...... کہ

قوت عشق سے ہر پست کو بالا کر دے
دہر میں عشق محمد سے اجالا کر دے

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ صلی اللہ علیہ وسلم

تو اب یہ ثابت ہو گیا...... کہ:

جو میرے رسول صلی اللہ علیہ وسلم کا حب دار ہے...... نبی صلی اللہ علیہ وسلم کا وفادار ہے وہ زندہ:

وہ دنیا میں رہے تو...... زندہ ہے
وہ قبر میں جائے تو...... زندہ ہے
وہ محشر میں جائے تو...... زندہ ہے
وہ جنت میں جائے تو...... زندہ ہے

تو رسول صلی اللہ علیہ وسلم کا جو غدار ہے...... وہ مردہ ہے

چاہے...... وہ مکہ میں رہے...... پھر بھی مردہ ہے
چاہے...... وہ دنیا میں رہے...... پھر بھی مردہ ہے
چاہے...... وہ قبر میں رہے...... پھر بھی مردہ ہے
چاہے...... وہ محشر میں رہے...... پھر بھی مردہ ہے

## زندوں کو دینا...... زندوں سے لینا:

اب دیکھو کہ لینا اور دینا زندوں میں ہوتا ہے...... دیکھئے!

دکان والا زندہ ہے...... اس نے چیز فروخت کی
گاہک بھی زندہ ہے...... اس نے آگے سے پیسے دیئے

تو...... یہ بات طے ہے کہ ہمیشہ لینا اور دینا صرف زندوں میں ہی رہا ہے

اور کبھی کوئی مردہ ایک دوسرے کو نہ ہی تو کچھ دے سکتا ہے اور نہ ہی کچھ لے سکتا ہے...... یعنی مردہ تو نہ دیتا ہے اور نہ لیتا ہے...... یہ کام تو صرف زندوں میں ہی ہوتا ہے...... یعنی ایک دوسرے کو اپنے دینے کا کام تو صرف زندہ لوگ ہی کر پاتے ہیں...... مردے کو کچھ لینے اور دینے کی کیا خبر اس لئے کہ وہ تو مردہ ہو چکا ہے اس کا لینا اور دینا تو ختم ہو چکا

تو اب دیکھئے یہ صرف لینا اور دینا خاص ہے...... زندوں کیساتھ تو اب آؤ پھر توجہ کرو میری پہلے والے گفتگو پر...... کہ جو نبی ﷺ کا وفادار ہے...... وہ اس جہان میں بھی زندہ ہے اور اس جہاں میں بھی زندہ ہے۔

ہاں! ہاں! میں بڑی ہوش میں بول رہا ہوں کہ نبی ﷺ کے تمام وفادار دنیا میں بھی زندہ ہیں...... قبر میں بھی زندہ ہیں

جیسے...... کہ:

ابوبکر صدیق ؓ ......وہاں زندہ
عمر فاروق ؓ ......وہاں زندہ
عثمان غنی ؓ ......وہاں زندہ
علی شیر خدا ؓ ......وہاں زندہ
حسن مجتبیٰ ؓ ......وہاں زندہ
امام حسین ؓ ......وہاں زندہ
اویس قرنی ؓ ......وہاں زندہ
امام اعظم ؓ ......وہاں زندہ
غوث اعظم ؒ ......وہاں زندہ

داتا علی ہجویری رحمۃ اللہ علیہ ......وہاں زندہ
خواجہ اجمیری رحمۃ اللہ علیہ ......وہاں زندہ
مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ ......وہاں زندہ
شیر ربانی رحمۃ اللہ علیہ ......وہاں زندہ
بابا فرید الدین رحمۃ اللہ علیہ ......وہاں زندہ
خواجہ نظام الدین رحمۃ اللہ علیہ ......وہاں زندہ
زکریا ملتانی رحمۃ اللہ علیہ ......وہاں زندہ
شیخ سمنانی رحمۃ اللہ علیہ ......وہاں زندہ
خواجہ نقشبند رحمۃ اللہ علیہ ......وہاں زندہ
خواجہ سہرورد رحمۃ اللہ علیہ ......وہاں زندہ
مفسرین رحمۃ اللہ علیہ ......وہاں زندہ
محدثین رحمۃ اللہ علیہ ......وہاں زندہ
مجتہدین رحمۃ اللہ علیہ ......وہاں زندہ
متکلمین رحمۃ اللہ علیہ ......وہاں زندہ
تمام ...... اولیا ......وہاں زندہ
تمام ...... رقباء ......وہاں زندہ
تمام ...... نجباء ......وہاں زندہ
تمام ...... اوتاد ......وہاں زندہ
تمام ...... اقطاب ......وہاں زندہ
تمام ...... اصحاب ......وہاں زندہ

تمام ...... ابدال ......وہاں زندہ

یعنی...... جو جو نبی ﷺ کے وفادار ہیں ...... وہ اس جہاں میں بھی زندہ ہیں......اور جب یہاں سے انتقال فرما گئے......تو اب جس جہاں میں جا چکے ہیں......وہاں بھی زندہ ہے ۔

یعنی...... یہاں پر ہر سنی زندہ......اور وہاں پر ہر وفادار امتی زندہ تو پھر ہم نے دیکھا......کہ غوث اعظم کو کیا پسند ہے؟

تو جواب آیا......کہ غوث اعظم رضی اللہ عنہ کو ثواب پسند ہے......تو پھر ہم نے قرآن سے پوچھا...... کہ ...... کہ کون سی چیز ثواب ہے

قرآن نے بتا دیا ...... کہ ......قرآن پڑھنا ثواب ہے
قرآن نے بتا دیا ...... کہ ......درود شریف پڑھنا ثواب ہے
قرآن نے بتا دیا ...... کہ ......وظائف پڑھنا ثواب ہے
قرآن نے بتا دیا ...... کہ ...... کھانا تقسیم کرنا ثواب ہے

ارے جب یہ سب کچھ ثواب ہے......تو پھر ہم نے......قرآن پڑھ کر ثواب اکٹھا کیا...... درود پڑھ کر ثواب اکٹھا کیا...... وظائف پڑھ کر ثواب اکٹھا کیا...... اور سب کو غوث اعظم رضی اللہ عنہ کی طرف بطور تحفہ بھیج دیا اس لئے کہ یہ سب ثواب ان کو اس جہاں میں پسند ہے کہ جس جہان میں وہ اب رہ رہے ہیں۔

تو......!

غوث اعظم رحمۃ اللہ علیہ کو جو پسند ہے ......وہ ہم بھیج رہے ہیں
امام اعظم رحمۃ اللہ علیہ کو جو پسند ہے ......وہ ہم بھیج رہے ہیں

داتا صاحب رحمۃ اللہ علیہ کو جو پسند ہے ......وہ ہم بھیج رہے ہیں

خواجہ صاحب رحمۃ اللہ علیہ کو جو پسند ہے ......وہ ہم بھیج رہے ہیں

مہر علی رحمۃ اللہ علیہ کو جو پسند ہے ......وہ ہم بھیج رہے ہیں

جماعت علی رحمۃ اللہ علیہ کو جو پسند ہے ......وہ ہم بھیج رہے ہیں

مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ کو جو پسند ہے ......وہ ہم بھیج رہے ہیں

میاں شیر ربانی رحمۃ اللہ علیہ کو جو پسند ہے ......وہ ہم بھیج رہے ہیں

تو دیکھ لو...... کہ جب ہم ختم شریف دلاتے ہیں...... تمام کھانے کی چیزیں ہم بازار سے لیکر آئے......اور انہیں اپنے گھر میں پکایا......اور ختم شریف پڑھا اور اس کا ثواب ان بزرگوں کو بھیج رہے ہیں

دیکھو تو ختم شریف کو سب کیا کہتے ہیں......ایصال ثواب

کوئی اس دوران ......ایصال بریانی ...... نہیں کہتا

کوئی اس دوران ......ایصال دودھ ...... نہیں کہتا

کوئی اس دوران ......ایصال پھل ...... نہیں کہتا

جب بھی دیکھو گے......تو کہنے والا ”ایصال ثواب“ ہی کہے گا......وہ اس لئے کہ یہ سب کھانے کی چیزیں تو یہاں ہی رہ جائیں گی...... اور ہمارے بزرگوں کو تو ثواب پسند ہے......تو اس لئے انہیں ایصال ثواب کیا جائے گا......تو یہ سب اس لئے کیا جا رہا ہے

کہ......کھانا ہم کھائیں گے......ثواب بزرگ لے جائیں گے

تو پھر ہمارے بزرگوں کو کیا پسند تھا......وہ ہم جانتے ہیں......اور ان سب کو اس جہان میں ثواب پسند ہے......تو ہم نے:

غوث اعظم رحمۃ اللہ علیہ ...... کو ایصال ثواب کیا
امام اعظم رحمۃ اللہ علیہ ...... کو ایصال ثواب کیا
صالحین ...... کو ایصال ثواب کیا
کاملین ...... کو ایصال ثواب کیا

اور وہ بھی جانتے ہیں...... کہ ہمارے غلام کو کیا پسند ہے؟...... ہمارے نام لیوا کو کیا پریشانی ہے؟ ہمارے خادم کی کیا حاجت ہے...... تو پھر انہوں نے اسے ایصال ثواب کرنے کے بعد...... اس کا اچھا صلہ ہمیں لٹایا...... یعنی

غلام کی بیوی بیماری تھی ...... غوث نے رب سے سفارش کر دی
غلام کے گھر پریشانی تھی ...... خواجہ نے رب سے سفارش کر دی
خادم کی کوئی حاجت تھی ...... داتا نے رب سے سفارش کر دی
خادم کی کوئی تنگدستی تھی ...... پیر نے رب سے سفارش کر دی

یعنی...... ان بزرگوں کو جو پسند تھا...... وہ بصورت ثواب ہم ان سب کو بھیج رہے ہیں...... اور وہ قبول فرمانے کے بعد خوش ہو کر اس کا اچھا بدلا ہمیں دے رہے ہیں...... یعنی یوں کہہ لو کہ اُن کو جو پسند تھا وہ ہم ان کے غلام ادھر کی دنیا سے بھیج رہے ہیں...... اور ہم کو جو پسند ہے وہ ہمارے مرشد...... ہمارے ہادی...... ہمارے پیر...... ہمارے غوث وہ سب چیزیں اُدھر سے...... یعنی اپنے اس جہاں سے بھیج رہے ہیں۔

ہم جہاں رہ رہے ہیں...... ہم اِدھر سے بھیج رہے ہیں...... وہ جس جہان میں رہ رہے ہیں وہ اپنے اس جہاں سے ہمارے لئے بھیج رہے ہیں:

ہم نے اپنی حیثیت کے مطابق دیا ...... انہوں نے اپنی شان کے مطابق دیا

ہم نے اپنی حیات کے مطابق دیا ......انہوں نے اپنی حیات کے مطابق دیا

ہم نے اپنی عادت کے مطابق دیا ......انہوں نے اپنی عادت کے مطابق دیا

ہم نے اپنی پہنچ کے مطابق دیا ......انہوں نے اپنی پہنچ کے مطابق دیا

ارے! ہم زندہ یہاں سے بھیج رہے ہیں......اور وہ زندہ وہاں سے بھیج رہے ہیں

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيَاةً طَيِّبَةً

اور ادھر زمین پر چلنے والے مُردوں کی طرف دیکھو کہ نہ ادھر سے کچھ جاتا ہے......اور نہ ہی پھر اُدھر سے کچھ آتا ہے

## سب کچھ اللہ ہی کیلئے ہے:

ارے...... ہمارا تو ایمان ہے کہ سب کچھ اللہ ہی کا ہے...... اور آج وہی پریشان ہو رہے ہیں......کہ جو کہتے ہیں......کہ......میرا......میرا

ارے......:

یہ گھر میرا ہے
یہ مکان میرا ہے
یہ مدرسہ میرا ہے
یہ پیسہ میرا ہے
یہ سرمایہ میرا ہے
سواری میری ہے
یہ دولت میری ہے

کہ...... جب بھی کہتے ہیں......تو کامل لوگ یہی کہتے ہیں...... کہ میرے

**مالک میرا کچھ نہیں سب کچھ تیرا ہے**

جیسا کہ شیطان حضور غوث اعظم رضی اللہ عنہ کو کہنے لگا...... کہ عبد القادر تیرے علم نے تمہیں بچا لیا...... تو آپ نے فرمایا...... چل ہٹ مردود...... اب نئی چال چل رہا ہے...... یہ علم میرا کب ہے...... یہ تو سب اس کا فضل ہے

اگر کوئی علم سے بچ جاتا تو تیرے پاس بھی تو علم تھا...... تو کیوں نہیں بچ سکا؟...... تو غوث اعظم رضی اللہ عنہ کہہ رہے ہیں:

یااللہ ...... یہ جہاں سب تیرا
یااللہ ...... یہ علم سب تیرا
یااللہ ...... یہ ہوا و فضا تیری ہے
یااللہ ...... یہ ارض و سما تیری ہے
یااللہ ...... میں بھی تیرا ہوں
یااللہ ...... میرا سب کچھ تیرا ہے
یااللہ ...... میرا سرمایہ تیرا ہے
یااللہ ...... میری زندگی تیری ہے
یااللہ ...... میری بندگی تیری ہے

یہاں تک کہ کہہ دیا میرے اللہ میری زبان تیری ہے...... میری یہ جان تیری ہے...... تو اگر اس حد تک اپنی نفی کر دی...... یعنی جان اور زبان کو بھی اللہ ہی کی ملکیت کہہ دیا...... تو پھر بتاؤ اس زبان پر بولے گا کون؟

یقیناً...... اس زبان پر حق بولے گا...... حق بولے گا

## شفاعت مصطفیٰ ﷺ میدان محشر میں!

عزیزان گرامی

قرب خدا کا ہی یہ نتیجہ ہے...... کہ مطیع الرسول...... کو اللہ مطیع اللہ کہہ رہا ہے......

رسول ﷺ کے تابعدار کو...... اللہ اپنا تابعدار کہہ رہا ہے

رسول ﷺ کے فرمانبردار کو...... اللہ اپنا فرمانبردار کہہ رہا ہے

قرآن پڑھ کر دیکھ لو...... مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰه

تو اب غور کرنا کہ قیامت کے دن اللہ تعالیٰ نے سب کو اپنی بارگاہ میں پیش ہونے کا حکم دینا ہے...... لیکن تمام انسانیت اس دن بھی کوئی ایسا سہارا تلاش کرے گی...... کہ:

جس کی عطا...... اللہ کی عطا ہو
جس کی رضا...... اللہ کی رضا ہو
جس کا فرمان...... اللہ کا فرمان ہو
جس کی اطاعت...... اللہ کی اطاعت ہو
جس کی تابعداری...... اللہ کی تابعداری ہو
جس کی وفاداری...... اللہ کی وفاداری ہو

یعنی میدان محشر میں تمام گنہگار پریشان حال ہوں گے...... بس یہی سوچ ہوگی کہ آج تو رزلٹ کا دن ہے...... آج تو نتیجے کا دن ہے...... آج تو انجام کو پہنچنے کا دن ہے...... آج کیا بنے گا...... اگر دفتر اعمال کھل گیا تو

پھر کیا ہو گا؟

تو پھر گنہگار پریشانی کے اندر انسانیت کے باپ کی خدمت میں حاضر ہو جائیں گے...... سیدنا آدم علیہ السلام کی بارگاہ میں حاضر ہو کر...... اپنی عرض پیش کریں گے...... اپنا حال دل سنائیں گے...... کہ آپ ابوالبشر ہو آج کرم کی نظر فرمائیے...... کچھ آخرت بہتر ہو جائے...... اللہ کے غضب سے بچ جائیں...... اللہ تعالیٰ کی بارگاہ سے معافی مل جائے...... اللہ آج اپنی بارگاہ سے ہمیں مایوس نہ کرے...... اللہ ہمارے گناہوں کے سبب آج ہمیں رسوا نہ کرے...... تو وہاں سے حضرت سیدنا آدم علیہ السلام کی بارگاہ سے بھی سب کو واپس لٹا دیا جائے گا...... جاؤ...... جاؤ!

اِذْھَبُوْا اِلٰی غَیْرِیْ
کسی دوسرے کے پاس جاؤ

بس آج تو کوئی سہارا چاہیے...... آج تو کوئی غمگسار چاہیے...... جو اپنے دامن میں پناہ دے دے...... جو اللہ کی بزرگ ترین بارگاہ میں آج گنہگاروں کی عرض پیش کر دے...... جو اللہ کی بارگاہ میں معافی کا مژدہ سنا دے...... بس جس کسی نبی کی بارگاہ میں آج لوگ حاضر ہو رہے ہیں...... تمام کے تمام آگے سے یہی کہتے ہیں...... کہ:

جاؤ...... آج کسی اور کے پاس جاؤ
جاؤ...... آج کوئی دوسرا سفارشی تلاش کرو...... نفسی نفسی

تو ایسے میں جب سب کی بارگاہ سے واپس لٹا دیا جائے گا...... تو لوگ پھر آخر میں ہادی کائنات ﷺ کی بارگاہ اقدس میں حاضر ہوں گے...... تو آواز

آ رہی ہوگی

یا امتی......یا امتی
یا امتی......یا امتی

تو جب گنہگاروں نے سر اٹھا کر کے دیکھا کہ اس نفسی نفسی کے عالم میں یا امتی ...... یا امتی کی آواز دینے والی ہستی پاک کون ہے......تو جب دیکھا:

تو سامنے وہی ...... کملی والا نظر آیا
تو سامنے وہی ......طٰہٰ کے تاج والا نظر آیا
تو سامنے وہی رحمت عالم کی شان والا نظر آیا
تو سامنے وہی فخر آدم کی شان والا نظر آیا

تو جب سرکار ﷺ میدان محشر میں......لوگوں کے نفسی نفسی کے شور میں سرکار ﷺ پرہیزگاروں کو علیحدہ کر رہے ہوں گے ......لیکن قربان جاؤں...... کہ گنہگاروں کو اپنی چادر رحمت کے قریب کر رہے ہوں......تو پھر اس انسانیت کی بھیڑ میں...... چند پرہیزگاروں کے دل میں یہ خیال آ ہی جائے گا......کہ عاشق کو تو محبوب کی ایک نظر چاہیے......تو آج تو سرکار ﷺ کی رحمت والی نظر صرف گنہگاروں کو نواز رہی ہے......تو ایسے میں کسی پرہیزگار کے دل میں یہ خیال آئے گا کہ کاش آج کوئی تین چار گناہ میرے پاس بھی ہوتے ...... کہ سرکار ﷺ کی قربت نصیب ہو جاتی...... آج رحمت عالم ﷺ کی چادر رحمت کا سایہ میسر آ جاتا......تو اسی بات کو...... مجدد اعظم ہوتے ہوئے...... محقق اعظم ہوتے ہوئے...... مفتی

اعظم ہوتے ہوئے...... وقت کا امام...... علم کا سمندر...... تقوے کا پہاڑ...... ارادے کا اٹل...... احمد کی رضا...... مدینے کی ادا...... غوث کی عطا...... امام احمد رضا رحمۃ اللہ علیہ:

جو وقت کا مفسرِ اعظم بھی ہے
جو وقت کا محدث اعظم بھی ہے
جو وقت کا محقق اعظم بھی ہے
جو وقت کا مفکر اعظم بھی ہے

تو جب اس عظیم اور معتبر امام...... امام احمد رضا خان بریلوی رحمۃ اللہ علیہ نے محشر کے اس میدان کے منظر کو پڑھا...... اور پرہیزگاروں کے دل میں پیدا ہونے والی اس خواہش کو محسوس کیا...... تو یوں کہہ دیا...... کہ

کیا ذات ہے ستاری تمہاری واہ واہ
قرض لیتی ہے گناہ پرہیزگاری واہ واہ

اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ
وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ

* * *

## موضوع...... خدا چاہتا ہے رضائے محمد صلی اللہ علیہ وسلم

نَحْمَدُہٗ وَ نَسْتَعِیْنُہٗ وَ نَسْتَغْفِرُہٗ وَ
نُؤْمِنُ بِہٖ وَ نَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَ نَعُوْذُ بِاللّٰہِ
مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَ مِنْ سَیِّاٰتِ
اَعْمٰلِنَا وَ مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ
وَ مَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَ نَشْھَدُ
اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ
وَ نَشْھَدُ اَنَّ سَیِّدَ نَا مَوْلَانَا وَ حَبِیْبَنَا
وَ سِرَاجَنَا وَ اَشْرَفَنَا وَ سَیِّدَ نَا
مُحَمَّدٍ صلی اللہ علیہ وسلم

اَمَّا بَعْدُ !

قَالَ اللّٰہُ تَبَارَکَ وَ تَعَالٰی فِی الْقُرْاٰنِ الْمَجِیْدِ وَ الْفُرْقَانِ الْحَمِیْدِ...... اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
وَلَسَوْفَ یُعْطِیْکَ رَبُّکَ فَتَرْضٰی
صَدَقَ اللّٰہُ مَوْلٰنَا الْعَظِیْمِ

اِنَّ اللّٰہَ وَمَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوْنَ عَلَی النَّبِیِّ ط
یٰٓاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْہِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ○

بارگاہ رسالت مآب صلی اللہ علیہ وسلم میں ہدیہ درود و سلام پیش کیجیے

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ
وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

معزز و مکرم علماء ذی وقار...... مشائخ عظام...... سادات کرام سب معززین اور رہنمائے دین متین کی موجودگی میں تقریر ہو رہی ہے...... کہ آپ سب بتائیں کہ ابلیس نے تو عظمت نبوت کا انکار کیا...... وہ عظمت نبوت سے انکار کرنے میں پہلا ہے...... اور جبرئیل امین نے سب سے پہلے اقرار کیا وہ اقرار کرنے والوں میں سب سے پہلا ہے...... آدم علیہ السلام کو سجدہ کرنے والوں میں سے پہلا ہے...... تو اب یہاں ایک بات تقریر کے شروع ہی میں واضح کر دینا چاہتا ہوں...... کہ سب سے پہلے انکار کرنے والا ابلیس...... اور اس نے انکار کیا عظمت نبوت کا...... اس ابلیس کا انکار کرنا تو سمجھ میں آ رہا ہے...... اس لئے کہ قرآن ہمیں اس کے انکار کے متعلق بتا رہا ہے...... لیکن جو آج انکار کر رہے ہیں...... وہ خدا جانے کہ کیا ہے...... اس لئے کہ ان کا انکار تو سمجھ سے ہی بالاتر ہے...... وہ اس لئے کہ ابلیس نے تو انکار کیا کہ وہ تو انسانیت کی برادری سے ہی نہیں تھا...... اور دوسرا وہ کوئی آدم علیہ السلام کی اولاد سے بھی نہیں تھا...... لیکن آج جو انکار کر رہے ہیں وہ تو سب کے سب انسانیت ہی کی برادری سے ہیں...... اور آدم علیہ السلام کی اولاد سے بھی ہیں...... تو پھر وہ اپنے باپ کے راستے پر کیوں نہیں چل رہے...... کیا یہ بھی نالائق اولاد ہیں؟

## مقام خلافت کی رفعت:

دیکھئے کیا بلند مقام ہے...... کیا رفعت والی شان ہے کہ فرشتوں کو اللہ نے حکم دیا کہ سب آدم علیہ السلام کو سجدہ کرو...... جس طرح کہ قرآن ذکر کرتا ہے...... کہ

وَاِذْقُلْنَا لِلْمَلٰٓئِکَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِیْسَ
اَبٰی وَاسْتَکْبَرَ وَکَانَ مِنَ الْکٰفِرِیْنَ

اب دیکھئے غور سے قرآن پاک کی اس آیت مبارکہ کے آخری الفاظ پر کہ اللہ تعالیٰ اس طرح اکڑ کر انکار "مقام خلافت" کرنے والے کے متعلق فرمارہا ہے...... کہ

وَکَانَ مِنَ الْکٰفِرِیْنَ

تو اب آپ بتاؤ کہ یہ الْکٰفِرِیْنَ کا مطلب کافر ہی ہوتا ہے نہ؟

اس لئے کہ اگر کافر کو کافر کہنا منع ہوتا تو اللہ تعالیٰ خود اپنی پاک کتاب میں کافر کو کافر کیوں کہتا؟

آیئے ایک اور آیت مقدسہ پیش کرتا ہوں...... کہ اللہ تعالیٰ نے خود بھی کافر کو کافر کہا اور اپنے حبیب صلی اللہ علیہ وسلم کو بھی فرمایا کہ اے محبوب تم بھی کافر کو کافر کہو جیسے کہ قرآن میں ارشاد باری تعالیٰ ہے

قُلْ یٰٓاَیُّهَا الْکٰفِرُوْنَ

آپ فرمایئے...... اے کافرو

آج میں دل کھول کر بولنے کے موڈ میں ہوں...... آج ان شاء اللہ
کچھ ......شریعت کی باتیں ہوں گی

کچھ ......معرفت کی باتیں ہوں گی
کچھ ......طریقت کی باتیں ہوں گی
کچھ ......سنت کی باتیں ہوں گی
کچھ ......خلافت کی باتیں ہوں گی
کچھ ......عنایت کی باتیں ہوں گی
کچھ ......اطاعت کی باتیں ہوں گی
کچھ ......شفاعت کی باتیں ہوں گی

اور آج آپ سب یہ دیکھئے ...... کہ میں کہاں سے کہاں تک بیان کرتا ہوں یعنی ...... آج لوگ کہتے ہیں کہ کافر کو بھی کافر نہ کہو ...... ارے عقل ہوتی تو کیسے پہلے خود ہی ذرا سوچ لیا ہوتا کہ میں کیا کہہ رہا ہوں ...... غور کرنا کہ جب پوچھا کہ بھئی کیا کہا آپ نے؟ کس کو کافر نہیں کہنا چاہئے ...... تو بولے ''کافر'' کو کافر نہیں کہنا چاہئے ...... ارے خود تو تم سب سے پہلے کہہ رہے ہو کافر کو کافر ...... اور دوسروں کو کہہ رہے ہو کہ کافر کو کافر نہیں کہنا چاہئے ...... ارے ہمیں تو یہ عجیب منطق سمجھ میں نہیں آرہی اس لئے کہ اگر یوں کہا جاتا کہ ''ایمان والے'' کو کافر نہ کہو ...... تو یہ بات تو سمجھ میں آتی ہے ...... لیکن یہ بات تو سمجھ میں نہیں آتی ...... کہ کافر کو کافر نہ کہو خیر جب آگے پوچھا کہ کافر کو کافر کیوں نہ کہیں؟ تو جواب دیا کہ ارے اگر وہ آگے چل کر ایمان والا بن گیا تو پھر؟

لو جی یہ بھی عجیب بات ہے کہ کافر کو کافر مت کہو اگر آگے چل کر مسلمان ہو گیا تو پھر؟

تو ایسے شخص کے مطابق تو پھر ایمان والے کو بھی ایمان والا نہیں کہنا چاہئے اس لئے کہ اگر آگے چل کر کافر ہو گیا تو پھر؟

ارے بھائی ایسے ہی اپنے پاس سے پابندیاں کاہے کو لگاتے ہو...... جو جس وقت جو کچھ بھی ہے اس وقت تو وہی کہا جائے گا...... آگے چل کر جو بنے گا وہ بعد میں اس وقت دیکھا جائے گا...... کہ اب کیا بن گیا ہے...... اب اسے کیا کہنا ہے؟

دیکھو ہم نے تاریخ کے اوراق کو جب پلٹا...... ۱۴ صدیاں پیچھے گئے تو اس وقت کے ایک کافر کو کافر اعظم کہا جاتا رہا...... لیکن چشم فلک نے یہ منظر دیکھا کہ جب وہ شخص صاحب ایمان ہو گیا تو پھر

پہلے کے...... کافر اعظم کو

ایمان لانے کے بعد:

فاروق اعظم رضی اللہ عنہ کہا جانے لگا
تاجدار خلافت کہا جانے لگا
امام المجاہدین کہا جانے لگا
امام العادلین کہا جانے لگا
پھر اس امیر المومنین پر ...... عدالت فخر کرنے لگی
پھر اس امام المجاہدین پر ...... شرافت فخر کرنے لگی
پھر اسی امام صادقین پر ...... صداقت فخر کرنے لگی
پھر اسی فاتح اعظم پر ...... خلافت فخر کرنے لگی

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ صلی اللہ علیہ وسلم

## شیطان سے بچنا ضروری ہے:

یہ تو گلستان مہر علی رحمۃ اللہ علیہ ہے...... یہاں کے لوگوں کو تو اہل نسبت ہونے کی وجہ سے یہ سب جانتے ہیں کہ شیطان سے کیسے بچا جائے...... شیطان لعین سے کیسے محفوظ رہا جائے...... لیکن جن کو پتہ نہیں ہے...... وہ شیطان سے کیسے بچیں گے؟...... تو اس لئے سب سے پہلے یہ بات ضروری ہے کہ جس چیز سے بچنا چاہتے ہو...... پہلے اس کی پہچان ضروری ہے...... اس لئے کہ جب اس کی پہچان ہوگی تو پھر اس سے بچا جائے گا...... مثال کے طور پر ایک بچہ ہے...... ایک چھوٹا بچہ وہ اپنے پیشاب اور پاخانے سے بچتا نہیں ہے...... اس لئے کہ وہ پہچانتا نہیں ہے...... کہ یہ کس قدر ناپاک ہے

یعنی...... جب اس کی ناپاکی کی پہچان نہیں تھی...... تو اس وقت تک اس سے بچتا نہیں تھا...... اور جب عقل مند ہو گیا...... جب تھوڑا سا بڑا ہو گیا تو پھر بچنے لگ گیا ہے...... اس لئے کہ اب اس کو پہچان ہو گئی ہے کہ پیشاب سے بچنا ہے...... اس لئے کہ یہ ناپاک ہے! یہ گندگی ہے تو نتیجہ یہ نکلا کہ اس چیز سے بچا جائے گا...... کہ جس کی پہچان ہو جائے...... کہ وہ نفرت کے قابل ہے...... اور اب شیطان انسان کا کھلا دشمن ہے...... لیکن جب اس سے بچنا ہے...... تو پہلے ضروری ہے کہ اس کی پہچان بھی حاصل ہو...... اور جب اس کی پہچان ہو جائے گی...... تو پھر اس سے بچاؤ میں بھی آسانی ہو جائے گی...... تو پھر:

اگر برائی سے بچنا ہے...... تو برائی کو پہچانو
غلطی سے بچنا ہے...... تو غلطی کو پہچانو

آگ سے بچنا ہے......تو آگ کو پہچانو
ظلم سے بچنا ہے......تو ظلم کو پہچانو
حرام سے بچنا ہے......تو حرام کو پہچانو
فریب سے بچنا ہے......تو فریب کو پہچانو
دھوکے سے بچنا ہے......تو دھوکے کو پہچانو

اور......اگر آپ نے......شیطان سے بچنا ہے

تو پھر......شیطان کو پہچانو

اللہ نے جب اسے کہا کہ میری عبادت کرو......تو پھر

عبادت پر عبادت

عبادت پر عبادت

عبادت پر عبادت کرتا رہا

لیکن جب اللہ نے اس کو آدم علیہ السلام کی عزت کرنے کا حکم دیا......یعنی اللہ نے اپنے نبی کی تعظیم کرنے کا حکم دیا تو اس وقت اکڑ گیا......انکار کر دیا......غدار ہو گیا......سرکش ہو گیا......منکر ہو گیا......تو اسی سے ہم پہچان گے کہ جب بھی شیطان کو پہچاننا ہے تو دو چیزوں سے پہچان سکتے ہو......کہ جب عبادت کا کہو گے تو کرے گا

لیکن......جب تعظیم نبوت کا کہو گے تو انکار کرے گا

تو اب ہم پہچاننے کیلئے:

کسی کا اخلاق نہیں دیکھیں گے
کسی کا زویہ نہیں دیکھیں گے

کسی کی تعلیم نہیں دیکھیں گے
کسی کی قابلیت نہیں دیکھیں گے
کسی کی شہرت نہیں دیکھیں گے
کسی کی دولت نہیں دیکھیں گے
کسی کی صورت نہیں دیکھیں گے

ہم تو یہ دیکھیں گے......کہ:

نبی ﷺ کا کس حد تک وفادار ہے؟
نبی ﷺ کا کس حد تک طرفدار ہے؟
نبی ﷺ کا کس حد تک تابعدار ہے؟
نبی ﷺ کا کس حد تک فرمانبردار ہے؟

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## شجر ممنوعہ......اور آدم علیہ السلام اور اماں حوا علیہا السلام

عزیزانِ گرامی!

اور چند باتیں جنت اور جنت میں رہنے والوں کی بھی کرتے جائیں......تاکہ ذوق بھی بحال رہے......اور مسئلہ بھی بیان ہو جائے......کہ اللہ کی بے مثال اور لاجواب جنت سجی ہوئی ہے......مہکی مہکی جنت ہے......نکھری نکھری جنت ہے......پاکیزہ مسرور ہے......ہر چیز میں لاجواب بے مثال نور ہے......ہر طرف سرور ہی سرور ہے......اور حضرت سیدنا آدم علیہ السلام اور اماں حوا علیہا السلام جنت میں رہ رہے ہیں......قادر مطلق کی تسبیح بیان کر رہے ہیں اور جنت کی زندگی کے مزے لے رہے ہیں......اللہ

کا حکم ہوتا ہے کہ اس درخت کے قریب مت جانا...... تو یہاں پر جتنے منہ اتنی ہی باتیں ہوتی رہیں......:

کسی نے کہا...... آدم علیہ السلام سے لغزش ہوئی
کسی نے کہا...... آدم علیہ السلام سے غلطی ہوئی
کسی نے کہا...... آدم علیہ السلام سے بھول ہوئی

تو یہاں معذرت کیساتھ جید علماء کرام کی موجودگی میں...... میں یہاں عرض کرنا چاہتا ہوں کہ...... ارے حکمت الٰہی بھی تو سمجھو...... کہ جنت میں بچے پیدا نہیں ہوتے...... وہ تو دانہ آدم علیہ السلام حکمت کے تحت نگل گئے تھے

اور دوسری بات کہوں کہ...... آدم علیہ السلام کو تو بنایا ہی زمین کیلئے گیا تھا دیکھو......!

ابھی دانہ کھایا نہیں
ابھی آدم کو بنایا نہیں
ابھی حوا کو بنایا نہیں
ابھی جنت میں بسایا نہیں

اور اللہ فرشتوں سے فرما رہا ہے...... کہ:

وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً

ارے بھائی...... ذرا فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً کے الفاظ پر بھی تو غور کرو...... وہ تو بنائے زمین کیلئے گئے ہیں

ارے جنت میں تو بچے پیدا نہیں ہوتے...... جنت میں تو خاندان نہیں

بنتے...... جنت میں تو قبیلے نہیں بنتے...... جنت میں تو برادریاں نہیں بنتی...... یہ سب کچھ تو زمین پر ہی ہے

اور اگر آدم علیہ السلام دانہ حکمت الٰہی کے تحت نہ نگلتے تو آج یہ سب کچھ کیسے پیدا ہوتا؟

دیکھئے!

آدم علیہ السلام زمین پر آئے......تو نبیین آئے
آدم علیہ السلام زمین پر آئے......تو مرسلین آئے
آدم علیہ السلام زمین پر آئے......تو صدیقین آئے
آدم علیہ السلام زمین پر آئے......تو کاملین آئے
آدم علیہ السلام زمین پر آئے......تو سالکین آئے
آدم علیہ السلام زمین پر آئے......تو متقین آئے
آدم علیہ السلام زمین پر آئے......تو مومنین آئے
آدم علیہ السلام زمین پر آئے......تو محسنین آئے

اسی لئے تو کہتا ہوں...... آدم علیہ السلام زمین پر آئے

تو ...... نجی اللہ آئے
تو ...... خلیل اللہ آئے
تو ...... خلیفۃ اللہ آئے
تو ...... ذبیح اللہ آئے
تو ...... کلیم اللہ آئے
تو ...... روح اللہ آئے

تو ...... حبیب اللہ آئے

ارے اپنا تو عقیدہ یہ ہے...... کہ

اگر آدم علیہ السلام نے دانہ کھایا نہ ہوتا
تو ہم نے محمد صلی اللہ علیہ وسلم کو پایا نہ ہوتا

تو قربان جاؤں! آدم علیہ السلام کی کمال بندگی پر...... آدم علیہ السلام کی عجز و انکساری پر...... آدم علیہ السلام کی پاکدامنی و پارسائی پر...... آدم علیہ السلام کی بزرگی و نیازمندی پر...... کہ وہ غلطی پر بھی نہیں ہیں...... بلکہ اللہ کی حکمت کے ظہور کا سبب بنے ہیں...... اللہ کی منشائے الٰہی کی تکمیل کا باعث بنے ہیں...... لیکن چشم فلک گواہ ہے...... کہ:

اللہ کی بارگاہ میں گریہ زاری کر رہے ہیں
اللہ کی بارگاہ میں عاجزی و انکساری کر رہے ہیں

اس میں بھی حکمت تھی ...... کہ آدم علیہ السلام زمین پر آ کر اپنے رب کی رحمت والی نظر مانگ رہے تھے ...... معصوم ہو کر آنسو پہ آنسو بہا رہے تھے

ایسے میں آواز آئی...... اے آدم جب تم جنت میں رہتے تھے...... تو صرف دو رہتے تھے...... اور اب جب زمین پر آئے ہو تو پھر بھی دو ہو...... تو کیا میں نے اتنی بڑی جنت صرف دو ہی کیلئے بنائی تھی؟

اب پھر تمہیں جنت میں بھیج دوں گا...... لیکن تمہارے سبب سے...... اب:

مرسلین بھی جنت میں جائیں گے
نبیین بھی جنت میں جائیں گے

صدیقین بھی جنت میں جائیں گے
محسنین بھی جنت میں جائیں گے
کاملین بھی جنت میں جائیں گے
صالحین بھی جنت میں جائیں گے
عادلین بھی جنت میں جائیں گے
مومنین بھی جنت میں جائیں گے
مجاہدین بھی جنت میں جائیں گے
صائمین بھی جنت میں جائیں گے

آدم تیرے زمین پر آنے سے حکمت الٰہی پوری ہو رہی ہے...... اور اللہ کی جنت تیری اولاد سے بھری جا رہی ہے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## رضائے الٰہی کیلئے تکالیف میں پڑنا:

عزیزانِ گرامی!

جب یہ بات اپنی حکمتوں کے ساتھ واضح ہے...... کہ سیدنا آدم علیہ السلام نے اگر شجرِ ممنوعہ کے پاس جا کر...... دانہ کھا لیا...... تو اس میں کیا حکمتیں تھیں وہ بھی آپ کے سامنے ہیں...... لیکن جب ہم تاریخ پر نظر ڈالتے ہیں تو پتہ چلتا ہے کہ سیدنا آدم علیہ السلام اللہ کی بارگاہ میں عاجزی کر رہے ہیں...... انکساری کر رہے ہیں...... تواضع کر رہے ہیں...... گریہ زاری کر رہے ہیں...... اور بارگاہ الٰہی میں رو رو کر التجائیں کر رہے ہیں...... محمد عربی ﷺ کے کامل وسیلے سے دعائیں کر رہے ہیں...... تو صاف ظاہر ہے کہ سیدنا

آدم علیہ السلام کو ایک لمحہ بھی اپنے رب کی ناراضگی گوارہ نہیں ہے…… وہ چاہتے ہیں…… کہ:

میرا رب مجھ سے راضی رہے
میرا رب مجھ سے خوش رہے

کبھی دعا کر رہے ہیں

رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْلَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ

تو…… یہ سب آدم علیہ السلام اس لئے کر رہے ہیں کہ میرا رب مجھ سے راضی ہو جائے…… میرا رب مجھ سے خوش رہے

جہاں بھر کی تکالیف برداشت کرنا تو منظور ہے…… لیکن پھر بھی اپنے رب کی رضا ہی مقصود ہے…… یعنی ثابت ہوا کہ اس دنیا میں بہت ساری ایسی بے مثال ہستیاں گزری ہیں…… کہ جنہوں نے اپنے رب کی رضا کی خاطر ہر طرح کی تکلیف کو سینے سے لگا لیا اور اپنے رب کی رضا کا انعام پالیا

مثلاً…… سیدنا ابراہیم خلیل اللہ علیہ السلام کی ذات بابرکات کو ہی دیکھئے…… کہ اللہ کا حکم لوگوں تک پہنچا رہے ہیں…… اللہ کا پیغام انسانیت تک لے جا رہے ہیں…… اور آپ کو نمرود نے آگ میں گرانے کا پروگرام تیار کر لیا تو پھر کوئی اس دنیا میں ثابت نہیں کر سکتا کہ آگ میں گرنے کے خوف سے سیدنا ابراہیم علیہ السلام کے ارادے تبدیل ہوئے ہوں؟

نہیں بلکہ قرآن گواہ ہے کہ ابراہیم علیہ السلام نے اپنے رب کی رضا کی خاطر آگ میں گرنے کو بخوشی قبول فرما لیا…… اس لئے کہ اللہ کی رضا اسی

میں تھی ...... اور تا قیام قیامت تمام انسانیت اس واقع سے باخبر رہے گی ...... اس انعام خداوندی کے تذکرے قرآن سے پڑھتی رہے گی ...... کہ جب سیدنا ابراہیم علیہ السلام اپنے رب کی رضا کی خاطر سب کچھ برداشت کر رہے ہیں تو پھر اللہ تعالیٰ نے اپنی خوشنودی کی سند خلیل اللہ علیہ السلام کو ایسے عطا فرمائی ...... کہ:

وَاذْكُرْ فِی الْكِتٰبِ اِبْرٰهِیْمَ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّیْقًا نَّبِیًّا

اور قرآن ایک جگہ پر انعام خداوندی کا ذکر یوں بھی کرتا ہے ...... کہ

قُلْنَا یٰنَارُ كُوْنِیْ بَرْدًا وَّ سَلٰمًا عَلٰٓی اِبْرٰهِیْمَ

تو بات پھر وہیں آ گی کہ اللہ کے نبی ...... اپنے رب کی رضا کیلئے امتحان میں پڑ رہے ہیں ...... آگ میں چھلانگ لگائی جا رہی ہے ...... بیٹے کی گردن پر چھری چلائی جا رہی ہے ...... کبھی موسیٰ علیہ السلام فرعون کے دربار میں باطلین کو للکار رہے ہیں ...... اور اللہ کی بزرگی کا اعلان فرما رہے ہیں

تو آیئے پھر اس کے بعد کی بات کرتے ہیں ...... کہ انبیاء و رسل علیہم السلام تو سب کچھ اپنے رب کی رضا کی خاطر کرتے ہی رہے ہیں ...... اور پھر اس زمین کے سینے پر اور بھی ایسے قابل قدر نفوس پیدا ہوئے

کہ ...... جن کو دنیا آج بھی:

ابوبکر و عمر رضی اللہ عنہم کے نام سے جانتی ہے
عثمان و علی رضی اللہ عنہم کے نام سے جانتی ہے
حسن و حسین رضی اللہ عنہم کے نام سے جانتی ہے

عباس و حمزہ رضی اللہ عنہم کے نام سے جانتی ہے
طلحہ و زبیر رضی اللہ عنہم کے نام سے جانتی ہے
ابن عباس و ابن مسعود رضی اللہ عنہم کے نام سے جانتی ہے
حسان و صفوان رضی اللہ عنہم کے نام سے جانتی ہے
بلال و سلمان رضی اللہ عنہم کے نام سے جانتی ہے
اسامہ و خزیمہ رضی اللہ عنہم کے نام سے جانتی ہے

اور بھی ان کے ساتھی صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کہ جنہوں نے اولاد کی قربانیاں بھی دیں ہیں ...... مال کی قربانیاں بھی دیں ہیں ...... وطن و جائیداد کی قربانیاں بھی دیں ...... اور سلام کی سربلندی کیلئے:

دشت تو دشت صحرا بھی نہ چھوڑے ہم نے
بحر ظلمات میں دوڑا دیئے گھوڑے ہم نے

ان میں سے بہت ساروں نے تو بیویوں کے بیوہ ہو جانے کو برداشت کر لیا...... اولاد کے یتیم ہو جانے کی پرواہ نہیں کی...... مال کے خرچ ہو جانے کو خاطر میں نہ رکھا...... وطن سے دور چلے جانے کی پرواہ نہیں کی...... تلواروں کے سایے میں سانسیں اسلام کے نام کر دیں...... اور محمد عربی ﷺ کے قدموں پر جانیں قربان کر دیں

جب ہم پوچھتے ہیں کہ ان تمام عالی نفوس نے یہ سب کچھ کس کیلئے برداشت کیا...... تو جواب آتا ہے:

اللہ کی رضا کیلئے

اور پھر سرکار ﷺ کی حیات ظاہری کے بعد کے دور کو دیکھتے ہیں...... کہ اس میں بھی بے مثال قربانیاں پیش کی گئی ہیں

یعنی حضرت سیدنا امام حسین رضی اللہ عنہ ...... جنت کے وارث نانا...... کا نواسہ حسین رضی اللہ عنہ ...... جنتی ماں کا پیارا ...... حسین رضی اللہ عنہ ...... جنتی باپ کا نور العین حسین رضی اللہ عنہ ...... جنتی بھائی کا بھائی ...... حسین رضی اللہ عنہ میدان کربلا میں ...... بیٹے اللہ کی راہ میں پیش کر رہے ہیں...... جوان علی اکبر اللہ کے نام پر قربان ہونے کو پیش کر رہے ہیں...... معصوم علی اصغر کی حلق سے تیر نکال رہے ہیں ...... امام قاسم کا لاشہ اپنے کندھوں پر اٹھا کر لا رہے ہیں...... اور پھر آخر میں چشم فلک نے دیکھا کہ وہ حسین رضی اللہ عنہ نماز کی حالت میں ...... سجدے کی حالت میں...... اپنے رب کے حضور اپنی جان کا نذرانہ بھی پیش کر رہے ہیں۔

تو جب پوچھا کہ سخی حسین رضی اللہ عنہ نے یہ سب کس کیلئے کیا ہے...... حسین رضی اللہ عنہ کی خواہش کیا تھی؟ حسین رضی اللہ عنہ کا مشن کیا تھا؟

حسین رضی اللہ عنہ کا بے مثال قابل رشک جذبہ کیا تقاضا کر رہا تھا...... تو جواب آتا ہے کہ صرف اس لئے...... کہ:

اے ...... اللہ تو راضی ہو جا

## بے مثال کا کلام بھی بے مثال:

ابھی اس بات کو انجام تک لیجانے والا ہوں...... کہ جو بھی قربانی دے رہا ہے...... اللہ کی رضا کیلئے دے رہا ہے...... جو بھی امتحان دے رہا ہے...... اللہ کی رضا کیلئے دے رہا ہے...... یہ داستان تو بہت لمبی ہے......

کہ لوگ ایسے بھی ہوئے کہ جنہوں نے خون جگر دیکر اسلام کے چراغ کو روشن کیا ہے۔

جب بھی دین پاک کے خلاف کوئی فتنہ اٹھا...... کسی شرانگیزی نے سر اٹھایا ......تو اس کی سرکوبی کیلئے کسی مرد مومن نے اپنا کردار ضرور ادا کیا

آیئے اس حوالے سے بھی چند حوالے پیش کردوں

کہ...... ہمارا ایمان ہے اللہ قدیم اللہ کا کلام بھی قدیم

اللہ کی ذات قدیم ......اللہ کا کلام بھی قدیم
اللہ کی صفت بھی قدیم ......اللہ کا کلام بھی قدیم

نہ اس کی ذات حادث ہے......اور نہ ہی اس کی صفات حادث ہیں......تو اللہ کی ذات متکلم اور قرآن اس کا کلام ہے...... جب متکلم قدیم ہے......تو اس کا کلام بھی قدیم ہے:

جب متکلم کی ذات اعلیٰ ہے ......تو اس کا کلام بھی اعلیٰ ہے
جب متکلم کی ذات اکبر ہے ......تو اس کا کلام بھی معتبر ہے
جب متکلم کی ذات پاک ہے ......تو اس کا کلام بھی پاک ہے
جب متکلم کی ذات بے عیب ہے ......تو اس کا کلام بھی بے عیب ہے
جب متکلم کی ذات بے مثل ہے ......تو اس کا کلام بھی بے مثل ہے
جب متکلم کی ذات لاجواب ہے ......تو اس کا کلام بھی لاجواب ہے

لیکن چشم فلک نے یہ منظر بھی دیکھا ہے......تاریخ آخر تک اس واقعہ پر بھی شاہد ہے کہ مامون کے دربار میں جب قرآن کو مخلوق کہنے کا فتنہ شروع ہوا......تو ایسے ماحول میں...... ایسے ظالم کے سامنے کسی کی جرأت

نہیں تھی کہ کوئی مامون کے سامنے سر اٹھا سکے...... اس کے رعب کی وجہ سے اس کے ظلم و ستم کی وجہ سے...... اس کے اقتدار اور اختیار کی وجہ سے...... تو ایسے میں جس ہستی نے آوازِ حق بلند کی...... وہ حضرت امام احمد بن حنبل رضی اللہ عنہ کی آواز تھی...... جب قرآن کو مخلوق کہنے کا فتنہ سر اٹھانے لگا تو ایسے میں امام احمد بن حنبل رضی اللہ عنہ نے مامون کے نازیبا ارادوں کو پاش پاش کر دیا...... اس کی خواہشات کا شیرازہ بکھیر دیا...... مامون جیسے حاکم وقت کی آنکھوں میں آنکھیں ڈال کر بتایا...... کہ قرآن مخلوق نہیں ہے...... قرآن اللہ کا کلام ہے...... اور اللہ کی ذات بھی قدیم ہے...... اور قرآن اللہ کا کلام بھی قدیم ہے...... نہ بے عیب متکلم کی مثال دی جاسکتی ہے...... اور نہ ہی اس خالق و مالک کے ذاتی کلام کی نظیر پیش کی جاسکتی ہے اور نہ ہی اس کلام برحق کو ''مخلوق'' کہا جاسکتا ہے...... تو مامون نے حضرت امام احمد بن حنبل رضی اللہ عنہ کو بطور سزا...... قید میں ڈال دیا...... علم و حکمت کے اس تاجدار کو ستایا گیا...... زہد و تقویٰ کے اس پیکر پر ظلم ڈھائے گئے...... ہر طرح سے امام احمد بن حنبل رضی اللہ عنہ کا بائیکاٹ کیا گیا...... حضرت امام احمد بن حنبل رضی اللہ عنہ کی پیٹھ پر کوڑے برسائے گئے اور پھر اسی ظلم کی پاداش میں موت کی آغوش میں چلے گئے۔

جب میں نے علم و حکمت کے اس تاجدار یعنی امام احمد بن حنبل رضی اللہ عنہ سے پوچھا کہ حضرت یہ ظلم و ستم برداشت کرنے کی وجہ کیا تھی...... یہ قید و بند کی صعوبتیں برداشت کرنے کی وجہ کیا تھی؟

تو جواب ملا سب اس لئے کیا ہے...... کہ اے اللہ تو راضی ہو جا! اور

پھر اس کے بعد دنیادار بادشاہوں کے خوشامدیوں کا ٹولہ جیسے بے وقوف لوگ ''نورتن'' کہتے ہیں...... ارے یہ کیسے ہو سکتا کہ اسلام کے خلاف سازش کرنے والوں کو ''رتن'' کہا جائے؟ ارے پتھر سے بھی کم تر ہو اور اس کو ہیرا کیسے کہا جائے گا؟

تو انہوں نے ''اکبر بادشاہ'' کی خوشامد کرنا شروع کی...... اور اس کو ظل الٰہی، ظل الٰہی گردانا شروع کر دیا...... تو ایسے میں بادشاہ اکبر کا بھی دماغ خراب ہو گیا...... اور ''نورتنوں'' کے اس ظل الٰہی نے ایک نیا دین الٰہی بنا لیا...... جب دین حق کے احکامات کو بدلنے کی یہ سازش شروع ہوئی جب اکبر کا بنایا ہوا خود ساختہ ''دین الٰہی'' لوگوں کے سامنے پیش کیا جانے لگا تو تاریخ گواہ ہے...... کہ ایسے لوگوں کی سرکوبی کرنے کیلئے...... ایسے باطل عقائد ایجاد کرنے والے لوگوں کو للکارنے کیلئے...... حضرت مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ حضرت امام ربانی رحمۃ اللہ علیہ تشریف لائے...... آپ نے حق کی آواز کو اٹھایا...... ان ایسے ظالموں کو للکارا...... تو جب یہ سلسلہ نقشبندیہ کا تاجدار...... اہلسنت کا معیار...... زہد وتقویٰ کا معیار...... مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ حق کی آواز اٹھانے کیلئے...... باطل کو للکارنے کیلئے میدان حق میں اترے تو ان کے دلائل کے سامنے اکبر بادشاہ اور اس کے کم فہم بے عقل نورتن لاجواب ہوگے...... ذلیل و رسوا ہوگے

تو پھر اس ظالم نے بھی اس مرد حق، مرد کامل، فقیر کامل...... حضرت مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ کو قید خانے کی سلاخوں کے پیچھے ڈال دیا...... تو اب

یہ علم و حکمت کا تاجدار قید خانے کی تکلیف برداشت کر رہا ہے...... ظالم کے ہر وار کو اپنے سینے پر برداشت کر رہا ہے...... لیکن چشم فلک گواہ ہے کہ حضرت امام ربانی رحمۃ اللہ علیہ کے پاؤں میں لرزہ نہیں آیا...... اپنے موقف صداقت کو بدلا نہیں...... اپنی جان کی پرواہ کیے بغیر خود کو داؤ پر لگا دیا...... لیکن اکبر بادشاہ کا غلط منصوبہ ناکام بنا دیا اور پھر جب امام ربانی، حضرت مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ سے یہ سوال کیا گیا...... کہ حضرت آپ نے یہ اندھیرے قبول کیوں کیے ہیں؟ آپ نے یہ سلاخوں کے پیچھے کی زندگی کو ترجیح کیوں دی؟ آپ نے یہ تکالیف اپنے سینے کیوں لگائی ہیں...... تو میرے امام کا جواب آتا ہے...... کہ:

صرف اس لئے کہ! اے اللہ تو راضی ہو جا!

تاریخ گواہ ہے...... کہ اس دنیا میں اسلام کے خلاف اٹھنے والے فتنوں نے جب سر اٹھایا تو تب تب ہمیں رب کی رحمت نے بچایا...... جیسے دیکھیے!

ابلیس آیا...... بچانے کیلئے آدم علیہ السلام آئے
فرعون آیا...... بچانے کیلئے موسیٰ علیہ السلام آئے
نمرود آیا...... بچانے کیلئے ابراہیم علیہ السلام آئے
ابوجہل و ابولہب آیا...... بچانے کیلئے محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم آئے
منکرین زکوٰۃ ابھرے...... بچانے کیلئے صدیق اکبر رضی اللہ عنہ آئے
جب بلوائی آئے...... بچانے کیلئے ذوالنورین رضی اللہ عنہ آئے
جب خارجیوں نے سر اٹھایا...... بچانے کیلئے مولا علی رضی اللہ عنہ آئے

جب یزیدیوں نے آنکھ اٹھائی ...... بچانے کیلئے حسین ؓ آئے
جب مامون نے شرانگیزی کی ...... بچانے کیلئے امام احمد بن حنبل ؓ آئے
جب اکبر کے عقائد سامنے آئے ...... بچانے کیلئے مجدد الف ثانی ؒ آئے

ایک ایک فتنہ آتا تھا...... تو اس کو اسی جگہ پر دبا دیا جاتا تھا...... ناکام بنا دیا جاتا تھا...... لیکن برصغیر پر جب انگریزوں کا قبضہ ہوا...... تو انہوں نے ''پلاننگ'' کی...... کہ اسلام کو ایک دو فتنوں سے نہیں مٹایا جا سکتا...... چار طرف حملہ کرو...... ہر طرف سے اس کو گھیرے میں لو...... ایسا اسلام کو گھیرے میں لو...... کہ:

مسجدیں بھی خطرے میں ہوں
خانقاہیں بھی خطرے میں ہوں
عشق مصطفیٰ ﷺ کی درسگاہ بند ہو جائے!
اولیا کے فیضان کا در بند کر دیا جائے

اب انگریز کی اس پلاننگ کے تحت اسلام پر چوطرفہ حملہ شروع ہو گیا۔

## انگریز کی سازش...... اور فتنوں کی بوچھاڑ:

پہلے فتنہ اٹھا...... کہ ہم زکوٰۃ نہیں دیں گے
تو...... اس پر لڑائی ہوئی
پھر فتنہ اٹھا...... کہ ہم حضرت علی کو نہیں مانیں گے
تو...... اس پر لڑائی ہوئی
پھر فتنہ اٹھا...... کہ حسین باغی ہیں
تو...... اس کو دبا دیا گیا

پھر فتنہ اٹھا...... کہ قرآن مخلوق ہے

تو...... اس کو دبا دیا گیا

پھر فتنہ اٹھا...... معتزلہ کا

تو...... اس کو دبا دیا گیا

لیکن جب ایک ایک فتنے آتے تھے...... تو اس وقت ان کو دبانا آسان تھا...... لیکن اب تو چاروں طرف سے فتنے آنے لگے!

ہر طرف سے کتابیں لکھی جانیں لگیں......

کبھی ...... گنبد خضریٰ پر حملہ
کبھی ...... سرکار بغداد پر حملہ
کبھی ...... آقائے سہرورد پر حملہ
کبھی ...... حیثیت اہل سنت پر حملہ
کبھی ...... مولائے نقشبند پر حملہ
کبھی ...... شریعت پر حملہ
کبھی ...... طریقت پر حملہ
کبھی ...... معرفت پر حملہ

اور پھر سب ملا کر رسول ﷺ کی ذات پر چاروں طرف سے حملے ہونے لگے......

کوئی رسول پاک کے علم کو جانوروں کے علم سے تشبیہ دینے لگا
کوئی رسول پاک کے علم غیب پر انکار کرنے لگا
کوئی رسول پاک کے بعد کسی نبی کے پیدا ہونے کی بات کرنے لگا

کوئی شیطان کی وسعت علمی کو رسول پاک سے زیادہ کہنے لگا
کوئی رسول پاک کو مر کر مٹی میں ملنے والا کہنے لگا
نہ جانے کیا کیا...... میرے رسول ﷺ کے متعلق کہا جانے لگا
کشمیر سے کنیا کماری تک
پنجاب سے بنگال تک
پورا برصغیر اب فتنوں کی لپیٹ میں آگیا

تو ایسے میں ہر سنی تڑپا...... قادری تڑپنے لگا...... چشتی تڑپنے لگا...... نقشبندی تڑپنے لگا...... سہروردی تڑپنے لگا...... نظامی بے چین ہو گیا...... مارے غم کے صابری کی نیند اُڑ گئی...... تمام خانقاہی نظام میں زلزلہ آنے لگا...... کہ اے میرے اللہ اگر ایک فتنہ ہو تو ہم اس سے بچ جائیں...... اب تو چاروں طرف سے حملہ ہو رہا ہے...... اب تو!

رسول ﷺ کی ......نبوت پر حملہ
رسول ﷺ کی ......رسالت پر حملہ
رسول ﷺ کی ......عظمت پر حملہ
رسول ﷺ کے ......حاضر و ناظر پر حملہ
رسول ﷺ کے ......اختیار پر حملہ
رسول ﷺ کے ......علم غیب پر حملہ
رسول ﷺ کے ......دربار پر حملہ
رسول ﷺ کی ......صفات پر حملہ
رسول ﷺ کی ......ذات پر حملہ

تو اب اس سے کیسے بچا جائے؟ تو اتنے میں مدینے والے نے تسلی دے دی...... اے سنیو! مت گھبراؤ

میں تمہیں بچانے کیلئے...... "احمد" رضا دے رہا ہوں

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ صلی اللہ علیہ وسلم

## خدا چاہتا ہے رضائے محمد صلی اللہ علیہ وسلم

ابھی پیچھے میں نے عرض کیا...... کہ تمام انبیاء و رسل خدا کی رضا دیکھتے رہے ہیں...... جیسا...... کہ:

حضرت آدم علیہ السلام ...... خدا کی رضا دیکھیں
حضرت شیث علیہ السلام ...... خدا کی رضا دیکھیں
حضرت نوح علیہ السلام ...... خدا کی رضا دیکھیں
حضرت ابراہیم علیہ السلام ...... خدا کی رضا دیکھیں
حضرت لوط علیہ السلام ...... خدا کی رضا دیکھیں
حضرت ذکریا علیہ السلام ...... خدا کی رضا دیکھیں
حضرت یحیٰی علیہ السلام ...... خدا کی رضا دیکھیں
حضرت موسیٰ علیہ السلام ...... خدا کی رضا دیکھیں
حضرت یعقوب علیہ السلام ...... خدا کی رضا دیکھیں
حضرت یوسف علیہ السلام ...... خدا کی رضا دیکھیں
حضرت اسماعیل علیہ السلام ...... خدا کی رضا دیکھیں
حضرت ایوب علیہ السلام ...... خدا کی رضا دیکھیں
حضرت شعیب علیہ السلام ...... خدا کی رضا دیکھیں

حضرت ادریس علیہ السلام ...... خدا کی رضا دیکھیں
حضرت عیسیٰ علیہ السلام ...... خدا کی رضا دیکھیں

ایک لاکھ چوبیس ہزار کم وبیش انبیاء علیہم السلام خدا کی رضا دیکھیں...... کروڑوں اولیاء خدا کی رضا دیکھیں

اے مدینے والے تیرا نصیب کتنا اونچا ہے...... کہ تیرا رب تیری رضا دیکھ رہا ہے...... آدم علیہ السلام سے لیکر قیامت تک سب خدا کی رضا دیکھ رہے ہیں...... اے میرے رسول ﷺ آپ کتنے بے مثال ہیں...... کہ

خدا آپ ﷺ کی رضا دیکھ رہا ہے؟ اور خود اعلان کر رہا ہے

وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى

اللہ فرما رہا ہے...... کہ اے محبوب ہم آپ کو اتنا دیں گے...... کہ آپ راضی ہوجاؤ!

## خدا دینے والا...... حضور ﷺ لینے والے:

قرآن کی اس آیت مقدسہ پر غور کرو...... تو صاف ظاہر ہے...... کہ:

جلیل دے رہا ہے...... خلیل لے رہا ہے
مصور دے رہا ہے...... سید البشر لے رہا ہے
قدیر دے رہا ہے...... نذیر لے رہا ہے
مولیٰ دے رہا ہے...... بندہ لے رہا ہے
مالک دے رہا ہے...... مملوک لے رہا ہے
محب دے رہا ہے...... محبوب لے رہا ہے

طالب دے رہا ہے ......مطلوب لے رہا ہے
معبود دے رہا ہے ......عابد لے رہا ہے
مسجود دے رہا ہے ......ساجد لے رہا ہے
خدا دے رہا ہے ......مصطفیٰ لے رہا ہے
لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰـہ ......دے رہا ہے
مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ ......لے رہا ہے

اللہ بڑھا رہا ہے ......رسول ﷺ بڑھ رہے ہیں
اللہ سنوار رہا ہے ......رسول ﷺ سنور رہے ہیں
اللہ بے حساب دے رہا ہے ......رسول ﷺ بے حساب لے رہے ہیں

ادھر مولوی صاحب کہہ رہے ہیں...... کہ اللہ نے رسول ﷺ کو یہ دیا اور فلاں نہیں دیا...... یعنی خود سے ہی تخصیص کر رہے ہیں...... حد بندی کر رہے ہیں لیکن حقیقت تو یہ ہے...... کہ جب خدا اپنے مصطفیٰ ﷺ کو دے رہا تھا...... تو اس دینے کی حد تو جبرئیل علیہ السلام کو بھی معلوم نہیں...... آج مولوی صاحب تمہیں کیسے حد معلوم ہوگی؟

دیکھئے قرآن کہہ رہا ہے

وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى

اور ہم آپ کو اتنا دیں گے کہ آپ راضی ہو جاؤ

ارے غور تو کرو...... اللہ نے يُعْطِيْكَ فرمایا ہے...... یعنی دینے کا ذکر فرمایا ہے...... لیکن حد نہیں مقرر فرمائی...... قید کوئی نہیں لگائی...... تخصیص کوئی نہیں بیان فرمائی...... کہ اللہ کیا دے رہا ہے...... کتنا دے رہا ہے...... کب دے رہا ہے......

کب تک دے رہا ہے؟

تو قرآن کی نص سے یہ بات ثابت ہوگی...... کہ

اللہ ......بے حساب دے رہا ہے
محبوب ......بے حساب لے رہا ہے
اللہ ......بغیر قید کے دے رہا ہے
محبوب ......بغیر قید کے لے رہا ہے

تو ثابت ہوا...... کہ اللہ کے دینے کی حد نہیں ہے...... اور محمد مصطفیٰ ﷺ کے لینے کی حد نہیں ہے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## دینے کی مشہور دو قسمیں:

عزیزان گرامی

اب عطا کے دو طریقے ہیں...... ایک مثال عرض کرتا ہوں کہ مسئلہ سمجھنے میں آسانی ہو جائے...... کہ میں نے جب پہلی بار ''جامعہ ضیاء العلوم'' کو دیکھا تو دل بہت خوش ہوا...... کہ بڑی دیدہ زیب بلڈنگ ہے...... بڑی خوبصورت عمارت کی لاجواب نقش ونگاری نے دل سے داد دینے پر مجبور کر دیا......یعنی میں جامعہ کو دیکھتے ہی حیرت میں پڑھ گیا......لیکن جب میری ملاقات رئیس المحققین علامہ حسین الدین شاہ صاحب سے ہوئی...... تو وہ حیرت ''اعتراف حقیقت'' میں بدل گئی کہ جب رہنما اتنا اچھا ہے......تو ان کا بنوایا ہوا بھی ظاہر ہے سب اچھا ہی ہوگا

اور پھر جب ایک امیر ترین شیخ نے یہ اعلان سنا کہ...... اتنا بہترین

ادارہ بن رہا ہے ...... لاجواب بلڈنگ بن رہی ہے ...... بچیوں کیلئے باپردہ تعلیم وتربیت کا انتظام کیا جارہا ہے ...... تو جب یہ اعلان اس سیٹھ صاحب نے سنا تو اس نے کچھ دینے کا ارادہ کیا اور پھر دینے کی دو قسموں میں سے اس نے ایک طریقے کو اپنایا اور حضرت صاحب کو کہا کہ میں آپ کے ساتھ تعاون کرنا چاہتا ہوں ...... اس جامعہ کیلئے کچھ دینا چاہتا ہوں ...... تو آپ اپنے سیکرٹری صاحب کو میرے آفس میں بھیج دیجئے گا ...... تو میں ان کو ''پانچ لاکھ روپے'' پیش کردوں گا۔

تو دیکھئے! کچھ دینے کے پہلے طریقے کی طرف ...... کہ کچھ دینے کا پہلا طریقہ جو اس سیٹھ نے اپنایا کہ میں آپ کو پانچ لاکھ روپے دوں گا ...... یعنی دینے والے نے پانچ لاکھ فکس کردیا ...... پانچ لاکھ دینے کی قید لگادی ...... تو اب وقت مقررہ پر حضرت صاحب کے سیکرٹری صاحب وہ مقررہ رقم لینے ...... مقررہ وقت پر مقررہ جگہ پر تشریف لے گئے ...... تو سیٹھ صاحب کو جاکر تعارف کروایا کہ جناب میں حضرت صاحب کا سیکرٹری ہوں اور آپ نے ادارہ کیلئے تعاون کا اعلان کیا تھا تو وہ سیٹھ صاحب بولے جی ہاں! میں نے پانچ لاکھ دینے کا اعلان کیا تھا۔ آیئے تشریف لایئے ...... آپ بیٹھیں میں ابھی رقم منگواتا ہوں ...... تو پھر سیٹھ صاحب نے اپنے منشی صاحب کو آواز دی منشی جی! منشی صاحب فوراً دوڑتے ہوئے آئے ...... جی سیٹھ جی؟ کیا حکم ہے؟ تو سیٹھ صاحب کہنے لگے کہ اندر تجوری سے پانچ لاکھ روپے لے آیئے ...... تو اب منشی گیا ...... اور ایک ایک نوٹ گن گن کر بڑی احتیاط اور ذمہ داری سے پانچ

لاکھ روپے لاکر سیٹھ صاحب کی میز پر رکھ دیئے تو اب سیٹھ صاحب نے بھی گن گن کر پوری رقم ...... یعنی پانچ لاکھ روپے سیکرٹری صاحب کے حوالے کر دیئے ...... اور ساتھ میں نے کہا کہ سیکرٹری صاحب آپ ابھی یہ ساری رقم گن لیں ...... پوری پانچ لاکھ ہے

یہ بار بار پانچ لاکھ ...... پانچ لاکھ کیوں کہا جا رہا ہے ...... صرف اس لئے کہ یہاں دینا فکس کیا گیا ہے ...... پانچ لاکھ کی قید مقرر کی گئی تھی ...... اس لئے سیٹھ بھی پانچ لاکھ گن رہا ہے ...... اور منشی بھی پانچ لاکھ شمار کر رہا ہے ...... اور سیکرٹری صاحب بھی پانچ لاکھ گن کر وصول کر رہے ہیں تو اس لئے ثابت ہوا کہ جب دینے میں حد مقرر کی جائے ...... جب دینے میں فکس کرنے کی قید لگائی گئی ہو تو دینا بھی شمار ہوتا ہے ...... اور لینا بھی شمار ہوتا ہے۔

### دوسری قسم:

اب آپ نے ایک قسم کو سمجھ لیا ...... یعنی اس دینے کے طریقے کو ذہن نشین کر لیا کہ جس میں حد مقرر کی گئی ہو ...... اس میں کچھ زیادہ بھی نہیں کیا جاتا اور کم بھی نہیں کیا جاتا ...... اس لئے کہ ایک حد مقرر ہوتی ہے ...... دوسری قسم کچھ دینے کی وہ ہے کہ جس میں دینے کی حد مقرر نہ کی گی ہو ...... دینے کی کوئی قید نہ لگائی گی ہو ...... یعنی فکس نہ کیا گیا ہو۔

تو وہ دینے کا طریقہ یہ ہے کہ سیٹھ صاحب کہہ کر جائیں کہ حضرت آپ کو میں اتنا دوں گا کہ آپ راضی ہو جائیں گے ...... آپ کو اتنا دیا جائے گا کہ آپ خوش ہو جائیں گے۔

یعنی ...... اس طریقے سے دینے میں ...... دینے کی حد مقرر نہیں ...... کوئی فکس نہیں کیا گیا ...... بلکہ اب تو جس کو دیا جا رہا ہے اس کی ''رضا'' مقصود ہے تو اب معاملہ پہلے طریقے کے بالکل برعکس ہو گیا ...... یعنی اب یہ کہا گیا کہ حضرت میں آپ کو اتنا دوں گا کہ آپ خوش ہو جائیں گے ...... آپ راضی ہو جائیں ...... تو اب جب سیکرٹری صاحب مقررہ وقت پر سیٹھ صاحب کے پاس گئے تو اب جب سیٹھ کو اپنا تعارف کروایا ...... تو سیٹھ نے فوراً منشی صاحب کو بلایا اور کہا کہ جاؤ منشی جی تجوری سے مال لے آؤ ...... منشی نے پوچھا ...... جناب کتنا لے آؤں؟ تو سیٹھ نے فوراً منشی سے کہا خاموش ہو جاؤ بس تم جاؤ اور جتنے ہو سکتے ہیں زیادہ سے زیادہ لے آؤ!

تو اب منشی صاحب اندر گئے اور تجوری سے ڈھیروں روپیہ اٹھا لائے ...... اب جب وہ روپیہ گنے بغیر ہی منشی لے آیا تو سیٹھ کے سامنے جب دولت کا ڈھیر لگ گیا ...... تو اب وہ مال منشی بغیر حد کے لایا ہے ...... بغیر شمار کرنے کے لایا ہے ...... اور اسی طرح ہی سیٹھ نے سب کچھ سیکرٹری کے حوالے کر دیا ...... تو اب سیٹھ پیسوں کی گھٹیاں اٹھا اٹھا کر سیکرٹری کو دیتا جا رہا ہے اور اس کے چہرے کی طرف دیکھ رہا ہے کہ یہ خوش کب ہوتا ہے ...... یہ راضی کب ہوتا ہے۔

تو مثال پر غور کرنا کہ جب دینا فکس کیا تھا ...... تو اس وقت دینے والے نے بھی گن کر دیا ...... لینے والے نے بھی گن کر لیا ...... لانے والے نے بھی گن کر لایا ...... تو جب محبوب کی خوشی مقصود تھی ...... محبوب کی رضا مقصود تھی ...... تو پھر

دینے والا بھی بغیر حساب کے دے رہا ہے...... اور لینے والا بھی بغیر حساب کے لے رہا ہے!

تو بلا تشبیہ...... اللہ نے جب اپنے حبیب ﷺ کو دینے کا اعلان کیا ہے تو فکس نہیں کیا...... حد مقرر نہیں فرمائی...... بلکہ فرمایا

وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى

اور ہم آپ کو اتنا دیں گے کہ آپ راضی ہو جائیں

تو اب تو صرف رب اپنے محبوب ﷺ کو خوش کرنا چاہتا ہے...... تو اس میں کوئی حد نہیں لگائی کہ میں کتنا دوں گا!

بلکہ اب تو رضا مقصود ہے! قرآن پڑھ کر دیکھ لو

وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى

یعنی...... اللہ دینے کو شمار نہیں کر رہا

رسول ﷺ لینے کو شمار نہیں کر رہے

اللہ دینے میں فکس نہیں کر رہا

رسول ﷺ لینے میں فکس نہیں کر رہے

اللہ کے دینے میں انتہا نہیں ہے

رسول ﷺ کے لینے میں انتہا نہیں ہے

اللہ کے دینے میں کوئی تخصیص نہیں

رسول ﷺ کے لینے میں تخصیص نہیں ہے

اللہ دینے والا بغیر کسی حد کے اپنے حبیب ﷺ کو دیئے جا رہا ہے...... اور رسول ﷺ بغیر حدود و قیود کے اپنے رب سے لیتے جا رہے ہیں

اس لئے کہ دینے کی بھی حد نہیں...... اور لینے میں بھی کوئی حد نہیں وہ اس لئے...... کہ محبوب ﷺ کی رضا مقصود ہے

وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى
وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

……

## نماز اور زکوٰۃ کی جامعیت

نَحْمَدُهٗ وَ نَسْتَعِيْنُهٗ وَ نَسْتَغْفِرُهٗ وَ نُؤْمِنُ بِهٖ وَ نَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَ نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَ مِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمٰلِنَا وَ مَنْ يَّهْدِيْهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَ مَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِیَ لَهٗ وَ نَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَ نَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَ نَا مَوْلَانَا وَ حَبِيْبَنَا وَ سِرَاجَنَا وَ اَشْرَفَنَا وَ سَيِّدَ نَا مُحَمَّدٍ ﷺ

اَمَّا بَعْدُ!

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَ تَعَالٰی فِی الْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ وَ الْفُرْقَانِ الْحَمِيْدِ...... اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتُوا الزَّكٰوةَ
صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلٰنَا الْعَظِيْمُ

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ط
يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝

بارگاہ رسالت مآب ﷺ میں ہدیہ درود و سلام پیش کیجیے

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

محمد ﷺ اور آلِ محمد ﷺ پر ایک مرتبہ اور درود پڑھیئے!

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

آج کے اس پروگرام میں...... میں نے جید علماء کرام اور مشائخ عظام کی موجودگی میں وہ آیت کلام ربانی تلاوت کی ہے...... کہ آج اس پر ہی سب سے زیادہ زور دینے والے (نماز اور زکوٰۃ پر) بھی اس کے تقاضوں کو صحیح طرح سے سمجھے نہیں ہیں...... اور میں وثوق سے کہتا ہوں کہ اگر یہ تمام لوگ ان دونوں یعنی نماز اور زکوٰۃ کے صحیح تقاضوں کو سمجھ جاتے...... کبھی راہ حق سے ہٹتے نہیں:

## نماز اور زکوٰۃ کی پہچان:

اگر کوئی نماز اور زکوٰۃ کی حقیقت کو پہچانے بغیر ہی نگر نگر...... قریہ قریہ...... گلی گلی...... گھومتا پھرے...... جیسے کہ آج بھی بہت سارے لوگ ایسا ہی کچھ کر رہے ہیں اور اگر یہ لوگ نماز اور زکوٰۃ کو پہچان جاتے...... تو ان کے عقائد میں شامل بہت ساری چیزوں کا ثمر ان لوگوں کو نماز اور زکوٰۃ کو سمجھنے سے ہی میسر ہو جاتا...... خیر کہنے کا مطلب ہے کہ نماز اور زکوٰۃ بہت سارے معاملات حل کر رہی ہے اور بہت سارے سوالات کا جواب دے رہی ہے...... اور بہت سارے عقائد کی درستگی کے راستے عنایت کر رہی ہے...... تو اللہ تعالیٰ نے فرمایا:

وَاَقِیْمُوا الصَّلٰوۃَ وَاٰتُوا الزَّکٰوۃَ

اور نماز قائم کرو اور زکوٰۃ ادا کرو

تو یہاں اپنی گفتگو کے آغاز میں ہی میں آپ حضرات کی بہت زیادہ توجہ چاہوں گا...... کہ

ہمارا ایمان ہے...... کہ ہم پر حج بھی فرض ہے

اور حج کی فرضیت کا قرآن میں ذکر ہے اور یہ بات بھی قابل توجہ ہے...... کہ قرآن میں جہاں ''حج'' کی فرضیت کا ذکر ہے...... وہاں صرف ''حج'' ہی کا ذکر ہے...... اور ''حج'' کے ساتھ ملا کر اللہ نے دوسری کسی فرض عبادت کا ذکر ہی نہیں کیا

ار دوسری طرف قرآن میں ''روزے'' کا ذکر بھی ہے...... اور روزہ بھی تو ایک فرض عبادت ہے...... لیکن جہاں قرآن میں ''روزے'' کا ذکر ہے...... صرف روزے ہی کا ذکر ہے...... ساتھ ملا کر کسی دوسری عبادت کا ذکر نہیں ہے...... یعنی صرف فرض عبادت ''روزہ'' ہی کا اکیلے ذکر فرمایا گیا ہے

اور پھر اسی طرح قرآن میں ایک اور فرض یعنی ''جہاد فی سبیل اللہ'' کا ذکر بھی ہے...... ہمارا ایمان ہے کہ ''جہاد فی سبیل اللہ'' بھی عبادت ہے...... اور ہے بھی فرض عبادت...... لیکن قرآن کے اندر جہاں...... جہاد فی سبیل اللہ کا ذکر ہے...... وہاں صرف جہاد کا ہی ذکر ہے...... ساتھ دوسری فرض عبادت کا ''متصلاً'' یعنی ملا کر ذکر نہیں فرمایا گیا!

لیکن جب نماز جیسی فرض عبادت کا ذکر فرمایا گیا...... تو اللہ تعالیٰ نے قرآن پاک میں صرف نماز کی فرضیت کا ہی ذکر نہیں فرمایا بلکہ نماز کے ساتھ ہی زکوٰۃ کی

فرضیت کا ذکر بھی فرمایا...... جیسا کہ میں نے آیت مقدسہ تلاوت کی ہے...... مشہور آیت مقدسہ ہے جس میں اللہ تعالیٰ فرمارہا ہے

وَاَقِیْمُوا الصَّلٰوۃَ وَاٰتُوا الزَّکٰوۃَ

نماز قائم کرو اور زکوٰۃ ادا کرو

## 1- نکتہ:

اصل میں عبادتیں دو ہیں...... دونوں ہی فرض ہیں...... دونوں کی فرضیت بھی قرآن کی نص سے ثابت ہے......

دونوں عبادتیں ......جدا جدا ہیں
دونوں عبادتیں ......علیحدہ علیحدہ ہیں

لیکن ان کے بیان کرنے کے معیار کو دیکھو......کہ:

نماز کو زکوۃ کیساتھ بیان کیا
زکوٰۃ کو نماز کیساتھ بیان کیا

## زکوٰۃ کی جامعیت

سب سے پہلے آپ زکوٰۃ کو دیکھیں...... کہ ''زکوٰۃ'' اسلام کے اندر تقسیم زر کا ایک انتہائی عادلانہ نظام ہے...... مفلسی کو ختم کرنے کا باضابطہ ایک معیاری نظام ہے...... مسلم سوسائٹی سے مفلسی دور کرنے کا ایک مضبوط نظام ہے

اگر لاہور میں کسی نے کسی حاجت مند کو بیس روپے دے دیئے...... اور وہ فوراً کسی ہوٹل پر گیا...... اور جا کر فوراً کہنے لگا...... کہ روٹی لاؤ...... ہوٹل والے نے پوچھا...... ارے پیسہ تمہارے پاس ہے؟ تو وہ بولا ہاں ہے؟ تم بس جلدی

سے روٹی لے آؤ...... تو اس کی تنگی ختم ہو گی

بھوک ختم ہو گی

تو اب دیکھئے...... کہ جب آپ نے کسی ضرورت مند کو 20 روپے روٹی کیلئے دے دیئے تو اب جب کہ وہ حاجت مند روٹی کھا چکا تو اس نے وہ 20 روپے ہوٹل والے کو دے دیئے...... اور پھر وہ جو پیسے اس ہوٹل والے کے پاس آئے تو وہ اس کی رقم کا حصہ بن گے...... اس کی آمدن کا حصہ بن گے...... اور اب وہ ہوٹل والا بھی تو گوشت کسی قصائی سے خریدتا ہے؟ تو اس نے وہ پیسے قصائی کو دے دیئے...... ارے پھر وہ قصائی بھی تو جانور کسی سے خرید کر لاتا ہے...... تو اس نے وہ پیسے آگے قصائی کو دے دیئے...... اور اب وہاں سے پیسے چلے گے...... بازار میں کسی کپڑے والے کے پاس...... اور پھر وہاں سے بھی کلاتھ مارکیٹ میں چلے گے...... اور اسی طرح سے وہ پیسہ چلتا چلتا کہیں کا کہیں پہنچ گیا!

اب دیکھئے کہ جب آپ نے اپنے ہاتھ سے 20 روپے کے نوٹ کو چلایا تو وہ دوڑنے لگ گیا...... کہاں سے کہاں تک چلتا گیا...... خدا جانے کتنے لوگوں کی مشکلیں حل کرتا گیا...... کتنیں لوگوں کی ضرورتیں پوری کرتا گیا؟

دیکھئے پیسے نے ایک بھوکے کو کھانا کھلا دیا

ہوٹل والے کے کاروبار کو بڑھا دیا

تو اگر یہی 20 روپے اگر آپ کے ہاتھ میں رہتے...... آپ نے اگر کسی کو نہ دیئے ہوتے تو......

کتنے لوگوں کی پریشانی بڑھ جاتی؟

کئیں لوگوں کی بھوک بڑھ جاتی؟

تو بات اس نتیجے پر پہنچی کہ ایک مثال سے یہ ثابت ہوا...... کہ اگر روپے کو روک لو تو ''پرابلم'' پیدا ہو جاتے ہیں...... اور اگر اس روپے کو ہاتھ سے چلا دو تو بے شمار لوگوں کے ''پرابلم'' ختم ہو جاتے ہیں

اسی لئے تو آج ہماری حکومتیں کہتیں ہیں کہ جس روپے کو چلا دیا جائے...... وہ ''وائٹ منی'' ہے...... اور جس روپے کو دبا لیا جائے...... جس روپے کو روک لیا جائے...... وہ ''بلیک منی'' ہے

تو آج حکومتیں اس کے متعلق قانون سازی کر رہی ہیں...... کہ:

ملک کو ...... ''بلیک منی'' سے بچاؤ
معاشرے کو ...... ''بلیک منی'' سے بچاؤ
ریاست کو ...... ''بلیک منی'' سے بچاؤ
حکومت کو ...... ''بلیک منی'' سے بچاؤ

یہاں پر میں ایک بات کرنا چاہتا ہوں...... کہ:

امریکہ اور برطانیہ کو آج خیال آیا ...... کہ ملک کو بلیک منی سے بچاؤ
ہندوستان و پاکستان کو آج خیال آیا ...... کہ ملک کو بلیک منی سے بچاؤ
افغانستان و ایران کو آج خیال آیا ...... کہ ملک کو بلیک منی سے بچاؤ
یونان و سوڈان کو آج خیال آیا ...... کہ ملک کو بلیک منی سے بچاؤ

اور ''بلیک منی'' آج کے ہر ملک میں قانوناً جرم قرار پایا...... لیکن آؤ دیکھو اسلام کے اسلامی نظام کو...... کہ آج سے چودہ سو سال پہلے ہی مدینے کی چٹائی پر بیٹھ کر میرے نبی ﷺ نے تقسیم زر کا بے مثال نظام دے دیا......

کہ پیسے کو روک کر نہ رکھو...... دبا کر نہ رکھو...... اس کو چلاتے رہو...... اس کو خرچ کرتے رہو۔

امریکہ...... آج جتنی ترقی کر جائے...... لیکن ثابت ہوا کہ مسلمانوں سے چودہ سو سال پیچھے ہے!

برطانیہ...... آج جتنی ترقی کر جائے...... لیکن ثابت ہوا کہ مسلمانوں سے چودہ سو سال پیچھے ہے!

ارے...... ان سب سے جو نظام آج سمجھا ہے
وہ ہم نے چودہ صدیاں پہلے...... مدینے والے سے سمجھا ہے

## زکوٰۃ...... اور تقسیم ذر کا نظام:

عزیزان گرامی!

آج ہم جس دور سے گزر رہے ہیں...... اس میں انسان خود کو بہت ترقی یافتہ تصور کر رہا ہے...... لیکن یہ ضرورت اس نے آج محسوس کی...... کہ پیسہ اکٹھا کر کے نہیں رکھتے جانا...... بلکہ اس پیسے کو آگے چلانا بھی ہے...... اس لئے کہ اگر پیسہ آگے چلتا رہے گا...... تو معاشی نظام کی درستگی قائم رہے گی...... اور دوسری طرف اگر اس پیسے کو چھپا کر رکھ لیا گیا...... اور پیسے کو جب روک لیا گیا تو پھر وہ پیسہ ''بلیک منی'' کہلائے گا...... اور اس کے لئے آج ہر حکومت قانون سازی میں مصروف ہے...... لیکن قربان جاؤں کلام خدا کا ہے اور زبان مصطفیٰ ﷺ کی ہے...... کہ جس پاک زبان اقدس کے ذریعے سے آج سے 14 سو سال پہلے ''زکوۃ'' کا حکم سنا دیا گیا ہے...... یعنی اگر مالدار ہے...... تو وہ پیسہ روکے نہ بلکہ

پیسے کو چلاتا رہے...... تو ''زکوٰۃ'' کے ذریعے سے تقسیم مال کا نظام اسلام نے پیش کیا ہے

## 2- نکتہ!

اب ایک بات جو میں آپ سے کہنے والا ہوں...... کہ یہ تو آپ سب جانتے ہیں کہ اللہ تعالیٰ نے مسلمان صاحب نصاب پر زکوٰۃ ادا کرنے کو فرض قرار دیا ہے اور اس کی فرضیت کا انکار کفر ہے...... اور اس زکوٰۃ کی ادائیگی باقی مال کی پاکیزگی کی ضمانت ہے

لیکن ایک بات جو خاص طور پر عرض کرنا چاہتا ہوں وہ یہ ہے...... کہ زکوٰۃ دینے والے کیلئے یہ ضروری ہے...... کہ وہ اچھی طرح سے یہ جان لے کہ زکوٰۃ دی کس کو جائے

یعنی زکوٰۃ دینے والا سب سے یہ ضروری دیکھے گا...... کہ جس کو زکوٰۃ دی جا رہی ہے...... کہیں وہ سید تو نہیں ہے...... سید ہو، ہاشمی ہو، فاطمی ہو ان سب پر زکوٰۃ لینا حرام ہے

یعنی اگر تم دینا بھی چاہو تو نہیں دے سکتے...... اس لئے کہ نبی ﷺ نے ان پر زکوٰۃ لینا حرام قرار دے دیا ہے۔

یارسول اللہ ﷺ...... اگر سید غریب وتنگدست ہو تو پھر؟

فرمایا...... پھر بھی زکوٰۃ نہیں لے سکتا

یارسول اللہ ﷺ...... اگر سید پریشان حال ہو ضرورت مند ہو تو پھر؟

فرمایا...... پھر بھی زکوٰۃ نہیں لے سکتا

یہاں سوچنے کی بات ہے کہ آخر پھر بھی سید پر زکوٰۃ لینا حرام کیوں ہے؟

دیکھئے...... زکوٰۃ کونسی کوئی کم رقم بنتی ہے! مثلاً

اگر...... امریکہ و برطانیہ...... میں رہنے والے مسلمانوں کی زکوٰۃ کا پیسہ اکٹھا کرلیا جائے

اگر...... ایران و سوڈان...... میں رہنے والے مسلمانوں کی زکوٰۃ کا پیسہ اکٹھا کرلیا جائے

اگر...... ہندوستان اور پاکستان...... میں رہنے والے مسلمانوں کی زکوٰۃ کا پیسہ اکٹھا کرلیا جائے

اگر...... مصر اور قطر...... میں رہنے والے مسلمانوں کی زکوٰۃ کا پیسہ اکٹھا کر لیا جائے

اگر...... کویت اور بیروت...... میں رہنے والے مسلمانوں کی زکوٰۃ کا پیسہ اکٹھا کرلیا جائے

یعنی...... اس کے علاوہ اگر پوری دنیا میں رہنے والے مالک نصاب مسلمانوں کی زکوٰۃ کا پیسہ اکٹھا کرلیا جائے تو اتنا پیسہ اکٹھا ہو جائے...... کہ آسانی سے ایک پورا ملک خریدا جا سکتا ہے؟

تو کہنے کا مطلب یہ ہے...... کہ اتنی بڑی رقم جہاں بھی لگے گی...... ظاہر ہے کہ ہر حوالے سے فائدہ ہی دے گی...... لیکن یہ ساری اتنی بڑی رقم حضور ﷺ کی آل پر ہی حرام کیوں؟

یہ بہت سنجیدگی سے سوچنے والی بات ہے

نبی ﷺ کی اولاد:

چاہے ...... ایران میں ہو یا لبنان میں

چاہے ...... کویت میں ہو یا بیروت میں
چاہے ......ہندوستان میں ہو یا پاکستان میں
چاہے ......افغانستان میں ہو یا سوڈان میں

چاہے پوری دنیا کے کسی بھی کونے میں بسنے والے اولادِ رسول ہوں ان سب پر زکوٰۃ لینا حرام...... آخر سوچو تو کیوں؟

تو جب اس کی حکمتوں پر غور کیا تو تب اصل حقیقت سمجھ میں آئی...... کہ میرے رسول ﷺ نے یہ بہت اچھا کیا کہ اپنی اولاد...... اپنے خاندان والوں پر زکوٰۃ کو حرام قرار دے دیا...... اس لئے کہ پوری دنیا میں رہتی دنیا تک...... تا قیامِ قیامت کوئی یہ نہ کہہ سکے...... کہ محمد عربی ﷺ نے اپنی اولاد کی پرورش کیلئے دین چلایا ہے...... اپنے خاندان والوں کو پالنے کیلئے مذہب چلایا ہے...... تو اب بات جا کر سمجھ میں آئی کہ میرے رسول ﷺ نے اپنے گھر والوں پر زکوٰۃ لینا حرام قرار کیوں دیا ہے

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## نبی ﷺ کے بے مثال فیصلے:

عزیزانِ گرامی قدر!

میرے رسول ﷺ نے بہت اچھا فیصلہ فرما دیا کہ زکوٰۃ لینا اپنی آل...... اپنی اولاد کے لئے حرام قرار دنے دیا...... تا کہ کوئی بھی یہ کہنے کی جرأت نہ کر سکے...... کہ رسول ﷺ کے گھر والے زکوٰۃ وصول کر رہے ہیں...... اور زکوٰۃ کے مال سے نبی ﷺ کے گھر والے پل رہے ہیں

نہیں...... میرے نبی ﷺ کے گھرانے کو اس مالِ زکوٰۃ کی ضرورت نہیں

ہے...... اس لئے...... کہ:

اولاد کو پالنے کیلئے...... مذہب چلایا ...... اکبر بادشاہ نے
اولاد کو پالنے کیلئے...... مذہب چلایا ...... مرزا غلام قادیانی نے
اولاد کو پالنے کیلئے...... مذہب چلایا ...... مسلیمہ کذاب نے
اولاد کو پالنے کیلئے...... مذہب چلایا ...... باطل مذاہب نے

لیکن میرے نبی ﷺ نے تو بے مثال فیصلہ فرما دیا...... کہ

قیامت تک آنے والی انسانیت کو یہ معلوم ہو جائے...... کہ سب زکوٰۃ لے سکتے ہو...... لیکن میرے خاندان والے زکوٰۃ نہیں لیں گے...... اس لئے کہ ہم نے اپنے پاس سے مذہب نہیں چلایا...... بلکہ یہ تو اللہ تعالیٰ کا عطا کردہ سچا مذہب ہے...... کسی دنیا دار کا بنایا ہوا مذہب نہیں ہے ...... یہ تو رب غفار کا عطا کردہ مذہب ہے

نبی ﷺ کا بیان کردہ مذہب تو...... انسانیت کی بھلائی والا مذہب ہے

## 3- نکتہ!

میں یہاں پر ایک بات آپ سامعین کے ذوق کو بڑھانے کیلئے کرنا چاہتا ہوں ...... کہ زکوٰۃ ادا کرے گا وہ جو مالک نصاب ہوگا...... اور پھر اس کے اس مقررہ نصاب پر یعنی مال پر ایک سال کا عرصہ گزر جائے تو پھر زکوٰۃ دینی ہو گی...... بلکہ ہر حال میں پھر اس مالک نصاب پر زکوٰۃ دینا فرض ہوگی...... لیکن پھر بھی یہ تو امیر لوگوں کیلئے ایک حکم شریعت ہے...... لیکن جو غریب ہے...... وہ بہت خوش نصیب ہے...... اس لئے:

امیر ...... اپنی امیری پر ناز کر رہا ہے

اور غریب ......اپنی غریبی پر ناز کر رہا ہے
امیر ......اپنی امیری میں خوش ہے
اور غریب ......اپنی غریبی پر خوش ہے

غور کرنا میری بات پر کہ...... میں غریب کو خوش نصیب اس لئے کہہ رہا ہوں......کہ:

غریب پاکستان میں ہے ......تو اس کو غریبی مبارک ہو
غریب ہندوستان میں ہے ......تو اس کو غریبی مبارک ہو

وہ اس لئے ......کہ امیر کو تو بچانے والا کوئی نہیں ہے......امیر کی دادرسی کی کوئی گارنٹی نہیں ہے......اس لئے......کہ پوری دنیا میں امیر تو بہت ہیں......لیکن کوئی امیر نواز نہیں ہے......اور غریب کو اس کی غریبی مبارک ہو کہ غریب کو بچانے کیلئے ......غریب کو سہارا دینے کیلئے ......غریب کو نوازنے کیلئے تو ......غریب نواز موجود ہے

یاد رکھئے! ......کہ جب تک برصغیر پر خواجہ غریب نواز کا جھنڈا لہراتا رہے گا......اس وقت تک ہر غریب کا چہرہ چمکتا رہے گا......مسکراتا رہے گا...... اس لئے کہ ہم غریب ہوئے تو کیا ہوا......''غریب نواز'' جو موجود ہے؟

حضرات محترم!

میں آپ کو غریب کہہ کر...... آپ حضرات کو غریب ''باور'' نہیں کروانا چاہتا صرف مسئلہ سمجھانے کیلئے ...... یہ سب کچھ عرض کر رہا ہوں ......کہ اگر آپ غریب ہیں تو پھر آپ کو ایک اور بہت بڑی سہولت میسر ہو

رہی ہے...... کہ:

جب چاہو...... جس سے چاہو
جہاں چاہو...... جیسے چاہو

تم زکوٰۃ لے لیا کرو...... اس لئے کہ تم غریب ہو...... اور غریب زکوٰۃ لے سکتا ہے...... یاد رکھو کہ تم غریب لوگ زکوٰۃ لیکر کوئی برا کام نہیں کرتے...... بلکہ اس امیر کا بوجھ ہلکا کرتے ہیں

اس لئے کہ جس کسی امیر کے پاس زکوٰۃ کے دس ہزار روپے موجود ہیں...... وہ اس پر تو بوجھ بنا ہوا ہے...... کہ یہ میں کس کو دوں؟

اور تم جو غریب ہو تو تم زکوٰۃ لے لو...... اور تم زکوٰۃ لیکر ایک امیر آدمی کو فرض ادا کرنے کا موقعہ فراہم کرتے ہو!

ابھی آپ سب یہاں پر انتہائی غور فرمایئے گا...... میں آپ کو ایک جملہ دینا چاہتا ہوں...... وہ یہ کہ!

آپ سب جتنے حضرات یہاں موجود ہو...... اگر آپ سب غریب ہیں تو تم سب زکوٰۃ لے سکتے ہو...... لیکن میں ''سید'' ہوں...... میں چاہے تم سب سے بھی زیادہ غریب ہو جاؤں...... لیکن میں زکوٰۃ نہیں لے سکتا...... یعنی...... شریعت میں زکوٰۃ غریب کیلئے جائز اور اگر کوئی ''سید'' ہے تو چاہے وہ غریب بھی ہو لیکن زکوٰۃ نہیں لے سکتا...... آخر مسئلہ کیا تھا...... اصل حکمت کیا تھی؟

بس بہت دیر اس حقیقت کو سمجھنے میں لگادی تو پھر کرم نوازی ہوئی اور یہ بات میری سمجھ میں آگئی...... کہ ہر غریب مسلمان تو زکوٰۃ لے سکتا ہے...... لیکن ''

سید" چاہے کوئی غریب بھی لیکن پھر بھی زکوٰۃ نہیں لے سکتا!

یعنی...... شریعت نے فیصلہ کر دیا کہ تم زکوٰۃ لینے میں...... آل رسول ﷺ کی طرح نہیں ہو۔

یعنی چاہے ہزار بار کوئی سر پٹکتا رہے...... لیکن میرے نبی ﷺ نے یہ فیصلہ فرما دیا...... کہ اے میرے امتیو تم میں سے ہر غریب آدمی زکوٰۃ لے سکتا ہے لیکن "سید" یعنی آل رسول چاہے غریب بھی ہو لیکن اس پر زکوٰۃ لینا حرام ہے

تو بس فیصلہ ہو گیا...... کہ تم سب زکوٰۃ لینے میں آل رسول ﷺ کی طرح نہیں ہو...... ارے میں سوال کرتا ہوں...... کہ جب تم شریعت میں آل رسول ﷺ کی طرح نہیں ہو...... تو پھر کوئی بشریت میں رسول ﷺ کی طرح کیسے ہو سکتا ہے؟

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## سید زکوٰۃ دے گا مگر لے گا نہیں:

دیکھئے...... یہ بات تو اسلام کے بیان کردہ قانون سے ثابت ہو گئی...... کہ اسلام نے تقسیم زر کا بہترین نظام پیش کیا ہے...... اور زکوٰۃ کی ادائیگی سے بے شمار معاشی بحرانوں کا حل بیان فرما دیا ہے...... لیکن لینے اور دینے میں تقسیم بھی جدا جدا بیان فرما دی ہے...... یعنی!

امت رسول ﷺ امیری میں زکوٰۃ ادا کرے گی...... اور غریبی میں زکوٰۃ وصول کرے گی یہ بھی شرعی قانون ہے

آل رسول ﷺ امیری میں زکوٰۃ ادا کرے گی...... لیکن غریبی میں زکوٰۃ

وصول نہیں کرے گی...... یہ بھی شرعی قانون ہے

اور...... رسول ﷺ زکوٰۃ ادا بھی نہیں کریں گے...... اور زکوٰۃ وصول بھی نہیں کریں گے...... یہ شان رسول ﷺ ہے!

تو ثابت ہوا...... کہ

زکوٰۃ کے لینے میں...... دوسرے تمام غریب امتی حضور ﷺ کی آل کی طرح نہیں ہیں...... یعنی تمام غیر سید زکوٰۃ لیں گے...... لیکن سید زکوٰۃ نہیں لے گا...... تو اب ہر امتی جو غیر سید ہے وہ زکوٰۃ لینے میں آل رسول ﷺ کی مثل نہیں ہے اور رسول ﷺ نہ زکوٰۃ ادا کریں...... اور نہ ہی زکوٰۃ وصول کریں...... تو ثابت ہوا...... کہ:

زکوٰۃ کے معاملے میں ہر غیر سید امتی...... آل رسول ﷺ کی طرح نہیں ہے اور تمام امت میں سے کوئی سید اور غیر سید کوئی بھی میرے رسول ﷺ کی طرح نہیں ہے...... اس لئے...... کہ:

رسول ﷺ نہ زکوٰۃ ادا کریں گے اور نہ ہی وصول کریں گے...... تو پھر ہماری مثل کیسے ہوئے؟

تو ثابت ہوا...... کہ:

عام بشر کیلئے...... حکم اور ہے

اور...... سید البشر ﷺ کیلئے حکم اور ہے

عام انسان کیلئے...... قانون اور ہے

اور...... محبوب رحمٰن ﷺ کیلئے قانون اور ہے

عام آدمی کیلئے...... اصول اور ہے

اور...... فخر آدمیت ﷺ کیلئے اصول اور ہے

تو ایک زکوٰۃ کے فرض نے ہی فیصلہ کر دیا...... کہ

تم سب میں سے کوئی بھی...... رسول ﷺ کی مثل نہیں ہے!

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## رسول ﷺ کی بے مثلیت:

عزیزان گرامی قدر!

اس زکوٰۃ کے مسئلے سے ہی بہت سارے مسائل حل ہو جاتے ہیں...... مثلاً زکوٰۃ پر آ کر تین درجے بن گئے!

ایک ......غیر سید امت رسول
دوسرا ......سید آل رسول ﷺ
تیسرا ......خود رسول ﷺ کی ذات پاک

تو پہلے درجے میں ......امت زکوٰۃ دے بھی رہی ہے اور لے بھی رہی ہے
تو دوسرے درجے میں ......آل رسول ﷺ زکوٰۃ دے رہی ہے...... لیکن لے نہیں رہی
اور تیسرے درجے میں ......خود رسول ﷺ نہ زکوٰۃ لیتے ہیں...... اور نہ دیتے ہیں

تو ثابت ہوا...... کہ پہلے درجے والے...... دوسرے درجے والوں کے برابر نہیں ہیں...... اور تیسرے درجے میں خود رسول ﷺ باقی دونوں درجوں میں شمار ہونے والوں میں سے کسی کے برابر نہیں

### 4- نکتہ!

دیکھئے حضرات...... زکوٰۃ تمام امت پر دینا فرض ہے...... اور لیکن رسول ﷺ پر زکوٰۃ دینا فرض نہیں ہے...... تو جب میں نے ''زکوٰۃ'' سے

پوچھا کہ اے زکوٰۃ تو میرے رسول ﷺ پر فرض کیوں نہیں ہے؟ تو زکوٰۃ بولی...... کہ میں رسول ﷺ پر اس لئے فرض نہیں ہوں کہ تمام امت کو پتہ چل جائے کہ تم رسول ﷺ کی مثل نہیں ہو...... تو خیر آئیے...... میں یہاں پر ایک نکتہ آپ کے حوالے کرنا چاہتا ہوں...... کہ نبی ﷺ پر زکوٰۃ فرض نہیں تھی...... تو اس کا مطلب یہ نہیں کہ رسول ﷺ کو پاس مال نہیں تھا...... اس لئے کہ یہ بات تو رسول ﷺ کے گھر والے جانیں کہ رسول ﷺ کے پاس کتنا تھا...... اس لئے کہ ہم تو امتی ہیں...... ہم کیا اس بارے میں جانیں؟ ویسے میں ایک بات کہنا چاہتا ہوں...... کہ اگر رسول ﷺ کے پاس ویسے میں ایک بات کہنا چاہتا ہوں...... کہ اگر رسول ﷺ کے پاس مال نہیں تھا...... تو سیدہ فاطمۃ الزہراء رضی اللہ عنہا کس "باغ فدک" کے لئے تشریف لیکر گئی تھیں...... ارے تمہیں کیا معلوم کہ "باغ فدک" کتنی بڑی پراپرٹی تھی...... یہ جدا بات ہے کہ رسول ﷺ کے ظاہری پردہ فرمانے کے بعد اس کا وارث کون تھا؟

لیکن کوئی ثابت کرے کہ رسول ﷺ نے "باغ فدک" کا عشر نکالا ہو؟ نہیں کوئی ثابت نہیں کر سکے گا...... ویسے جو کچھ بھی رسول ﷺ اللہ تعالیٰ کی راہ میں دیتے رہے ہیں:

وہ سب آپ ﷺ کی ......عطا تھی
وہ سب آپ ﷺ کی ......فیاضی تھی
وہ سب آپ ﷺ کی ......بندہ نوازی تھی
وہ سب آپ ﷺ کی ......غریب نوازی تھی

وہ سب آپ ﷺ کی ...... سخاوت تھی
وہ سب آپ ﷺ کی عنایت تھی

لیکن کوئی یہ ثابت نہیں کرے گا ...... کہ رسول ﷺ نے کبھی زکوۃ دی ہو ...... تو بات یہاں آگئی کہ آخر رسول ﷺ نے زکوۃ ادا کیوں نہیں کی تو دیکھئے میں ایک مثال سے مسئلے کو آسان کرنا چاہتا ہوں ...... کہ زکوۃ اگر میں اپنے بیٹے کو دوں ...... تو شرعی حکم کے مطابق زکوۃ ادا نہیں ہوگی ...... اس لئے کہ اپنے بیٹے کی دولت کا میں مالک ہوں ...... یا پھر ایسے بھی ہے کہ ...... اگر کوئی اپنے زرخرید غلام کو زکوۃ دے گا تو پھر بھی زکوۃ ادا نہیں ہوگی!

اس لئے کہ جس غلام کو آپ نے خریدا ہے ...... اب اس کے آپ ہی مالک ہیں ...... اس کی جیب میں اگر دس ہزار روپے ہیں ...... تو اس دس ہزار روپے کا بھی میں ہی مالک ہوں ...... تو اگر میں اس کو زکوۃ دوں گا ...... تو زکوۃ ادا نہیں ہوگی ...... اس لئے کہ وہ غلام تو میری ملکیت ہے ...... اور اگر میں اس کو زکوۃ دوں تو پھر بھی وہ مال میری ہی ملکیت میں رہا ...... وہ اس لئے کہ اس کا جو میں مالک ہوں ...... تو جو کچھ اس کے پاس ہے ...... تو اس کا بھی میں ہی مالک ہوں

تو اپنے غلام کو زکوۃ دینے سے زکوۃ ادا اس لئے نہیں ہوتی کہ مالک تو بدلا نہیں زکوۃ کیسے ادا ہوگی ...... ملکیت ٹرانسفر نہیں ہوئی ...... تو زکوۃ کیسے ادا ہوگی ...... تو اب مسئلہ سمجھنا کہ میرے رسول ﷺ نے زکوۃ اس لئے نہیں دی کہ رسول ﷺ زکوۃ کس کو دیں گے ...... سارے جہاں والے تو آپ ﷺ کے

غلام ہیں؟

اے رسول ﷺ آپ زکوٰۃ دیتے کیسے؟ اس لئے کہ ساری دنیا تو آپ کی غلام ہے:

آپ ﷺ ...... ابوبکر رضی اللہ عنہ کو دیں ......تو وہ بھی غلام ہیں
آپ ﷺ ......عمر فاروق رضی اللہ عنہ کو دیں ......تو وہ بھی غلام ہیں
آپ ﷺ ......عثمان رضی اللہ عنہ کو دیں ......تو وہ بھی غلام ہیں
آپ ﷺ ...... علی رضی اللہ عنہ کو دیں ......تو وہ بھی غلام ہیں
آپ ﷺ ......سلمان رضی اللہ عنہ کو دیں ......تو وہ بھی غلام ہیں
آپ ﷺ ...... بلال رضی اللہ عنہ کو دیں ......تو وہ بھی غلام ہیں
آپ ﷺ ...... طلحہ رضی اللہ عنہ کو دیں ......تو وہ بھی غلام ہیں
آپ ﷺ ...... زید رضی اللہ عنہ کو دیں ......تو وہ بھی غلام ہیں
آپ ﷺ ...... اسامہ رضی اللہ عنہ کو دیں ......تو وہ بھی غلام ہیں
آپ ﷺ ...... حسان رضی اللہ عنہ کو دیں ......تو وہ بھی غلام ہیں
آپ ﷺ ......صفوان رضی اللہ عنہ کو دیں ......تو وہ بھی غلام ہیں
آپ ﷺ ...... زبیر رضی اللہ عنہ کو دیں ......تو وہ بھی غلام ہیں
آپ ﷺ ......ابن عوف رضی اللہ عنہ کو دیں ......تو وہ بھی غلام ہیں
آپ ﷺ ......صہیب رضی اللہ عنہ کو دیں ......تو وہ بھی غلام ہیں۔
آپ ﷺ ...... مقداد کو دیں ......تو وہ بھی غلام ہیں
آپ ﷺ ......ابن مسعود رضی اللہ عنہ کو دیں ......تو وہ بھی غلام ہیں

اے حبیب ﷺ آپ کس کو زکوٰۃ دیں گے...... سارے تو آپ ﷺ کے

غلام ہیں...... اور غلام کو تو زکوٰۃ دی نہیں جاتی...... اسی لئے تو میں کہتا ہوں...... کہ یا رسول اللہ ﷺ جو کوئی آپ ﷺ کا غلام نہیں...... وہ لاکھ کچھ کہتا پھرے وہ مسلمان نہیں...... اور جو آپ ﷺ کی عطا سے مسلمان ہے...... آپ کا غلام ہے...... اور غلام کو زکوٰۃ دی نہیں جائے گی...... اس لئے رسول ﷺ آپ پر زکوٰۃ دینا فرض نہیں کی جائے گی۔

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ ﷺ

## نماز اور زکوٰۃ قرآن میں ایک ساتھ:

عزیزانِ گرامی!

دیکھئے...... زکوٰۃ پر تو اب تک بات ہوتی جا رہی ہے...... لیکن ابھی میں نے نماز کے حوالے سے گفتگو کا آغاز کرنا ہے...... حالانکہ قرآن میں نماز کا ذکر پہلے آیا ہے...... اور زکوٰۃ کا ذکر بعد میں آیا ہے...... لیکن تقریر کے شروع ہی میں...... میں نے زکوٰۃ کے حوالے سے گفتگو اس لئے شروع کر دی کہ...... نماز کے اندر بہت ساری بے مثال حکمتیں ہیں...... اور ہمارے ہاں اکثر لوگ زکوٰۃ کی فرضیت پر ایمان تو رکھتے ہیں...... لیکن اکثر غریب لوگ اس کو امیروں کے ساتھ سمجھتے ہوئے...... اس کے متعلق زیادہ پیچیدگی میں جا کر تحقیق نہیں کرتے...... تو آج اس پروگرام میں میرا ذہن تھا کہ پہلے زکوٰۃ کی اہمیت پر بات کرتا ہوں...... بعد میں کچھ نماز کے متعلق بھی عرض کروں گا۔

### 5- نکتہ:

دیکھئے قرآن کے اندر اللہ تعالیٰ ارشاد فرمایا ہے

وَاَقِیْمُوا الصَّلٰوۃَ وَاٰتُوا الزَّکٰوۃَ

اور نماز قائم کرو اور زکوٰۃ ادا کرو

یعنی پہلے نماز کا ذکر ہوا اور بعد میں زکوٰۃ کا ذکر ہوا...... لیکن قابل غور بات تو یہ ہے کہ نماز اور زکوٰۃ دونوں کو ساتھ ساتھ بیان کیا گیا ہے...... اگر قرآن کی آیات میں دیکھیں تو پھر بھی ایسے ہی ہے...... اور اگر حدیث کی کتب کا مطالعہ کیا جائے تو پھر بھی ایک ساتھ ہی نماز اور زکوٰۃ کو بیان کیا گیا ہے!

سوچنے کی بات ہے...... کہ آخر اس میں حکمت کیا ہے؟

تو آیئے میں آسان لفظوں میں...... ایک دو مثالوں کے ذریعے سے بات سمجھانے کی کوشش کرتا ہوں...... کہ

زکوٰۃ ایک فرض عبادت ہے...... اور نماز بھی ایک فرض عبادت ہے...... لیکن ان دو فرض عبادتوں میں کچھ خاص فرق ہے...... اور یہ بھی کہا جاتا ہے...... کہ نماز بدنی عبادت ہے اور زکوٰۃ مالی عبادت ہے

یعنی...... ایک بندہ جس کو زکوٰۃ کا ہزار روپیہ ملا تو اب یہ بندہ ان پیسوں سے اگر بھوکا ہے تو اپنی بھوک دور کر سکتا ہے...... اور اگر پیاسا ہے تو ان زکوٰۃ کے پیسوں سے اپنی پیاس بھی دور کر سکتا ہے...... یعنی:

زکوٰۃ کے پیسوں سے...... کپڑا خریدا جا سکتا ہے
زکوٰۃ کے پیسوں سے...... کھانا کھایا جا سکتا ہے
زکوٰۃ کے پیسوں سے...... شربت پیا جا سکتا ہے
زکوٰۃ کے پیسوں سے...... ضرورت مند دکان بنا سکتا ہے

زکوٰۃ کے پیسوں سے ......ضرورت مند بیاہ کروا سکتا ہے
زکوٰۃ کے پیسوں سے ......ضرورت مند پڑھ لکھ سکتا ہے
زکوٰۃ کے پیسوں سے ......بچے پالے جا سکتے ہیں
زکوٰۃ کے پیسوں سے ......سفر کیے جا سکتے ہیں

یعنی......زکوٰۃ ایک ایسی عبادت کہ ادا کرنے والے نے جب زکوٰۃ ادا کر دی تو اس سے بہت سارے کام کیے جا سکتے ہیں......یعنی:

زکوٰۃ کے پیسوں سے بھوکے کو کھانا مل گیا
زکوٰۃ کے پیسوں سے پیاسے کو پانی مل گیا

لیکن......یاد رکھو کہ نماز ایک ایسی فرض عبادت ہے......کہ:

نماز سے ......بھوکے کی بھوک نہیں ختم ہو گی
نماز سے ......پیاسے کی پیاس نہیں ختم ہو گی

تو قربان جاؤں......اللہ رب العزت کی حکمتوں پر کہ نماز اور زکوٰۃ کو اپنی لاریب کتاب میں جہاں بھی بیان فرمایا......اکٹھے بیان فرمایا......اس میں ایک بہت بڑی حکمت یہ بھی ہے......کہ

اگر...... جسم بھوکا ہو تو ......زکوٰۃ سے بھوک دور ہو جائے
اگر...... روح بھوکی ہو تو ......نماز سے بھوک دور ہو جائے

دیکھئے......نماز اور زکوٰۃ کو بھی اکٹھے بیان فرمایا گیا......اور ادھر بندہ مومن کے جسم اور

روح کا تعلق بھی ساتھ ساتھ ہے
جسم اور روح کا واسطہ بھی ساتھ ساتھ ہے

جسم اور روح کا رشتہ بھی ساتھ ساتھ ہے

اور دوسری طرف نماز اور زکوٰۃ بھی ساتھ ساتھ ہیں...... یعنی جب غریب کو جسمانی کمزوری بھوک کی وجہ سے محسوس ہو تو...... زکوٰۃ کے ذریعے سے دور کر لے...... اور اگر کسی کو روحانی کمزوری محسوس ہو تو وہ نماز سے دور کر لے

یعنی...... زکوٰۃ مومن کے ظاہر کو سنوار رہی ہے
اور...... نماز مومن کے باطن کو سنوار رہی ہے
زکوٰۃ مومن کے جسم کو تازگی دے رہی ہے
اور...... نماز مومن کی روح کو تازگی دے رہی ہے
زکوٰۃ مومن کی دنیاوی ضروریات پوری کر رہی ہے
اور...... نماز مومن کی روحانی ضروریات پوری کر رہی ہے
زکوٰۃ سے مومن کا مال صاف ہو رہا ہے
اور...... نماز سے مومن کا حال صاف ہو رہا ہے
زکوٰۃ مومن کے مال کو دوگنا کرتی ہے
اور...... نماز مومن کے تقویٰ کو دوگنا کرتی ہے

## ظاہر و باطن پر حضور ﷺ نگران ہیں:

قرآن کی آیت مقدسہ وَاَقِیْمُوا الصَّلٰوۃَ وَاٰتُوا الزَّکٰوۃَ...... آپ حضرات نے بے شمار مرتبہ سنی ہوئی ہے...... تو آج یہ بات بھی ثابت ہو گی...... کہ ان دونوں عبادتوں کا کام اپنا اپنا ہے...... دونوں کا نام اپنا اپنا ہے...... اور ایک مومن کے ظاہر کو سنوار رہی ہے اور دوسری انسان کے

باطن کو سنوار رہی ہے

اور...... اگر زکوٰۃ کو چھوڑ دو تو پھر بھی گزارہ نہیں ہے

اور...... اگر نماز کو چھوڑ دو تو پھر بھی گزارہ نہیں ہے

تو ثابت یہ ہوا...... کہ زکوٰۃ مومن کے ظاہر کو سنوار رہی ہے...... اور نماز مومن کے باطن کو سنوار رہی ہے...... اور میرے نبی ﷺ اسلام کی بنیادی تعلیمات میں ان دونوں کی ادائیگی پر بہت زور دیا ہے...... میرے مدینے والے لجپال نے نماز پڑھ کر دکھائی ہے...... کہ نماز ایسے پڑھو

اور زکوٰۃ کی تقسیم کا حکم فرمایا ہے...... کہ زکوٰۃ ایسے ادا کرو

تو دو عبادتیں جو ظاہر اور باطن کے ساتھ تعلق رکھتی ہیں...... جو جسم اور روح کے ساتھ تعلق رکھتی ہیں...... میرے نبی ﷺ ان دونوں حال پر شاہد ہیں...... دیکھئے قرآن میں ارشاد باری تعالیٰ ہوتا ہے

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا

اے نبی ہم نے آپ کو شاہد بنا کر بھیجا ہے اور مبشر و نذیر بنا کر

اب اس آیت مبارکہ کے پہلے الفاظ پر ہی غور کریں...... کہ

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ ...... اے غیب کی خبریں دینے والے

تو لفظ ''نبی'' ہی بتا رہا ہے...... کہ وہ میرے محبوب ﷺ آپ پر کوئی ''غیب'' غیب نہیں ہے...... بلکہ آپ تو ظاہر و باطن کے غیب جاننے والے ہیں

یعنی...... نبی کہتے ہیں...... ان حقائق کی خبر دینے والا

کہ...... جنہیں کوئی آنکھ دیکھ نہ سکے

"نبی" کہتے ہیں......ان حقائق کو جاننے والا

کہ......جنہیں کوئی دماغ سمجھ نہ سکے

"نبی" کہتے ہیں......ان معارف کو جاننے والا

کہ......جن کو کوئی ذہن سما نہ سکے

تو میرے رب نے نبی ﷺ کو بھیجا کس لیے ہے؟

اللہ...... نے نبی ﷺ کو اس لئے بھیجا ......تاکہ تم ایمان والے بن جاؤ

اللہ...... نے نبی ﷺ کو اس لئے بھیجا ......تاکہ تم اسلام سے وابستہ ہو جاؤ

تو اب انسان کی فطرت ہے کہ انسان کسی چیز کو مانتا ہے......اسے دیکھ کر تو

اے محبوب ﷺ آپ کو اس لئے بھیجا گیا ہے......کہ:

آپ دنیا میں جا کر ......اپنے رب کی الوہیت کی خبر دو
آپ دنیا میں جا کر ......اپنے رب کی وحدانیت کی خبر دو
آپ دنیا میں جا کر ......اپنے رب کی بزرگی کی خبر دو
آپ دنیا میں جا کر ......اپنے رب کی یکتائی کی خبر دو
آپ دنیا میں جا کر ......اپنے رب کی کبریائی کی خبر دو
آپ دنیا میں جا کر ......اپنے رب کی صفات کی خبر دو
آپ دنیا میں جا کر ......اپنے رب کی ذات کی خبر دو

اور......اے نبی ﷺ آپ دنیا میں جا کر......ان حقائق کی خبر دو......کہ جن کو نہ کوئی آج تک جان سکا......جن کو نہ کوئی آج تک سمجھ سکا

ارے حقیقت تو یہ ہے......کہ:

جن حقائق کو......انسان دیکھنے سے قاصر تھا

جن حقائق کو ...... انسان سمجھنے سے قاصر تھا

اے محبوب ﷺ آپ کے رب نے آپ کو بھیجا...... کہ اے محبوب ﷺ

اگرچہ لوگ ...... میری الوہیت کو جاننا چاہتے ہیں

اگرچہ لوگ ...... میری الوہیت کو جاننا چاہتے ہیں

تو اے محبوب ﷺ ...... تمہارا رب فرما رہا ہے...... کہ

یٰۤاَیُّهَا النَّبِیُّ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ ...... اے نبی ہم نے آپ کو بھیجا

اس لئے...... کہ:

لوگ مجھے ماننے سے پہلے ...... تمہیں مان لیں
لوگ مجھے ملنے سے پہلے ...... تمہیں مل لیں
لوگ مجھے پانے سے پہلے ...... تمہیں پا لیں

قرآن میں رب تعالیٰ نے یہ فیصلہ فرما دیا...... کہ اے محبوب ﷺ

اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ ...... میں نے آپ کو بھیجا ہے

اس لئے کہ پہلے آپ کی بارگاہ تک رسائی حاصل کی جائے...... پھر میری طرف آیا جائے

اے محبوب ﷺ ...... پہلے آپ کو تسلیم کیا جائے ...... پھر میری طرف آیا جائے ...... اس لئے کہ ''ایمان بالرسالت'' کے بغیر ایمان باللہ ہو ہی نہیں سکتا

اور پھر قرآن میں فرمایا '' شَاهِدًا '' محبوب آپ ﷺ کو شاہد بنا کر بھیجا گیا ہے...... یعنی جو موقعہ پر موجود ہو...... اور حالات سے باخبر ہو وہ شاہد ہوتا ہے۔

میرے دوستو!

اللہ نے اپنے نبی ﷺ کو "شَاهِدً" بنا کر بھیجا......اور کیسا شاہد بنا کر بھیجا؟

تو ارشاد ہوتا ہے......کہ:

آپ ﷺ کو صرف آدم علیہ السلام کا ہی نہیں...... بلکہ ان کی قوم کا بھی شاہد بنا کر بھیجا گیا ہے؟

آپ ﷺ کو صرف حضرت نوح علیہ السلام کا ہی نہیں...... بلکہ ان کی قوم کا بھی شاہد بنا کر بھیجا گیا ہے

آپ ﷺ کو حضرت شعیب علیہ السلام کا ہی نہیں...... بلکہ ان کی قوم کا بھی شاہد بنا کر بھیجا گیا ہے

آپ ﷺ کو حضرت ابراہیم علیہ السلام کا ہی نہیں...... بلکہ ان کی قوم کا بھی شاہد بنا کر بھیجا گیا ہے

آپ ﷺ کو حضرت یوسف علیہ السلام کا ہی نہیں...... بلکہ ان کی قوم کا بھی شاہد بنا کر بھیجا گیا ہے

آپ ﷺ کو حضرت موسیٰ علیہ السلام کا ہی نہیں...... بلکہ ان کی قوم کا بھی شاہد بنا کر بھیجا گیا ہے

آپ ﷺ کو حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا ہی نہیں...... بلکہ ان کی قوم کا بھی شاہد بنا کر بھیجا گیا ہے

اے محبوب ﷺ ہم نے آپ کو ایسا شاہد بنا کر بھیجا ہے......کہ:

اگر کوئی......اللہ کے علم کی جھلک دیکھنا چاہے

تو وہ علم مصطفیٰ ﷺ کو ہی دیکھ لے

اگر کوئی...... اللہ کی قدرت کی جھلک دیکھنا چاہے
تو وہ علم مصطفیٰ ﷺ کو ہی دیکھ لے
اگر کوئی...... اللہ کی صفات کی جھلک دیکھنا چاہے
تو وہ علم مصطفیٰ ﷺ کو ہی دیکھ لے

اور ذات مصطفیٰ ﷺ ہمارے ظاہر و باطن پر شاہد ہیں...... ملاحظہ فرما رہے ہیں...... اور گواہی دے رہے ہیں...... تو میرے نبی ﷺ نے اللہ کا حکم پاک:

وَاَقِیْمُوا الصَّلٰوۃَ وَاٰتُوا الزَّکٰوۃَ
نماز قائم کرو اور زکوٰۃ ادا کرو

آپ ﷺ نے اللہ کا یہ حکم ہر ایمان والے تک پہنچایا ہے...... اور مومن کو نماز ادا کرنے کا پابند بنایا ہے...... اور مالک نصاب مومن کو زکوٰۃ ادا کرنے کا پابند بنایا ہے...... اور دوسرے تمام مذاہب میں نہ کوئی نماز جیسی عبادت ہے اور نہ ہی کوئی زکوٰۃ جیسا تقسیم زر کا نظام ہے...... اللہ تعالیٰ نے قرآن میں نماز اور زکوٰۃ کو جوڑ دیا...... اور میرے مصطفیٰ ﷺ نے نماز پڑھنے والوں اور زکوٰۃ اپنے والوں کو جوڑ دیا:

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ

* * *

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدِىْ يَا رَسُوْلَ اللّٰه
وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ يَا سَيِّدِىْ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

# بارہ نقابتیں

## بمعہ طریقۂ نقابت

مرتب

**الحافظ القاری محمد نوید شاکر چشتی**

ناشر

مکتبہ زین العابدین

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدِىْ يَا رَسُوْلَ اللّٰه
وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ يَا سَيِّدِىْ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

**خطیب الاسلام تاجدار اقلیم خطابت**

## پیر سید شبیر حسین شاہ (حافظ آبادی)

# دیاں پنجابی تقریراں

مرتب

الحافظ القاری محمد نوید شاکر چشتی

ناشر

**مکتبہ زین العابدین**

Marfat.com
Marfat.com

الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدِىْ يَا رَسُوْلَ اللّٰه
وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ يَا سَيِّدِىْ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

**ملک کے مشہور نقباء حضرات کی فرمائش پر لکھی جانیوالی منفرد پنجابی کتاب**

# ۱۲ پنجابی تقریراں

مرتب

**الحافظ القاری محمد نوید شاکر چشتی**

ناشر

**مکتبہ زین العابدین**

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

ملک کے مشہور نقباء حضرات کی فرمائش
پر لکھی جانیوالی منفرد پنجابی کتاب

# نقابت دیاں گلاں

مصنف

الحافظ القاری **محمد نوید شاکر چشتی**

ناشر

**مکتبہ زین العابدین**

0332-4300213,0315-4300213

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدِىْ يَا رَسُوْلَ اللّٰه
وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ يَا سَيِّدِىْ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

# خواتین کی محفل

# درس قرآن

مرتب

**الحافظ القاری محمد نوید شاکر چشتی**

ناشر

**مکتبہ زین العابدین**

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدِیْ يَا رَسُوْلَ اللّٰه
وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ يَا سَيِّدِیْ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

# پردہ

## عظمت کا نشان

مرتب

**الحافظ القاری محمد نوید شاکر چشتی**

ناشر

**مکتبہ زین العابدین**

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْکَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ
وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا سَیِّدِیْ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

# خواتین کی محفل

# درسِ حدیث

مرتب

**الحافظ القاری محمد نوید شاکر چشتی**

ناشر

**مکتبہ زین العابدین**

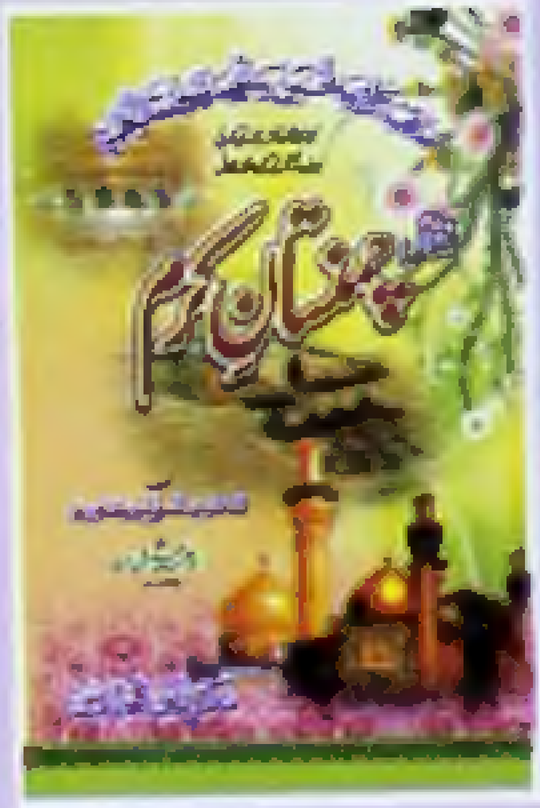
چمنستانِ کرم
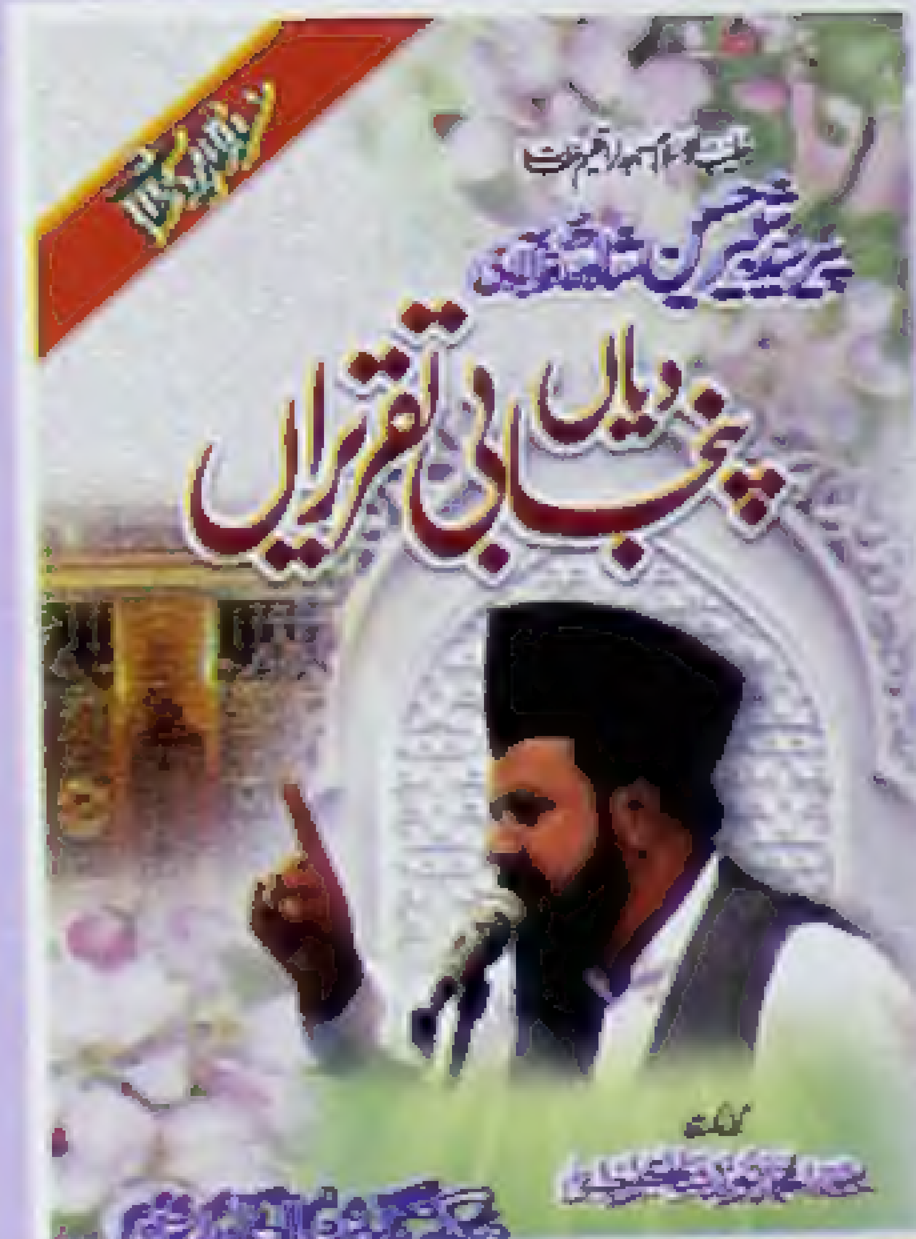
پنجابی دیاں تقریراں

پردہ عظمت کا خیال ہے
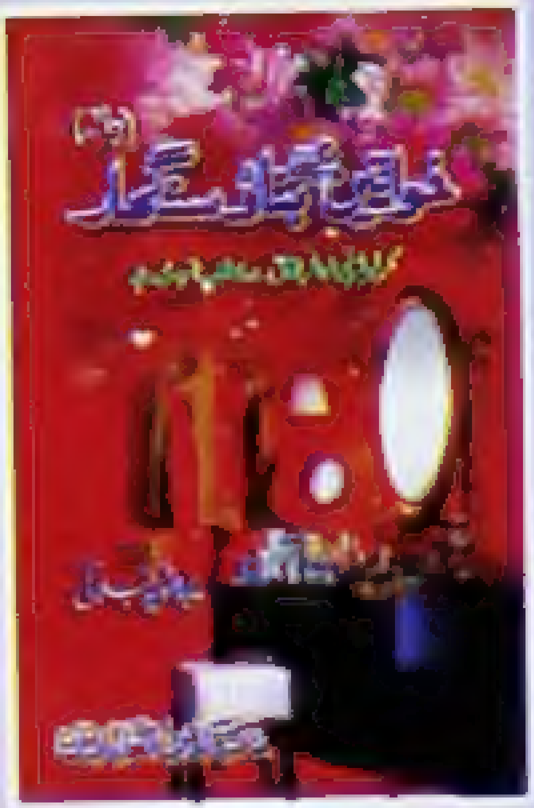

۱۲ پنجابی تقریراں
مکتبہ زین العابدین

دنیائے نقابت کے
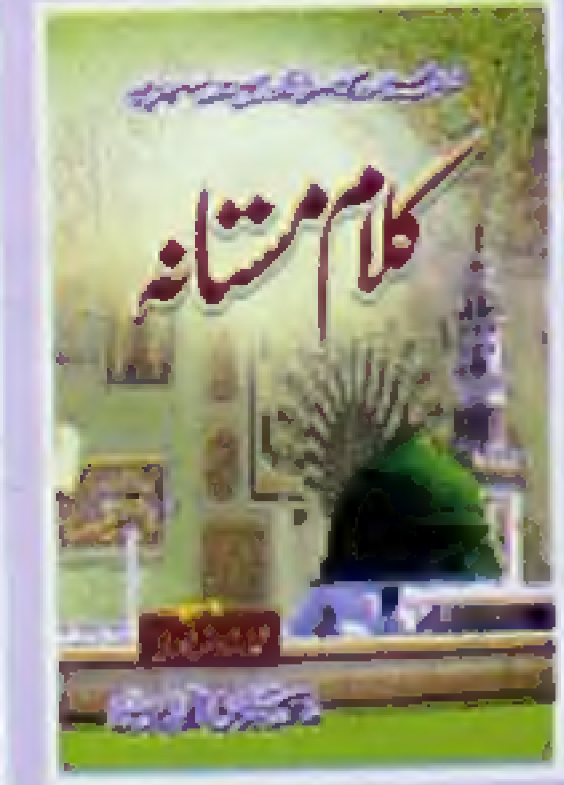
کلام مستانہ

مکتبہ زین العابدین
نزد شالیمار گارڈن
باغبانپورہ لاہور
0332-4300213
0315-4300213